ओ३म्

संगीत रत्न प्रकाश

पूर्वार्द्ध

पाचवाँ भाग।

जिसमें ६८७ भजन व ग़ज़लें व लावनियाँ व टुमरियाँ व दादरे व होलियाँ आदि विविध विषयों पर मशहूर २ भजन रचयिताओं के दर्ज हैं।

जिसको

मुन्शी द्वारकाप्रसाद अत्तार

बाज़ार बहादुरगंज शाहजहांपुर ने

सर्व सज्जन महाशयों के हितार्थ संग्रह किया।

Copy Right Registered under Sec. 18 and 19 of Act XXV of 1867.

द्वितीयबार ४००० | सन् १९२० | मूल्य ॥।-) सजिल्द १)

विषय सूची ।

सं०	विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ त०
१	सूची पत्र भजन	१	२०
२	ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना	२१	९८
३	उपदेश ज्ञान वैराग्य	९८	१८२
४	वेद प्रचार	१८२	२०७
५	चेतावनी	२०७	२५२
६	हमारी पूर्व दशा	२५३	२५९
७	हमारी वर्तमान दशा और उसका कारण	२६०	२८८
८	वैदिक विवाह	२८८	३००
९	बालविवाह और उसका फल	३००	३१०
१०	अमेल विवाह	३११	३२०
११	विधवा विलाप और उसकी अपील	३२०	३५९
१२	अबला विनय	३६०	३६९
१३	स्त्री शिक्षा	३६९	४०८
१४	गुरुकुल महिमा	४०९	४१५
१५	वीर्य्य महिमा	४१६	४१८
१६	वेश्या दोष दर्पण	४१९	४३६
१७	प्रायश्चित्त विषय	४३६	४४६

संख्या	टेक	भजन
४०२	विधवा कह रहीं पु०	
४०३	बहे नैनन जल धार०	
४२३	बहनो तुम यह गुण०	
४२५	बहनो करलो सच्चा०	
४२८	बिना विद्या नहीं टलेगी०	
४२९	बहनो है फ़रियाद०	
४३६	बहनो सुनना दया०	
४४६	बहनो करना विचार०	
४४७	बहनो री करलो पेले०	
४६५	बहे नैनों से नीर०	
४६९	बिन गुरुकुल कैसे भा०	
४७०	ब्रह्मचारी जगत में०	
४८३	ब्याह आदि मंगल का०	
५०१	बिछुड़े भाइयों को अब०	
५०२	बिछुड़ों को गले लगा०	
५६२	बिन वेद पता नहिं पाया०	
	भ	
३७	भूला काहे प्रानी रे०	
४२	भगवान् दया की दृष्टि०	
५३	भवसागर से नैया०	
११६	भूला डोले जगत् में०	
१२७	भजो जी भजो प्रभु दाख०	
१३५	भजन भगवान् का कर०	
१६१	भय खोहो तो कैसे धर्म०	
१६६	भाइयो हिन्दू कहाना छो०	
१७४	भलाई कर चलो जग०	
२०३	भूला भूलारे मुसाफिर०	
२०६	भाइयो जगत् में आ०	
२१४	भूला है किस पै अय०	
२१६	भरोसा नहीं एक सांस०	
२७०	भारत देश की हा प्र०	
२८४	भूले जाते हो तुम हाय०	
२९२	भाई धर्म बचालो बिगड़ी०	
२९४	भाई धर्म की नैया बचा०	
३०७	भारत के वह दिन लौट०	
३०८	भारत को सूना छोड़०	
३०९	भारत क्यों रुदन म०	
३२३	भारत के हक़ीक़त हाल०	
३३६	भारत की हाय पहली०	
३६१	भारत वर्ष से जी०	
४००	भाइयों के मेल मिला०	
६०१	भूले जाते हो तुम यार०	
६०२	भूला संसार पोप जाल०	
६७२	भारत वासी तुम कैसे०	

संख्या	टेक भजन	संख्या	टेक भजन
	म	३२९	मुल्क भारत की अविद्या०
		३३८	मदफन है इस्रतों का०
९	मद्दाह सब तेरे हैं०	३५६	मित्रो तुम इस को टा०
१६	मशहूर हो रहा है०	३६४	मैया मेरो बाप कुलीन०
२७	मय अर्थों के बोलो तुम०	३८७	मत विधवायें वाली रु०
५०	मालिक मेरी मदद०	३८८	मा बाप बाल विध०
५८	मेरी सुनियो नाथ पु०	३९४	माय मोरा तुरियां०
६४	मुझे भवसागर से०	४००	मेरे प्यारे मित्रो विधवा१
७५	मेरामन मातंग स्वामी०	४०६	मित्रो कैसे हो कल्याण०
७७	मेरी पड़ी भँवर में नैया०	४२७	मेरी प्यारी बहनो सोई०
९९	मेरी नैया पार लगा०	४४३	मेरी बहनो अकल कहां
१०२	मो से भई दयामय०	४४८	मेरी बहनो ने अपना०
१४७	मुख भजन करन को०	४५३	मेरी भोली बहनो०
१५१	मगन ईश्वर की भक्ती०	४७३	महा ऋषि जो हुये०
१५३	मन सोच समझ चन०	४९३	मत वेश्या के फंदे में
१५५	मानो कहा हमारा कु०	४९४	मानो २ नसीहत हमारी०
१६२	मेरी विनती सुनो धर०	४९७	मत रंडी का नाच करा७
१६९	मत लड़ना आपस में	५०७	मर यह दीन जाते हैं०
१९२	मुखड़ा क्या देखे दर्पण०	५३१	मत जगमें जीव सताय०
२१२	मत पैंठे मति अभि०	५३३	मांसाहारी लोगों ने०
२४९	मत पढ़ो काई जन०	५३४	मांस भक्षण की कोई०
३१५	मेरा वैदिक फुलवरि०	५३८	मत पियो शराब या०
३२५	महा भारत दुःखदाई०	५७२	मुफस्सिल पोपों०

१८ अनाथ पुकार …. ४४६ …. ४५२
१९ जुआरियों को शिक्षा …. ४५२ …. ४५६
२० गौ रक्षा विषय …. ४५६ …. ४६२
२१ मांस भक्षण निषेध …. ४६२ …. ४७५
२२ मादक वस्तु निषेध …. ४७५ …. ४९१
२३ अग्नि होत्र विषय …. ४९१ …. ४९४
२४ वेद विरुद्ध मत खण्डन …. ४९४ …. ५६६
२५ धर्म वीर …. ५६६ …. ५७९
२६ महर्षिस्वामी दयानन्द सरस्वतीकीदया५७९ …. ६०१
२७ होली व बसन्त आदि …. ६०१ …. ६०९
२८ अभक्ष पदार्थ निषेध …. ६१० …. ६१४
२९ धन्यवाद आदि विषयक भजन …. ६१४ …. ६२०
३० आर्ती तथा शान्ति पाठ …. ६२० …. ६२३
३१ नियम आर्य समाज …. ६२३ …. ६२४

ध्यान दीजिये:—संगीत रत्नप्रकाश उत्तरार्द्ध के पाचों भाग भी अर्थात् ६-७-८-९-१० वां भाग भी छप गया है मूल्य १) सजिल्द १≤)

——:*:——

❀ सूची-पत्र ❀

संगीत-रत्न-प्रकाश पूर्वार्द्ध ।

❀ पाचों भाग ❀

संख्या टेक भजन

अ

१ अब मैं हूं प्रभु शरण॰
६७ अब तो प्रभु दया करो॰
६४ अय सनम तू दिखा मु॰
१०१ अब तो दया करो क॰
११८ अब ही से सुधार करो॰
१२२ अब तो तज माया मोह॰
१२४ अरे मतिमन्द अज्ञानी॰
१६७ अब त्याग के वैर वि॰
१८२ अब तो त्यागो तनिक॰
१८३ अब न सोओ जागो॰
६८८ अब तो सुरत संभाल॰
२२५ आंखियां लागी समय
२६६ अब तो चेतियो जी॰
२६७ अपने देश की रे अब॰
२६८ अब तो जागियो जी के॰
२७१ अब जागो भारत बा॰
२६१ तो अबुध आलसी॰
३२६ अविद्या पापिन जगत॰
३३३ अमली जीवन को क्यों॰
३८४ अबतर आंसू बहाना॰
४३८ अर्ज यह बहनो हमारी॰
४५५ अब से न स्याने वुला॰
५४८ अब हुक्का सर्दार॰
५५० अब तो हुक्के को छोड़॰
५४८ अरी अविद्या पापिन॰
५६४ अब के देव हमारे देखो॰
५६८ अति भ्रष्ट पुरान बना॰
६०८ अब तो मतिमन्द बना॰

संख्या टेक भजन

६१४ अज्ञानी नर डरने लगे॰
६१६ अरे पोपो हमीं को तुम॰
६३८ अग्नी मतान्तरों की॰
६७१ अब तक होलीसोहोली॰
६७७ अनुग्रह करो सभी॰

आ

१२३ आनन्द झूला चाहो॰
१६४ आओ मित्रो हम तुम॰
२३८ आजानार इस वैदिक॰
२४० आओ देखो मुक्ती॰
३१६ आज कल वैदिक धर्म॰
३२७ आज भारत में छारही॰
५०४ आओ मिल बैठें सारे॰
५५७ आप में जब तक कि॰
५७१ आर्यों की चलन मुझे॰
६३६ आहा स्वामी दयानन्द॰
६६६ आर्यों ने पेसी होली॰
६८६ आज घर शान्ती भई॰

इ

१६५ इन्सान और हैवान में॰
१६७ इस काल बली ने हाय॰

संख्या टेक भजन

२२० इस थोड़े से जीवन पर॰
२२३ इस काल बली से॰
२८७ इसी कारण से तुम को॰
३११ इतनी जिल्लत पै भी॰
४५० इन भारत की अबलान॰
४८१ इस से रहना हुशियार॰
४८७ इस वेश्या विष की बेल॰
६३६ इस धर्म पै धुरू ने मु॰

ई

६ ईश्वर फक़त तुम्हीं॰
२२ ईश्वर तू मंगल मूल॰
३२ ईश्वर के सिद्ध करने॰
३८ ईश्वर लीजे खबरिया॰
५१ ईश्वर तुम सर्वाधार॰
६२ ईश्वर कर दूर हमारी॰
८४ ईश्वर निराकार मेटो॰
५५२ ईश्वर की आज्ञा पालो॰
५५६ ईश्वर को छोड़ और से॰
५५८ ईश्वर के बहाने और कि॰
५७४ ईश्वर से चित्त हटाए॰

उ

१२० उसको जो देखना है॰

संख्या टेक भजन

१४८ उस जगदीश को जी०
१७३ उमर सब ग़फ़लत०
२१० उस ईश्वर दीन दया०
२२६ उस बाप को बैरी०
२५७ उलटी हो गई रे बिन०
२६३ उठा अब नींद सेजा०
२७५ उठो तुम भी अय भारत०
२७६ उठ भारत का करो सु०
२७७ उठो नींद से अब स०
२६३ उठ मुँह धो डालो०
४०५ उन्हें मुझ पर तरस०
४१७ उठो बहनो पढ़ो विद्या०
४६० उसे क्यों त्यागारी जो०
५५५ उसके जीवन पर धू०
६४७ उस योगी ने संसारका०

ऋ

२६६ ऋषी ऋण कैसे०
५०५ ऋषी मुनियों के बा०
६४६ ऋषी ही इन्सां बना०

ए

५९ एजी प्रभु पारउता०
४३० एक पतिव्रत धर्म निभा०

संख्या टेक भजन

५०३ एक भाई के लेने से हार०

ऐ

२८८ ऐ बुत परस्तों बुतों के०
४६६ ऐ जेंटिल मैना देखो०
६२१ ऐली क्या देखी खना तु०
६७० ऐली होरी का छोड़ो०

ओ

२८ ओ३म् नाम को त्याग०
११७ ओंकार भजो अहंकार०
१३८ ओ३म् जपन क्यों०
६०३ ओ करिये कृपाजी कर्तार०

क

१० किस पर्दे में निहां है०
१४ किया जिस ने पैदा जहां०
२० क्या कोई गांव क्या सु०
३१ कहते हैं इधर ले का०
३६ कभी देख न सका कोई०
४३ कर कृपा पार उतारियो०
८० कीजे वेग सहाय प्रभु०
८३ कुछ नहीं है पास हमारे०
६६ करुणा निधि वेग०

संख्या टेक भजन

१०८ करिये स्वीकार विनती०
११३ क्यों दीन बन्धु मुझ पे०
१२६ कहे दश मनु महाराज०
१५४ क्या कीन्हारे तन पाय०
१६८ करो कुछ अब उपकार०
१७५ किसे देख दिल तू हुआ०
१८१ कर्मों का फल पाना०
१८४ करले सौदा समझ सो०
१६३ कभी मत भूल ईश्वर०
१६६ काल तोड़ि आवक में०
३०८ काहे खोवे उमरिया०
२०६ कोई तेरे काम न आवे०
२१६ कर लेहु प्रशंसित का०
२२१ क्या तन मांजतारे०
२२६ कब लेगा प्रभु का नाम०
२३० कर मलर कर पछता०
२३१ करो सदा सत कर्म०
२३३ कोई दम का यहां है०
२३४ करोरे भाईयो वेदक०
२४६ क़ौल वेदों का नहीं०
२४८ कल्याण रूप जो वाणी०
२५२ करके विद्या कुंच यहां
२५४ करो विद्या विस्तार जो०

संख्या टेक भजन

२६१ क्यों करता है भाई अ०
२७२ कैसा बिगड़ा ज़माने का०
२८१ कैसा शोक है रे भा०
२८२ कर लेहु सुधार फिर०
२६० क्या अब भी नहीं उठो०
३०० क्या करना था क्या०
३०५ कभी हम बलन्द ह०
३०६ कभी तेरा भारत नाम०
३१० क्या हुआ तुझे अय०
३२२ क्या हुआ ढङ्ग बेढङ्ग०
६३७ कैसी होगई है हालत०
३३६ कभी हम जहां में थे०
३५२ कम उमर के व्याह ने०
३५३ क्यों बाल विवाह रचा०
३५४ कहो बचपन की शादी०
३६६ कैसा ग़ज़ब है आह०
३८१ कहां तक चुप रहें या०
३८६ कह रोई विधवा बाल
३६३ क्या २ सितम हम पर०
४११ कन्या विचारियों पे जो०
४१५ कन्या पढ़ें जासो खोलो०
४१८ कौशल्या माता भई जग०
४१६ कैसी शिक्षादें माता ह०

संख्या	टेक	भजन
४२४	क्यों बनी हो गँवारी०	
४४२	पति पूजो बनो पिय०	
४५१	क्या अब भी नहीं उठोगी०	
४६१	कैसी पतिव्रता वह नारि०	
४६४	कट गई है बुद्धि ह०	
४६६	कुछ इनकी खता नहीं०	
४७२	कन्या गुरुकुल करो०	
५१९	कहां गई ऋषियों की०	
५२१	करें हैं मोहसन कु०	
५२३	कौन कहता है कि जा०	
५२४	कहो क्या तुमने फल०	
५३९	किसने यह बस्ती हि०	
५४३	कैसा पागल बनावे०	
५४६	क्यों दूध दही को छो०	
५७९	करो चेतन ब्रह्म उपा०	
५८३	क्यों स्वारथ के वश हो०	
५८५	किया धरम का लोप०	
५९५	कुछ काम न जप तप०	
५९९	क्यों पड़े भ्रम में भाई०	
६१३	कैसा छाया अज्ञान है०	
६१७	क्यों अपना पेट भरा०	
६५०	कीन्हा उपकार दया०	
६५४	किया तुमने स्वामी जी०	

संख्या	टेक	भजन
६५५	क्या २ कर दिखलाया०	
६६२	कहां है वह गुल जो०	
६७३	करो देशीका मान खांड़०	
६७४	क्यों नहीं करते मित्र०	
	ख	
४०४	खड़ी रोवे एक विधवा०	
५१५	खेलन में नफ़ा नहीं है०	
५३६	खाना खराब करादिया०	
	ग	
२६९	ग़ाफिल समय क्यों खो०	
३०२	गौ कन्या विधवा के दु०	
३०३	गौ कन्या दुख भरें रात०	
३२०	गया कहां पर बतादे०	
३२८	गिरे हैं देखो वर्ण आ०	
३८५	ग़मो दर्दो मुसीबत०	
४४०	गिरी हुई है दशा यह०	
५०८	गये मात पिता हमें छो०	
५६४	ग़लती है तेरी तलाश०	
५७५	गणपत का रूप बनाय०	
	च	
१९०	चर्खा काया रूप प्रभु०	

संख्या	टेक	भजन
२२८	चलना है मुसाफिर र०	
४२६	चेतोरी भारत नारी ओ०	
६२३	चाहे पोपों को सब०	
६३२	चले खांड़ की धार०	
	छ	
१२४	छोड़ो न तुम धरम०	
१८७	छोड़ो झूठे सब व्यय०	
२४७	छोड़ा पैरों का पहना०	
२५१	छोड़ो जर्दू का पहना०	
३६५	छोड़ दे अब चोरी पिया०	
५८०	छोड़ो ५ मेरे पिया नशा०	
६६३	छवि अनुराग की०	
	ज	
५	जगदीश जो बशर है०	
१७	जलवा दिखा रहा है०	
३९	जगदीश्वर तुम्हारा०	
६३	जगदीश शान्त शील०	
६६	जगत पिता हम तेरी०	
९७	जय जगदाधार जीवन०	
९८	जादिन अपनावैगे श्या०	
१३३	जपो जगदीश को०	

संख्या	टेक	भजन
१४०	जो हरि से प्रीति लगा०	
१४१	जो जगत पिता के प्रेम०	
१४९	जपो मुख से ओंकार०	
१८०	जीना दिन चार कारे०	
१८१	जुलम कर२के जलीलो०	
२०४	ज़रा तो सोच अयगा०	
२१८	ज़रा आंखें तो खोलो०	
२२२	जन्म सफल कर लीजि०	
२३९	ज़माने भर में वेदों की०	
२६५	जो चाहते हो धर्म कमा०	
३१७	जब तजा वेद विद्या को०	
३३१	जब से छोड़ी बान०	
३४४	जो नाम निकम्मे भा०	
३५५	जब से बाल विवाह०	
४००	जो आपद्धर्म बताया०	
४५६	जो चाहो स्वर्ग में वास०	
४५७	जो चाहती हो सुख०	
४७६	जब से यह मरियाद०	
४८०	जब से वेश्या लगी०	
५१२	जुआ पूरा है दुश्मन०	
५२५	जो है सब जग की०	
५२९	जुल्म करना छोड़ दे०	
५४५	जो चाहते हो खुशी०	

संख्या	टेक भजन
५५४	जब से छोड़ी बान०
५७८	जग ठगने का व्यावहार
५८०	तो पत्थर पै ईमान०
६०७	जो दुख सागर से०
६१२	ज्योतिष का जाल०
६३४	जिनकी धर्म पै हो कु०
६६८	जागो२ हो भाई विपत०
६८१	जलसा सबको मुबा०
६८५	जगदीश हर०
	झ
१८५	झूठी देखी जगत की०
५६१	झूठे ध्यान से जी०
	ट
२६५	टुक देखो तो आंख०
	ठ
६१०	ठग बहुत फिरें संसार
	ड
४६६	डूबे जाते हो क्यों यार०
	ढ
२८५	ढूँढा शारे शास्त्र पुरान०

संख्या	टेक भजन
५६२	ढूँढ हारी मेरा प्यारा०
	त
२	तेरा ओ३म् नाम मुझे०
११	तेरा निशां कहां है अय०
१५	तेरा अज अविकार०
१८	तेरा नूर सब में समा०
२१	तूही अज निर्विकार०
२३	तेरा नाम ओंकार०
२५	तू परिपूरन नाथ ज०
६०	तुम ही अब नाथ उ०
६१	तेरा शरन में आनकर०
७०	तू ही है प्रभु नाथ ह०
७२	तू ही प्रभु अविकारी तू०
७६	तुम सुनो दीन के ना०
८१	तुम हो पिता हमारे०
८३	तुम ही रक्षक हो महा०
१४६	तुम भले जगत पिता०
१५२	तेरा बिन ईश्वर कोई०
१७२	तुम चलो मित्र इस०
१७८	तैंने प्रभु का नाम बि०
२००	तू क्यों करता अभिमान०
२६२	तूने सारी उमरिया०

संख्या	टेक भजन
२७६	तुम्हारे क्या हाथ आवे०
२८३	तुम्हे अय भारत निवा०
२८६	तुम्हे शर्म ज़रा नहीं०
३१२	तजि २ निज धर्म मित्र०
३५१	तुम से वचन भरा के०
३७६	तुम क्यों नहीं मित्र०
४०७	तड़पती है पड़ी बेवा०
४१०	तुम सुनो पुकार कन्या०
४५४	तुमने बुलाये भाभी०
४८४	तजि उत्तम घर की नारी
५०६	तुमही हो मा बाप कोई०
५७३	त्यागन करो सकल नर०
५६१	तरेगा तो वह ही जाके०
५६३	तू कहीं घूम ले प्यारे०
५६६	तुमही करना इन्साफ०
६००	तुम करो विचार हिन्द०
६२५	तुमने जो कुछ भी किया०
६४१	तुम्हीं पर मुंसफी ठहरी०
	थ
२३४	थोड़े से जीने पर क्यों०
	द
१२	दीनबन्धु जग विदित०

संख्या	टेक भजन
४६	दयानिधि सब दुख दूर०
५२	दीजो प्रभु दान अपनी०
६८	दया करो जन पै मेरे०
७३	दीन बन्धु दीनों के०
७४	दीनानाथ तुम्हारा०
७६	दयामय छोड़कर०
८६	दीनानाथ दयाकर०
११०	दया दृष्टि हमारे०
११४	दया निधान हमारी०
१२८	दश चिह्न धर्म के०
१७१	देखो रे मित्रो ऐसे नि०
१७७	दौलत की हाय माया०
२४२	दुनिया में चारों वेदों०
२६४	देखो आंख उघारो रे०
२७४	दिल अपना राह हक
३२२	दुख पावै क्यों भारत०
३३४	दिन २ भारत गिरे है०
३३५	देखोरे भाइयो बि०
३४३	दश कुलों का त्यागन०
३४६	देखोरे भाइयो ऐसे वि०
३७७	दुखी रोती थी बिधवा०
३८२	दुख दर्द अपना किस०
४५८	देखो अबला धर्म गई०

संख्या	टेक भजन
६०९	पाओगे नर्क ज़रूर तुम०
६१९	पोप लीला कही नहीं०
६२४	प्यारे पापों काहे उदास०
६८२	प्यारे २ सुजन मिल गा०
	फ
२२६	फिर दांव नपैसा बारबार०
२३७	फैलादो ब्रह्मज्ञान०
२५०	फ़ारसी ज़बान पढ़०
२५९	फँस कर प्यारे अज्ञान०
४२१	फूहर आई घर में नार०
४९०	फ़ायदे सुनो हज़ार०
६५६	फेर ज़िन्दा किया रे०
	ब
५०	बहुत आशा तुझ से०
८९	बिनती करुणा निधान०
९२	बिना दर्शन किये तेरे०
१०३	बिनती है मेरी आप से०
१११	बिन आप के प्रभु जी०
११५	बिनती कर दीनदयाल०
१७०	बचन तू मीठा बोल०
२२७	बांधा न गठरिया अ०
२४३	बर वैदिक धर्म प्र०
२५५	बिन विद्या नहीं सुधरे०
२५८	बिन विद्या के संसार०
३४९	बचन दो सात जब ह०
३५०	बचन देता हूं मैं तुझे०
३५७	बच्चों का विवाह क्यों०
३५८	बच्चेपन में करें विवाह०
३५९	बचपन में ब्याह संतति०
३६०	बचपन के ब्याहने से०
३६६	बुढ़ापे की अवस्था०
३७०	बूढ़े छैला का ब्याह०
३७१	बनि के बन्ना उमर वा०
३७२	बना बनिबे को बुढ़ापे०
३७३	बना बनिबे को बुढ़ा०
३७४	बुड्ढे बाबा करें विवाह०
३७८	बिनय सुनलो बुज़ुर्गों०
३७९	बिधवा नार की रे०
३८६	विधवा अनाथ बि०
३९०	विधवन की भारी भीर०
३९१	विधवा रोरो करें पुकार०
३९३	विधवों का संताप०
३९६	विधवा लाचार व्यथा०
३९७	विधवा रोवें दे किल०
३९८	विधवा रोवें हैं दीन०

सदा ही बुद्धि रहे शुद्ध स्वामी हमारी।
बनें सभी के प्रेमी विद्वेष मूलहारी॥
कीजे निर्मल पिता जी विचार॥ मेरी० ३॥

प्राणी भूले हुए जब कि कष्ट पाते हैं।
तो ईश तुमको ही भूले हुए बताते हैं॥
करेंगे जैसा मिलेगा, यह कहके गाते हैं।
तुझे भी कर्म के आधीन कर बनाते हैं॥
प्रेम गति है तुम्हारी अपार॥ मेरी० ४॥

ग़ज़ल ११२

क्यों दीनबन्धु मुझ पै तेरी कुछ दया नहीं।
आश्रित तेरा नहीं हूँ कि तेरी प्रजा नहीं॥
मेरे तो नाथ कोई तुम्हारे बिना नहीं।
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं॥

माना कि मेरे पाप बहुत हैं बड़े प्रभू।
कुछ उनसे न्यूनतर तो तुम्हारी दया नहीं॥
करुणा करोगे क्या मेरे आंसू ही देखकर।
जी का भी मेरे दुःख तो तुमसे छिपा नहीं॥

जानेगा कोई क्या कि है दासों का तुझको पक्ष।
दुष्टों का सर्वनाश जो तूने किया नहीं॥
क्यों मुझ को दुःख देते हैं लेते हैं मेरा शाप।
लोगों का मैंने कुछ भी लिया और दिया नहीं॥

तुम भी शरण न होगे तो जाऊँगा हा ! कहां ।
अच्छा हूँ या बुरा हूँ किसी और का नहीं ॥

ग़ज़ल ११४

दयानिधान हमारी व्यथा सुनो तो सही ।
पुकार पुत्र की अपने पिता सुनो तो सही ॥
जो अपने लोगों के ऊपर दया नहीं करते ।
कहेगा आप को संसार क्या सुनो तो सही ॥
जो पापियों को भी देते हो शान्ति की आशा ।
कहां गई वह तुम्हारी दया सुनो तो सही ॥
मिलेगा आप को क्या लेके क्षुद्र कीट के प्राण ।
बिगड़ के हम से बनाओगे क्या सुनो तो सही ॥
जो हम से फेरते हो मुँह सदैव हो राजा ।
किसी की ओर हैं हम क्या प्रजा सुनो तो सही ॥
जो भूल बैठे हो अपने प्रताप को पेसा ।
तो होगी इसकी भला क्या दशा सुनो तो सही ॥

❁ २ उपदेश ज्ञान वैराग्य ❁

भजन ११५

बिनती करो दीन दयाल की, जो है सबका हितकारी ।
नहीं भरोसा है पलभर का, काम न आवे कोई घरका ॥
सुमिरन करलो जगदीश्वरका, छोड़ो प्रकृति कुचाल की ।
इतनी है सीख हमारी ॥ जो है सब० १ ॥

जग में कोई नहीं तुम्हारा, जीते जी का धंधा सारा ।
किसके मात पिता सुत दारा, पूर्ति न होगी ख्याल की ॥
क्यों नाहक उम्र गुज़ारी ॥ जो है सब० २ ॥

काम क्रोध मद लोभ बिसारो, दशो इन्द्रियां अपनी मारो ।
एक धर्म को मन में धारो, फांसी ममता जाल की ॥
तोड़ो हो मुक्ति तुम्हारी ॥ जो है सब० ३ ॥

बागबगीचा क़िला तबेला, दुखदायक तजो सभी झमेला ।
आख़िर जावे जीव अकेला, घड़ी आवे जब काल की ॥
पड़ी दौलत रहे मुरारी ॥ जो है सब० ४ ॥

दादरा ११६

भूला डोले जगत में प्रानी॥

करत फिरत है मेरी मेरी, सुत कुटुम्ब सम्पति रजधानी ॥ १
न्याय अन्याय कछू नहिं जाने, करत फिरत अपने मनमानी ॥ २
अपना धरम नहीं पहँचानत, निशि दिन काम करै शैतानी ॥ ३
समझाये भी समझत नहीं, होगी पीछे बहुत हैरानी ॥ ४
हटत नहीं बलदेव बदी से, जग में तेरी तनक ज़िंदगानी ॥ ५

ठुमरी ११७

ओंकार भजो, अहंकार तजो, पछताओ नहीं जो भई सो भई ।
अविचार अनीति तजो मनसे, मदमस्त रहो मत यौवन से ।
उपकार करो तन मन धनसे, इतनी वय बीत गई सो गई ॥१॥
परका दुख देख सहाय करो, बिगरै नहिं धर्म उपाय करो ।

करनी शुभ अवसर पाय करो, अबलौं तुम नींद लई सो लई ॥२॥
कर ध्यान सनातन चाल चलो, अघरूप हुताशन में न जलो ।
अबतो अपने दोउ हाथ मलो, तुमने विष बेल बई सो बई ॥३॥

ठुमरी ११८

अबहीं से सुधार करो अपना, नहिं बिगरी का कुछ सोच करो ।
अति दीन कहा प्रभु शरण गहो मत जीवन में अघ ओघ भरो ।
वेदों के उपदेश सुनो, मन के ममता-मय दोष हरो ।
विनती किशोर करै सबसे, शिर पै अपने मत दोष धरो ॥

गजल ११९

परम पिता का प्रेम मन में, जो तेरे सूरख भरा हुआ है ।
तो मोक्ष आनन्द हाथ बांधे, हमेशा सन्मुख खड़ा हुआ है ॥
है जिनको मुक्ती के पदकी इच्छा, गुजारें आयू वह इस तरह से ।
कि तार ईश्वर के जपका मन में, हरएक सायत बँधा हुआ है ॥
जगतपिता के जो देखने को, भटकते फिरते हैं बेसमझ हैं ।
तलाश उसकी अबस है बाहर, जो अपने अन्दर रमा हुआ है ॥
क्लेश क्योंकर न दूर जावें, वह शान्त हरदम न होवे क्योंकर ।
कि जिसका ईश्वर की यादमें मन, बड़ी लगन से लगा हुआ है ॥
न मनहो स्थिर कभी भी उसका, समाधी उसकी लगे नहर्गिज़ ।
जो इस जहांके विषयों के अन्दर, आसक्त होकर फँसा हुआ है ॥
बुरा जो औरों का चाहते हैं, बुराई होती है आखिर उनकी ।

वही भला है कि जिससे ह्यांपर, कभी किसी का भला हुआ है ॥
वही जहां में है मर्द मैदां, उसी को होती है कामयाबी ।
पराये उपकार पर कमर को, जिस आदमी ने कसा हुआ है ॥
जगन्नियंता है सर्व व्यापक, हर एक हरकत वह देखता है ।
वह सबसे वाक़िफ़है जो किसीने, किसी जगहपर [illegible] हुआ है ॥
बुरे अमल की सज़ा है मिलती अवश्य इस में नहीं है संशय ।
अगरचे ज़ाहिर में कर्म कोई, हरएक नज़र से छुपा हुआ है ॥
मनुष्ययोनी का लाभ उसीको, उसीका जीवन सफल है केवल
कि जिसने तनमनको मनके निश्चयसे, ईश्वर अर्पण करा हुआ है

ग़जल १२०

उस को जो देखना हो, योगी हो ध्यान वाले ।
आनन्द हम जो चाहें, हों ब्रह्म ज्ञान वाले ॥ १ ॥
क्या शोक है फिर इसका, गर हम नहीं रहेंगे ।
जब रहसके न यहां पर, विक्रम सी शान वाले ॥ २ ॥
वह रोज़ हो खुशी का, तक़लीद में उमर के ।
वेदों के मोतक़िद हों, ये सब कुरान वाले ॥ ३ ॥
वेदों की फिर हक़ीक़त, मालूम हो उन्हें कुछ ।
वेदार्थ करना सीखें, इंगलिश ज़बान वाले ॥ ४ ॥
हों ओरेम् के उपासक, अमरीका और यूरुप ।
जापान चीन वाले, हिन्दोस्तान वाले ॥ ५ ॥
उन देशों को सुधारें, अब चल के आर्य लीडर ।

अब तक जो मांस मदिरा, आदि हैं खाने वाले ॥ ६ ॥
हम को तो चाहिये है, एक आत्मिक इमारत ।
हम क्या करेंगे बनकर, आली मकान वाले ॥ ७ ॥
जितने हैं दृष्टिगोचर, होंगे फ़िदा फ़ना सब ।
अदना सी शान वाले, आली निशान वाले ॥ ८ ॥

ग़ज़ल १२१

प्रभु को छोड़ कर तूने लगन किस से लगाई है ।
हुआ नादान क्यों ऐसा समझ क्या बेच खाई है ॥
जो है सब सृष्टि का पालक भुलाया उसको तैं मूरख ।
बुतों को पूज कर प्यारे नफ़ा क्या तूने पाई है ॥
जो है हर वस्तु में व्यापक ईश निराकार अविनाशी ।
बना कर उसकी जड़ मूरत मन्दिर में जा बिठाई है ॥
वह है मौजूद सब घट में हमेशा देखता सब को ।
बदी नेकी का फल देता वह ईश्वर सब का न्याई है ॥
नहीं वह जन्म मृत्यू के कभी बन्धन में आता है ।
बताकर जन्म क्यों उसको वृथा तुहमत लगाई है ॥
छुटा नहीं मैल है मनका नहाया लाख तिर्वेनी ।
लिखाया नाम सन्तों में भरी दिल में खुटाई है ॥
राम और कृष्ण सत पुरुषोंकी क्यों निन्दा करें मूरख ।
बनाकर स्वांग क्यों तैंने हँसी उनकी कराई है ॥
हज़ारों दीन और दुखिया न पाते एक टुकड़ा तक ।

तैं दे दे दान दुष्टों को वृथा दौलत लुटाई है ॥
ज़रा अब होश में आजा उठा ग़फ़लत के परदे को ।
भजन बलदेव कर उसका जो सबका खुशनुमाई है ॥

भजन १२२

अबतो तज माया मोह भजन हरि कीजे ।
क्यों सुख की नींद सोता है, जग पाप बीज बोता है ।
अनमोल समय खोता है, फिर अन्त समय रोता है ॥
इस भांति करो तदबीर, मिटै सब पीर, हिये धर धीर ।
शरण प्रभु लीजे ॥ अबतो० ॥
जौलों अरोग तन तेरा, निर्बलता ने नहिं घेरा ।
करलो सुमिरन प्रभु केरा, मिले अन्त में सुक्ख घनेरा ॥
फिर होत न जप तप ध्यान, मिटत सब ज्ञान, कहांलो मान,
ध्यान चित दीजे ॥ अबतो० ॥
यक रोज़ काल खावेगा, कुछ साथ नहीं जावेगा ।
कर मल मलके पछितावेगा, कृत कर्मका फल पावेगा ॥
कर भक्ति सुबह अरु शाम जपो हरिनाम, मिले आराम,
यतन कुछ कीजे ॥ अबतो० ॥
यह मात पिता सुत दारा, नहिं होवेगा कोई तुम्हारा ।
तन हूँ है है जरि छारा, जिसका घमंड है सारा ॥
यक धर्म रहेगा साथ, न अरु कुछ तात, मित्र की बात,
ध्यान धरि लीजे ॥ अबतो० ॥

पूर्वी १२३

आनन्द झूला चढ़े जो झूलन, पैंग विचार बढ़ाय रे।
दया धर्म के खम्भे गाढ़े, ज्ञान की डोर लगाय रे।
सत्य की पटली पै बैठि प्रेमसों, ध्यान की पेंग लगाय रे॥१॥
है एकाग्र शुद्ध चित झूले, बनिता वृत्ति बिठाय रे।
दृढ़ आसन सों बैठि धैर्य अवलम्बन छूट न पाय रे।
प्रेम सहित विज्ञान डोर गहि, सतगुरु जबहिं झुलाय रे।
भूमि गिरनके शोक अरु भयते, निश्चय तब छुट जाय रे॥३॥
शिवनारायण यहि विधि झूलत, ऊर्ध्व पैंग जब जाय रे।
सुन्दर अमर नगर की गलियां, तब कहुँ देखन पाय रे॥४॥

क़व्वाली १२४

छोड़ो न तुम धरम को, चाहे जान तन से निकले।
सच्चा सखुन हो लेकिन, शीरीं दहन से निकले॥
पाया है उच्च जीवन, इसकी विचारो क़ीमत।
ऐसा प्रयत्न करिये, अविचार मन से निकले॥
संगति सुजन जनों की करनी सदा भली है।
जिस से कुवासना-मल, अन्तःकरण से निकले॥
उपकार ऐसा करिये, संसार कीर्त्ति गावे।
स्वार्थन्धता अलहदी मनसे वचन से निकले॥
रहना नहीं किसी को इस लोक में सदा है।
कर्त्तव्य की सभी त्रुटि राधाशरण से निकले॥

भजन १२५

टेक-संग धर्म ही चलनेहारा, कोई दम का रैन गुज़ारा।
करो होश लो अब जागो, ग़फ़लत का निंदिया त्यागो, जी।
रक्खो प्रभु प्रीतम का सहारा॥ को० १॥
जब मृत्यु वारन्ट ले आवे, घड़ी पल नहीं टलने पावे, जी।
रोवे जियरा हो दीन विचारा॥ को० २॥
रोवे सब दिन माय तुम्हारी, छठे मास बहनिया प्यारी, जी।
त्रिया नयन दो दिन जल धारा॥ को० ३॥
करो दान धर्म कुछ प्यारो,अपने अन्त समयको सुधारो, जी।
चूका समय न वारम्वारा॥ को० ४॥
हरिश्चन्द्र से सतव्रतधारी,बिके आप भी संग सुत-नारी,जी।
पर धर्म से पग नहीं टारा॥ को० ५॥
विद्यां दान है सब सुखकारी,वह गुरुकुलसे को अधिकारी,जी
पाठक तन मन धन क्यों न वारा॥ को० ६॥

भजन १२६

दोहा-भाई तू जो लोक में, चाहे निज कल्याण।
तो भज उसको प्रेम से,जो तुझ में रमभाण॥
टेक-प्राणी जप ईश्वर का नाम, किस ग़फ़लत में तू सोवे।
चलना है रहना न यहां पर, क्यों सोया होकर तू बेडर।
काल का धौंसा बजे शीश पर, मत होना बदनाम॥

करले जो कुछ भी होवे ॥ किस गफ़लत० १ ॥
विषय भोग में समय गँवाया, नहीं ध्यान ईश्वर का लाया।
काल ने जिस दम आन दबाया, कोई न आवे काम ॥
कर मल २ के फिर रोवे ॥ किस गफ़लत० २ ॥
करके पाप तू द्रव्य कमावें, कुटुम्ब सभी खुश होकर खावे।
सज़ा अकेला तूही पावे, अक्ल हुई क्यों खाम ॥
अनमोल समय को खोवे ॥ किस गफ़लत० ३ ॥
आलस तज भक्ती कर प्यारे, क्यों तू अपना जन्म बिगारे।
शंकर मन को क्यों नहीं मारे, कर के प्राणायाम ॥
आनन्द तभी कुछ होवे ॥ किस गफ़लत० ४ ॥

भजन १२७

भजो जी भजो प्रभु दुःख निवारण हारे।
दुष्टनके मारन हारे, श्रेष्ठन के पालन हारे, दुःखन के टारनहारे।
सृष्टी के पालक, पोषक, रक्षक औ संहारन हारे ॥भजो० १॥
ऐसे प्रभो को हे भाइयो काहे बिसराया।
ईश्वर को नहीं ध्यान में है काहे लाया ॥
फिरते हो मारे मारे, दुनियामें भटके सारे, ज्ञानसे परहो न्यारे।
क्या नादानी, है लासानी, धन दौलत लुटवावन हारे ॥भजो०२॥

भजन १२८

दोहा-सदा धर्म्म करते रहो, जब लग घट में प्रान।
धर्म्मशास्त्र में दश लिखे, उसके खास निशान ॥

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म्मलक्षणम् ॥

टेक-दश चिन्ह धर्म्म के भाई, महाराज मनू बतलाते।
पहले तुम धीरज को धारो, दूजे सब के वचन सहारो।
तीजे मन अपने को मारो, यही उपदेश सुनाते ॥ महा० ॥
चौथे तज चोरी का पेशा, मिटें सकल नर तेरे कलेशा।
रहो पांचवें शुद्ध हमेशा, यों सब ऋषि मुनि गाते ॥ महा०॥
छठे इन्द्रियां वश में करना, सप्तम चित्त विचार में धरना।
अष्टम विद्या मन में भरना, जो तुम मनुज कहाते ॥ महा०॥
नवें सत्य को धारण कीजे, दशवें क्रोध नाश कर दीजे।
प्रभू को सुमिर मुरारी लीजे, क्यों हो जन्म गंवाते ॥महा०॥

भजन १२९

कहे दश मनु महाराज चिन्ह धर्म्म के भाई।
पहले तुम धीरज धारो, दूजे कटु वचन सहारो।
सिद्ध हों सारे काज ॥ चिन्ह० १ ॥
तीजे निज मन को मारो, चौथे स्तेय बिसारो।
सुहबत भली विराज ॥ चिन्ह० २ ॥
पञ्चम परिशुद्ध कहाओ, छठवें इन्द्री बशलाओ।
बड़ाई करे समाज ॥ चिन्ह० ३ ॥
सातवें विचार बढ़ाओ, अष्टम विद्या फैलाओ।
बनो सब के सिरताज ॥ चिन्ह० ४ ॥

नववें संतका है धारण, दशवें कर क्रोध निवारण।
साजो सुन्दर साज ॥ चिन्हैं० ५ ॥

भजन १३०

सब कहो महाशय, ओ३म् ओ३म् ओ३म्।
सब नामों से यह प्यारा, आदि काल से श्रुति उच्चारा।
मूल मंत्र महिमा है अपारा, इसे धारण करो सारी कोम ३॥सब१
अकार उकार मकार मिलाकर विश्वरूप वैराट दिखाकर।
हो प्रसन्न नाना विधि गाकर, सहित हृदय और रोम ३॥सब२
काम क्रोध मद लोभको हरता,शोक मोह सब हलके करता।
शुद्ध प्रकाश हिये में भरता, जैसे गगन में रवि सोम ३॥सब०३
घीसा कहे भदीपुर वासी, मुक्ति देत ईश्वर अविनाशी।
आवागमन की मिट जाय फांसी,बढ़े भक्तिका उरमें जोम् ३सब४

भजन १३१

प्रभु को भजले प्राणी, होजा पार पार पार।
कुछ खबर नहीं पल पलकी, ओढ़ी है माया छल की।
सुन मूढ़ कालके दल की, पड़ेगी मार मार मार। प्रभू को०१॥
नहिं मात पिता कोई साथी, तिय बन्धु और सुत नाती।
सब मतलब के हैं संगाती, घर ही खार खार खार। प्रभू को०२॥
प्रभु अजर अमर अविनाशी, हैं सब घट घट के वासी।
काटेंगे दुखों की फांसी, दया कर धार धार धार। प्रभू को०३॥

जो करे भजन ईश्वर का, वह शुद्ध व्रती अन्तर का।
हो प्यारा दुनिया भर का, तरे जग बार बार बार।प्रभूको०४॥

भजन १३२

सब ही बन जइयें-सो ओंकार धाये से।
अजर अमर अविनाशी अनुपम,उसके आगे सीस झुकाये से१
मात पिता गुरु भ्रात वही है, नित बालकको कंठ लगाये से२
इन्द्र वरुण और धनी वही है, अन्नदान और जल बरसायेसे३
काम क्रोध और लोभ मोह सब छूट जांय सब गुणगण गायेसे४
प्राणोंका भी प्राण वही है, अन्तःकरणमें ज्ञान ज्योति लाये से ५
दीनानाथ भी नाम उसीका, भूमण्डल का भार उठाये से ६
जपत रहो मत भूलो भाई,मेधा बढ़ेगी ध्रुव ध्यानमें समायसे७

ग़ज़ल १३३

जपो जगदीश को प्यारे वही एक मुक्ति का दाता।
वही सब सृष्टि का पालक वही सब का सँघाता है॥
सिवा उसके न है कोई हितू इस जीव का जग में।
न सुत दारा न परिवारा न बन्धू है न माता है॥
करो अभिमान मत धनका यह है बादलकी परछाईं।
धरम का कीजिये संचय वही यक साथ जाता है॥
पड़े ग़फ़लत में क्या सोते सहर अब होने वाली है।
सफ़र का बांधले सामां अभी वह काल आता है॥
सताना बेगुनाहों का सुनो अच्छा नहीं हरगिज़।

सताया जायगा वह भी किसी को जो सताता है ॥
भजन बलदेव ईश्वर का हमेशा चाहिये करना।
वही सब का है पितु माता वही सब का विधाता है॥

ग़ज़ल १३४

अरे मतिमन्द अज्ञानी जनम हरि भक्ति बिन खोया।
बिगारा काम अपने को रहा ग़ाफ़िल सदा सोया ॥
पड़ा परदा जहालत का अक़्ल की आंख पर तेरे।
सुधा के खेत में तैंने ज़हर का बीज क्यों बोया ॥
विषय में होके मतवारा किया बरबाद नर तन को।
विमुख निज ईश से होकर वृथा शिर भार ही ढोया ॥
भलाई खल्क़ की खातिर तुझे भेजा था मालिक ने।
मगर अफ़सोस उलटाही चला तू जानकर गोया ॥
जो करना फ़र्ज़ था तेरा किया उसको न क्यों मूरख।
चला आखिर को दुनिया से तो फिर बलदेव क्यों रोया॥

ग़ज़ल १३५

भजन भगवान का करले भरम में क्यों भटकता है।
यहां तेरा नहीं कोई वृथा क्यों सर पटकता है ॥
भजन बिन ज़िन्दगी गर तू वृथा नादान खोवेगा।
पड़े फिर गर्भ में जहां पर तू उलटाही लटकता है ॥
नहीं फल पायेगा जब तक पड़ा है कुफ़्र में काफ़िर।
हृदय में काम का कंटक तेरे जब तक भटकता है ॥

लगा मन ब्रह्म से सम्यक् जो है कल्याण की ख्वाहिश।
नहीं तो काल अब तुझको कोई दम में गटकता है ॥
बसे बलदेव काया में, वही सत् मित्र है तेरा।
हमें हर बुराई से, वही सबको हटकता है ॥

भजन १०६

नृत्य लखो ये अनोखा ही भाई।
शामियाना नभ भूमि चांदनी, दश दिर दिशा समुदाई। ॥
तारागण के झाड़ टँगे हैं, त्रिगुण की बेल सजाई। ॥
सूर्य चन्द्र दोऊ मशाल जली हैं, पंखे की वायु चलाई। ॥
मेघ गुलाबपाश बरसत जल, गर्ज के स्वरन मिलाई। ॥
कर्म जीव बँध रहे हैं, आवागमन दिखराई। ॥
इन्द्रनाम का वह जगदीश्वर, जो रहा नृत्य कराई। ॥
फलदे अनेक अशुभ-शुभ उनके, न्याय युक्त जगराई। ॥
पाठक त्यागो मिथ्या नाच को, आवागमन लो छुटाई। ॥

भजन १३७

सुमिन बिन गोते खाओगे।
क्या लेकर तुमने जन्म लिया है क्या लेकर चले जाओगे। सु०॥
मुट्ठी बांधे आये जग में, हाथ पसारे जाओगे। सु०॥
यह तन है कागज़ की पुड़िया, बूंद पड़त गल जाओगे। सु०॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, ओ३म् बिना पछिताओगे। सु०॥

भजन १३८

ओ३म् जपन क्यों छोड़ दिया ॥ तूने० ॥
काम न छोड़ा, क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ।
झूठे जग में दिल ललचाकर, असली वतन क्यों छोड़ दिया ।
कौड़ी को तो खूब सँभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ।
जिस सुमिरन से अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ।

भजन १३९

प्यारे प्रीतम से प्रीति लगाओरे जिन तारनारे ।
बिन भगवान कोइ जन तेरे अन्त काम नहिं आवे ॥
वही भगवान, अति दयावान, प्यारे उसी की रहो शरना ।
जो भवसागर तरना, नहिं योनों में दुख भरना ।
वेद चार, बार बार यही रहे पुकार ।
सचा भजन बिन, सब अकाज, तेरा दान पुण्य करना ।
प्यारे प्रीतम से प्रीति लगाओरे ॥

भजन १४०

जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम को जाता है ।
वह भय न काल से खाता है, निज मन में धीर बंधाता है ॥
वह शान्तिशील बन जाता है, सब दुख उसका मिट जाता है।
दुनियां में सब को भाता है, वह महा पुरुष कहलाता है॥
नहीं कोई उसे थकाता है, नित निर्भय हरियश गाता है।
जो हरि से प्रीति लगाता है, वह मोक्ष धाम० ॥ १ ॥

यह क्यों नहिं बात विचारी, होती शक रफ़ै तुम्हारी ।
कर विचार शंका तेरी, हो दूर लगे नहीं देरी ॥

कर विचार शंका कटै, तिमिर सब हटै, अविद्या घटै,
काहे व्यर्थ विचार में, नित २ शंका लाता है ॥कोई० ३॥

वेदों की विद्या कहीं गई सूक्ष्म है ।
क्या जगत् में चक्षू आदि की रचना कम है ॥
जब रचना अचरज भरी करी यह सारी ।
फिर निराकार को वेद रचना क्या भारी ॥

जो सवाल तुमने कीन्हा, उसका उत्तर दे दीन्हा ।
हो और अगर कुछ कहना, तो कहो मौन क्यों रहना ॥

कहे तेजसिंह मतिमन्द, बना के छंद, मिले आनंद, देखो
नर संसार में, बिन विचार दुख पाता है ॥ कोई० ४ ॥

भजन ३६

प्रश्न (ख्याल)

यह तो सब कुछ ठीक आपने जैसा कुछ फर्माया है ।
पर एक बात है शेष इसी से नहीं समझ में आया है ॥
जब प्रकाश से युक्त ईश को वेदों ने बतलाया है ।
प्रकाश है तो है क्या वो जो आंखों से न लखाया है ॥
प्रकाश सबको दीखना चहिये जैसे धूप और छाया है ।
फिर ईश्वर का प्रकाश हमको क्यों न दीखने पाया है ॥

उत्तर—

दोहा—अय जिज्ञासु समझकर, कर इस पर विश्वास।
कभी नज़र आवे नहीं, जो प्रकाश है खास॥

कभी देख न सका कोई, उस स्वतः प्रकाश को भाई। टेक॥
मसलन ज्यों सूर्य्य की शुवायें, किसी छिद्र में होकर आयें।
पड़ें नज़र कि जहां रुक जायें, दें बिच में न दिखाई॥उस० १॥
जाके शुवा जिस शै में पड़ी है, देखो वहां भी नज़र से बरी है।
उस शै की ही दमक रही है, सफ़ेदी सुर्खी स्याही॥इस० २॥
इस से भी जब वह सूक्ष्म है, व्यापक जगह जगह जो सम है।
किसी जगह में ज्यादा न कम है, कैसे पड़े लखाई॥उस० ३॥
उत्तर दे दिया इसका जानों, नेक न शंका मन में मानों।
तजदो पक्ष न झगड़ा ठानों, तेजसिंह दरशाई॥ उस० ४॥

भजन ३७

भूला काहे प्राणी रे प्रभु की सत्ता नहिं पहचाने।
सत् है सदा से चित चेतन है, नित आनन्द स्वरूप।
उस स्वामी से विमुख पड़े, तुम अन्धकार के कूप॥भूला० १॥
सुनते लखते चखते सूंघते, छूते जिनके द्वार।
जड़ इन्द्रिय सहाय है उसकी ऐसा सर्वाधार॥ भूला० २॥
आंख न देखे, वाणि न पहुँचे, मन तक जावे नाहिं।
सोचो मित्रो! कैसे पहुँचे, ब्रह्म की सत्ता माहिं॥भूला० ३॥
जो कुछ तुमने अब तक जाना, सब इंद्रिय के द्वार०।

ज्ञात वस्तु से ऊपर है वह, अज्ञात से पर निहार॥भूला० ४॥
पाठक कहे मैल तज मन से, तब उपजे सत ज्ञान।
आसन आदि समाधि अन्त ले, योग से हो पहँचान॥भू० ५॥

दादरा ३८

ईश्वर लीजे खबरिया हमारी।
हो निराश सब ओर से स्वामी, आन पड़े हैं शरण तुम्हारी॥ १
भारत आरत बिलख रहा है, रहा न कोई धर्म व्रत धारी॥ २
भक्ति तुम्हारी तज कर हमने, जड़ पूजे बन दुष्ट पुजारी॥ ३
नर तन पाय तुम्हें नहिं खोजा, जीती बाजी जगत में हारी॥ ४
काम क्रोध मद लोभ के वश में, हमने सुधबुध सबी बिसारी॥ ५
बाल युवा और वृद्ध अवस्था, विषयों में खो बैठे सारी॥ ६
वासुदेव कहे विद्या बल दो, भिक्षा मांगें खड़े हम भिखारी॥ ७

दादरा ३९

जगदीश तुम्हारा सहारा हमें,
यहां सूझै न कोई हमारा हमें।
बालकपन से आज तलक प्रभु!
तुमही ने तो सहारा हमें॥ १॥
ढूँढ फिरे हम सभी ओर हैं,
मिला न तुमसा पियारा हमें॥२॥
चहिये साद शुभ एक मोक्ष पद,
सारे सुखों का भंडारा हमें॥ ३॥

अन्धकार से दूर हटाओ,
निज ज्ञान का दे उजियारा हमें ॥४॥
भवसागर की धार प्रबल है,
इससे भी दो छुटकारा हमें ॥५॥
आर्य्य पुरोहित विनय करे प्रभु !
निज से न कीजै न्यारा हमें ॥६॥

रेखता ४०

स्वामिन् दयालुता से दुख दर्द सर्व हरिये।
उर में विवेक भरिये चित्त को प्रसन्न करिये ॥
पशु तुल्य काम क्रीड़ा गो ग्राम में न उलझे।
परिपक्व शुक्र होवें विनती सु कान धरिये ॥
कर्णान्धता विदूरै वैदिक सुविज्ञता से।
आनन्द की सुधारसा मस्तिष्क माहिं भरिये ॥

गजल ४१

शरण हम प्रभु तेरी आये हुये हैं।
दो कर जोड़ सर को झुकाये हुये हैं ॥
न भक्ती न श्रद्धा में मन चित लगाते।
बने पापी पुण्य को भुलाये हुये हैं ॥
त्यागा पुरुषार्थ अहंकार में फँस।
कुसंगति से हरदम दबाये हुये हैं ॥

न बल है न बुद्धी न विद्या की शक्ती।
अधोगति पै अपनी भुलाये हुये हैं ॥
स्थिरता न मन को भटकता फिरे यह।
विषयों से बहुत हम सताये हुये हैं ॥
करो हम पै कृपा दयामय पिता जी।
उठाओ हमें जो गिराये हुये हैं ॥
प्रवृत्ती हो शुभ कर्म और शुभ गुणों में।
मिले धर्म धन जो गँवाये हुये हैं ॥
हो सत विद्या और ज्ञान से शुद्ध हृदय।
नियम पालें जो तू बनाये हुये हैं ॥
धरम भूख हम को सदा हो प्रभू जी।
बढ़े शान्ति भारी जलाये हुये हैं ॥
गंगाराम सप्रीति पर उपकार सीखें।
मिटें कपट मन में जो लाये हुय हैं ॥

ग़जल ४२

भगवन् दया की दृष्टी, अब टुक इधर भी करदो।
रहमत से अपनी दामन, इस दीन का भी भरदो ॥ १ ॥
आज्ञा का तेरी पालन, निशि दिन करूं मैं स्वामी।
भिक्षुक हूँ नाथ तेरा, भक्ती का मुझ को वर दो ॥ २ ॥
माता बहिन व कन्या, समझूं, पराई नारी।
समभाव सब को देखूं, ऐसी मुझे नज़र दो ॥ ३ ॥
वे पुत्र ही हैं बेहतर, गर हो अधर्मी बालक।

कुल की करे बड़ाई, ऐसा प्रभू विसर दो ॥ ४ ॥
पुरुषार्थ करके जो कुछ मिल जाय नाथ सामाँ।
उस में ही हे दयामय! सन्तोष और सबर दो ॥ ५ ॥
बेकार है वह धन जो, परस्वार्थ में न व्यय हो।
दुखिया अनाथ पालन, करने को नाथ ज़र दो ॥ ६ ॥
कर्मानुसार यदि मैं, मानव शरीर पाऊं।
हे ईश! जन्म मेरा, सत आर्यों के घर दो ॥ ७ ॥
संकट हज़ार पड़ने, पर भी धरम न छोड़ूं।
निर्भय, अशोक, बल से पूरित प्रभू जिगर दो ॥ ८ ॥
कर जोड़ मित्र तुम से, है नाथ अब विनय यह।
अपनाही ध्यान मुझको, नित शाम और सहर दो ॥ ९ ॥

भजन ४३

टेक-कर कृपा पार उतारियो, मेरी टूटीसी किश्ती है।
तुम अविनाशी अजर अमर हो, सारे भूमण्डल के घर हो।
सब के बाहर और भीतर हो, कारीगर बड़े भारी हो ॥
रची सकल अजब सृष्टी है ॥ मेरी० ॥
सब का न्याय करो हो न्याई, बिन वज़ीर और बिना सिपाही।
करो फैसले क़लम न स्याही, ऐसे न्यायकारी हो ॥
नहीं गल्ती पड़ सक्ती है ॥ मेरी० ॥
अब तक दुख भोगे हैं भारी, बहुत हुई दुर्दशा हमारी।
अब आये हम शरण तुम्हारी, तुमहीं देश हितकारी हो ॥
तारो तो तर सक्ती है ॥ मेरी० ॥

बिना कृपा करुणानिधि तेरी, कुछ नहिं पार बसाती मेरी।
तेजसिंह भारत की बेड़ी, काट सभी दुख टारियो ॥
जो हृदय कुमति बसती है ॥ मेरी० ॥

ग़ज़ल ४४

शरण अपनी में रख लीजे, दयामय दास हूं तेरा।
तुझे तजकर कहां जाऊँ, हितू को और है मेरा ॥
भटकता हूं मैं मुद्दत से, नहीं विश्राम पाता हूं।
बचा दे सब तरह से अब मुझे आफ़ात ने घेरा ॥
सताया राग द्वेषों का, तपाया तीन तापों का।
दुखाया जन्म मृत्यू का, हुआ तँग हाल है मेरा ॥
दीन दुख मेटने वाला, तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आ गिरा अब तो, उठा ले किस लिये गेरा ॥
क्षमा अपराध कर मेरे, फ़क़त अब आश है तेरी।
दया बलदेव पर करके, बना ले नाथ निज चेरा ॥

ग़ज़ल ४५

हे न्यायकारी! हे निर्विकारी!! हे ज्ञातचारी!!! तुम्हीं हमारे।
न और कोई हितू हमारा, हमें बचाओ हम हैं तुम्हारे ॥
बग़ौर दुनिया को हमने देखा, खुद मतलब के हैं यार सारे।
किससे कहें अब दिलदर्द अपना, हैं जानी दुश्मन कि जो थे प्यारे ॥
ज़माना भी कुछ निराली सजधज, बदल रहा है अजीब रँग ढँग।

जो थे कभी नूर में चूर भरपूर, फिरते हैं वह दर दर मारे मारे।
जो थे समझते कि हम हैं सारे मुल्कों के मालिक गरीब परवर।
बली पहलवां लाखों हुनर वर, नहीं पता वह किधर सिधारे॥
इस दुनिया फ़ानी में हमने देखे, हज़ारों बनते बिगड़ते लाखों।
फिर किस की शादी ग़मी मनावें, किसे बनावें आंखों के तारे॥
लगी है अबतो तुम्हीं से आसा, बलदेव को निज बनालो दासा।
जैसा है खोटा खरा या खासा, तुमने तो लाखोंहि पापी तारे॥

ग़ज़ल ४६

हमारी एक विनय तुम से, दयामय दीन हितकारी।
मिटाओ मेरे हृदय की, अविद्या रूप अँधियारी॥
प्रकाशित ज्ञान अपने का, हृदय में कीजिये सूरज।
मिले कल्याण का रस्ता, बनें हम सुख के अधिकारी॥
गया है छूट वह मारग, हमारे पूर्व पुरुषों का।
बिना उसके हमारी हो गई अब दुर्दशा भारी॥
हमारा धर्म वैदिक था, उपासक आप के हम थे।
हुये अब पन्थ नानाही, औ नाना इष्ट औतारी॥
अहिंसा त्याग चोरी था, धर्म व्रत पूर्व पुरुषों का।
वहां हिंसक औ बदमारी, शराबी चोर औ ज्वारी॥
जहां ऋषि मुनि थे ब्रह्मचारी, पुरुष नारी सदाचारी।
वहां अब प्रायः नर नारी हुये कुलटा औ व्यभिचारी॥
यहां के दीन औ दुनिया, नहीं इम्दाद पाते हैं।
मुचण्डे भांड़ औ वेश्या, उड़ावें माल बदकारी॥

मचा अन्धेर अब ऐसा, हवा बदली ज़माने की।
तुम्हीं पर आसा है भारी, तुम्हीं पितु बन्धु महतारी॥
तुम्हीं हो धर्म के पालक, अधर्मी दुष्ट कुल घालक।
समझ बलदेव निज बालक, बचाओ वेग बलधारी॥

भजन ४७

प्रभु तुही पालनहार दयामय आश तुम्हारी है।
द्वेष नृपति है अविद्या राज्य पर, हुआ अन्धेर अकाज दिये कर।
हास्य की नौबत बजे, क्रोध की ध्वजा पसारी है॥ प्रभु०॥
फूट बैर छल हठ हैं घर घर, बैरन बढ़गई इतनी यहां पर।
प्रीति प्यार नहिं भ्रात, पुत्र प्रिय नहिं महतारी है॥ प्रभु०॥
गति संसार की पार न जाना, मूरख मनवा फिरे दिवाना।
चेतो अब करे हाय, धार में नाव हमारी है॥ प्रभु०॥

ग़ज़ल ४८

सुनो जगदीश! विनती को तुम्हीं से आश भारी है।
सुधारो अब कृपा करके दशा बिगड़ी हमारी है॥
अविद्या देश में फैली हुआ मूरख यह भारतवर्ष।
बिगाड़ा रीति नीतों को परस्पर बैर जारी है॥
रहा ना धन यहां पर कुछ न अब रहने की आशा है।
निरुद्यमता ने घर दाबा हुआ भारत भिखारी है॥
नहीं है देश की ममता किसी भारत निवासी को।
करें अब क्या यतन प्रभुजी! पड़ा दुख सर पे भारी है॥

नहीं है ऐसा कोई जन जो हम को आके धीरज दे।
यह क्यों रोते हो तुम साहिब दृगों से रक्त जारी है॥

भजन ४९

दयानिधि सब दुख दूर करो।
हम को सुख भोगन को मारग कितहुँ न सूझि परो।
लौकिक हाय हाय में हारे अब तव ध्यान धरो॥
जोर बटोर पाप की पूंजी करम कपाल भरो।
'कर्ण' समान भीरु भक्तन के हे हरि शोक हरो॥

क़व्वाली ५०

मालिक मेरी मदद कर मुश्किल हटाने वाले।
जब से नज़र कड़ी है आफ़त में जाँ पड़ी है॥
अब तो बचाले, बन्धू सब के कहाने वाले॥ १॥
सुत मित्र नारि भाई नहीं वक़्त के सहाई।
यहां के यहां रहेंगे रिश्ता बढ़ाने वाले॥ २॥
आलम को मैंने देखा अच्छी तरह परेखा।
सब ऊपरी हैं अपने बातें बनाने वाले॥ ३॥
जब कूच मेरा होगा सब कुछ यहीं रहेगा।
आमाल ही रहेंगे दुख से बचाने वाले॥ ४॥
यह अर्ज़ है चरन की कर शुद्ध चाल मन की।
तुझको ही जान जावें मुक्ती दिलाने वाले॥ ५॥

भजन ५१

दो०-हे अखिलेश विशुद्ध विभु, कुछ तो लेहु निहार।
बिन अधार किस भांति हम, डूब रहे मँझधार॥
ईश्वर तुम सर्वाधार हो,
मेरी लेहु खबर जल्दी से॥ टेक॥
सबके तुम्हीं सखा पितु माता, धर्म अर्थ कामादि प्रदाता।
शरण आप के जो भी आता, करो उसी को पार हो॥ १॥
तुमने रचे पदार्थ सारे, पृथ्वी सूर्य चन्द्र नभ तारे।
आंखों से तुम नहीं निहारे, निराकार करतार हो॥ २॥
यद्यपि रहा धर्म से न्यारा, विषय भोग में समय गुज़ारा।
अब तो आपका लिया सहारा, तुमही परमोदार हो॥ ३॥
भवसागर से मुझे बचाओ, नैया मेरी पार लगाओ।
वासुदेव पर अब दुर जाओ, दीनों के आधार हो॥ ४॥

भजन ५२

दीजो प्रभु दान अपनी हमें भक्ती का।
हम आये शरण तुम्हारी, तुम रक्षा करो हमारी।
होय सब का कल्यान॥ अपनी०॥
मत करो नाथ अब देरी, हो नष्ट अविद्या मेरी।
मिटै सारा अज्ञान॥ अपनी०॥
भारत की दशा सुधारो, सब के दुःखों को टारो।
होय आनन्द महान॥ अपनी०॥

कहे वासुदेव करजोरी, इक विन्ती सुनियो मोरी ।
न होने पावे हान ॥ अपनी० ॥

भजन ५३

भवसागर से नैया दीजो पार उतार ।
मुझे काम क्रोध ने घेरा, मँझधार पड़ा है बेड़ा ।
किस विध उतरूं पार ॥ भव० ॥
मेरी नाव बही जाती है, यहां कोई नहीं साथी है ।
सब मतलब के यार ॥ भव० ॥
सुत मात पिता अरु भ्राता, अब कोई नज़र नहीं आता ।
सहायक प्रिय परिवार ॥ भव० ॥
मेरा लोभ और मोह हटाओ, अपनी भक्ती सिखलाओ ।
जिससे होजाऊं पार ॥ भव० ॥
बल वासुदेव को दीजो, यह विनय मेरी सुन लीजो ।
तुम्हीं को रहा पुकार ॥ भव० ॥

पूर्वी ५४

पाप से नाथ भरी मोरी नैया, डूब रही मँझधार रे ।
नदिया अमित अपार बहत है, उमड़ रही जल धार रे ।
भ्रमर भयानक उठत अनेकन, तापर चलत बयार रे ॥१॥
छाय रहो चहुँदिशि अँधियारो, सूझे न हाथ पसार रे ।
गरजत घन अरु दमकत दामिन, वर्षत मूसलधार रे ॥२॥

प्रबल ग्राह भक्षण हित मो कहँ, चहुँ दिशि रहे निहार रे ।
झांझर गुन विहीन है नैया, टूट गयो पतवार रे ॥ ३ ॥
शिबनारायण काह करूँ अब कोऊ न खेवनहार रे ।
पाहि ! पाहि ! प्रभुशरण तिहारी, अब मोहिं लेहु उबार रे ॥४॥

ग़ज़ल ५५

हुई है हालत बुरी हमारी बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्
कुकर्म हमने किये हैं भारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्
न ध्यान हमको भले का आया, वृथाही सारा समय गँवाया।
जगत्में फँसकर तुम्हें भुलाया, कियाजो हमने वहआगे आया॥
इसीसे धुनते हैं सरकोभारी, बचाओस्वामिन् बचाओस्वामिन्१
न कर्म कोई भला किया है, सर्वस्व अपना लुटा दिया है ।
किसी की कुछ भी नहीं खता है, कुसूर अपनाही सर्वथा है ॥
तुम्हारे आगे है शर्मसारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन् ॥२
न यज्ञ भी तो किया उमर भर, भजाभी यकदम न तुमको ईश्वर।
हुई भलाई न नेक जिस पर, कि हमको होवे फ़ख़्रो तफ़ख़ुर ॥
दया तुम्हारी पै आसा भारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्३
किये पै अपने नज़र जो डालें, तो शर्मसारी से मुँह छिपालें ।
सदा से उलटी चली हैं, चालें बताओ कैसे सुनेम पालें ॥
जीती बाज़ी सभी है हारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥४॥
लगा रखी है तुम्हीं से आशा, पिलाओ अमृत मिटे निराशा ।
न कोई तुमसे मिला है बेहतर, हुआ ये हमको अभी है ज़ाहिर ॥
करें परस्तिश सदा तुम्हारी, बचाओस्वामिन् बचाओस्वामिन् ५

ग़ज़ल ५६

हुये हैं अपराध हमसे भारी, दशा सुधारो हमारी भगवन् ।
अजब तरह की है शर्मसारी, दशा सुधारो हमारी भगवन ॥
बुरे हैं आमाल जिस क़द्र हैं, ख़राब अफ़आल सर बसर हैं ।
ज़मीम हैं आदतें हमारी, दशा सुधारो० १ ॥
सितम हैं खिफ़्फ़तपज़ीर निदामत, निपट हीरुलचाई व खिज़ालत
है अपने हाथों यह अपनी ख़्वारी, दशा सुधारो० २ ॥
कभी हैं गिर्जों में हम भटकते, कभी हैं मसजिदमें सर पटकते ।
बने हैं मन्दिर में गर पुजारी, दशा सुधारो० ३ ॥
दयाबिसारी व न्याय छोड़ा, नियम जो धारण किया वह तोड़ा ।
हुये हैं सब नेकियों से आरी, दशा सुधारो० ४ ॥
हैं बन्दे हम नफ़्से परवारी के, गुलाम हैं हुस्ने ज़ाहिरी के ।
हैं ग़फ़लतें बातिनों में तारी, दशा सुधारो० ५ ॥
कभी हैं देते किसी को धोका, नहीं हृदय को बदी से रोका ।
हिमाक़तों ने है अक्ल मारी, दशा सुधारो० ६ ॥
शआर यह हमको ऐसा भाया, कि अपना कर्तव्य तक भुलाया
न ज़िक्र हक़ है न हम्द बारी, दशा सुधारो० ७ ॥
प्रभू तुम्हीं से विनय है अबतो, शरण में अपनी क़बूलो अबतो ।
रहें सुनाते कथा आठों ज़ारी, दशा सुधारो० ॥

ग़ज़ल ५७

बहुत आश तुझसे लगाई हुई है ।
न क्यों मेरी अब तक सुनाई हुई है ॥

सुना था कि तुमने बहुत पापी तारे ।
जभी से मैंने लौ लगाई हुई है ॥
ग़रीब निवाज़ी की सुनकरके शुहरत ।
तबीयत मेरी तुझपै आई हुई है ॥
ज़हूरा है प्यारे तेरा कुल जहां में ।
तेरी ज्योति घट घट समाई हुई है ॥
तू साहब है सबका व नाचीज हूँ मैं ।
शरण ली तो मैं, क्या बुराई हुई है ॥
किये पतित उद्धार तुमने हज़ारों ।
मेरी बार क्यों नींद आई हुई है ॥
तेरे दरपै बल्देव अबतो पड़ा है ।
कहो नाथ क्यों देर लाई हुई है ॥

भजन ५८

मेरी सुनियो नाथ पुकार, सबके हितू कहाने वाले ।
यहां थी पहले धर्म बहार, अबदी सब ने हिम्मत हार
होगा तुमसे ईश सुधार, सबके धीर बँधाने वाले १
पहले यहां पर थे ब्रह्मचारी, उनकी जगह हुये व्यभिचारी
वेश्या लगतीं जिनको प्यारी, ऐसे पाप कमाने वाले २
है फिर तुमसे ईश पुकार, नैया करो हमारी पार
यह तो डोले है मँझधार, बेड़ा पार लगाने वाले ३
कहता रामप्रसाद है टेर, मेरी दशा लीजिये हेर
नेक न होवे इसमें देर, तुमने बड़े २ काज सँभाले ४

भजन ५६

ए जी प्रभु पार उतारो, धर्म की नाव पड़ी मँझधार।
मतवादी ही मगर मच्छ हैं, रहे जो टक्कर मार॥ ध० १॥
अन्धकार इंजील कुरां का, सूझे वार न पार।
पौराणिक चट्टान राह में, पाप है भाटा ज्वार॥ ध० २॥
मको दया की आंधी आई, झूठ की बरस धार।
विषय भोग का जल चढ़ आया, किश्ती डूबन हार॥ ध० ३॥
करसे छूट गई श्रुति बल्ली, कैसे होवे पार।
सत्य का सूर्य घटा में छुप गया, छाया है अंधकार॥ ध० ४॥
ब्राह्मण जो मल्लाह थे इसके, सो गये पैर पसार।
विनय यही बाबू की ईश्वर, करो वेगि उद्धार॥ ध० ५॥

भजन ६०

तुम्हीं अब नाथ उबारो, भारत दुखसागर में डूबता।
अति आरत भारत नरनारी, कहां लग सहैं विपति अति भारी।
देख रहे अब ओर तुम्हारी, हितू न कोई सूझता॥ तुम० १॥
दशा भई है दीन हमारी, क्षमा करो सब चूक बिसारी।
तुम सर्वज्ञ सकल दुखहारी, करो क्षमा की पूरता॥ तुम० २॥
भारत सुतन फूट फल खाया, याते दुसह रोग बढ़ि आया।
बहुत जतन नहिं घटत घटाया, हठधर्मी अरु मूढ़ता॥ तुम० ३॥
जो जो कुछ हम यतन विचारे, झूठे पड़े मनोरथ सारे।
तभी तुम्हारी शरण सिधारे, भूल गये निज शूरता॥ तुम० ४॥

पाप विपति की जड़ है भाई, करिहौ तो संकट सैहौ।
शीतल कहते मानो जी प्यारे, नहीं मानोगे तो पछतैहौ॥

भजन १६२

मेरी विनती सुनों धर ध्यान।
गृह आश्रम ही सर्व श्रेष्ठ है क्या कुछ कहें बखान॥१॥
पुरुष तो है घर की शोभा, पुरुष की स्त्री जान॥
स्त्री की पतिव्रत है शोभा, रक्षा करे भगवान॥२॥
दोनों की शोभा प्रीति परस्पर, पानी दूध समान॥
जिस घरमें दोनों यह खुश हैं, वह घर स्वर्ग समान॥३॥
मुख की शोभा मृदुल वचन है, हाथ की शोभा दान॥
दान की शोभा पात्र हो अच्छा, कहगये पुरुष महान॥४॥
पर उपकार है तन की शोभा, तन की शोभा प्रान॥
धर्म से शोभित प्रान बताया, मर्म यही है प्रधान॥५॥
वेद शास्त्रकी ओ३म् है शोभा, अरु जीवन की ध्यान॥
ध्यान की शोभा ओ३म् जाप है, लीजे इतना मान॥६॥
है ब्रजलाल नगर की शोभा, जिसमें होय समाज॥
समाजकी शोभा कर्म्मकाण्ड है, सदस्य हों गुणवान॥७

भजन १६३

नहीं ऐसा अवसर फेर सुधारो जीवन को भाई।
मत योंही प्रिय सर्वसु हारो, साहस और सुमति उर धारो।

आलस की मात्रा न बढ़ाओ, सुध बुध बिसराई ॥ नहीं० १ ॥
समता सीख सुनियम प्रचारो, पाय सुनीति अनीति बिसारो।
उन्नति के कर्तव्य अहर्निशि, समझो सुखदाई ॥ नहीं० २ ॥
मात, पिता, गुरु देवों को नित, पूजो अपना देकर हित चित।
घटे न सद्व्यवहार त्यागिये, गरु मूरखताई ॥ नहीं० ३ ॥
सतसंगति का मान बढ़ाओ, नीच नरों के पास न जाओ।
कर्ण धर्म की गैल गही तिन, जिन कीरति पाई ॥ नहीं० ४ ॥

भजन १६४

परम पछताव है रे हमने जीवन योंही पाया।
पढ़े न नाक चरित्र ऋषियों के, नित बकवाद मचाया।
भूलगये महिमा नरत्व की, अन्धकार अधिकाय ॥ परम० १ ॥
चोरी जारी में सुख माना, नाम भला न धराया।
नाना विधिकर प्राप्त अधोगति, हा! उपहास कराया॥परम०२
चार आंक पढ़ पत्रा बांधा, कभी न सुयश कमाया।
विविध मतों के जालों में फंस, सच्चा ईस भुलाया ॥ परम०३॥
कुल सपूत अब कौन कहेगा, पाप प्रपञ्च बढ़ाया।
हाय! कर्ण भारत माता को, भारी दुख पहुँचाया ॥परम० ४॥

भजन १६५

इंसान और हैवान में क्या फ़र्क़ हमें बतलादो।
खाना तो पशु भी खाते हैं। बोझा मनो उठा लाते हैं।

भी भोगों सो जाते हैं। जन्म और मर जान में, कोई इससे अलग बतादो। क्या फर्क० १ ॥

आंख तो मृगा मीन खंजन की। वाणी कोकिल मोर पिकन की। नासा शुक ग्रीवा हंसन की। चितवन सिंह बलवान में, कटि चीते की उपमा दो ॥ क्या फ़र्क़० २ ॥

ऊनी वस्त्रों से जो बड़ाई। ऊन भेड़ दुम्बों से पाई। रेशमीन सो कीट कमाई। क्या हासिल इतरान में, इस घमण्ड को बिसारदो ॥ क्या फ़र्क़० ३ ॥

चलन भगन में उत्तम घोड़े, बल में गज भैंसे क्या थोड़े। धन तो पशुओं के बल जोड़े। क्यों तुम भरे गुमान में सांचा मतलब समझादो ॥ क्या फ़र्क़० ४ ॥

कुश्ती सीख आप शुतर से। पटे पैंतरे को बन्दर से। राग पक्षी पशू सुघर से। पड़े नहीं हो गान में, है कौन बड़प्पन गादो ॥ क्या फ़र्क़० ५ ॥

ज्ञान धर्म तप विद्या ना है। तो पशु सम फिर मनुष्य क्या है। घीसा ने पद सत्य कथा है। श्रुती रहे नित ज्ञान में, भूला तो आप सिखादो ॥ क्या फ़र्क़० ६ ॥

ग़ज़ल १६६

भाइयो हिन्दू कहाना छोड़ दो। अपने को रुसवा बनाना छोड़ दो ॥ १ ॥ तुम नहीं हर्गिज़ भी काफ़िर और चोर। खुद को तुम ऐसा बताना छोड़ दो ॥ २ ॥ जो तुम्हें हिन्दूपना अच्छा

लगे। तो ऋषी सन्तान कहाना छोड़ दो ॥ ३ ॥ आर्य्य हैं आपके सब खैरो ख्वाह । इनको अय मित्रो, सताना छोड़ दो ॥ ४ ॥ वेद मारग को करो सब अख्तियार । बेतुकी गप्पें उड़ाना छोड़ दो ॥५॥ सारे जग के रचने वाले ब्रह्म को । अपने हाथों से बताना छोड़ दो ॥ ६ ॥ जो परिपूरण है कुल ब्रह्माण्ड में। उसको देह धारी बताना छोड़ दो ॥ ७ ॥ काली आदि देवियों की भेंट में । बकरे और भैंसे कटाना छोड़ दो ॥ ८ ॥ रोक दो बच्चों व बूढ़ों के विवाह । अबला कन्यायें रुलाना छोड़ दो ॥ ९॥ ब्याह आदी संस्कारों के समय । रण्डी भड़वों को नचाना छोड़ दो ॥ १० ॥ गर ब्राह्मण वंश के हो खैरोख्वाह । बेपढ़े ब्राह्मण जिमाना छोड़ दो ॥ ११ ॥ रस्मियाते बद में फँस कर ख्वाहमख्वाह । भाइयो ! धन का लुटाना छोड़ दो ॥ १२ ॥ धर्म पालन में डरो हर्गिज न तुम । इसकी खातिर खौफ़ खाना छोड़ दो ॥१३॥ पीर सैयद ताजियों के सामने । अब तो तुम सरको झुकाना छोड़ दो ॥१४॥ आर्य धमकी में आवेंगे नहीं । इनको बस आँखें दिखाना छोड़ दो ॥१५॥ है निवेदन तुम से सालिग राम का । बाहमी लड़ना लड़ाना छोड़ दो ॥ १६ ॥

भजन १६७

दो०—उठो सनातनधर्मियों, तुम भी सुमिर गणेश ।
भारत जननी के हरो, मिल जुल सकल कलेश ॥
मित्रो ! सालिगराम यह, विनय करै कर जोड़ ।

करो काम उपकार का, बैर भाव को छोड़ ॥
टेक-अब त्याग के बैर विवाद को, कुछ करलो देश भलाई ।
बहुत दिवस इसही में बीते । तुम हारे हो और हम जीते ।
किये निरर्थक बहुत फजीते । नाहक उठा फिसाद को ॥
तुमने अय हिन्दू भाई ॥ कुछ० ॥
जिसने हा ! तुम को समझाया । उसी से तुमने बैर बढ़ाया ।
तरह तरह से शोर मचाया । करके बन्द इमदाद को ॥
उलटी हानी पहुंचाई ॥ कुछ० ॥
फूट पापनी का यह फल है । भारत जो इतना निर्बल है ।
जिस घर में रहती कलकल है । क्यों ना वह बर्बाद हो ॥
बने क्यों न नरक की खाई ॥ कुछ० ॥
मानो मानो प्यारे भाई । बैर भाव को दो बिसराई ।
कर के आपस में एकताई । बजा दो वैदिक नाद को ॥
जतला उसकी प्रभुताई ॥ कुछ० ॥
भारत जननी की करो सेवा । करके दूर फूट दुख देवा ।
प्रेम प्रीति का चख लो मेवा । जिसके प्यारे स्वाद को ॥
पाओगे अति सुखदाई ॥ कुछ० ॥
विद्या का विस्तार कराओ । कालिज और गुरुकुल खुलवाओ
करना बाल विवाह हटाओ । शिक्षा दो औलाद को ॥
ब्रह्मचर्य उसे रखवाई ॥ कुछ० ॥
दीन अनाथ का पालन पोषण । करने लगो पुत्रवत सज्जन ।
यह असली है धर्म सनातन । मेटो विपद विषाद को ॥
दीनों के बनो सहाई ॥ कुछ० ॥

सन्ध्या हवन करन नित लागो। बदरस्मो को जल्दी त्यागो।
भारतवासी जागो जागो। छोड़ बुरी मर्याद को॥
बनो वेदों के अनुयायी॥ कुल०॥

हार जीत दिल से बिसराओ। सत्य धर्म से प्रीति बढ़ाओ।
वेदों की अब शरन में आओ। जिस से अधिक मुफ़ीद हो।
और बल बुद्धि बढ़जाई॥ कुल०॥

सालिगराम कहे समझाई शुद्ध भाव से तुमको भाई।
कभी न घर में करो लड़ाई। मिटो इस फ़र्याद को।
सब सुन लीजो चित लाई॥ कुल०॥

भजन १६८

शेर—अय! सनातन धर्मियो मत आर्यों से तुम लड़ो।
यह नहीं शत्रू तुम्हारे गौर तो दिल में करो॥
भाइयो हैं आर्य सच्चे तुम्हारे खैरोख्वाह।
रखते हैं हरदम तुम्हारी बेहतरी पर यह निगाह॥
देश के सेवक तुम्हारे धर्म के हैं पासबान।
इनसे लड़ना नामुनासिब है तुम्हें अय मिहरबां॥
छोड़ दो लड़ना लड़ाना इनसे प्यारे भाइयो।
शुद्ध हृदय करके देश और धर्म की सेवा करो॥

टेक—करो अब कुछ उपकार, देश धर्म का प्यारो।
लड़ने में समय मत खोओ, मत बीज द्वेष का बोओ।
सँभल जाओ अय यार॥ देश०॥

लड़ने की आदत छोड़ो, शुभ कर्मों से दिल जोड़ो।
करो कुछ पर उपकार॥ देश०॥

गुरुकुल कालिज करो जारी, जिन में औलाद तुम्हारी।
रहे ब्रह्मचर्य्य धार॥ देश०॥

हैं दीन अनाथ जो बालक, बनजाओ उनके पालक।
करके सच्चा प्यार॥ देश०॥

बदरस्मो रिवाज हटाओ, और वैदिक रीति चलाओ।
देश का करो सुधार॥ देश०॥

लाखों जो तुम्हारे भाई, हुए मुसल्मान ईसाई।
करो उनका उद्धार॥ देश०॥

मत घर में करो लड़ाई, मिल जाओ प्रेम से भाई।
छोड़कर सब तकरार॥ देश०॥

करे सालिगराम निवेदन, लड़ना नहीं धर्म सनातन।
करलो सोच विचार॥ देश०॥

दादरा १६६

मत लड़ना आपस में भाई रे।

कौरव व पांडवों ने आपस में लड़कर। भारत को दीना डुबाईरे॥ मत०॥ पृथीराज ने जैचन्द से लड़कर। अपने को दीन्हा मिटाईरे॥ मत०॥ जरासन्ध ने लड़कर कृष्ण से। करदी थी कुल की सफाईरे॥ मत०॥ लाखों करोड़ों राव और राजे बिगड़े हैं करके लड़ाईरे॥ मत०॥ आपस के झगड़े ही

इसका सबब हैं। भारत पै आफत जो आईरे ।मत०।। आपस में यहां पर जो झगड़े न होते। न आते मुसल्मां ईसाईरे ॥ मत० ॥ सालिग जो अपने को चाहो सुधारा। वेदों के बनो अनुयायी रे ॥ मत० ॥

भजन १७०

दोहा–बोली एक अनमोल है, बोली जाय तो बोल।
हिया तराजू तोलकर, मुख से बाहिर खोल ॥

टेक–वचन तू मीठा बोल, वाणी का बाण बुरा है।
जिसकी वाणी में मीठापन है, उसको हर जगह अमन है।
जी चाहे जहां डोल ॥ वा० ॥

इस वाणी से प्रीति हो गहरी ! हा ! यही बना दे वैरी।
कलेजा देती छोल ॥ वाणी० ॥

इसे मित्र शत्रु सब जाने, और कोयल काक पहचाने।
जब दे मुखड़ा खोल ॥ वाणी० ॥

वाणी ने हव्वा बताया, बच्चों को हू लू सुनाया।
बैठगयी सुनकर होल ॥वा०॥

सब की क़ीमत होती है, हीरा माणिक मोती है।
नहीं वाणी का मोल ॥ वाणी० ॥

कहे तेजसिंह सच बोलो, मत असत्य को मुख खोलो।
है कच्ची जिसकी तोल ॥ वाणी० ॥

भजन १७१

देखो रे मित्रो ! ऐसे नियम चलाना।
चाहे कितनी ही पड़ै आपत्ति, तो नहि उन्हें छुड़ाना ॥ मि० ॥

ब्रह्मचर्य प्रथम करवाओ, उनके द्वारा बलको बढ़ाओ।
परा अपरा विद्या को पढ़ाओ, पच्चीस वर्ष पश्चात् गृहस्थ
चाहिये उसे करानारे ॥ मित्रो० ॥

गुण कर्म और वर्ण अनुसारी, करें गृहस्थ विवाहै कुमारी।
सत्य बनज कर करहु गुज़ारी, हो सन्तान सुशिक्षित
तबहि वानप्रस्थ बतानारे ॥ मित्रो० ॥

नवम बसो पुरी तट जाके, अन्न मिले व कन्द फल खाके।
रहे ब्रह्म में मन को लगा के, ऐसेही आश्रम साधा
फिर सन्यासी होजानारे ॥ मित्रो० ॥

परोपकार में आयु लगाकर, देश २ उपदेश सुनाकर।
सबही को सत्मार्ग सुझाकर, झूठ पाखण्ड हटाय
जगत चाहिये आर्य बनानारे ॥ मित्रो० ॥

भजन १७२

दो०–शतपथ ब्राह्मण का वचन, सुनो लगा के कान।
तीन सुधी शिक्षित मिलें, जब सुधरें सन्तान ॥

ख्याल–पहले माता पिता दूसरा और तीसरा आचारी।
तभी मनुज हों ज्ञानवान बलशूरवीर और बलधारी।

माल पिता विद्वान हों जिसके सदा रहे हों ब्रह्मचारी ।
वो सन्तति अति भाग्यवान है धन्यवाद दें नर नारी ॥

टेक-तुम चलो मित्र इस रीति से बने शुभ सन्तान तुम्हारी ।
है मात पिता को उचित काम जो करना ।
वही रीति करूं बयान ध्यान टुक धरना ॥
मादक चीजों के खान पान से डरना ।
करें बल बुद्धी का नाश वेद में बरना ॥
उनहीं चीज़ों को लावें । जो बल और बुद्धि बढ़ावें ।
पितु मातु उन्हीं को खावें । नहीं और पै चित्त चलावें ।

दोहा—गेहूँ चाँवल दूध घृत, इनको उत्तम जान ।
इनहीं का सेवन करें, पुत्र होय बलवान ॥

पुत्र होय बलवान, महा विद्वान, यह निश्चय जान, बचो सदैव अनीति से, बने रहो दिव्य ब्रह्मचारी ॥ बने० १ ॥

अब ऋतु गमन का समय सुनो चितलाई ।
रजो दर्शन से सोलह दिन मियाद बताई ॥
वे प्रथम चार दिन त्याग महा दुखदाई ।
एकादश त्रयोदश छोड़ रहे दश भाई ॥
वह मियाद याद कर लीजे । इस में ही समागम कीजे ।
फिर ऋतु दान नहीं दीजे । सब व्यर्थही वीर्य छीजे ॥

दोहा-जब तक समय ऋतुदान का, पूर्वोक्त नहीं आय ।
फिर आपस में समागम, हर्गिज़ किया न जाय ॥

गर्भ स्थिति से तादाद, समागम स्वाद, वर्ष दिन बाद, सभी विपरीति है । जो करे वही व्यभिचारी ॥ ब० २ ॥

जब लेकर बालक जन्म जगत में आवे ।
स्नान और नाड़ी छेदन हवन करावे ॥
पीछे फिर स्त्री को भी तुर्त नहलावे ।
खाने का अति उत्तम प्रबन्ध मिलावे ॥
माता का दूध पिलाना । छै दिन ले अधिक लिखाना ।
कोई धाई तुर्त बुलाना या बकरी गाय मँगाना ।

दोहा—बल बर्द्धक चीज़ें सभी, धाई खाय हमेश ।
जिस से बालक पुष्ट हो, पावे नहीं कलेश ॥

ऐसे मकान में रहे, सुगन्धी लहे, पवन शुभ बहे, बचे ऊष्णता शीत से । सुखदाई हो वस्तू सारी ॥ ब० ३ ॥

माता के अंग से अंग बने बालक का ।
इस लिये लिखा नहीं दूध पिलाना उसका ॥
जो निर्धन हो बल सके नहीं बल जिसका ।
फिर जैसा समझे उचित यत्न करे उसका ॥
बच्चे को धाय लगाओ । मत मा का दूध पिलाओ ।
कोई ऐसी औषधि लाओ । दे औषधि दूध हटाओ ॥

दोहा-इसी रीति से नारि निज, बनी रहे बलवान ।
पुरुष ब्रह्मचारी रहें, दोनों एक समान ॥

सुख पाओ सर्व प्रकार, सभी नर नार, लो मन में धार । तेजसिंह इस रीति से । फिर मिले तुम्हें सुख भारी ॥ ब० ४ ॥

लावनी १७३

उमर सब गफ़लत में खोई, किया शुभ कर्म न तैं कोई।
किन्हो स्वारथ में दीवाना, नहीं परमारथ पहिचाना॥
खलना खाना अठिलाना, काम क्रीड़ा में सुख माना।
दोहा—जग धन्धों में खो दिया, सारा समय अमूल।
रैन गँवाई सोय के, बीती उमर फजूल॥
बेल तैं पापों की बोई, किया शुभ कर्म न तैं कोई॥१॥
बिमुख हुये निज प्रभुसे प्यारे, किये दुर्गुण भारे भारे।
हज़ारों बेगुनाह मारे, दीन और दुखिया हन डारे॥
दोहा—अब क्या उत्तर देयगा न्यायाधीश दरबार।
जहां न झूठे साक्षी, नहिं वकील मुख्त्यार॥
चले फिर वहां न बदगोई, किया शुभ कर्म न तैं कोई॥२॥
समझ मन अब तो सैलानी, छोड़ दे अब बेईमानी।
चले गये लाखों अभिमानी, तूहै किस गिन्ती में मानी॥
दोहा—हर सुमिरन कर जीव जड़, तुझे कहूं हरबार।
सारी उमर नींदमें खोई, पे मतिमन्द गँवार!॥
वेग उठ बहुत लिया सोई, किया शुभकर्म न तैं कोई॥३॥
सुहृत सुत पितु कुटुम्ब दारा, हुआ क्यों धनपर मतवारा।
काल का आयेगा हलकारा, छुटैगा इक दिन संसारा॥
दोहा—सपना सा होजायगा, सुत कुटुम्ब धन धाम।
हो सचेत बलदेव नींद से जप ईश्वर का नाम॥
मनुष्य तन फिर २ नहिं होई, किया शुभ कर्म न तैं कोई॥४॥

ख्याल १७४

हिन्दूपन से धोय हाथ अब परमेश्वर के दास बनो।
करो कर्म अनुकूल वेद के फिर तुम आर्य खास बनो॥

चौक १

विना धर्म सुख मिले न सपने क्यों नाहक मन भटकावो।
दम्भ कपट छल त्याग न जबतक सीधे मारग पर आवो॥
चाहे जितनी गंगा नहावो गया प्रयाग चाहे नित जावो।
सुखकी शकल देख नहीं पैहो चाहे दुनियां में धावो॥
सत्यधर्म में श्रद्धा लावो पैहो भोग विलास घनो॥ करो०॥

चौक २

दश लक्षण जो कहे धर्म के मनूशास्त्र में सुखदाई।
पहला धीरज क्षमा दूसरा दम तीजा जानो भाई॥
है चौथा अस्तेय पांचवां दिया शौच पुनि बतलाई।
इन्द्रिय-निग्रह छठा सातवें बुद्धी की निर्मलताई॥
अष्टम विद्या नवमसत्य अरु दशवें क्रोधका नाश गनो॥क०॥

चौक ३

यही धर्म है मनुष्यमात्र का इसी के ऊपर चित लावो।
क्यों दुनियां में फिरो भटकते धन देकर धक्के खावो॥
मन को करो पवित्र चित्त से राग द्वेष को विसरावो।

स्थिर हो बैठो एकान्त में भजन करो शान्ती पावो ॥
लगन लगाओ उस ईश्वरसे जगसे निपट निराश बनो ॥क०॥

चौक ४

वैरभाव बिसराय परस्पर प्रीति करो सब नर नारी ।
करो सत्य व्यवहार जगत् उपकार वेद गावें चारी ॥
तजो कुपथ की बान कहाओ मान हानि इसमें भारी ।
करो भक्ति निष्काम छूट जाय जन्म मरण की बीमारी ॥
शरण गहो बलदेव ईश की मत विषयन के दास बनो ॥क०॥

ग़ज़ल १७५

किसे देख दिल तू हुआ है दिवाना ।
नहीं तेरी इस ज़िन्दगी का ठिकाना ॥
हज़ारों शहंशाह हुए इस ज़मीं पर ।
गये कूंच कर जिनको जाते न जाना ॥
जो पैदा है ना पैद होगा वह एक दिन ।
फना से भरा और बरा सो बुताना ॥
धरम एक हमराह केवल चलेगा ।
रहेगा यहीं पर पड़ा सब ख़ज़ाना ॥
है धोखे की टट्टी जहां में पुलंदर ।
समझ के चलो मुल्क है ये बिगाना ॥
करो याद उसकी जो मालिक जहां का ।

उसी की दया से मिटे आना जाना ॥

भजन १७६

दोहा–विषय भोग संसार के, हैं सब दुख के मूल ।
इन में फँसकर ईश को, मत मूरख तू भूल ॥

टेक–पड़ लोभ मोह के जाल, नर आयू क्यों खोता है ॥
यह जग जान रैनका सपना, जिसको कहता अपना अपना ।
भूल गया ईश्वर का जपना, फंसा हुआ धन माल में ॥
क्या सुख की नींद सोता है ॥ नर आयू० १ ॥
चले अकड़ बन छैल छबीला, अन्त समय सब होजाय ढीला ।
काम न आवे कुटुम्ब कबीला, भूला जिन के ख्याल में ॥
कोई साथी नहीं होता है ॥ नर आयू० २ ॥
अब क्यों शिर धुन २ पछतावे, रुदन करे और रौल मचावे ॥
कुछ नहीं तेरी पार बसावे, चूका पहली चाल में ॥
क्या खड़ा २ रोता है ॥ नर आयू० ३ ॥
समझ सोचकर क़दम उठाना, मुश्किल मनुष जन्म है पाना ।
कहे मुरारी जो हो दाना, भज हर को हर हाल में ॥
क्यों पाप बीज बोता है ॥ नर आयू० ४ ॥

भजन १७७

टेक–दौलत की हाय माया में, तैने सारी उमर घुलाली ॥
गज तुरंग रथ ऊँट सवारी, बँगले कोठा महल अटारी ।

बना छोड़ गये हफ्त हजारी, कोई साथ नहीं चाली ॥दौ०१॥
जो कि शहंशाहों में क़ैसर, कहलाते थे ग़रीबपरवर।
रहा न उनका निशां यहां पर, मौत टली नहीं टाली ॥दौ०२॥
लाखों क़त्ल बेगुनाह कराये, ज़र के लिये ज़ालिम कहलाये।
मरते वक़्त वह भी पछताये, दोनों हाथ गये खाली ॥दौ०३॥
कोई जान धन के लिये खावे, कोई पृथ्वी को है रोवे।
सुख से शर्मा वह नर सोवै, इन पै खाक जिन डाली ॥दौ०४॥

भजन १७८

टेक—तैंने प्रभु का नाम बिसारा, इस कारण बाजी हारा।
कामी क्रोधी पतित अभागी, बुरे कर्म में तेरी लौ लागी।
पापी हठी सत्यपथ त्यागी, कैसे हो निस्तारा ॥ इस० १ ॥
छलिया कपटी लोभी ज्वारी, अधम पातकी औ व्यभिचारी।
हिंसक चोर कुटिल खलभारी, किस विधि होय गुज़ारा ॥इस०२॥
दम्भी गर्वी नमकहरामी, कृतघ्न अति डाकू ठग नामी।
बगुला भक्त और वेश्यागामी, धर्म सभा से न्यारा ॥इस० ३॥
अपस्वार्थी लवार अधर्मी, पर निन्दक निर्लज्ज कुकर्मी।
छाई सुरारी क्या बेशर्मी, मन में नहीं विचारा ॥ इस० ४ ॥

ग़जल १७९

भलाई कर चलो जग में तुम्हारा भी भला होगा।
किया जो कामनेको बद वह एक दिन बरमला होगा॥

सताते हो ग़रीबों को न खाते खौफ़ मालिक का।
कभी कोई ज़ुलमगर देखा! जो फूला और फला होगा॥
खुदा के हैं सभी बन्दे बनो मत खून के प्यासे।
छुरी जल्लाद के नीचे तुम्हारा खुद गला होगा॥
समझकर जान अपनीसी दुखाओ मत किसीका दिल।
जलावेगा तुम्हें बेशक जो खुद तुमसे जला होगा॥
फ़रायज़ अपने को हरदम अदा करते रहो फ़ौरन।
मज़ा बलदेव विषयों का तुम्हें एक दिन बला होगा॥

भजन १८०

जीना दिन चार काहे मन भूले फिरे मस्ताना।
मन्दिर महिल अटारी बँगले नक़दी माल ख़ज़ाना।
जिस दिन कूंच करेगा मूरख सब कुछ हो बेगाना ॥जी० १॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी बन बैठा धनवान।
साथ न जावे फूटी कौड़ी निकल जायँ जब प्रान ॥जी० २॥
अपने आप को बड़ा जान कर क्यों करता अभिमान।
तेरे जैसे लाखों चले गये तू किसका महिमान ॥जी० ३॥
राम गये और रावण चले गये बाली अरु हनुमान।
राव युधिष्ठिर दुर्योधन और भीमसेन बलवान ॥जी० ४॥
मान ले शिक्षा खन्नादास की जो चाहे कल्यान।
परमारथ और नित्य कर्म कर, दे दीनों को दान ॥जी० ५॥

दादरा १८१

कर्मों का फल पाना होगा।

क्यों न अरे तू चेत में आव, सभी ठाठ तज जाना होगा ॥१॥
विषय भोग से सभी तरह बच,बचा न तो दुख पाना होगा ॥२॥
अन्त समय को पमन मूरख, जंगल तेरा ठिकाना होगा ॥३॥
कुछ इस जग में धर्म कमाले, साथ यसे ले जाना होगा ॥४॥
जैसा जैसा कर्म करेगा, वैसा ही फल पाना होगा ॥५॥
अब तो चेत तू मनुआ मूरख, अन्त काल पछताना होगा ॥६॥

दादरा १८२

अब तो त्यागो तनक नादानी।

घूमि २ चौरासी लाख में, बहुत खाक दुनियां में छानी ॥अ०॥
अगणित रोग भोग बहुभोगे, तहुँ तनक तृष्णा न बुझानी ॥अ०॥
कबहूँ बने श्वान कबहूँ शूकर, कबहूँ रंक राजा और रानी ॥अ०॥
जन्मत मरत बहुत दिन बीते,अबहुँन छोड़ी समझ शैतानी॥अ०॥
अबकी बार बलदेव जो चूके, हुइहै पीछे बहुत हैरानी ॥अ०॥

दादरा १८३

अब नहिं सोवो जगो मेरे भाई।

आंख खोल संसार को देखो, समय दशा पै नज़र घुमाई ॥१॥
बदलत रंग ढंग छिन २ में, देह दशा देखो चित लाई ॥२॥

पहले देखो दया ईश्वर की, फिर देखो ज़रा अपनी कमाई ॥३॥
फिर कुछ शर्म करो निज मनमें, काहे करावत लोग हँसाई ॥४॥
होश करो बलदेव तनक अब, नाहीं तो रह जैहो पछताई ॥५॥

दादरा १८४

करले सौदा सम्भि सौदाई।

इस दुनियां की विकट हाट में, बड़े २ चातुर गये हैं ठगाई ॥१॥
द्रोह दलाल दुष्ट संग लगि के, देत अवश्य गांठि कटवाई ॥२॥
कुटिल काम क़ज़्ज़ाक कठिन है,बहुतन की याने धूलि उड़ाई ॥३॥
भारत लोभ पिलाय मोह मद, कामिनि कनक जाल फैलाई ॥४॥
हैं अतिरिक्त और इनहू के, प्रबल शत्रु तेरे दुखदाई ॥५॥
बचे रहो बलदेव खलन से, हुइहै तबहीं सौदा सुखदाई ॥६॥

दादरा १८५

झूठी देखो जगत की यारी।

अपने स्वारथ के सब साथी, मात पिता भगिनी सुत नारी ॥१॥
मिथ्यामोह जताय कुटुम्ब सब, देत अमोलक जन्म बिगारी ॥२॥
बने २ के सब कोई संगी, विपति परे फिर को हितकारी ॥३॥
या जग में अपना नहिं कोई, देख लीन हम आंख पसारी ॥४॥
मोह फांसमें फंसत जीव जो, फिर शिरधुन पछतात पिछारी ॥५॥
अपनो धर्म विसारि जगत में, दुख भोगत बहुभांति अनारी ॥६॥
छोड़ो प्रीति बलदेव जगत से, भज प्रभु भव भंजन भयहारी ॥७॥

भजन १८६

प्रभु गुण में हो लीन तभी जग में सुख पावेगा ।

माता पिता बंधु सुत नारी, जिनके अर्थ लई पाप कटारी ।
धन जोड़े है व्यर्थ अन्त कोई काम न आवेगा ॥ प्रभु० १ ॥

गर्वित है जिस बल के ऊपर, है क्षण भंगुर तन जग भीतर ।
अन्त समय जब होय साथ, एक धर्म ही जावेगा ॥ प्रभु० २ ॥

जिन के ऊंचे ऊंचे मन्दिर, ओढ़े पीत रेशमी अम्बर ।
पूछो जाकर दशा वहां ही, क्लेश सुनावेगा ॥ प्रभु० ३ ॥

चढ़ने को सुन्दर असवारी, सेवक लाखों आज्ञाकारी ।
बाहर दीखे सुखी पै अन्दर, चोट दिखावेगा ॥ प्रभु० ४ ॥

सच्चा बन तू शुद्धाचारी, हो जा भाई पर उपकारी ।
इस काया के चाम की क्या, जूती बनावेगा ॥ प्रभु० ५ ॥

करले अब भी धर्म कमाई, इसको ज़रा समझले भाई ।
मुट्ठी बांधे आया खोले यहां से जावेगा ॥ प्रभु० ६ ॥

ममता मोह न रक्खे जो नर, ईश भजन में रहे नित तत्पर ।
पाठक होवे मुक्ति जभी, सच्चा सुख पावेगा ॥ प्रभु० ७ ॥

भजन १८७

छोड़ो झूठे सब व्यवहार, जो तुम कुशल मनाना चाहो ।

सदा न रहना जग में यार, यही लो अपने मन में धार ।
करो तुम सच्चेही व्यापार, जो तुम धर्म कमाना चाहो ।छो०॥

है यह मतलब का परिवार, जिससे बड़ा रहे हो प्यार ।
हो संग न अन्त की बार, इससे चित्त हटाना चाहो ॥ छो०॥

जब हो नाव बीच मँझधार, तब को उसे लगावे पार ॥
धर्म ही सच्चा खेवनहार, इसको क्यों न बढ़ाना चाहो ॥ छो०॥

भजन १८८

यह काया की रेल रेल से अजब निराली है ।

मन का इंजिन बुद्धि ड्राइवर कलें नसों के बंधन जिनपर ।
रज का जल और वीर्य आग्न मिल भाप निकाली है ॥यह०१॥

इंद्रियों के रच के स्टेशन अंतःकरण का बना जंकशन ।
शम संतोष विराग ज्ञान की लैन निकाली है ॥ यह० २ ॥

घण्टी बिवेक श्वास की सीटी, नाड़ी तार ध्वनि लागत नीकी
जीव है सेकैंड गार्ड वस्त्र पंखा रखवाली है ॥ यह० ३ ॥

उत्तम मध्यम आदि अधमतन मेल पसैंजर लोकल मोकन ।
टिकट कर्म के बटें धर्म की खप लदाली है ॥ यह काया०४ ॥

काम क्रोध मद लोभ उचक्के दांव घात के जो बड़े पक्के ।
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष की लूट मचाली है ॥यह काया०५॥

गार्ड वही प्रभु टिकट कलक्टर योग ध्यान का है लैन कलीयर ।
सेकैंड गार्ड गाड़ी में गार्ड से मिलता खाली है ॥ यह काया०६॥

मात पिता सुत आदि यहां पर झंडी मोह की सब्ज़ दिखाकर ।
प्रीति का सिगल गिरा वहीं बस गाड़ी थमाली है ॥ यह०७॥

जब कि गार्ड रहे नहीं ड्रबर खाली पड़ा है इंजिन वहां पर ।
पाठक फिर नहीं चले शोक की वृथा प्रणाली है ॥ यह०८ ॥

ग़ज़ल १८६

स्टेशन जिस्म है मेरा नफ़स की रेल चलती है।
पकड़ सकता नहीं कोई कि जब फ़ारम निकलती है॥
नहीं आता है जब तक तार उधर से लनफ़िलियर का।
करो दिल की सफ़ाई फिर ज़रा फ़ुर्सत न मिलती है॥
टिकट नेकी का हो जिसके पास वह अन्दर निकलती है।
बग़ैर अज़ टिकट के दुनियां खड़ी ही हाथ मलती है॥
बजा करती है सीटी रात दिन यां मौत की लोगो।
यहां के वास्ते हर दम पुलिस दर पे टहलती है॥
करे नेकी अगर ज़ायद तो पाये दर्जा भी अव्वल।
टिकट लेलो अभी कुछ देर है इंजन बदलती है॥
गया बचपन जवानी ने बजाई दूसरी घंटी।
चलो जल्दी नहीं तो तीसरी घंटी उछलती है॥
उठा असबाब अपना इश्क़-इनायत का चढ़ो जल्दी।
नहीं तो बिछुड़ जाओगे घड़ी इसकी न टलती है॥
खड़े रह जायेंगे चुप चाप फाटक पर जो गाफ़िल हैं।
वह चलदी रेल है "श्रद्धा" तो अब क्या पेश चलती है॥

भजन १९०

चर्खा काया रूप प्रभू ने अजब बनाया है।
गर्भ क्षेत्र में पिंडा गढ़ कर हाड़ मांस के पंखड़ मढ़ कर।
इन्द्रिय खूंटे लगा कैसे तन तनसा बढ़ाया है॥ चर्खा० १॥

रग पुट्ठों की मढ़ अँदवाइन, बुद्धिमान बतलाये साधन।
मन का तकला डाक मास नौ में दर्शाया है॥ चर्खा० २॥
चित्त रूप हथकीरध सुन्दर, कर संकल्प रूप प्रेरे पर।
कर्म रुई का तार जीव, कातन बैठाया है॥ चर्खा० ३॥
शुभ और अशुभ तार कई भांती, ज्ञान इसमें रहे सब पांती।
जैसे काते तार वैसा, चर्खा कतवाया है॥ चर्खा० ४॥
यह चर्खे हैं लख चौरासी, नियम पूर्वक कोई मिल जासी।
उत्तम मनुज शरीर बड़ी, मुश्किल से पाया है॥ चर्खा० ५॥
जब निष्काम तार बन जावे, तब कुछ दिन चर्खा छुट जावे।
इस छुटने की आश ने तुम को यहां बुलाया है॥ चर्खा० ६॥
परिमित चाल अवधि भी परिमित, मूल घुमाते हो इत जित तित।
पाठक समझो सार इसे कब, किसने गढ़ाया है॥ चर्खा० ७॥

ग़ज़ल १९१

ज़ुल्म कर करके ज़लीलों को जलाते न चलो।
छुरी गर्दन पे ग़रीबों के चलाते न चलो॥
नहीं बहने का हमेशा है यह हुस्ने दरिया।
बदी की बाढ़ से बहुतों को बहाते न चलो॥
दौर दौरा सदा रहता न किसी का साहब।
सितम शमशेर से आलम को सताते न चलो॥
अक्ल से काम लो खल्क़त है खुदा की इसमें।
होके बेदर्द दिल दीनों का दुखाते न चलो॥

चन्द रोज़ा है इस दुनिया में ज़िन्दगी जिस पर।
निशां नेकी का ज़माने से मिटाते न चलो ॥
खुदा का खौफ़ करो कुछ भी तो दिल में यारो।
रश्क से खाक में बन्दा को मिलाते न चलो ॥
अता मालिक ने किया आप को हुस्नो दौलत।
गज़ब की चाल से गरदूं को हिलाते न चलो ॥
यक्क बलदेव अब आता है कमा ले नेकी।
ख्वाहिशे नफ़स में ज़िन्दगी को गंवाते न चलो ॥

भजन १६२

मुखड़ा क्या देखो दर्पण में, तेरे दया धर्म्म नहीं मन में।
जब तक फूल रही फुलवारी, बास रही फूलन में।
यक दिन ऐसा होयगा प्राणी, खाक उड़ेगी तन में ॥ मुख० ॥
चन्दन अगर कुसुम्भी जामा, सोहत गोरे तन में।
भर यौवन डूंगर का पानी, उतर जाए यक छन में ॥ मुख० ॥
नदिया गहरी, नाव पुरानी उतर जाय यक छन में।
धर्मी धर्मी पार उतर गये, पापी रहे अधभर में ॥ मुख० ॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, सुरत लगी इस धन में।
दस दर्वाज़े बन्द भये जब, रहगई मन की मन में ॥ मुख० ॥
पगड़ी बांधत पेच संभारत, तेल मलत अंगन में।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह क्या लड़ेंगे रनमें ॥ मुख० ॥

ग़ज़ल १६३

कभी मत भूल ईश्वर को ज़माना खाकसारी है।
न कोई भी रहा जीवित सभी खल्क़त सिधारी है ॥
न हटना धर्म्म अपने से मुनासिब है कभी तुझ को।
भजन कर हर घड़ी उसका ये जिसकी फूलवारी है ॥
सुप्रण धारी हरीचन्द ने न छोड़ा धर्म अपने को।
बिके रुहितास और रानी कि जिनका नाम जारी है ॥
हुये ऐसे हक़ीक़त भी कि जिसने धर्म नहिं छोड़ा।
क़तल हुआ धर्म के ऊपर उसी ने जान वारी है ॥
सताना जीव का प्यारे नहीं कुछ भी तो अच्छा है।
अहिंसा धर्म का पालन कहा सुख मूल भारी है ॥
कहे नत्थू सनातन का अमल इख्त्यार कर प्यारे।
महा सुख मूल ज़िन्दगानी वृथा ही क्यों बिगारी ॥

भजन १६४

आओ मित्रो हम तुम मिलकर कुत्तों पर उपकार करें।
वेग अविद्या मार भगावें विद्या का विस्तार करें ॥
भारत वासी त्याग उदासी हों मुतलाशी धर्म के।
आओ उनके जीवन जग का फिर भारी उद्धार करें ॥
रंज जुदाई बहुत उठाई हमने अपनी भूल से।
नानामत पन्थों को तजकर फिर आपस में प्यार करें॥

जिसकी बदौलत हुआ उजाला फिर से भारतवर्ष में।
दयानन्द था जगत हितैषी सब उसका सत्कार करें॥

भजन १६५

सीधे मारग पर आजाओ बुद्धि भ्रमाना छोड़ दो।
अमृत रस को पियो हमेशा विष बरसाना छोड़ दो॥
प्रतिमा पूजन मिथ्या जानो घण्टा बजाना छोड़ दो।
सन्ध्या करो एकान्त बैठकर कूक मचाना छोड़ दो॥
कल्पित सारी गाथाओं का पढ़ना पढ़ाना छोड़ दो।
वेदों के प्रतिकूल मतों का मान बढ़ाना छोड़ दो॥
पर उपकार हृदय में धारो धर्म यही सुख मूल है।
तात्पर्य कहने का यह है स्वार्थ कमाना छोड़ दो॥
नहीं लुटाओ मुफ़्त में दौलत अब तुम भारतवासियो।
पाप जान कर रंडी भड़वे सभी नचाना छोड़ दो॥
यम नियमों का पालन करना फ़र्ज़ ज़रूरी आप का।
लग जाओ इस तरफ़ देश का नाम लजाना छोड़ दो॥

भजन १६६

हुआ लोभी संसार कारे, कुछ किया न ब्रह्म विचार।
यह व्यवहार सदृश सपने के, भूला फिरे क्यों यार।
मृग तृष्णावत भटक मरेगा, देखले आंख पसार ॥हुआ० १॥
काम न आवे ऐंठ अकड़ कुछ, है दो दिन की बहार।

सुमिरन कर उस जगत पिता का, जो है सर्वाधार ॥हुआ० २
विषय भोग में उमर गँवाई, किया खूब व्यभिचार।
अन्त समय सिर धुन पछितैहै, पड़ेगी जमकी मार ॥हुआ० ३
त्यागि नींद अब भी तुम जागो, जो चाहो उद्धार।
कहना मानो ऋषीराज का, त्यागो अघ अचार॥ हुआ० ४॥

भजन १६७

टेक-इस काल बली ने हाय, एक दिन सब को खाया है॥

ज़रा आंख तो खोलो अभिमानी, क्यों पड़ा बुद्धि पर पानी। मत काम करे शैतानी, समझ मन क्यों नवांया है॥ इस काल० १॥

चाहे राजा हो चाहे बलधारी, चाहे निर्बल हो चाहे भिखारी। चले अपनी २ बारी, बार जिस किसी का आया है॥ इस काल० २॥

डाक्टर व वैद्य विचारे, लुकमान आदि हुये सारे। अकबर से बढ़कर हारे। मौत का नुस्खा न पाया है॥ इस काल० ३॥

चले काल चक्र की आरी, कटती जाय आयू सारी। कुछ मन में समझ अनारी, तेजसिंह ने पद गाया है॥इसकाल० ४॥

भजन १६८

दोहा—चेत चेत नर बावले, समय चलो सब जात।
काल रह्यो मुँह बाय तोहिं, अब कोई दम में खात॥

टेक-अब तो सुरत सँभाल, काल तेरे शिर पर पहुँचो आय॥
हुए पहलवान गुणवान और धन वारे।
सब लिये खाय रणधीर वीर योधारे॥
हुए यती सती योगी संन्यासी भारे।
कोई बचे न इस ने सारे शूर सँहारे॥

चौपाई।

या जग में जन्मे जो भाई। सबही लिये काल ने खाई॥
बड़े बड़े योधा बलदाई। यासे काहू की न बिसाई॥

शेर।

बांध कर मुट्ठी तेरा दुनियां में जब आना हुआ।
आनकर फिर मोह के फन्दे में फँस जाना हुआ॥
धर्म संचय नहिं किया नहिं ईश गुण गाना हुआ।
जन्म पूँजी हार खाली हाथ फिर जाना हुआ॥
तैने दुनियां में आई, नहीं कीन्हीं नेक कमाई।
तैंने विषयन में लिपटाई, दिया जन्म अमूल्य गंवाई॥
नहीं तजा कपट अभिमान, अरे नादान, निकल गये प्रान।
ज्ञान बिन दीन्हो जन्म गँवाय॥ अब तो० १॥
जो निराकार निर्विकार और अविनाशी।
धर उसका ध्यान जो है घट २ का बासी॥

क्यों वृथा भटकता फिरे अयोध्या काशी।
रम रहा तेरे हृदय में सकल सुखराशी॥

चौपाई।

जैसे अग्नि काठ के माहीं। है व्यापक पै दीखत नाहीं॥
ऐसेहि प्रभु व्यापक सब ठाहीं। सर्व काल दिशि बसत सदाहीं॥

शेर।

नेको बद आमाल तेरे देखता सब काल है।
याद रख हरदम उसे जो न्यायकारी दयाल है॥
मत किसी पर जुल्म कर हर वक्त वह तेरे नाल है।
ज़ालिमी कर देख तो होता बुरा क्या हाल है॥
कर दिलमें तनिक विचारा, कहां रावण कंस सिधारा।
महमूद व नादिर दारा, गये छोड़ माल ज़र सारा॥
कर धर्म कर्म निष्काम, वही सुखधाम, होत अब शाम।
वाम सुत करें न कोई सहाय॥ अब तो० २॥
तू कर नाना छल कपट जो द्रव्य कमावे।
खुश हो हो कर२ प्यार कुटुम्ब सब खावे॥
वह पाप अन्त में तुझे नरक भुगतावे।
फिर कुटुम्ब कबीला कोई काम ना आवे॥

चौपाई।

जिनके हित तैने पाप कमाया। सब ही तुझको सींग दिखाया॥
खोई व्यर्थ मनुज की काया। परमेश्वर का नाम भुलाया॥

शेर ।

पाय ऐसा जन्म नर शुभ कर्म मैंने नहिं किया ।
सकल नादानी करी जो खोय विषयों में दिया ॥
मुक्ति का दर छोड़के क्यों दुःख का रस्ता लिया ।
पेट पाला पाप से तन मन दिया तो क्या जिया ॥

जब पकड़ नरक में डाला, दिया हूल हिये में भाला ।
तैं बहुतों का घर घाला, ले उसका पवज़ लाला ॥
लाला के उड़ गये होश, हुए खामोश, करे अफ़सोस ।
दोष दे कर्मों को पछताय ॥ अब तो० ३ ॥

भज परमेश्वर को चाहे अगर भलाई ।
लौ लगा उसी से प्रान पवन ठहराई ॥
कर सत्य चित्त से भजन शुद्ध हो जाई ।
जब हो प्रभु दर्शन कटै कर्म की काई ॥

चौपाई ।

ईर्षा द्वेष कपट कुटिलाई । काम क्रोध मद मोह विहाई ॥
सब जीवों के बनो सुखदाई । हिंसा द्रोह सकल बिसराई ॥

शेर ।

चाहता सबका भला उसका भला होगा ज़रूर ।
दिल जलाता और का उसका जला होगा ज़रूर ॥

जो दिया औरों को उसको भी मिला होगा ज़रूर ।
नेकी बद का एक दिन फल बरमला होगा ज़रूर ॥
जो है दुनियां का न्याई, वह सबकी करे सहाई ।
वहां रिशवत लगे न पाई, हो धर्म से सबकी सफ़ाई ॥

बलदेव सुमिरिओंकार, करे तुहिं पार, पतित उद्धार, प्यार कर ले गो कण्ठ लगाय ॥ अब तो० ४ ॥

भजन १९९

काल तोहिं औचक में घेरे है बड़ा भयानक हाय ।
अन्य समय नर धन बतलावे, उँगली का संकेत दिखावे ।
टप टप टप आंसू टपकावे, पड़ा पड़ा हेरे ॥ है० १ ॥
दीखे पर देखा नहीं जावे, बोले है पर बोल न आवे ।
यों फिर हाथ पांव पटकावे, महा दुःख मेरे ॥ है० २ ॥
मन विचारता रहा विचारा, बुद्धि याद्ने किया किनारा ।
हुआ मूर्छा संग वह न्यारा, जीव देह सेरे ॥ है० ३ ॥
पाठक करले जो करना है, तुझे भी एक दिन तो मरना है ।
जाना तुझे चिता पर ना है, औ २ टेरे ॥ है० ४ ॥

भजन २००

तू क्यों करता अभिमान, मौत आती एक पल में है ।
आवे श्वास आवे या न आवे, खबर नहीं कब काल दवावे ।
ऐसेही जीवन जान, बुलबुला जैसे जल में है ॥ तू० १ ॥

रावण कंस हुये अभिमानी, जिनकी गति मति गई न जानी।
पर वे भी नहीं रहे, घुसा जब काल बगल में है ॥ तू० २ ॥
क्या मन में सोचे बैठा है, क्या फिरता पैंठा पैठा है।
कुछ तो समझ नादान, हुआ क्यों फ़ितूर अक़ल में है ॥तू०३॥
यह मन के संकल्प तुम्हारे, आखिर में रह जावें सारे।
जैसे भौंरा बन्द हुआ एक फूल कमल है ॥ तू० ४ ॥
या जीवन पर हो मदमाता, वासुदेव क्यों जन्म गँवाता।
कुछ तो कर ले धर्म, पड़ा क्यों ख्वाब अमल में है ॥ तू० ५ ॥

भजन २०१

सिर पै है मौत सवार रे, जाने कब आय घेरे।
चलते बैठे सोते खाते, करते धरते या आते जाते।
मुँह खोले है तैयाररे ॥ जा० १ ॥
वृक्ष में जल में अग्नि पवनमें, वन उपवन गिरताल भवनमें।
कहां करे कैसे अहाररे ॥ जा० २ ॥
माता भी रोवे भगिनी भी रोवे,सारा कुटुम्ब महाशोकमें होवे
कौन बचावन हाररे ॥ जा० ३ ॥
पाठक जो जीतो मौत को प्यारे, केवल ठहरो धर्म सहारे।
जप प्रभु को हरबाररे ॥ जा० ४ ॥

दादरा २०२

इस थोड़े से जीवन पै मान क्यों करे।

लाखों हुये यहां दारा सिकन्दर। बोनापार्ट से कम्पाते यूरप भर। सोचो यूं दुःख के सामान क्यों करे ॥ इस० १ ॥

महमूद तैमूर नादिर से आये। लाखों ही मासूम काटे कटाये। ऐसे सितम हो इन्सान क्यों करे ॥ इस० २ ॥

दौलत के लाखों ने तूदे लगाये। करूं फिर औ जैसे आखिर गिराये। उत्तम समय को वीरान क्यों करे ॥ इस० ३ ॥

रावण से थे यह बड़े गर्ववारे। आखिर को एक दिन यहां से सिधारे। धोखे की टट्टी की पेवान क्यों करे ॥ इस० ४ ॥

ईश्वर नियन्ता है रक्षक हमारा। उस ही का पाठक तू रखले सहारा। आनन्द में दुखों का भान क्यों करे ॥ इस० ५ ॥

भजन २०३

भूला २ रे मुसाफ़िर कहां गठरी तू।

बायदा कर के आया जो गर्भ में, पृथ्वी बीच गिरा भूला तू ॥ भूला० १ ॥

ब्रह्मचर्य तूने नहीं धारा, मन अपने को तैं नहीं मारा। कामदेव में भूला तू ॥ भूला २ ॥

लोभ मोह के वश में होकर, नियम धर्म सब अपना खो कर। धनको इकट्ठा कर भूला तू ॥ भूला० ३ ॥

रहो हुशियार भजनकर रब का, यह मालिक है सारे जग का। इन्द्रिय के वश भूला तू ॥ भूला० ४ ॥

ग़ज़ल २०४

ज़रा तो सोच ऐ ग़ाफ़िल कि दम का क्या ठिकाना है ।
निकल जब यह गया तन से तो सब अपना बिराना है ॥
मुसाफ़िर तू है अरु दुनियां सारा है भूल मत ग़ाफ़िल ।
सुबह होते तयारी कर, तुझे परदेश जाना है ॥
लगाता है अबस दौलत पै क्यों तू दिलको अय नादक़ ।
न जावे संग कुछ हरगिज़ यहीं सब छोड़ जाना है ॥
न भाई बन्धु है कोई, न कोई आशना अपना ।
बख़ूबी ग़ौर कर देखा तो मतलब का ज़माना है ॥
रहो निश याद में हक़ की, अगर अपनी शफ़ा चाहो ।
अबस दुनिया के धन्धे में फंसा तू क्यों दिवाना है ॥

क़व्वाली २०५

नर तन को पाके मूरख, खोता फ़ज़ूल क्यों है ।
सुत मित्र बंधु दारा, समझे तू किस को प्यारा ।
मतलब की है ये दुनियां रोता फ़ज़ूल क्यों है ॥ नर० ॥
किस से तू यारी करता कुर्बान हो हो मरता ।
अश्कों से अपने मुंह को, धोता फ़ज़ूल क्यों है ॥ नर० ॥
यहां यार है बहु रंगी, दो दिन के तेरे संगी ।
उलफ़त का बीज दिल में बोता फ़ज़ूल क्यों है ॥ नर० ॥
क्यों बनता है दीवाना, जग है मुसाफ़िर खाना ।
बेदार हो बेहूदे, सोता फ़ज़ूल क्यों है ॥ नर० ॥

बलदेव समझ सौदाई, सुध बुध कहां बिसाराई ।
रुशवा बुतों के पीछे, होता फ़ज़ूल क्यों है ॥ नर० ॥

क़व्वाली २०६

भाइयो ! जगत में आकर, नाहक़ हुआ है जीना ।
मुश्किल से अय बुज़ुर्गो ! पाया मनुष का चोला ।
अफ़सोस फिर भी तुमने, कुछ भी धरम न कीना ॥ भा० ॥
इन्द्रियों के वश में होकर, मनका गुलाम बन कर ।
विषयों में फँस के पापी, तन मन व धन है दीना ॥ भा० ॥
आया था किस लिये तू, कुछ भी ख़बर नहीं है ।
बेहोश होरहा है, अय मूर्ख बुद्धि हीना ! ॥ भा० ॥
बे मोल तेरा जीवन क्षण क्षण में जा रहा है ।
हा ! शोक है तो यह है, शुभ कर्म कुछ न कीना ॥ भा० ॥
अय वासुदेव ! उठो, ग़फ़लत में क्यों पड़े हो ।
समझो सराय दुनियां, यहां पर नशा न पीना ॥ भा० ॥

दादरा २०७

टेक—नर तन पाके उमर क्यों गँवाई ।
लख चौरासी योन भुगतकर । मुश्किल से यह मनुष देह पाई ॥
नर तन० ॥
बाल अवस्था खेल में खोई । विषयन में बीती तरुणाई ।
नर तन० ॥

वृद्ध हुआ देह कांपन लागी। करनी सभी थकित हो आई।
नर तन० ॥
ग्रसित किया रोगों ने आकर। रोवे हाहाकार मचाई।
नर तन० ॥
काल आन जब सिर पर गर्जा। काम न देवे एक दवाई।
नर तन० ॥
इकला लाद चला बनजारा। छोड़ सकल सुख सम्पति भाई।
नर तन० ॥
भाई बन्धु माता सुत नारी। रोरो कर सब देत दुहाई।
नर तन० ॥
यह शरीर जो सबसे प्यारा। जल भुन जाय चितामें भाई।
नर तन० ॥
बता संग तैं किसका लीना। धर्म बिना हो कौन सहाई।
नर तन० ॥
बांध लई पापों की गठरी। दुनिया से ले चला है बुराई।
नर तन० ॥
हाय शोक योंही जीवन खोया। रोव कर मल २ पछताई।
नर तन० ॥
जो चाहो तुम जन्म सफल हो। बासुदेव करो नेक कमाई।
नर तन० ॥

दादरा २०८

काहे खोवे उमरिया अनारीरे।

ममता माया के वश होकर, गरबित है तू कुटुम्ब के ऊपर।
नाम न लीना उसका छिनभर, प्रभुबिन रहेगा दुखारीरे॥काहे०१
रूप घृणित लखि मोहित होवे, जो काया विकार मय होवे।
तन मन धन हा उसपे खोवे, अब भी दशा ले सुधारीरे॥काहे०२
सन्ध्या हवन तू ने बिसराया, पितृयज्ञ का ध्यान न आया।
छल से तू ने द्रव्य कमाया, क्या होसके सुखारीरे॥काहे०३
काल तुझे नित आन जगावे, घंटा अपनी गूंज सुनावे।
क्यों नहीं चेत समय बितावे, भक्ति का बनजा भिखारीरे॥काहे०४
अजर अमर जो है सर्वोपरि, जिससे तेरी रही रुची फिरि।
पाठक वह तेरा मात पिता वर, रखले भरोसा भारीरे॥काहे०५

भजन काफ़ी २०९

कोई तेरे काम न आवे भज अजर अमर अविकार।
सुत पितु मात भ्रात प्रिय भगिनी धन दारा परिवार॥
खरत न काम धाम दश धाये न्हाये कुम्भ किदार।
भ्रम वश भ्रमत फिरत मृग बनरमृगमद नाभि मँझार॥
तुलसी नींब बेल बड़ पीपल, कदली कदम अनार।
वन उपवन वृन्दावन मधुवन, और गिरराज पधार॥
सन्ध्या यज्ञ योग जप छोड़ा, मोड़ा मन उपकार।
आर्य धर्म का मर्म न जाना, किया निन्द्य आहार॥
पढ़ पढ़ बैबिल और कुरां सब बैठे धर्म बिसार।
आदि काल की विद्या का फिर, कैसे होय प्रचार॥

सब प्रकार से सिद्ध हो रहा, यह संसार असार।
तन धन यौवन जात छिनक में, भजत न सिरजनहार॥
घेरै काल गांसिहै पीछे खींचे फांसी डार।
फिर पछताये प्राण न बचि हैं छुट है यह तन छार॥
खसे केस देह भई जर्जर, बीती बैस बहार।
परिहर सब पाखण्ड हजारी, प्रभु भज बारम्बार॥

भजन २१०

उस ईश्वर दीनदयाल को, वैराग्य बिना नहिं पाया॥ टेक॥
एक समय थी भरी जवानी, कामदेव निज ध्वज फैरानी।
रूप देख हो बुद्धि दिवानी, भूला प्रभु विशाल को॥
मन विषयों को ललचाया, आंखों को रूप लुभाया।
एक दिन दिल में शरमाया॥ उस ईश्वर०॥ १॥

जहां कामना पूर न पाई, क्रोध ने अपनी आंख दिखाई।
झट से तहँ ठन गई लड़ाई, पहुँचाया उस हाल को॥
अपना घर तक फुँकवाया, प्रण आत्मघात का भाया।
आखिर एक दिन यों आया। उस ईश्वर०॥ २॥

एक समय मन लोभ समाया, धन दौलत मैंने खूब कमाया।
झूठ दगा छल से घर लाया, जोड़ा बहु धन माल को॥
नहिं खर्चा नहिं खुद खाया, चोरों से बहुत बचाया।
इस में भी सार न पाया। उस ईश्वर०॥ ३॥

बेटा बेटी परिजन नारी, जिनके लिये सब उम्र गुज़ारी।
अपनेहि सुख की करे तयारी, देख के उनकी चाल को॥
मेरे मन वैराग्य समाया, मैंने सत्संग अच्छा पाया।
मुझे निर्जन थल ही भाया। उस ईश्वर०॥ ४॥

एक समय अहंकार समाया, अपने धन बल पर गर्वाया।
इसने भी नीचा दिखलाया, हल किया अहम सवाल को॥
मन निर्मल शीशा बनाया, आंखों को बन्द कराया।
वाणी को ठीक सधाया। उस॥ ५॥

आखिर उपनिषदों को विचारा, वेदज्ञान का लिया सहारा।
पाठक तब जाना प्रभु प्यारा, छोड़ा सब जंजाल को॥
अविनाशी ईश्वर पाया, जिस ने ये जगत रचाया।
मैं उस का भक्त कहाया। उस०॥ ६॥

भजन २११

दोहा-मरता किस के इश्क में, करता किस पर प्यार।
यहां मतलब के मीत हैं, देखा गया विचार॥
टेक-सब स्वारथ का संसार है, तू किस पै प्यार करता है।
जब तक प्यारे करे कमाई, तब तक सारे करें बड़ाई॥
चचा भतीजे ससुर जमाई कुनबा तावेदार है।
दिलबरी का दम भरता है॥ तू किस पै० १॥
जब तू शक्तिहीन हो जावे, अपनी हाजत कुछ फ़रमावे।

यार दोस्त कोई पास न आवे, मिट जाता सत्कार है ॥
कम्बख़्त नाम पड़ता है । तू किस पै० २ ॥

जिस के प्यार में ईश बिसारा, धर्माधर्म न तनक विचारा ।
उस कुनबे ने किया किनारा, कौन यहां ग़मख़्वार है ॥
कह कह के यों मरता है । तू किस पै० ३ ॥

मत बन जान बूझ कर भोला, हैं ख़ुदग़र्ज़ यार मिठ बोला ।
यह बल्देव मानुषी चोला, फिर मिलना दुशवार है ॥
जप उसे जो दुख हरता है । तू किस पै० ४ ॥

भजन २१२

दोहा–धन यौवन को पाय के, क्यों करता अभिमान ।
चन्द रोज़ की चांदनी, कोई दम का महिमान ॥

टेक–मत पैंठ मीत अभिमानमें, ये ज़रासी ज़िंदगानी है ।
बड़े २ शूर वीर धन वाले, अरु हकीम तरद्दार निराले ॥
सितमगार मुँह कर गये काले, बसे जाय श्मशान में ।
गई छूट हुक्मरानी है । ये ज़रासी ज़िं० ॥ १ ॥

मुंसिफ़ हो के कर सरदारी, नहीं तो पीछे होगी ख़्वारी ।
चली जाय सब खुदमुख़्तारी है तू जिसके गुमान में ॥
ये जिस्म तेरा फ़ानी है । ये ज़रासी ज़िं० ॥ २ ॥

दर्द दूसरे का न विचारे, बिन अपराध ग़रीबन मारे ।
दुखी दीन को नित्य पछारे, सूझत नहिं अज्ञान में ॥
तुझे यम की मार खानी है । ये ज़रासी ज़िं० ॥ ३ ॥

लाखों गले पर छुरी चलावे, ख़ूंख़्वारी से बाज़ न आवे ।
ज़ुल्म करे कुछ ख़ौफ़ न आवे, सोचत नहीं जहान में ॥
उस रब की राजधानी है, ये ज़रासी ज़िं० ॥ ४ ॥

ज़ुल्म किसी पर मत कर भाई, यह दुनियां ईश्वर ने बनाई ।
अबहुं छोड़ कपट कुटिलाई, लगजा उसके ध्यान में ॥
बल्देव जो गत पानी है ॥ ये ज़रासी ज़िं० ॥ ५ ॥

ग़ज़ल २१३

ये दुनिया चन्द रोज़ा है, प्रभू का ध्यान धर लीजे ।
गुज़रती आयु जाती है, सभी विधि से सुधर लीजे ॥ १ ॥
न जाने कौन से क्षण में, बजेगी आख़िरी नौबत ।
नक़ारा कूंच का बजता है, इस पर ग़ौर कर लीजे ॥ २ ॥
पड़े सोते हो तुम अबतक, गये साथी निकल कोसों ।
कठिन रस्ता है मंज़िल दूर, उठिये कर सफ़र लीजे ॥ ३ ॥
ख़ुशी के साज़ और सामां, फिरे है जिनपै तू शादां ।
हमारा मान कर कहना, हटा इन से नज़र लीजे ॥ ४ ॥
फँसाया हम को पापों में, बुरे मन के विचारों ने ।
अगर कुछ चाहते अपनी, भलाई तो सँभर लीजे ॥ ५ ॥
न अशरत काम आवेगी, मगर हसरत सतावेगी ।
है बेहतर धर्म धारण कर, सुपथ में ही गुज़र लीजे ॥ ६ ॥
प्रभू के प्रेम साधन से, मगन होने का कर उद्यम ।
जमा के मन को संध्या में, परम सुख की लहर लीजे ॥ ७ ॥

ग़ज़ल २१४

भूला है किस पै अय मनुष्य फिरता है किस पै यूं मगन।
क्या यह ख़्याल कर लिया, कि है अमर यह तेरा तन॥
इश्र बगा के जिस पै तू होता है दिल में सुर्ख़रू।
राखिये ज़िहनेनशीन यह तू नाश ये होगा एक दिन॥
गांब लिबासो मालो ज़र, जिससे है तेरा करोंफर।
सब यह रहेगा यांहीं पर स्वर्ग को होगा जब गमन॥
रखते हैं तुझसे अब जो प्यार, माता पिता और स्त्री यार।
देखेंगे सब यह एक बार, जलते हुये तेरा बदन॥
प्यारी तेरी अब आन कर मारेगी हाथ तानकर।
छाती पै तेरी अय बशर होगा न और कुछ यतन॥
दोस्त कहेंगे यरमला, जल्दी से ले चलो उठा।
दिन है बहुत सा चढ़गया होती है देर श्रेष्ठ जन॥
इसले न ऐसा काम कर, पहुँचे किसी को जो ज़रर।
मौत का दिल में रख तू डर अन्त में हो न तामहन॥
प्रीति परस्पर अब तू कर सब से तू मिल झुका के सर।
निन्दा भी कोई करे अगर, स्तुति तू अपनी उसको गिन॥
धर्म का तू प्रचार कर जान भी जाय तो न डर।
होगा तू इस तरह अमर, गरचे करेगा यह यतन॥
मौत है सर पर हर घड़ी, मालूम नहीं कब आपड़ी।
तन है यह बालू की मढ़ी, जाने यह कब लगे गिरन॥
थे जो महराज नामवर, जग में था जिनका खूब डर।

खाते हैं ठोकर उन के सर, काल ने अब किया हनन॥
लंकपती न अब यहां, कंस का अब कहां निशां।
शिक्षा लो इनसे मेहरबां, दास की यह लगी लगन॥

भजन २१५

है थोड़े दिन जग रहना, मत कड़वे बोले बोल।
वैमनस्य घर २ है लड़ाई, दुश्मन है भाई का भाई।
जग में इसने अशान्ति फैलाई, बुद्धि तुला पर तोल॥ है०॥
मौनव्रत उनको बतलाया, जिनपै मीठा वचन न आया।
क्यों नहिं प्रभु का भक्त कहाया, मन की घुण्डी खोल॥ है०॥
आवागमनकी कट जाय फांसी, कटैं फन्द तेरे लखचौरासी।
जपले निराकार अविनासी, ये है रत्न अनमोल॥ है०॥
किसी जीव का मन न दुखाओ, धर्म अहिंसा जग फैलाओ।
पाठक कहे यों प्रभु को पाओ, वह है अगम अतोल॥ है०॥

भजन २१६

भरोसा नहिं एक स्वास कारे, क्यों फूला फिरे गँवार।
बना शरीर ये हाड़ मांस का, है मल मूत्र का थार।
समझ देख तू दिल में प्यारे, क्या है इस में सार॥ भ० १॥
चौरासी लख योनि भोगकर, आये मुक्ति के द्वार।
फिरभी फंसगये विषय भोगमें, किया न ईश विचार॥भ० २॥
याद करहु जब मित्र गर्भ में, संकट परे अपार।

उस प्रभु को भूला अभिमानी, जिसने किया था प्यार ॥भ० ३॥
राम और रावण कुम्भकर्ण गये, अरु गये यक्षकुमार ।
ऐसेहि तू भी जायगा एक दिन, तेरा किन में शुमार ॥भ० ४॥
सुत धन दारा न संग जायंगे, समझ सोचले यार ।
जा दिन डंका बजे काल का, छुटेगा सब परिवार ॥भ० ५॥
नेकी कमाले ईश को भजले, समय न बारम्बार ।
ऋषिराज की यही है शिक्षा, कहत पुकार पुकार ॥भ० ६॥

भजन २१७

यह है असार संसार वृथा इसमें लपटावेगा ।
कर जगत पिता का ध्यान तभी तू आनन्द पावेगा ॥

यह मनुष्य का तन पाया, जप योग में चित न लगाया ।
विषयों में व्यर्थ गमाया, अन्त में दुख ही पावेगा ॥कर०॥
हुये बड़े २ बलधारी, विद्वान और शूर खिलारी ।
गले काल गाल बारी२, एक दिन तुझे भी खावेगा ॥कर०॥
धन यौवन सुत अरु दारा, कर जांयगे तुझ से किनारा ।
कोई संग न जाने हारा, नेको बद साथहि जावेगा ॥कर०॥
जवानी को यूंही बिताया, जब जरा ने आन दबाया ।
सीने में कफ़ रुन्ध आया, ख़ाक फिर तू क्या बनावेगा ॥कर०॥
तू है ऋषिराज अनारी, दी प्रभु की सुरति बिसारी ।
पाता है तभी दुखभारी, नहीं हरगिज़ सुख पावेगा ॥कर०॥

भजन २२८

ज़रा आंखें तो खोलो यार,
क्यों बेहोश पड़े मतवाले । टेक,

तुम्हें कैसी अविद्या छाई, सुध बुध सारी बिसराई ।
जड़ वस्तु से प्रीति लगाई, कभी हा ! जपो नहीं ओंकार ।
पीते विष रस के हो प्याले ॥ ज़रा आंखें० १ ॥
यह धन दौलत और काया, है बादल की सी छाया ।
हा ! तुम्हें चेत नहिं आया, उर में मद का अंकुर धार ।
नित रंग भरते रहो निराले ॥ ज़रा आंखें० २ ॥
जब वृद्ध अवस्था आवे, कफ़ खांसी आन दबावे ।
नहीं पाव घड़ी सुख पावे, दुखों की पड़ेगी भारी मार ।
जिस दिन आके काल दबाले ॥ ज़रा आंखें ३ ॥
क्यों ऐसा समय गंवाओ, ईश्वर से ध्यान लगाओ ।
ध्रुव धाम सहज ही पाओ, रहे मत तेजसिंह निरधार ।
सुन्दर पद्य बनाने वाले ॥ जरा आंखें० ४ ॥

भजन २२९

कर लेहु प्रशंसित काम रही अब थोड़ी ज़िन्दगानी ।
रहो न योंही अपयश पाते, पापी पामर पोच कहाते ॥
मंगलमय मारग अपनाओ यह सिख सुखदानी ॥ कर०१ ॥
छल बल कपट कुकर्म बिसारो, यम नियमों को उरमें धारो ।
कबहुं न काहू पेंठ दिखाओ, चेतो अभिमानी ॥ कर० २ ॥

दीन अनाथन के दुख टारो, देश दशा का ढंग सुधारो।
साहस पाय बनो लालन में, शूरवीर दानी ॥ कर० ३ ॥
कीरतिकी नित सम्पति जोड़ो, पतित समागम से मुख मोड़ो।
साथ न होगी हाय देह भी, त्यागो मनमानी ॥ कर० ४ ॥
ऐसी देह न पुनि पाओगे, करलो कुछ तो पछताओगे।
कर्म अन्त की घड़ी सामने, समझाते ज्ञानी ॥ कर० ५ ॥

भजन २२०

टेक–पल पल आयु रही है बीत।
संग्रहकर परहित की पूंजी यही भली सिख मीत ॥पलपल० १॥
विषयों में फँसना न भला है जीते बाजी जीत ॥पलपल० १॥
तर जाओ जगदीश्वर के तुम गाय गाय गुणगीत ॥पलपल० १॥

भजन २२१

क्या तन मांजतारे आखिर माटी में मिल जाना।
माटी ओढ़न माटी पहिरन माटी का सिरहाना।
माटी का कलबूत बनाया जिस में भँवर समाना ॥क्या०१॥
माटी कहती कुम्भकार से तू क्या रूंधे मोय।
एक दिन ऐसा भी तो होगा मैं रूंधूंगी तोय ॥क्या० २॥
चुन चुन लकड़ी महल बनाये बन्दा कहे घर मेरा।
नाहिं घर मेरा नाहिं घर तेरा चिड़िया रैन बसेरा ॥क्या० ३॥
फाटा चोला भयो पुराना कब लग सीवे दर्ज़ी।

दिलका मरहम कोई न मिलिया जो मिलिया अलगर्ज़ी ॥४॥
दिल के मरहम सतगुरु मिलगये उपकारन के गर्ज़ी।
नानक चेला अमर भयो जो सन्त मिलगये गर्ज़ी। क्या० ॥५॥

भजन २२२

जन्म सफल कर लीजिये, अवसर न बिसारो।
कर सत्संग कुसंगति त्यागो, सुमति सुधारस पीजिये। अव०
दीन अनाथन को अपनाओ, सूरन को सुख दीजिये। अव०
परम रंक भिक्षुक भारत पै, प्रेम पसार पसीजिये। अव०
हिलमिल शंकर के गुण गाओ, बाद बिवाद न कीजिये। अव०

भजन २२३

इस काल बली से बाजी बली तो सब हार गये ३।
जितना परिवार तुम्हारा, कोई संग न चलने हारा।
सब कर गये अन्त किनारा, न संग में सुत यार गये ३ ॥ इस०
जिन वश में किया न मनको, नहीं दिया धर्म में धनको।
तो फ़िजूल ही नर तनको, जगत में योंही हार गये ३ ॥ इस०
यहां लाखों ज़ालिम आये, जिन दीन हीन तरसाये।
वह भी न सुखी कहलाये, स्वयं को मार गये ३ ॥ इस०
जो धर्म से प्रीति लगावे, पग अधरम में न बढ़ावे।
पद तेजसिंह कथ गावे, वही तो जन पार गये ३ ॥ इस०

भजन २२४

दोहा—पानी का सा बुलबुला, यह है अधम शरीर।
कबतक प्रिय! ठहरायगा, वृत्त नदी के तीर॥

टेक—थोड़े से जीने पर क्यों इतना अभिमान।
ये क्षणभंगुर काया है, बादल कीसी छाया है।
जिसे रहा स्थिर जान॥ थोड़े० १॥
हुये रावण से अभिमानी, और दुर्योधन लासानी।
मिटा सब उनका निशान॥ थोड़े० २॥
नित भरी अकड़ में डोले, नहिं सीधा किसी से बोले।
चढ़ा शिर पर शैतान॥ थोड़े० ३॥
क्या इस में चतुराई, सब छोड़ी नेक कमाई।
किये दुख के सामान॥ थोड़े० ४॥
कहे तेजसिंह शर्मा तू, कुछ अब भी होश में आ तू।
रहा बन जो इंसान॥ थोड़े० ५॥

दादरा २२५

अँखियां लागीं समय सब बीत गयो।

शेर—खुदी के ज़ोम में बेखुद खुदा मिले क्यों कर।
अनी जो दिल में पड़ी वह अनी टले क्योंकर॥
उद् हैं खम से तेरे वह उद् हिलें क्योंकर।
न तू मिले तो मिले वह तेरे गले क्योंकर॥
सितम है तुममें न, तुमको सितम मिले क्योंकर। अँखि० १

रहे हमेशा से ऐसे शमूल बातों में।
गुज़ारी उम्र को बक बक फिजूल बातों में॥
कभी न खुश हुये आखिर मलूल बातों में॥
खराब वक़्त किया सब फ़िज़ूल बातों में॥
बतादो तुम को हुआ क्या हसूल बातों में। अँखि० ॥
रहोगे कब तलक बे फ़िक्र ख्वाब ग़फ़लत में।
उठो उठो ये सदा आती है मज़म्मत में॥
लगाना दाग़ है बे फ़ायदा अपनी हुरमत में॥
अज़लसे बचना नहीं और तुम मुहब्बत में॥
हुये शहीद हो बतला दो किस की उलफ़त में। अँखि० ३॥
हज़ारों दोस्त थे अपने, किरोड़ों खिदमतगार।
हसीन लाख हुए नाज़ उठाने को तैयार॥
खिरद औ अक़ल न रखते थे और थे ज़रदार॥
लुटाके माल जवानी को जब हुये हुशियार॥
जो देखा गौर से प्यारे तो प्रेम था बेकार। अँखि० ४॥

भजन २२६

फिर दांव न ऐसा बार बार, उठ बीती जात नरतन बहार।
भज सकल सृष्टि कर सृजनहार, जो घट २ व्यापक निर्विकार॥
है वही मुक्तिदाता उदार, तज उसे होत क्यों जग में ख्वार॥१॥
हुये बड़े २ योधा अपार, तिन्हें जात न लागी तनक बार।
जिनके धन लेमा बेशुमार, गये अन्त समय सब हाथ झार॥२॥

अब समझ सोच कुछकर विचार, कर ग्रहण सार तजदे असार।
है यही धर्म सब सुखको द्वार, हर भजिये त्याग मनसे विकार॥३
जग जीवन तेरा बेक़ार, तज अजहुं नींद ग़फ़लत गंवार।
बलदेव जन्म को ले सुधार, झख मारत काहे द्वार द्वार ॥४॥

दादरा २२७

बांधो न गठरिया अपयश की।
है थोड़ी उमरिया दश दिन की ॥ बांधो न० ॥
अकड़ वेग यहां कितने ही आये, गये धरणिमें सब धसकी ॥१॥
कोई दिनका महिमान यहां तू, मतले चाट विषय रसकी ॥२॥
नहीं क़ज़ा से चलि है कज़ाकी, ठसक रहेगी सब ठसकी॥३॥
अजहुं विचार धर्म अपने को, धीरे २ उमर जात खसकी ॥४॥
यम के द्वार मार पड़े मोटी, बदी निकासे जाय नस नसकी॥५॥
भज प्रभुको बलदेव वेगि अब, न तो काल लत तोड़े मसकी॥६॥

दादरा २२८

चलना है पथिक रह जाना नहीं।
क्यों सोवे ग़फ़लतमें पेला, यहां एक पलका ठिकाना नहीं ॥१
तेरे संघाती कितने चले गये, तेरा यह कुछ थाना नहीं ॥२
इस सराय में चोर बसत हैं, उन से सांठ कटाना नहीं ॥३
बली पहलवां हज़ारों आये, चलते समय काहू जाना नहीं ॥४
जिस मालिक ने तुझको पाला, उसको तू पहचाना नहीं ॥५

झख मारत फिरता दुनियामें, दीवाना है तु कुछ दाना नहीं ॥६
यमको उत्तर दे किस मुखसे, है कोई बाक़ी बहाना नहीं ॥७
अजहुं जाग बलदेव नींद से, फिर फिर नर तन पाना नहीं॥८

भजन २२९

कब लेगा प्रभु का नाम उमरिया गई रही थोड़ी। टेक–
कौन भूल में पड़ा सोचकर, नाचे काल कुचाली शिर पर।
लालचकी लीलामें फंस कर, क्यों पूंजी जोड़ी। कब लेगा०१॥
केवल खेल कूद मन भाया, हित साधनमें चित न लगाया।
हाय! अभागे पाप कमाया, सतसंगति छोड़ी। कब लेगा० २॥
मात पिता भ्राता सुत दारा, साथ रहे परिवार न सारा।
मानी मान मोह की धारा, रेकुमति मोड़ी। कब लेगा० ३॥
अजहुं जीवन को न सुधारे, करणी को उड़ "कर्ण" बिगारे।
नेक न हरि की ओर निहारे, प्रेम लता तोड़ी। कब लेगा०४॥

भजन २३०

कर मल २ पछतावे, जब मृत्यु तेरी नियराई।
बड़े भाग्य मानुष तन पाई, किंचितहू कीन्ही न भलाई।
वृथा समयको दीन्ह गंवाई, धर्म की अब सुध आई। जब०१॥
बाल समय सब खेल गंवायो, विद्या पढ़ी न धर्म कमायो।
इन्द्री जीत न वीर्य बढ़ायो, सोच समझ पछताई। जब० २॥
युवा अवस्था आई तन में, चूर भयो भारी यौवन में।

कौन पाप नहिं रहे भजन में, योंही आयु बिताई ॥ जब० ३ ॥
वृद्धापन की बारी आई, लोभ मोह तृष्णा अधिकाई ।
करी जन्मभर पाप कमाई, तुलसी आयु घटाई ॥ जब० ४ ॥

ख्याल २३१

करो सदा सतकर्म धर्म तुम मिले न पुनि नर की काया ।
बड़े भाग्य से प्रियवर तुमने ऐसा शुभ अवसर पाया ॥
चेतो क्यों जीवन को प्यारे विषयों बीच गंवाते हो ।
तज विवेक की बातें क्योंतुम ऐसा पाप कमाते हो ॥
दीन अनाथ दुखी को लख के नेक तरस नहीं खाते हो ।
बन सुधीर मनमाहिं विचारो दुःख को इसी से पाते हो ॥
सारी त्याग दीजिये जड़ता वहुतक तुमको समझाया ॥बड़े०१॥

करके मेल मिलाप सदाचर वेद धर्म को विस्तारो ।
यही भली सामाजिक शिक्षा अपने जीवन में धारो ॥
नाना मत पन्थों के झगड़े सारे के सारे टारो ।
करो सदा कल्याण देश का मत अपना सर्वसु हारो ॥
ऋषि मुनियों की चलो चाल क्यों अपने कुल को शर्माया ॥बड़े०२॥

परके दुखको निजदुख समझो पर सुखको निजसुख मानो ।
पर नारी को निरख के प्यारे निज माता भगिनी जानो ।
काम क्रोध मद लोभ मोह को त्यागो अबतो, सज्ञानो ।
कर संचित सुधर्म से धनको भले बुरे को पहचानो ॥
क्षमा, शील, संतोष बढ़ाओ मिले सदा सुख मन भाया ॥बड़े०३॥

सायं प्रातः सन्ध्या करके जगदीश्वर में चित लाओ ।
अग्निहोत्र का नियम निभाकर परमानन्द नित्य पाओ ॥
भूलो मत बलिवैश्वदेव को पितृयज्ञ भी फैलाओ ।
फैले सुख सारी दुनियां में श्रेष्ठ आर्य्य तुम कहलाओ ॥
विविध-भावसे भरा ख्याल तुलसी ने अपना कथ गाया ।
बड़े भाग्य से प्रियवर तुमने ऐसा शुभ अवसर पाया ॥४॥

ग़ज़ल २३२

सुनो ऐ मित्रवर यक दिन यहां से सबको जाना है ।
करो शुभ कर्म निशि बासर तभी आनन्द पाना है ॥
बने अज्ञानी फिरते हो, न होता चेत है बिलकुल ।
अविद्या आदि से सोचो ज़रूरी चित हटाना है ॥
जिसे ठहराया वेदों ने तुम्हारा फ़र्ज़ आवश्यक ।
बड़ा अफ़सोस है देखो उसे तुमने न माना है ॥
पड़े सोते हो ग़फ़लत में ज़रा अब आंख तो खोलो ।
हुआ है प्रात उठ बैठो तुम्हें होना रवाना है ॥
न सम्पति काम आवेगी न भ्राता मित्र सुत दारा ।
अरे इनकी मुहब्बत में वृथा चित को फँसाना है ॥
महा सुख मूल जगदीश्वर सकल सृष्टी के कर्त्ता को ।
कभी मत भूल अय तुलसी वही तेरा ठिकाना है ॥

दादरा २३३

कोई दम का यहां है बसेरा रे ।

जिस घर को तू अपना जाने, यह तो नहिं है तेरारे १ ॥
बड़े २ भूप वीर अरु योधा, कर गये यहां पर डेरारे २ ॥
कालबली ने एक दिन सबको, आय यहां से खदेरारे ३ ॥
विषय भोग में फँस मन मूरख, ईश्वर से मुख फेरारे ४ ॥
ना जाने कब आवे बुलावा, करले काम सबेरारे ५ ॥
करले जीयरे धर्म कमाई, क्यों आलस ने घेरारे ६ ॥
सालिगराम ईश को जपले, पार होय तेरा बेड़ारे ७ ॥

❀ ३ वेद-प्रचार ❀

भजन २३४

करोरे भाइयो वैदिक धर्म प्रचार ।

दयानन्द भूषण कुल पूषण कह गये बारम्बार ।
भूमण्डल के जो हैं मतवादी । सब मानें हैं वेद अनादी । तुमने उस की दाद भुलादी । बिना वेद पढ़े यह तुम मित्रो ! सब मानो हो हार ॥ करोरे० १ ॥

बिन विद्या ब्राह्मण हुये धूरत । क्षत्रिय हुये नपुंसक सूरत । वैश्य शूद्र हुये छल की मूरत । धर्म नामको करें कलंकित । करते हैं व्यभिचार ॥ करोरे० २ ॥

एक वेद पढ़ विप्र कहावे । दो पढ़ले ऋषि पदवी पावे । तीन पढ़े महर्षि कहावे । प्रजापती पद मिले, कहे ब्रह्मा जो पढ़ले चार ॥ करोरे० ३ ॥

भजन २३५

धरम पद फैलादो घर घर द्वार ।
नगर नगर और ग्राम ग्राम में, वेदों का करो प्रचार १ ॥
द्वेष निकालो प्रीति बढ़ालो, मन में सद् गुण धार ।
थोड़ा है जग जीवन प्यारे, लो अब याहि सुधार २ ॥
धर्म के कारण स्वामी दयानन्द, जीवन गये निसार ।
आर्य मुसाफिर लेखराम भी, सबंधु गये हैं वार ॥ ३ ॥
धर्म के कारण गुरुगोविंद सिंह, सह गये कष्ट अपार ।
हटे न पीछे धर्मक्षेत्र से, उन के राज कुमार ४ ॥
धर्म के कारण राजा हरीचन्द, राज पाट गये हार ।
रानी बिकी रुहिताश पुत्र संग, भूप श्वपच के द्वार ५ ॥
ग्यारह बरस का बाल हकीकत, धर्म का अंकुर धार ।
जान दे गया धर्म न छोड़ा, कहे इतिहास पुकारा ६ ॥
भाई तारूसिंह सा होना जग में है दुशवार ।
मारे गये धर्म नहीं छोड़ा लो मन माहि विचार ७ ॥
ऐसे तुम भी बनो मित्रवर ! त्याग असत् व्यापार ।
तन धन धरती धाम हैं झूँठे, धर्म को जानो सार ८ ॥

भजन २३६

वेदों की आज्ञा अब तो फैला दो देश २ में ॥
ब्रह्मचर्य पूरण धारो, वेद पढ़ लो भाई चारो ।
ज्ञान को बढ़ा दो देश २ में ॥ वेदों० १ ॥

फिर गृहस्थ आश्रम लेना, धर्ममें सदा चित हित देना।
सत्य पथ फैला दो देश २ में ॥ वेदों० २ ॥

फिर वनस्थ होना चहिये, चित हित में देते रहिये।
गुरुकुल बना दो देश २ में ॥ वेदों० ३ ॥

होय फिर संन्यासी स्वामी, सत्यमार्ग होना गामी।
धर्म को सुनादो देश २ में ॥ वेदों० ४ ॥

हिंसा झूंठ चोरी बाधक, तज के सत्य बोलो पाठक।
एक मत करादो देश २ में ॥ वेदों० ५ ॥

भजन २३७

फैला दो ब्रह्म ज्ञान जगत में।

सत्य धर्म और वेद पठन में अर्पण कर दो प्राण १।
धीरज धारो मीठा बोलो, तज देहु हठ अभिमान ॥
नित प्रति पंचयज्ञ का करना, दे दीनों को दान २।
जगत् गुरु था देश हमारा, सब ने किया बखान ॥
वेदों की प्रिय आज्ञा पालो, होगा वह फिर मान ३।
देश देश में धूम मचा दो, हो जाओ सिंह समान ॥
चीन अरब आदिक देशों में, यूरुप और जापान ४।
गुरुकुल में सन्तान पढ़ाओ, तजो मोह की बान ॥
सच्चे मात पिता कहलाओ, दो गुरुकुल को दान ५।
तुम्हरे हित ऋषि अर्पण करगये, तनमन धन और प्राण॥
छज्जू कहै वेग ही चेतो, मिलकर ऋषि सन्तान ॥ ६ ॥

भजन २३८

आजाना रे इस वैदिक धरम पर।

आजनारे भाइयो आजानारे सभी आजनारे ॥ इस वैदिक० १॥
यह तो ईश्वर की है बानी, सारे ऋषि मुनियों की मानी।
ऋषि दयानन्द फर्मानी, कहते जिसको सब कल्यानी ॥
छोड़ो झूंठा करम, न गँवाओ जनम, कुछ खाओ शरम।
पकड़ो वैदिक धरम ॥ आजानारे० २ ॥

जो कोई इसको पढ़े पढ़ावे, पढ़कर भारी बोध बढ़ावे।
सो वह परमानन्द को पावे, यही बेद हमको सिखलावे ॥
यही सच्चा करम, जिसे कहते धरम, जो कोई जान मरम।
आवे इसकी शरन, आवे इसकी शरन ॥ आजानारे० ३ ॥
कहे परशुराम सुन भाई, सारे हिन्दू मन चित लाई।
चाहे मुसलमान ईसाई, कोई मतवाले हों भाई ॥
सबही आजनारे, फल पाजानारे, दुख उठा जानारे।
सुख पाजनारे सुख पाजानारे ॥ आजानारे० ४ ॥

ग़ज़ल २३९

ज़माने भर में वेदों की सदाक़त होने वाली है।
दिलों में सब के वेदों की वह इज़्ज़त होने वाली है ॥
विधी ब्रह्मचर्य की फिर भी सुजीवित होने वाली है।
तो अब सुहबत परस्ती यां से रुख़सत होने वाली है ॥

लगी करने हैं अब कन्यायें भी ज़ुन्नार को धारन।
बख़ाने गार्गी हर एक औरत होने वाली है॥
ज़माने भर में डंका वेद का बजाता है अब मित्रो।
ज़माने भर की अब कुछ और हालत होने वाली है॥

हुई थी देव-भाषा की जो हालत कुछ दिनों पहले।
वही अब फ़ारसी की देखिये गत होने वाली है॥
शरन में वेद के सज्जन सभी आने लगे अब तो।
प्रभु की सब पै ज़ाहिर सच्ची कुदरत होने वाली है॥

लगीं करने हैं प्राणायाम अमरीका की महिला गण।
वहां भी इल्म रूहानी की कसरत होने वाली है॥
न क्यों! अय महर्षि तुझ पै दिलोजां हम करें कुर्बान।
तरक्की हिन्द की तेरी बदौलत होने वाली है॥

न घबराना मेरे मित्रो कि गुरुकुल खुलगया अब है।
जगत से दूर यह सारी जिहालत होने वाली है॥
न हों वे आश वे हैं जो गिरफ्तारे मरज़ मुहलक।
कि आयुर्वेद की जारी तिबाबत होने वाली है॥

करेगा वाक़ई इंसाफ़ यह मुंसिफ़ हक़ीक़ी है।
ग़लत यह बात है उस जा शफ़ाअत होने वाली है॥
पसे मुर्दन अगर होंगे तो संग पैमाल ही होंगे।
नहीं हमराह दौलत और हशमत होने वाली है॥

पये इसहाल क़ौमी हिन्दुओं को लाख समझावें।
मुअस्सर यह नहीं उनको नसीहत होने वाली है॥

लगे बनने सभी इसजा हक़ीक़ी धर्म के ख्वाहां।
हर एक ज़ी अक्ल को ईश्वरसे उल्फ़त होने वालीहै॥

भजन २४०

आओ देखो मुक्ति साधन वेदों ही का ज्ञान है।
ज्ञान है विज्ञान है, कर्म ही प्रधान है।
जिससे उसका ध्यान है, सो सर्व शक्तिमान है॥ आओ०॥

इंजील नहीं तौरेत, मैं नहिं कावा अल्लाऽवेत में।
जिन बुध के नाहिं निकेत में, है मुक्ति प्रभु के हेत में।
प्राणी क्यों छाया अज्ञान, जड़ में चेतनता का भान।
मान मान दुख की खान है॥ आओ०॥

शेर—मुक्ति उसका नाम है जो दुख छुटें संसार के।
दुख छुटें तब जब न हो आवा-गमन का चक्र ये॥
प्रवृत्ति तब तक है जब तक जन्म मृत्यु लग रहा।
दोष से है प्रवृत्ति अरु दोष मिथ्या ज्ञान से॥
मिथ्या ज्ञान, कंटक जान, तजो पाठक संशय वान॥ आओ०

दादरा २४१

हम वेदों की शिक्षा सुनाये जांयगे।
अपनी निन्दा पर ध्यान न देंगे, सदा स्वामी का मन्तव्य फैलाये जांयगे॥ १॥

जैनी पुरानी किरानिन को मिश्रों ऋषियों के वाक्य
सिखाये जायंगे ॥ २ ॥

हिंसा न करना बता कर के सबको, कुरीती यहां से
मिटाये जायंगे ॥ ३ ॥

विधवा अनाथों की टेर पर तुलसी, सारे भारत को
रुलाये जायंगे ॥ हम० ॥ ४ ॥

ग़ज़ल २४२

दुनिया में चारों वेदों का प्रचार करेंगे।
जो कुछ ऋषी की आज्ञा है उसे सरपे धरेंगे ॥
निश्चय हमारी कोशिशों का फल यही होगा।
काबुल अरब इरान में जा झण्डे गड़ेंगे ॥
अमरीका आदि यूरुप जो देश हैं बचे।
बस वेद धर्म की ही आ शरण पड़ेंगे ॥
अफ्रीका श्याम ब्रह्मा आदि जंगली जो देश।
कल्याणी वाणी वेद की सब दिल से पढ़ेंगे ॥
होवेंगे अग्निहोत्र भी घर २ में सुबह शाम।
पितृ अतिथ बलिवैश्व देव यज्ञ करेंगे ॥
होगा आनन्द शांति घर २ में फिर ज़रूर।
वैदिक धर्म पै शीश जब आ आ के चढ़ेंगे ॥
ईश्वर ने वेद सब के लिये हैं दिये हुए।
सारेही मान इनका फिर से करने लगेंगे ॥
प्रचार फण्ड को प्रथम हम करके खूब पुष्ट।

आगे ही आगे धर्म के मैदान में अड़ेंगे ॥

ग़ज़ल २४३

दोहा—केवल वेद ही जगत में, कुदरत का कानून।
उसे त्यागि मत कीजिये, सत्य धर्म का खून ॥

तुम को सोते हो चुकीं, बरसें पांच हज़ार।
अब तो उठकर कीजिये, सुघवर वेद प्रचार ॥

टेक—वर वैदिक धर्म प्रचार में, तन मन धन सभी लगादो।

बिन वैदिक धर्म प्रचार किये सुनो भाई।
करो कोटि यतन नहीं मिलशान्ति सुखदाई ॥

बस इसी में समझो अपनी कुशल भलाई।
भारत सुधार का है यही एक उपाई ॥

शेर—पहिले भारत में इन्हीं वेदों का खूब प्रचार था।
लोक और परलोक की खूबी का दारोमदार था ॥
उस ज़माने में ये भारत विद्या का भण्डार था।
मातहत सब मुल्क थे भूगोल तावेदार था ॥
जब से तुम वेद बिसारे। हुये गर्क नींद में प्यारे।
तबसे सुख मिट गये सारे। पाखण्ड ने पैर पसारे ॥
अबहूँ आलस को त्यागि, नींद से जागि, भूल से भागि,
लगो सदाचार में, भारत को स्वर्ग बनादो ॥ तन मन० ॥१॥
अब नहीं हुक्म चंगेज़ी नादिर शाही।
औरंगज़ेबी महमूदी क़हर इलाही ॥

अब है भारत में वृटिशराज्य सुखदाई।
पियें एक घाट जल शेर अजा समुदाई॥

शेर-देखिये करवट बदल क्या रोशनी की बहार है।
अपने अपने धर्म में हर शख्स खुद मुख्तार है॥
हर मज़ाहिब के कुतुबकानून पर भी विचार है।
खुद गरज़ बहकाने वालों पर खुद की मार है॥
तुम ऐसा अवसर पाई। क्यों नाहक रहे गँवाई॥
ज़रा होश में आओ भाई। न तो रहि जैहो पछिताई॥

है वेद ईश्वरी ज्ञान, लेहु पहचान, होय सन्मान, तभी संसार में, जा बजा ये सब को सुना दो॥ तन मन०॥ २॥

वेदों की सदाकत को जो नित अजमाते।
हैं योरुप के विद्वान् भी अब चकराते॥
पहले थे वह बच्चों के गीत बतलाते।
वहि आज वेद को इलहामी ठहराते॥

शेर-मगरबी उलमाओं का यही तजरबा माकूल है।
कुदरती कानून पस एक वेद ही मकबूल है॥
मानते दीगर कुतुब इलहाम उन की भूल है।
तास्सुब को दिल में रखके बात करना फ़जूल है॥
अय भारत की सन्तानों। क्यों वृथा खाक अब छानों।
निज धर्म पुरातन जानो। असलियत वेग पहँचानो॥

अब तजो गपोड़े आन, कहा लो मान, बनो विद्वान, पड़े क्यों गार में, वेदों का डंका बजादो। तन मन०॥ ३॥

जब से तुमने शुभ सत्य धर्म को छोड़ा।
लिया मान आपने कल्पित-पन्थ-मरोड़ा॥
भड़का द्वेषानल आपस में सर फोड़ा।
तब आय विदेशिन मार २ मुँह तोड़ा॥

शेर-सल्तनत गारत हुई ज़रो माल सारा लुटा दिया।
लौंडी और गुलाम बने लाखों का सिर कटवा दिया॥
क़िले और मन्दिर तुड़ाये दरबदर रुसवा किया।
कुफ्र की पाई सज़ा हिन्दू भी नाम धरा लिया॥
दयानन्द ऋषी जब आया। सोते से सब को जगाया।
भ्रम बल्देव का सभी मिटाया। भारत की पलट दी काया
उसका गुण न भुलाओ, राह पर आओ, समयको लगाओ पर उपकार में, खुदगर्जी को दिल से हटादो। तन मन०॥४॥

भजन २४४

हमतो वरवेद प्रचार में, निज को अर्पण कर देंगे। टेक,
ब्रह्मचर्य्य धारण करवाकर, वेद और वेदाङ्ग पढ़ाकर।
दर्शन के दर्शन करवाकर, माया जाल प्रपंच के।
सुख का मर्दन कर देंगे॥ हम० १॥

गृहस्थाश्रम में फिर लाकर, ऋतुगामी सब ही को बनाकर।
षोड्स संस्कार करवाकर, सन्तानों की आयु को।
हम ऋषि जीवन कर देंगे॥ हम० २॥

पंचयज्ञ नित ही करवाकर, पार्थिव पूजन को छुड़वाकर।

सच्चा ईश्वर भक्त बनाकर, गृहआश्रम के ढंग को।
हम फिर पूरण कर देंगे ॥ हम० ३ ॥

वाणप्रस्थ की प्रथा चलाकर, आत्मा का स्वरूप लखवाकर।
ब्रह्मज्ञान पूरण करवाकर, दृढ़ आस्तिक्य विचार में।
स्थिर तन मन करदेंगे ॥ हम० ४ ॥

अन्त में संन्यासी बनवाकर, मान और अपमान छुड़ाकर।
पक्षपात से चित्त हटाकर, वेदों का सुप्रचार कर।
सुख का साधन करदेंगे ॥ हम० ५ ॥

गुण अरु कर्म स्वभाव मिलाकर, वर्ण व्यवस्था ठीक बनाकर।
नियोग-विधि को भी समझाकर, विधवन के दुख भार को।
सर्वथा दलन करदेंगे ॥ हम० ६ ॥

दयानन्द की आज्ञा शिर धर, पाखंडिन की पोल खोलकर।
राधाशरण एसे व्रत को चर, पर स्वारथ मन धार के।
चुकता ऋषि ऋण करदेंगे ॥ हम० ७ ॥

दादरा २४५

हम वेदों के बाजे बजाये जायंगे।
दुनिया के दुख की चिंता नहीं है,
विद्या की बातें सुनाये जायेंगे ॥ हम० ॥

रक्खो विश्वास प्रभू पास लगाओ तुम दिल।
सत्यमेव जयति सदा वेद पुकारे कामिल ॥
झूठ सरासर सदा छोड़ो न हरगिज़ तुमदिल।

उठो पाओगे फ़तह काम करो तुम हिल मिल ॥
आजिज़ वेदों के झंडे तब लहराये जायेंगे ॥ हम० ॥

ग़ज़ल २४६

क़ौल वेदों का कि जिसने नहीं माना होगा।
दीन दुनिया में न फिर उसका ठिकाना होगा ॥
साफ़ कह दूंगा कि हूं मैं वेद के मत का क़ायल।
हाल दिल जिसको मुझे अपना सुनाना होगा ॥
जब मैं जानूं कि हुई आज सफल यह मेहनत।
वेद के मत में जब यह सारा ज़माना होगा ॥
आर्य्य बन जिसने तजा मोह न ईर्षा प्यारो।
मुफ्त में चक्र उसे अपना गँवाना होगा ॥
आर्य्य बनते हो मगर दिल में यह जाने रहना।
क्रोध भय लोभ को दरिया में डुबाना होगा ॥
द्वेष तज करते हैं जो देश की उन्नति भाई।
ऐसे लोगों पै फ़िदा सारा ज़माना होगा ॥

भजन २४७

छोड़ा वेदों का पढ़ना कैसे होवेगा उद्धार।
ज़रा गौर करो तो खबर पड़े अब भाई ॥
क्या काम रहे कर मुसल्मीन ईसाई।
कितनी भाषा में बाइबिल कुरान छपाई ॥
हर जगह पर अपना मज़हब फैलाई।

बच्चों को रोज़ पढ़ावें, नहीं भाषा और सिखावें।
कुरान को हिफ्ज़ करावें, यही ईसाइयों में पावें॥

पर तुम्हें ज़रा, नहीं ध्यान, हुई क्या हान, कहालो मान।
देखिये अब तो आंख पसार॥ छोड़ा० १॥

किसी नामी ग्रामी परिडत के घर जाओ।
मुश्किल से एक दो पत्र वेद के पाओ॥
नहीं पढ़ो पढ़ाओ वेद न सुनो सुनाओ।
तज परम धर्म को कैसे आर्य कहलाओ॥

जिस धर्म की गति हो ऐसी, है वेद धर्म की जैसी।
फिर उसकी तरक्की कैसी, जिसपर कहलाओ हितैषी॥

दो अंग्रेज़ी पर ज़ोर, करो हो शोर, धर्म को छोड़।
मिटाते वेदों का विस्तार॥ छोड़ा० २॥

मुल्कों मुल्कों में बजे वेद का डंका।
क्या यूरुप औ पाताल अरब क्या लंका॥
इस देश से होवे दूर अविद्या खंका।
तो मिले फेर सुख चैन मिटे सब शंका॥

इस लिये समाज बनाये, स्वामी ने दुःख उठाये।
डूबे थे हमें बचाये, अद्भुत उपदेश सुनाये॥

उनका था यही उद्देश, सुधर जाय देश, फैले उपदेश।
वेदों को माने सब संसार॥ छोड़ा० ३॥

अब तो है भरोसा सब को मित्र तुम्हारा।
बने जहां तक तुम से दीजे आप सहारा॥
फैले दुनिया में धर्म मिटे दुख सारा।
दुष्टों का हो अपमान जाय मुख मारा॥
बच्चों को वेद पढ़ाओ, करना उपदेश सिखाओ।
चन्दे से ट्रैक्ट छपाओ, घर घर उनको पहुँचाओ॥
सब बैरभाव तज दीजे, तरक्की कीजे, विनय सुन लीजे।
मुरारी सब से कहे पुकार॥ छोड़ा० ४॥

भजन २४८

कल्याणरूप जो वाणी, हर जगह उसे पहुँचाओ॥
किस ग़फ़लत में तुम पड़े हो जागो जागो।
इस घोर नींद को अब तो त्यागो त्यागो॥
करो धर्म, पाप से मित्रो! भागो भागो।
पर उपकारी कर्मों में लागो लागो॥
यह है कर्त्तव्य तुम्हारा, मत इस से करो किनारा।
इस ने सब देश सुधारा, इस बिन नहीं होय गुज़ारा॥
दो सबके कानों में डाल, अभी फ़िलहाल, करो मतटाल।
हुक्म लासानी। जो ऋषि सन्तान कहाओ॥ हर० १॥
वेदों के प्रचार में अपना तन मन देदो।
जो बने बांट के धन में से धन देदो॥

चारों पन में से आप एक पन देदो।
जीवन इस के लिये संन्यासी बन देदो॥
मुल्कों मुल्कों में जाकर सच्चे उपदेश सुनाकर।
पड़े भ्रम में जो समझाकर, उन्हें ईश्वर भक्त बनाकर॥
बनो यश के तुम भण्डार, करो उपकार, मन में लो धार।
समझें सब प्राणी, वैदिक सिद्धान्त सुझाओ॥ हर० २॥

छिपा विद्या का प्रकाश मिटा उजियाला।
हरएक ने अपना चिराग अलहिदा बाला॥
चोरों ने भी फिर चोरी का ढंग डाला।
घर फोड़ फोड़ के मित्रो माल निकाला॥
छिपा सूरज हुआ अन्धेरा, भारत चहुँ दिशि से घेरा।
कोई कहे ये मत है मेरा, सच्चा है झूठा तेरा॥
फिर करी ईश्वर ने दया, ऋषी एक भया ज्ञान दे गया।
बड़ा वह दानी, मिलकर उसके गुण गाओ॥ हर० ३॥

जो ईश्वर का आज्ञा है उसी को पालो।
दो और काम सब छोड़ न इसको टालो॥
सब मनुष्यमात्र के हृदय में इसको डालो।
सच्चा है वैदिक धर्म और झूठ निकालो॥
सब को उपदेश सुनादो, सीधा मारग बतलादो।
दुनिया में धूम मचा दो, और सब के भरम मिटादो॥
लीजे जीवन का सार, करो अख्त्यार, वेद संचार। बनाओ
सानी, फिर मन माना सुख पाओ॥ हर० ४॥

भजन २४९

मत पढ़ो कोई उन फ़ार्सी, वाणी है जालसाज़ों की।
लिखा शब्द यद्यपि फिकवाना, पढ़ा जाय वह ही फुकवाना।
फ़र्क़ सीन से स्वाद न जाना। तर्ज़ दगाबाज़ी की॥ बा०॥
नहीं भेद क़सबी क़िस्ती में, और बहिश्ती और भिश्ती में।
मुश्किल है बस्ती पस्ती में, दखल दस्तयाज़ी की॥ बा०॥
वर पर तर को लौट बदल के, चाहे पढ़लो लाख शकल के।
मानस मांस समझ गुल सिलके, अकल न है क़ाज़ीकी॥बा०॥
दाद नागरी को सब दीजो, बाबू की अर्ज़ी सुन लीजो।
अदालतों में कोशिश कीजो, इसके सर्फ़राज़ी की॥ बा०॥

भजन २५०

फ़ारसी जुबान पढ़कर धर्म बिगाड़ा।
तज शुद्ध संस्कृत बानी, पढ़ किस्से और कहानी।
बिगड़ गई ऋषि सन्तान॥ पढ़॥
क्यों अपनी रीति बिगाड़ी, मारी निज हाथ कुल्हाड़ी।
स्वयं कर बैठे हानि॥ पढ़०॥
जबसे यह फ़ार्सी आई, हुये यवन करोड़ों भाई।
वेद तज पढ़ें कुरान॥ पढ़०॥
सब धर्म और कर्म बिसारे, हुये उलटे आचरण सारे।
हाय खो दिया ईमान॥ पढ़०॥

उर्दू में जाल बने हैं, झगड़ा हो युद्ध ठने हैं।
कुछ का कुछ करें बयान ॥ पढ़० ॥
जो आर्य्यवर्त्त कहलाया, उर्दू पढ़ भ्रष्ट बनाया।
कहन लगे हिन्दुस्तान ॥ पढ़० ॥
सुत वासुदेव जब पाओ, वेदों को पढ़ो पढ़ाओ।
जिस में है ईश्वरी ज्ञान ॥ पढ़० ॥

दादरा २५१

छोड़ो उर्दू का पढ़ना पढ़ाना।
नत्थू लिखो उसका पढ़लो बद्धू है सिर्फ़ एक नुक़ता डालें सकता।
खुदा जुदा में फ़र्क़ न रहता-हा ! छोड़ो० ॥
कुल्लेबनफ़शाही व इश्ने इलायाहिया किसने पढ़ाया किसकाबनाया
दाने इलायची थां गुलबनफशा—हा ! छो० ॥
फिकवादो फुकवादो दोनों हैं यकसां, लिखदो किश्ती, पढ़लो कसबी
फ़र्क़ शकिस्ता में नहिं कुछ-भी-हा ! छो० ॥
आहा ये सुंदर है भाषा हमारी, शुद्ध नागरी, नागर देवी।
पाठक आप बड़े भागरी-हा ! छो० ॥

भजन २५२

करके विद्या, कूंच, यहां से पहुंची इंगलिस्तान में। टेक,
भारत सुतन अनादर कीना, विद्या तुरत देश तज दीना।
चलत समय भाख्यो अति हीना, भरके नीर अँखियान में ॥क०॥
कहां गये ब्रह्मा सनकादिक, गौतम पातंजलि उद्दालक।
रहा न कोई भी मम ग्राहक, आर्य्यों की संतान में ॥कर० २॥
शिव दधीचि हरिचंद युधिष्ठर, रामकृष्ण अर्जुन क्षत्रिय बर।
कपिल कणाद व्यास से ऋषिवर, राखें थे प्रियप्रान में ॥कर० ३॥
महाभारत पश्चात हमारा, त्याग दिया करना सत्कारा।
मूरखता का बजा नकारा, अबतो हिन्दोस्तान में ॥करके० ४॥
मूरखता ने पांव जमाया, धर्म कर्म सब मार गिराया।
नित दुख बढ़ता गया सवाया, भारत के दरम्यान में ॥कर० ५॥
प्रथम गमन विद्या ने कीना, पीछे सुख सम्पति चलदीना।
घेर देश दुर्गति ने लीना, आवे नहीं बयान में ॥करके० ६॥
हे प्रभु कुमति निवारन कीजे, विद्या फिर भारत में दीजे।
सुत बल्देव शरण में लीजे, फँस रहा दुख दलदान में ॥क० ७॥

ग़ज़ल २५३

विद्या पढ़ाओ जहां तक हो तुम से।
बिगड़ी सुधारो तुम्हारी सन्तान है॥
भारत पै छाई अविद्या की रात्री।
तिसपर घटा घेर लाया अज्ञान है॥
विद्या से शून्य है ये भूमि अभागिन।
कर्मों से हीन है जाती अभिमान है॥
विदेशी भी उपहास करते हैं सारे।
इंगलैंड के वासी निवासी जापान है॥

काले की तुमको मिली है उपाधी।
आर्यावर्त्त से बना हिन्दोस्तान है॥
वहशी जो थे आज वह हैं मुहज़्ज़िब।
विद्या ही केवल फ़ख़र इंग्लिस्तान है॥
योरुप के विद्वान कला कौशलों से।
बनाते हैं रेलादि नूतन सामान है॥
आकाश पर्य्यटन करने के हेतू।
रचा यथेच्छा बेलून जैसा यान है॥
बिजली के तारों से लेते हैं कारज।
निकाली है कल जिसने क्या बुद्धिमान है॥
इधर हिन्द का है निरक्षर आचार्य्य।
मुर्दे का लेता कफ़न तक का दान है॥
संशय निवारण अब हो इन से क्योंकर।
अनपढ़ पुरोहित पढ़ा यजमान है॥
पढ़ना कठिन किन्तु भिक्षा सुगम है।
नहीं लोक लज्जा नहीं इनमें आन है॥
क्षत्री भी हैं तो ये कायर हैं रन के।
न भुजदण्डबल है न शास्त्रों का ज्ञान है॥
पिता औ पितामह महावीर जिन के।
कटता नहीं उन से चूहे का कान है॥
चौके पै उतरी है भारत की विद्या।
नाड़ी तो देखो कुछ बाक़ी ज्ञान है॥
धन्वन्तरी सा कहां हो चिकित्सक।

करे औषधी औ बतावे निदान है।
कहां तत्ववेत्ता हो सांख्यी कपिल जी।
कहां बादरायन जो भारत का मान है॥
कहां है वह गौतम नैयायिक फ़िलास्फर।
कहते थे सब जिसको युक्ती निदान है॥
कहां है पातंजलि महर्षि तुम्हारा।
योग और महाभाष्य जिसका प्रधान है॥
कहां जैमिनी जी मीमांसा के कर्त्ता।
धर्मों का तुम को सुनाते विधान है॥
कहां है कणाद जी का दर्शन वैशेषिक।
नहीं करता अब उन पै कोई भी ध्यान है॥
बाल्मीकि और कालिदास जी कहां हैं।
अलंकार जिनका महा रस की खान है॥
कहां विश्वकर्मा शिल्पकार चातुर।
जिनकी बनावट का पुष्पक विमान है॥
सुधर्मा सभा भी बनाई थी जिसने।
साखी जो पूछो तो भारत पुरान है॥
ऐसे तो थे पूर्व पुरुषा तुम्हारे!
तुमसा नहीं आज मूरख नादान है॥
अविद्वान का सारा जीवन है निष्फल।
ऐसे तो जीवन से मरना प्रधान है॥
विद्या से बनता है राजा का मन्त्री।
विद्या से बनता सभा में प्रधान है॥

विद्या बिना नर है वनचर के सदृश।
विद्या बिना पुरुष पशु के समान है॥
विद्या गुप्त धन है, छिनता नहीं है।
न चोरी का डर है न अग्नि से हानि है॥
विद्या बिना वृद्ध बालक के तुल्य है।
बालक भी विद्वान् वृद्ध से सुजान है॥
चिरंजीवी है नाम विद्वज्जनों का।
इस के लिये कैसा कैसा प्रमान है॥
शंकर और दयानन्द की विद्वता का।
द्वीप और द्वीपान्तर में प्रसिद्ध मान है॥
उन के सदृश थे और भी तो कितने।
बताये पता कोई नामोनिशान है॥
विद्या से होती है बुद्धि की वृद्धि।
विद्या से अक्षर आनन्द ज्ञान है॥
विद्या से होता है सन्तोष प्राप्त।
विद्या से गुनियों का गौरव महान है॥
विद्या से धर्म, धर्म से अभय पद।
विद्या से मिलता परब्रह्म ज्ञान है॥
संक्षिप्त कर के सुना तू अमीचन्द।
थोड़ा समय तेरा लम्बा व्याख्यान है॥

भजन २५४

करो विद्या विस्तार, जो सुख सम्पति चाहो ॥टेक॥

विद्याही बुद्धि बढ़ावे, गौरव का रंग चढ़ावे।
ज्ञान की यह भण्डार॥ जो सुख० १॥
विद्या है नर का भूषण, हरती है यह सब दूषण।
मन में करो विचार॥ जो सुख० २॥
इनको नहिं चोर चुरावे, नहिं राजा बांट करावे।
करो चाहे यतन हजार॥ जो सुख० ३॥
राजा स्वदेशही पूजित, विद्वान लोक बिच भूषित।
लीजे यह मन धार॥ जो सुख० ४॥

गुरुओं का भी यह गुरु है, नर इसके बिन अतिगरु है।
इसी को लीजे धार॥ जो सुख० ५॥
यह नित २ सुयश बढ़ावे, सिर पै न कलौंच मढ़ावे।
बना देवे सरदार॥ जो सुख० ६॥

यह असली धर्म बतावे और ब्रह्मधाम पहुँचावे।
मुक्ति का खोल द्वार॥ जो सुख० ७॥
विद्या की है यह माया, दी पलट देश की काया।
चला दिये रेल अरु तार॥ जो सुख० ८॥
बहु कलमशीन हुई जारी, जो लगई दौलत सारी।
खींचकर सागर पार॥ जो सुख० ९॥
यह विविध भांति के कौशल, हैं सब विद्याही के फल।
जाने सब संसार॥ जो सुख० १०॥
कहे खालिग पढ़ो पढ़ाओ, आगे को बढ़ो बढ़ाओ।
देश का हो उद्धार॥ जो सुख० ११॥

भजन २५५

दोहा—भारत हित नहीं होयगा, बिना वेद प्रचार।
सत् विद्या सीखो तभी, होगा देश सुधार॥

टेक-बिन विद्या नहीं सुधरेगी मित्रो ये भारत सन्तान।
चाहि लेक्चर शबोरोज़ सुनाओ, मन्तक रियाज़ी घोट पिलाओ
चाहि नर्क का डर दिखलाओ, करत न कोई कछु मान॥बिन०१
चाहि रोमन इंगलिश पढ़वाओ, बूट कोट पटलून पिन्हाओ।
नकली जण्टिलमैन बनाओ, वृथा करो धन हान॥ बिन० २॥
चाहि लन्दन जापान को जाओ, अमरीका जर्मनी मंझाओ।
चाहि लेडी को गले लगाओ, करिके ब्राण्डी पान॥बिन० ३॥
चाहि सोडा लिमनेट पिलाओ, उबालकर अंडे खिलवाओ।
चाहि नित गिरजे में जाओ, बनि पूरे क्रस्तान॥ बिन० ४॥
चाहि जितने कांफ्रेंस कराओ, रिज़ुलेशन चाहि पास कराओ।
टेबिल तोड़ो शोर मचाओ, समुझत नहिं अज्ञान॥बिन० ५॥
तभी सुधरेगा देश तुम्हारा, सत् विद्या का लेउ सहारा।
वेदों का भी बजे नकारा, भारत के दर्म्यान॥ बिन० ६॥
सन्तति को गुरुकुल भिजवाओ, ब्रह्मचर्य से वेद पढ़ाओ।
धर्म वीर बलदेव बनाओ, जो चाहो कल्यान॥ बिन० ७॥

भजन २५६

दोहा—राजा अपने देश में, पाता है सन्मान।

बुद्धिमान जन हर जगह, पुजता एक समान॥
टेक-उस बाप को बैरी जान, जिसने नहिं पुत्र पढ़ाया।
बिन विद्या मूरख कहलावें जब तक जीवें दुःख उठावें॥
जब कहीं विद्वानों में जावें, पाते हैं अपमान॥जिसने० १॥

गुणियों में मूरख नर ऐसे, हैं बगले हंसों में जैसे।
बैठे लगें कुशोभित वैसे, लगें न शोभावान॥
वहां जाकर के पछताया॥ जिसने० २॥

पितु का यह कर्त्तव्य कर्म है, सब से पहला यही धर्म है।
सोचो इसका गूढ़ मर्म है, पढ़ावे निज सन्तान॥
बस वही पिता कहलाया॥ जिसने० ३॥

सुता और सुत पढ़ जावेंगे, सब दुःखों से छूट जावेंगे।
सारे इच्छित फल पावेंगे, कीजे इसे प्रमान॥
पद तेजसिंह ने गाया॥ जिसने० ४॥

भजन २५७

दोहा-बिन विद्या संसार में, बुद्धि भई विपरीत।
शुभ मारग तजकर चलें, तब कैसे हो जीत॥
टेक-उलटी होगई रे बिन विद्या के बुद्धि हमारी।
सत् विद्या का पढ़ना छोड़ा, हुआ घोर अन्धेर।
तब से मित्रो आर्य्यवर्त की, पड़ा बुद्धि में फेर॥ उ० १॥

सत्य असत्य का बिलकुल हम को, नहीं रहा कुछ ज्ञान।
हैवानों से भी बढ़चढ़ कर, हुये आज हैवान ॥ उ० २ ॥

जन्म मरण के दुखद चक्र में भोग रहे दुख भारी।
भीख मांगकर खावें फिर भी, बनते ब्रह्मचारी ॥ उ० ३॥

देखो मुक्ति नहीं मिलती है, बिना हुये सत् ज्ञान।
तबतो वृथा तीर्थ व्रत पूजा, गंग जमुन का न्हान॥ उ० ४॥

तेजसिंह कहे जो सुख चाहो, करो वेद विस्तार।
लड़के लड़की सभी पढ़ाओ, तभी होय उद्धार ॥ उ० ५ ॥

भजन २५८

दोहा—बिन विद्या के जगत् में, हुआ बहुत नुकसान।
मेरी कहने में तभी, है कमज़ोर ज़बान ॥
टेक—बिन विद्या के संसार में, होगई बहुत सी हानी।
प्राप्त हुई वर बुद्धि बिसारी, आपस में चल रही कटारी।
इज्जत बिगड़ी सभी हमारी, रह रह निज तकरार में ॥
सब होगये दुश्मन जानी ॥ होगई० १ ॥

निशि दिन भुजा ठोक लड़ते हैं, बिना बात अकड़े मरते हैं।
अति कठोर भाषण करते हैं, नहीं रही नर नार में ॥
मंजुल मँजीर सी बानी ॥ होगई० २ ॥

जब पढ़ना वेदों का छूटा, ब्रह्मचर्य आश्रम भी टूटा।
आर्य्यवर्त का नसीब फूटा, फँसे दुष्ट व्यभिचार में ॥
सुखदा सिख एक न मानी ॥ होगई० ३ ॥

अबभी ज़रा चेत में आओ, लड़के लड़की सभी पढ़ाओ।
सदा शक्ति अनुसार लगाओ, रुपया वेद प्रचार में ॥
तज तेजसिंह नादानी ॥ होगई० ४ ॥

❀ चेतावनी ❀

भजन २५९

फँसकर प्यारे अज्ञान में, क्यों मनुष्य जन्म खोता है।

कुछ करलो पर उपकार जो हो निस्तारा।
यह मानुष्य देह नहीं मिलती बारम्बारा ॥
जिसने दिल में गुण औगुण नहीं विचारा।
वह चौरासी में फिरता मारा मारा ॥
कुछ नहीं मन में शरमावे। जड़ को ईश्वर बतलावे।
कैसे फिर आनन्द पावे। शुभ अवसर बीता जावे ॥
ईश्वर से करले प्रीति, वही है मीत, कहे यह नीति, लाओ
अब ध्यान में, सुख सुमिरन से होता है ॥ क्यों० १ ॥

कहां शिवि दधीच और हरिश्चन्द्र सतधारी।
कहां मोरध्वज विक्रम से परउपकारी ॥
कहां रामचन्द्र और परशुराम बलधारी।
नहीं रहे जगत में नाम है उनका जारी ॥
कैसा मद तुझ पर छाया। जो ईश्वर को बिसराया।
बहुबार तुझे समझाया। नहि ध्यान में तेरे आया ॥

अब भी कर सत्य व्यवहार, वही है सार, सब का भर्तार,
मिले वह ज्ञान में, नहिं सागर में सोता है ॥ क्यों० २ ॥

बेहोश लोभ में पड़ा समझ नहीं आई।
घर की पूँजी को ले गये लोग चुराई ॥
अब भी आलस को त्याग चेत कर भाई
जो शेष रही है उसको लेव बचाई ॥

जो देह मनुष्य की पाई। करले कुछ नेक कमाई।
भारत की चाहो भलाई। सत्य विद्या दो फैलाई ॥

है उत्तम विद्यादान, कहा ले मान, अरे नादान, नहीं मिलता
सुख अभिमान में। क्यों विष की बेल बोता है ॥ क्यों० ३ ॥

दो धन्यवाद स्वामी जी को सब भाई।
हिन्दू से आर्य है जिसने दिया बनाई ॥
करो मित्रो संध्या हवन रोज़ चित लाई।
छुट जावें सारे क्लेश मुक्ति हो जाई ॥

चित सत्य काम में लाओ। जो ऋषि सन्तान कहाओ ॥
ईश्वर से प्रीति लगाओ। फिर मन वांछित फल पाओ ॥
कहै सोहन यही पुकार, लगावे पार, वही कर्त्तार, रम रहा
वह सारे जहान में। क्यों इधर उधर जोहता है ॥ क्यों० ४ ॥

भजन २६०

पापी मन सोवे पड़ा, उठ जाग धर्म पहिचान।

मुश्किल से यह देह थी पाई, सो अब तूने खोय गँवाई।
तज ग़फ़लत नादान ॥ पापी० १ ॥

गया वक्त फिर हाथ न आवे, पीछे से तू क्यों पछितावे।
मौत सिरे पर जान ॥ पापी० २ ॥

अर्जुन भीम से योधा भारी, जिन से कांपी थी भुवि सारी।
हैं कहां कर तू ध्यान ॥ पापी० ३ ॥

मात पिता दारा सुत जोई, धन दौलत और लश्कर कोई।
इनका क्या अभिमान ॥ पापी० ४ ॥

मनुष्य देह को नाव बनाले, कर्म धर्म का चप्पू लगाले।
ओ जल्दी कर नादान ॥ पापी० ५ ॥

भजन २६१

क्यों करता है भाई अभिमान, थोड़े से जीवन पर ॥
अर्जुन से हो गये बलकारी, रावण जैसे लंका मँझारी।
अरु कुबेर से मायाधारी, छोड़े सब सामान ॥ थो० १ ॥
विद्योत्तमा सी राजदुलारी, सुलभा जैसी तत्व विचारी।
उभय भारती विदुषी नारी, हिरा गईं विद्वान ॥ थो० २ ॥
हरिश्चन्द्र से सतव्रतधारी, जमदग्नी से मूल अहारी।
गौतम कपिल से ऋषि बड़े भारी, सुख दे गये हैं महान ॥ थो०३
देश हितैषी होगये भारे, महर्षि दयानन्द से सारे।
लेखराम से प्राण पियारे, वारे तन मन प्रान ॥ थो० ४ ॥
होगये बड़े २ चित्त उदारी, पाठक तुमभी बनो उपकारी।

ऋषि ऋण देवहु शीघ्र उतारी, सुख पाये ऋषि संतान ॥ थो० ५॥

दादरा २६२

तूने सारी उमरिया गुजारीरे।

शेर-बालपन गया खेल में, खोई जवानी प्यार में।
निस्य प्रति कीन्हें कलह, बेड़ा है तेरा मँझधार में ॥
अब मरने की आई है बारी रे ॥ तू० १ ॥

शेर-खेल चौसर हिंसा कीनी, दिन का सोना बढ़ गया।
दूसरों के दोष कह व्यसनों का झगड़ा गढ़ गया ॥
फिर करते हो सुखकी तयारी रे ॥ तू० २ ॥

शेर-विषय रस का स्वाद लीना, नाना मृदु तानें सुनीं।
गीत सुन २ नाच देखा, फिर भी दाख अनमनी ॥
वृथा घूमे पिये मदवारी रे ॥ तू० ३ ॥

शेर-चुगली कर के काम कीन्हें, जो न करने चाहियें।
बिना कारण वैर करते, डाह कर २ दुख दिये।
पछताने की आई अब बारी रे ॥ तू० ४ ॥

शेर-चोरी की जुवा भी खेला, गारी देते दिन गये।
लड़ते भिड़ते सबसे थे पर अबतो आयुध छिनगये।
काम क्रोध ये शत्रु हैं भारी रे ॥ तू० ५ ॥

शेर-ध्यान कर बस ईश का, जिसने जगत पैदा किया।
अब तो चेतो नींद तज, जो पूर्ण सुख चाहा लिया।
तुमको पाठक यही सुखकारी रे ॥ तू० ६ ॥

भजन २६३

उठो अब नींद से जागो।

सोते २ उमर बिताई भैया। कैसी तुमको छः मासी आई भैया ॥ तन मन धन सब दिया है लुटाई भैया। अब तो नींद को त्यागो ॥ उठो अब० १ ॥ कैसे पुरुषा हुए हैं तुम्हारे भैया। कहलाये भारत के सितारे भैया ॥ उनके तुमने नाम बिगारे भैया। शर्म करो अभागो ॥ उठो० २ ॥ रही सही को अब तो बचाओ भैया। दुनिया में कुछ धर्म कमाओ भैया ॥ मत हा योंही जन्म गँवाओ भैया। शुभ कर्मों में लागो ॥ उठो० ३ ॥ बासुदेव कहे चेत में आओ भैया। मत ऋषियों का नाम डुबाओ भैया ॥ सच्चे आर्य बीर कहलाओ भैया। हिन्दूपन त्यागो ॥ उठो अब० ४ ॥

भजन २६४

देखो आंख उघार'रे तुम भारत के प्यारो।
गौ कन्या अनाथ और विधवा विनती करें पुकाररे।
इनके दुखों को टारो ॥ देखो० १ ॥

दुख में पड़ी है उनकी सन्तति जो थे ऋषी तुम्हाररे।
उनके चरित्र बिचारो ॥ देखो० २ ॥

जो भारत की चाहो भलाई, करो नित्य उपकाररे।
यही धर्म तिहारो ॥ देखो० ३ ॥

तन मन धन सब अर्पण करके, विद्या करो प्रचाररे ।
तुम भारत के प्यारो ॥ देखो० ४ ॥

स्वामीदयानन्द देश के कारण, अपना सब गये वार रे ।
उनकी शिक्षा धारो ॥ देखो० ५ ॥

कब तक रुदन करे परदेशी, अब तो करो बिचाररे ।
कहा मानो हमारो ॥ देखो० ६ ॥

भजन २६५

जो चाहते हो धर्म कमाना उठ कर पर उपकार करो ।
तन मन धन सब अर्पण करके वेदों का विस्तार करो ॥
बहुत कष्ट तुम उठा चुके हो वैदिक मारग छोड़ कर ।
आओ भूले भटके भाइयो उसको फिर अखत्यार करो ॥
मत घबड़ाओ बहुत सतावे तुमको मूरख आदमी ।
प्राणी मात्र की तुम सेवा से मत दिल को बेज़ार करो ॥
कृष्ण व्यास आदिक ऋषियों को दोष लगाना छोड़ दो ।
अपने बड़ों की इज़्ज़त को अय प्यारो ! मत अब ख़्वारकरो ॥
बिवाह वग़ैरह के मौक़ों पर नचा नचा कर रंडियां ।
मत अपनी सन्तानों को तुम उनका आशिकज़ार करो ॥
बाली उमर में सन्तानों का कर बिवाह और शादियां ।
बल बीरज को उन के खोकर मत दुर्बल बीमार करो ॥
दीन अनाथ अपाहिज जितने पाओ भारत देश में ।
भोजन वस्त्र उन्हें नित देकर भारत का उद्धार करो ॥

अधोगती को पहुँच चुका है मित्रो ! भारत देश अब ।
इसको सँभालो तुम अब भाइयो ! मिलकर शुभ कारकरो ॥
राग ईर्षा द्वेष वैर तज कर्म करो निष्काम सब ।
धरमी प्रेमी परउपकारी पुरुषों का सत्कार करो ॥
बनो सहायक तुम गुरुकुल के तन मन धन से भाइयो ।
कपिल कणादरु गौतम जैसे ब्रह्मचारी तैयार करो ॥
परमेश्वर के बनो उपासक जो चाहो सुखधाम को ।
यह हवन से नित्य सुगन्धित तुम अपना घरबार करो ॥
एक ईश जगदीश ब्रह्म को अपने चित्त में धारलो ।
किसी पैग़म्बर पीर औलिया की मत पूजा यार करो ॥
बहुत दिनों से वैदिक नैया पड़ी भँवर के बीच में ।
विनय करे परदेशी ईश्वर अब तो इसको पार करो ॥

भजन २६६

अब तो चेतियोरे तुम हो भारत राजदुलारे ।

भारत जननी पर पड़ रहे हैं तरह २ के त्रास ।
पर तुम करवट तक नहीं लेते हुआ देश का नाश ॥ १ ॥

ग़ज़नी ग़ोर तातार से थे आये मुहम्मद शाह ।
लूट खसोट ले गये धन सब, कर गये देश तबाह ॥ २ ॥

जगह २ पर आर्यावर्त में हुये थे क़तले आम ।
जला २ हा ! वेद मुक़द्दस कीन्हें गर्म हम्माम ॥ ३ ॥
दिखा २ तलवार की दहशत बहुत किये बेदीन ।

सदहा विचारे राजदुलारे किये ज़ोर से छीन ॥ ४ ॥
प्यारो ! धर्म रक्षा निमित्त हुए यहां बहुत कुर्बान ।
गुरु गोविन्द के लाड़ के पाले पुत्र त्याग गये प्रान ॥ ५ ॥
नन्हा बालक वीर हक़ीक़त क्षत्री सुत बलवीर ।
धर्म न छोड़ा मर गया हक़पर खा करके शमशीर ॥ ६ ॥
और सैकड़ों के धरम के छिन हुए कलेजा खाक ।
पद्मावत पतिव्रता धर्म पर जल कर होगई पाक ॥ ७ ॥
अब तो जागो निद्रा त्यागो दूर करो यह ख़्वाब ।
रही सही हालत को अपनी अब नहिं करो खराब ॥ ८ ॥
ऋषी दयानन्द तुम्हें जगा गया सहकर कष्ट महान ।
पर उठ करके सो गये फिर भी उलटी चादर तान ॥ ९ ॥
जो सज्जन जन रहे जगाते ऋषी का सुन उपदेश ।
उन्होंने अब आपस में लड़कर पैदा किया कलेश ॥१०॥
परदेशी की विनती सुनलो कहता है कर जोर ।
पापिन फूट को दूर करो अब देखो देश की ओर ॥११॥

भजन २६७

अपने देश की रे अब तो बिगड़ी दशा सुधारो ।
आंख खोलकर देखो भाइयो ! क्या है देश का हाल ।
कैसा था अब क्या हो गया है इस पर करो ख्याल ॥ १ ॥
कभी देश यह आर्यवर्त था अब है हिन्दोस्तान ।
हिन्दू काफ़िर काले वहशी हो रहे ऋषी सन्तान ॥ २ ॥
किसी वक़्त यह देश तुम्हारा था मुल्कों का सरताज ।

अधर्म अविद्या के कारण है सब से नीचा आज ॥ ३ ॥
वेद ईश्वरी ज्ञान को अब तो सारे बैठे छोड़ ।
जड़ क़बरों के बने उपासक ईश्वर से मुख मोड़ ॥ ४ ॥
नहीं खबर कुछ रही किसी को सत्य धर्म क्या चीज़ ।
बुरे भले की रही नहीं है बिलकुल हाय ! तमीज़ ॥ ५ ॥
वैदिक शिक्षा उठगई सारी रहा न धार्मिक ज्ञान ।
सत्य धर्म को छोड़ बने अब सारे पशू समान ॥ ६ ॥
यज्ञ हवन सब छुट गये हम से छूटा सत व्यवहार ।
झूठ कपट छल बढ़गये सब में भ्रष्ट हुए आचार ॥ ७ ॥
वर्ण आश्रम मिटगये ऐसे मिलता नहीं निशान ।
मूरख सब से बड़े कहावें और छोटे विद्वान ॥ ८ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र कुल हो गये हैं गुणहीन ।
नहीं एक की एक को ममता हो गये तेरह तीन ॥ ९ ॥
मस्त हुए सब खुदग़र्ज़ी में नहीं देश से प्रेम ।
विषय भोग में फँस परदेशी तोड़ा ईश्वरी नेम ॥१०॥

भजन २६८

अबतो जागियोरे कैसे सोये भारतवासी ।
उठ जागो और निद्रा त्यागो देखो आंख उघार ।
धर्म की नैया इस भारत की डूब रही मँझधार ॥१॥
देखो हालत अपने देश की समय रहा बतलाय ।
तुमको क्या मालूम नहीं है भारत बिगड़ाजाय ॥२॥

गऊकन्या अनाथ और विधवा करें तुम्हारी आश।
हाहा करती नित दुख भरती दिन २ पाय निराश ॥३॥
बद रसमों में धनको लुटाओ खूब बढ़ाकर हाथ।
तुम को क़र्ज़ बढ़े खाने से भूखों मरें अनाथ ॥४॥
नाज़ुक हालत आर्यावर्त्त की जिसके हम तुम वासी।
इसकी खातिर प्राण गँवाये दयानन्द संन्यासी ॥५॥
इस भारत की बुरी दशा का तुमको नहीं गुमान।
तन मन धन से इस पर हो गये गुरुदत्त कुर्बान ॥६॥
जिस बिरवे को सींच २ मरे लेखराम रणधीर।
उस बिरवे को तुम भी सींचो कहलाकर कुलवीर ॥७॥
जिसमें इज़ाफ़त दूनी होवे घटता नहीं वह माल।
वृद्धि करो मिलकर स्वधर्म की रख उन्नति का ख्याल ॥८॥
जो कुछ असर हुआ तुम पर है मरहूमों की शिक्षा का।
अबसे अहद करो सब दिलमें भारत की रक्षा का ॥९॥
पहले थे इस आर्यवर्त्त में ऋषी मुनी गुणवाना।
कहें परदेशी देखो उनका आगया वही ज़माना ॥१०॥

ग़ज़ल २६९

ग़ाफ़िल समय क्यों खो रहा उठ देख क्या है हो रहा।
किस नींद में तू सो रहा, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
ले सुबह से ता शाम है, विषयों में तेरा काम है।
और हो रहा बदनाम है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥

लालच से तुझ को प्यार है, और झूठ का व्यवहार है।
दिन रात येही कार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
धन का तुझे अभिमान है, लिया धर्म इस को मान है।
उसमें ही तू गलतान है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
कहीं मित्र गूढ़ बनाय तू, कहीं बैर कोही कमाय तू।
लाखों फ़रेब चलाय तू, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
तेरा जो महल और माड़ी है, सामान लाख हज़ारी है।
आखिर को खाक ये सारी है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
यह उम्र बेबुनियाद है, नहीं मौत तुझ को याद है।
ग़फ़लत में तू अब शाद है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
सज्जन को दुश्मन जानता, सत् धर्म को नहीं मानता।
ऐसी हुई अज्ञानता, कुछ ईस का भी ध्यान कर॥
जान और की बर्बाद है, तेरा मज़ा और स्वाद है।
सुनता नहीं फ़र्याद है, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
खावे शराब क़बाब तू, रक्खे उम्मीद सवाब तू।
आखिर को देगा हिसाब तू, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
काफ़िर बना आनन्द से, प्रीती करी पाखण्ड से।
हरगिज़ न खौफ़ है दण्ड से, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
मूरख तुझे भ्रमावें हैं, सब गप्प शप्प सुनावें हैं।
खुद को ब्रह्म बतावें हैं, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
भक्ती को जो सिखलाते हैं, वह और भी जतलाते हैं।
ईश्वर को जड़ बतलाते हैं, कुछ ईश का भी ध्यान कर॥
सत्संग से तुझे आर है, कुछ जानता नहिं सार है।

भूखा फिरे तू गँवार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
निज धर्म सारा छोड़ कर पत्थर से नाता जोड़ कर।
क्या होगा माथा फोड़कर, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
यह तन न बारम्बार है, करता न क्यों उद्धार है।
तुझ को महा धिक्कार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
वेद का सुप्रकाश है, करता महा तम नाश है।
वेसा हमें विश्वास है कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
ले वेद की अब भी शरन, सुधरे तेरा जीवन मरन।
दे इस में तन मन और धन, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥

भजन २७०

भारत देश की हां ! प्रभु जी बिगड़ी दशा सुधारो।
जब २ विपति पड़ी भारत पर कीन्ही तुम्हीं सहाय ॥
अब भी दया करो पतितन पर देश रहा बिलखाय ॥ भारत०
स्त्री-शिक्षा उठी देश से जो उन्नति की खान।
गृह आश्रम जो स्वर्गधाम था अब है नर्क समान ॥ भारत०
पर्दे में रहना तिरियों का रहे उचित हैं मान।
स्याने पुजारी अरु व्यभिचारी ठगते उन्हें महान ॥ भारत०
सच्चा पर्दा जो मन का है उसकी नहिं तालीम।
जिसके बल सीता रावण घर रक्खा धर्म अज़ीम ॥ भारत०
स्त्री पुरुषों की अर्धांगी है दरजा सम बतलाय।
स्त्री अन्दर हैं पुरुष है बाहर यह कैसा अन्याय ॥ भारत०

बाल विवाह ने आन दबाया हुये सकल बलहीन।
पुरुषारथ नहिं रहा किसी में पर के हुये आधीन ॥ भारत०
पुनर्विवाह से हठकरि रोकत विधवन को नादान।
गर्भपात निश दिन करवावत जानत सकल जहान ॥ भारत०
नीच वर्ण से उच्च वर्ण में कोई नहीं जाने पाये।
बिश्वामित्र आदि फिर कैसे ब्रह्मऋषी कहलाये ॥ भारत०
देशान्तर में भ्रमण किये से धर्म भ्रष्ट रहे मान।
अर्जुन ब्याहे अमरीका में इस पर दिया न ध्यान ॥ भारत०
शकर औषधी देशान्तर की करते हैं सब पान।
धर्म भ्रष्ट फिर क्यों बतलाकर करते देश की हानि ॥ भारत०
छुआ छूत ने आर्यावर्त को कर दिया तेरह तीन।
प्रायश्चित्त के बने मुख़ालिफ़ जो हैं शास्त्र विहीन ॥ भारत०
सोशल कान्फ़रेंस आदिक हैं यत्न करें अधिकाय।
राधाशरण कहे हे भगवन ! कोई न सुनता हाय ॥ भारत०

भजन २७१

दोहा—प्यारे भारतवासियो, सुनो हमारी बात।
आंखें खोलो नींद से, भारत उजड़ा जात ॥
टेक-अब जागो भारतवासियो, भारत उजड़ा जाता है।
रण्डी मुण्डी ज्वारी लूटें, पण्डे और पुजारी लूटें।
दे दे दम दुराचारी लूटें, योगी अरु संन्यासियो।
ये क्या अन्धेरखाता है ॥ भारत० १ ॥

नौते और स्याने लूटें, मुर्शद अरु मौलाने लूटें।
पी पी भंग दिवाने लूटे, दुख उपजत अरु हांसियो।
कहने में नहीं आता है ॥ भारत० २ ॥

नवग्रहों के दलाल लूटें, शराब देदे कलाल लूटें।
नजूमी बन २ के धन को लूटें, दे फ़रेब की फांसियो।
कोई ग़ैब की बतलाता है ॥ भारत० ३ ॥

महंत और जटाधारी लूटें, किमियागर निराहारी लूटें।
विदेश के व्योपारी लूटें, कर २ नकल नक़ाशियो।
कोई तिलस्म दिखलाता है ॥ भारत० ४ ॥

वकील अरु बैरिष्टर लूटें, क़ानूनी मुछकत्तर लूटें।
रिशवतखोर सिकत्तरलूटें, सिविलपुलिस चपरासियो।
कोई फ़रेब फैलाता है ॥ भारत० ५ ॥

चढ़ा लुटेरों का दलभारी, करदिया भारत मुल्क भिखारी।
विनय करत बलदेव तुम्हारी, तुमहीं प्रभु पति राखियो।
एक तुमहीं से अब नाता है ॥ भारत० ६ ॥

दादरा २७२

कैसा विगड़ा ज़माने का चालो चलन ॥ टेक ॥

स्वांग थियेटर में करें खर्च दिलो जांसे ज़र।

दीन बेचारे मरें भूखों नहीं उनकी खबर ॥

सांथ कमज़र्फ़ों के उड़ते हैं रात दिन सागर।

फ़िज़ूल खर्ची में लाला ने लुटाया सब घर ॥
पाखंडी, मतिमन्दी, ये रण्डी के नाचों में होरहे मगन ॥कै०॥

सदहा दीवाने बने फिरते हैं नौटंकी पर।
ज़नाना भेस बनाना पहिन पहिन ज़ेवर ॥
हैफ़ सद हैफ़ नहीं ध्यान है पमालो पर।
वाह ! अफ़सोस खुश हो ऐसे चाल ढालोंपर ॥
अज्ञानी, अभिमानी, मनमानी शैतानी, यह करते कथन ॥कै०॥

अनेक बाबा भी देखे हैं जार बिलकुल हैं।
अपढ़े ढोंग रचाये गँवार बिलकुल हैं ॥
वेद आज्ञा से भी बेशक फ़रार बिलकुल हैं।
हमने देखा तो वह मतलब के यार बिलकुल हैं ॥
व्यभिचारी, हमारी, तुम्हारी, अनारी, लगें बाईनें तकन ॥कै०॥

सच्चे जगदीश को तो दिल से भुला रक्खा है।
ज़खैया प्रेतों को भूतों को मना रक्खा है ॥
मोक्ष पदवी को भी मुट्ठी में दबा रक्खा है।
अय फुन्नीलाल यह अन्धेर मचा रक्खा है ॥
मूर्ख नहीं व नालों को समझे हैं तारन तरन ॥ कै० ॥

ग़ज़ल २७३

प्रभु जी बेग भारत को जगा देते तो अच्छा था।

किनारे डूबती नैया लगा देते तो अच्छा था ॥

हज़ारों वर्ष से भारत पड़ा है घोर दुःखों में।

भला अब दुःख सारेही भगा देते तो अच्छा था ॥
जहां देखो वहां इसके विरोधी ही नज़र आते।
इसे वह बाण अर्जुन का गढ़ा देते तो अच्छा था ॥
रहा कोई न शुभ साधन बढ़ी है फूट की चरचा।
इसे अब सूत की माला थमा देते तो अच्छा था ॥
करें क्या 'शिव' भला तुमसे दिली मंशा सभी ज़ाहिर।
कला कौशल में फिर इस को लगादेते तो अच्छा था ॥

ग़ज़ल २७४

दिल अपना राह हक़ पे लगाये चले चलो।
आगे हो आगे पांव बढ़ाये चले चलो ॥ १ ॥
रस्ते से वेद पाक के जो हो रहे जुदा।
उनको भी राह रास्त दिखाये चले चलो ॥ २ ॥
बद एतक़ादियों को दिलों से उखाड़ कर।
वेदोक्त सारे कार कराये चले चलो ॥ ३ ॥
बदरस्मियात देश में फैली हुई हैं जो।
चुंगल से उनके सबको छुड़ाये चले चलो ॥ ४ ॥
प्राचीन देव वाणी के उद्धार के लिये।
गुरुकुल व पाठशाला बनाये चले चलो ॥ ५ ॥
बेकस यतीम बच्चों को औलाद की तरह।
निज आत्मा से लाड़ लड़ाये चले चलो ॥ ६ ॥
विधवा अनाथ दीन अपाहज हैं जिस क़दर।

इन बेकसों को धैर्य्य बँधाये चले चलो ॥ ७ ॥
हिम्मत दिलाओ उनको जो निर्बल हैं आत्मा।
कमज़ोर नातवां को निभाये चले चलो ॥ ८ ॥
गुरुदत्त लेखराम दयानन्द की तरह।
वैदिक धरम का नाद बजाये चले चलो ॥ ९ ॥
माने न माने कोई यह उन को है इख़्तियार।
तुम सच्ची सच्ची बात सुनाये चले चलो ॥ १० ॥
सालिग प्रण जो कर चुके आकर समाज में।
तादम अख़ीर उस को निभाये चले चलो ॥ ११ ॥

ग़ज़ल २७५

उठो तुम भी अय भारत के दुलारो।
ज़रा अपने देश की हालत निहारो ॥ १ ॥
अगर कुछ देश की ममता है तुमको।
तो मिल जुल कर इसे जल्दी सुधारो ॥२॥
बताओ कब तलक सोते रहोगे।
तुम अय भारतके सच्चे ग़मगुसारो ॥३॥
मिलो आपस में प्रीति पूर्वक सब।
परस्पर वैर को दिल से बिसारो ॥ ४ ॥
विनय है आप से सालिग की हरदम।
प्रभू भारत की अब हालत सुधारो ॥ ५ ॥

भजन २७६

उठ भारत का करो सुधार, कैसे बैठे हिम्मत हार।
क्या हुई देश की हालत, नित दूनी बढ़े जहालत।
है बदबख़ती की दलालत, पर तुम बैठे हिम्मत हार ॥उठ०॥
नित लगा अकाल सताने, ताऊन किये घमसाने।
भूकम्प मार लगे खाने, दुनियां रोवे बेशुमार॥ उठ० ॥
कहीं रोवें यतीम बिचारे, जो थे मा बाप के प्यारे।
बह मरे भूख के मारे, होते ईसाई रोज़ हज़ार॥ उठ० ॥
मर रहीं शोक में बेवा, नहीं रहा कोई सुख देवा।
लुटी पति अपने की सेवा लगा डराने मुझे सिंगार ॥उठ०॥

अय देश के चाहने वालो, तहज़ीब बढ़ाने वालो।
करो हिम्मत देश सँभालो, वर्ना डूब चला मँझधार ॥उठ०॥
करो शुद्ध पतित जो भाई, हुये मुसलमान ईसाई।
अपने तुम लेओ बनाई, वेद पढ़ाओ बे तकरार॥ उठ० ॥
दीनो की कराओ रत्ता, देओ थोड़ी २ भित्ता।
करो पोषण और देओ शिक्षा, पुत्र बनाओ करलो प्यार ॥उठ०
जितनी हैं कमसिन बेवा, केवल फेरों की लेवा।
मत बनो उन्हें दुख देवा, उनका करो पुनः संस्कार ॥उठ०॥
करो गुरुकुल आदि जारी, जहां पढ़ें वेद ब्रह्मचारी।
फिर बने देश हितकारी, परदेशी की सुनलो पुकार ॥उठ०॥

गजल २७७

उठो नींद से अब सहर होगई है।
उठो रात सारी बसर होगई है॥
उठो कुल सभा मुन्तशर होगई है।
हवा सब इधर की उधर होगई है॥
बग़ल में नसीबे को भी लेके सोये।
अजल को भी तुम आज दम देके खोये ॥१॥
हुई सुबह और जानवर सारे जागे।
ज़नो मर्द हैं घर व घर सारे जागे॥
शरारत के रसिया बशर सारे जागे।
उठे वह भी जो रात भर सारी जागे॥
फ़क़त ख़्वाब में बेख़बर तुम पड़े हो।
अजब नींद की नींद में तुम पड़े हो ॥२॥
उठो ऐ बुजुर्गों की पत खोने वालो।
उठो बाप दादा की मत खोने वालो॥
उठो अपनी अक़्लो सुरत खोने वालो।
उठो अपनी बाक़ी की गत खोने वालो॥
ज़रा ख़्वाब ग़फ़लत से आंखें तो खोलो।
गई आबरू अब तो मुँह अपना धोलो ॥३॥
वह चमका है नूरे सहिर कुल जहां में।
नई रोशनी फैली है हर मकां में॥

शबे ग़म ने चादर स्याह है उतारी।
खुलीं ग़फ़लतों से न आंखें तुम्हारी॥
सब आरायशें लुट चुकीं हैं तुम्हारी।
बहारें हुईं पेश की तुम पै भारी॥४॥

वह चलने लगी इज़्ज़तों की सवारी।
बस अब है जनाज़ा निकलने की बारी॥
ग़ज़ब! उम्र सोने में तुम ने गँवादी।
उठो बन गई और क़ौमों की चांदी॥५॥

वह कुन्बे की इज़्ज़त चली अबतो उट्ठो।
वह दौलत वह इशमत चली अबतो उट्ठो॥
तरक़्क़ी का दिन सारा ढलने को आया।
तनज़्ज़ुल ने यह दिन है तुमको दिखाया॥
किया तुम पै अदबार ने अपना साया।
मगर ग़फ़लतों ने न तुमको जगाया॥६॥

पड़े ही पड़े आंखें मलकर तो देखो।
ज़रा अपनी करवट बदलकर तो देखो॥
ज़माने की रंगत बदलने लगी है।
हवा और आलम में चलने लगी है॥
उठो धूप दुनिया की ढलने लगी है।
हर एक क़ौम गिरकर सँभलने लगी है॥७॥

बड़े बनते जाते हैं छोटे तुम्हारे!
नसीबे हैं किस दर्जे खोटे तुम्हारे!!

अमूल्य शेरं २७-

प्यारो उठो कि अब तो नसीमे सहर चली।
सदियों के ग़ाफ़िलों को भी बेदार कर चली॥
आख़िर में यह है पाय के तुम्हें बेख़बर चली।
साम्रत जो काम की यह कहकर गुज़र चली॥
ख़्वाबे गरां को जाने दो आया है वक़्त कार।
फ़ुर्सत है कम तो काम है करने को बेशुमार॥
मुर्ग़ाने सुबह कहते हैं तुम को पुकार के।
उठो यह कैसे सोये हो पाओं पसार के॥
कब तक बने रहोगे शिकार अन्धकार के।
हसरत से हाथ काटोगे मौक़े गुज़ार के॥
करता नहीं है वक़्त किसी का भी इन्तज़ार।
करले जो काम वक़्त पै होगा वह कामगार॥
हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारफ़ानी में।
कुछ अच्छे कामकरलो चारदिनकी ज़िंदगानीमें॥
जो अहिले करम हैं वह बुराई नहीं करते।
दुनिया में किसी से भी लड़ाई नहीं करते॥
पुरख़ार दरख़्तों की तरह उनकी है हस्ती।
दुनिया में किसी से जो भलाई नहीं करते॥
सुन ले अय मग़रूर इन्सान् मको ढीले छोड़दे।
राहहक़ पै आके तू इस कजरवी को छोड़दे॥
भक्ति नेकी करले ज़ालिम पेश दुनिया छोड़दे।

मर्द है आजिज़ जो दुनियाही में दुनिया छोड़दे ॥
अगर्चे खलक़त यह जानती है, कि इसमें रहता कोई नहीं है।
फिर इसपै ग़फ़लत ये छारही है, कि सो रही है तमाम दुनिया ॥
बाल और पर भी तो काम आते हैं हैवानों के।
हैफ़! इन्सान के इन्सान न गर काम आवे ॥
जाय इबरत है यह दुनिया, ग़ाफ़िलो डरते रहो।
ताज था जिस सर पै, है वह कासयसर ज़ेरपा ॥
आक़िल है गर तो सर न उठाना बज़ेर चर्ख।
आक़िल बहुत बुरा है नतीजा ग़रूर का ॥
कितने ही बन के शहर के और गांव के निशान।
यों मिट गये ज़मीं पै कि ज्यों पांव के निशान ॥

भजन २७६

दोहा–कुछ सलूक तो कीजिये, प्रिय स्वदेश के साथ।
बिलकुल इसे डुबाय के, क्या आवेगा हाथ ॥
टेक–तुम्हारे क्या हाथ आवेगा, इस भारत की नैया डुबाकर।
नफ़ा कितनी देय दिखाई, जो करते हो इतनी बुराई।
क्या मरते समय भी भाई, कुछ इसमें से साथ जावेगा ॥
जाबजा दीन रोते हैं, रो रो आंखें खोते हैं।
सब सुध बिसार सोते हैं, कौन इन्हें धीर बँधावेगा ॥
तुम्हें दीखा है किसका सहारा, कर बैठे हो जो अब किनारा।
अब स्वामी न ज़िन्दा तुम्हारा, जो इतना दुखड़ा उठावेगा ॥

उठो भाई होश सँभालो, अपने बोझ को आप उठालो।
इस गुरुकुल पै दृष्टि डालो, यही सारे दुःख मिटावेगा ॥

भजन २८०

न हिम्मत हारनारे, सुख पाओ भारतबासी ॥
रहो न हरगिज़ न्यारे न्यारे, मिलकर बैठो भाई सारे।
प्रीति प्रेम से सत्यासत्य नितारनारे ॥ सुख० ॥
हालत देश की देखो भालो, ऐसी कोई तजबीज निकालो।
सारे देश के जिससे कष्ट निवारनारे ॥ सुख० ॥
बड़े तुम्हारे आलिम भारी, तुमपर ग़फ़लत होरही सारी।
छोड़ो ग़फ़लत, आंख ज़रा उघारनारे ॥सुख०॥
देखो वेद उपनिषदें दर्शन, लाखों तरह के उनमें हैं फन।
खोलो इनको, मित्रो तनिक विचारनारे ॥सुख०॥
ब्रह्म विद्या में यह पूरन, लौकिक विद्या का भी मखज़न।
भूल के खन्ने, इनको नहीं बिसारनारे ॥सुख०॥

भजन २८१

कैसा शोक है रे, भारत माता अति दुख पाती।
वेद न कोई पढ़े पढ़ावे, शास्त्र दिये धर दूर।
प्रणयन कर आधुनिक पुस्तकें, करी धर्म की धूर ॥ कै० ॥
ब्रह्मचर्य की प्रथा उठाई, बालक गृही बनाये।
बाणप्रस्थ संन्यस्त कहांफिर, चहुँदिशि कुमतिलखाये ॥कै०॥

राज पाट धन धर्म धाम पर, निर्भय दौड़ी हार।
दुख दरिद्र दुविधा ने घेरे, नेकहु नाहिं सुधार ॥ कै० ॥
चोर उचक्के और ठगों ने, कर राखी नित लूट।
हिल मिल 'करण' एक नहीं होते घर २ फैली फूट ॥ कै० ॥

भजन २८२

कर लेहु सुधार फिर भारत का भाई।
घर वैदिक धर्म प्रचारो। नाना मत पन्थ विसारो।
राखो सब से प्यार ॥ फिर० ॥
तन पै घर के पट धारो। धन को मत बाहर डारो।
सीखो सद व्यापार ॥ फिर० ॥
तजि दुर्मति सुमति पधारो। कर्त्तव्य कभी न विसारो।
पाश्रो उच्चऽधिकार ॥ फिर० ॥
सन्मान न शेष तिहारो। जुरि मिल अवनतिकोटारो।
कहता करण पुकार ॥ फिर० ॥

गजल २८३

तुम्हें अय भारत निवासियों क्यों, स्वदेश वस्तू नहीं है प्यारी।
ज़रा तो दिल में विचार देखो, हुई है कैसी दशा तुम्हारी ॥
विदेश वस्तू ने अपना झंडा, यहां पर आकर है जब से गाड़ा।
हुई है रुखसत यहां बिलकुल, तमाम सअनत व दस्तकारी ॥
जिलावतन करके इस जगह के, तमाम कसबोकमाल यारो।

किया है अपना रिवाज इसने, यहां के कुल मर्दोज़न में जारी ॥
स्वदेश वस्तू को आपने हा! यहां तलक दिल से है गिराया।
कि गोया छूने से इस अभागिन के, लुप्त होती हतकतुम्हारी॥
यहां की रुई कपास चमड़े, को कौड़ियों में खरीद करके।
बना रहे कौड़ियों की मोहरें, बिला शुबह मग़रबी व्यापारी ॥
यहांपै बन्नातशालो अतलस, चिकनवो कमख्वाब औरमखमल।
कभी बने थे नफ़ीस ऐसे, कि पहने जिन को थे ताजधारी ॥
यहां के सन्नाअबो अहिलपेशा, रहे थे खुशहाल सब हमेशा।
मगर विचारे ग़रीबो बेकस, बने हैं अब इन दिनों भिखारी ॥
जोलाहे, छीपी, लोहार, मोची, बढ़ी वा रंगरेज़ यां के सारे।
हुए हैं बेकार हाय! ऐसे, कि हैं मुशकिल से दिन गुज़ारी ॥
सुई से लेकर तमाम जितनी ज़रूरी चीज़ें हैं ज़िन्दगी की।
फ़रोख्त होती हैं आज भारत में, ग़ैर मुल्कों से आके सारी ॥
नहोवे मुफलिस क्यों अहिलेभारत, पड़ेन क्यों कालयां हमेशा।
करोड़ों अर्बों जो सालियाना, ले छीन योरुप की सनाकारी ॥
विदेश वस्तू से दिल हटाकर, स्वदेश वस्तू को दो तरक्की।
इसी से क़ायम रहेगी प्यारो, तुम्हारी फ़ैशन व वज़ेदारी ॥
स्वदेश वस्तु की उन्नति परही, देश की ज़िन्दगी है निर्भर।
कभीभीमुमकिन नहींयहसालिग, अकेलीकाफ़ीहोकाश्तकारी॥

भजन २८४

भूले जाते हो तुम हाय, भारतवर्ष के रहने वाले।
हम तुम उनकी हैं सन्तान, जो थे भूमी में विद्वान ॥

गौतम पातंजली महान, सब तत्वों को जानन वाले ॥
थे श्री रामचन्द्र महाराज, पितु आज्ञा पर छोड़ा राज।
नहीं स्वीकारा पद युवराज, पुरुषोत्तम कहलावन वाले॥
अर्जुन भीष्म हुये बलवान, जिनके लक्ष संहारी बान।
अब तज ब्रह्मचर्य की बान, हो बलहीन करावन वाले॥
करके जाती का अभिमान, निर्बल हो गये तुम बलवान।
देते नहीं दशा पर ध्यान, जड़ को चेतन मानन वाले॥
तुमही तो थे सब गुणखान, गाड़ी थे क्या रची विमान।
अब परदेशी भये धनवान, नई कलतार बनावन वाले॥
अब भी मानो बात हमार, मिलकर करलो वेद प्रचार।
पाठक तबही होय सुधार, होजाओ मान बढ़ावन वाले॥

भजन २८५

ढूँढ़ा सारे शास्त्र पुरान में, पद हिन्दू कहीं न पाया।
मनू वेद औ छहो शास्त्र में पता मिला नहिं कोष मात्र में।
हिन्दू पद नहीं मिला तंत्र में, यह सत वचन सुनाया ॥पद०॥
लुगत फ़ारसी में पायस है, उस में हिन्दू लिखा खास है।
देखो खोल हो जिसके पास है, काफ़िर चोर बताया ॥पद०॥
जब संकल्प पढ़ो हो भाई, शब्द 'आर्य्य' ही देत सुनाई।
फिर क्यों छुई मूरखताई, हिन्दू वहां न आया॥ पद०॥
यह है पक्ष यवनों का सारा, हिन्दू रख दिया नाम हमारा।
कहे मुरारी मित्र तुम्हारा, नया गीत कथ गाया॥ पद०॥

भजन २८६

तुम्हें शर्म ज़रा नहीं आती, पद हिन्दू कहलाने में।
बहुत समय हिन्दू कहलाये, अर्थ समझ में कभी न आये।
स्वामी जीने भी समझाये, बनो आर्य की जाती॥
क्या काफ़िर बन जाने में॥ पद० १॥

लुगत में हिन्दू देखा भाला, डाकू चोर अर्थ है काला।
अब तो खासा हुआ उजाला, कैसे अन्धेरा भाती॥
है लाभ श्रेष्ठ बाने में॥ पद० २॥

मत अब हिन्दू शब्द पुकारो, अपना आर्य नाम उच्चारो।
सत् उपदेश सुन जन्म सुधारो, बनो धर्म के साथी॥
नहीं देर मोक्ष पाने में॥ पद० ३॥

सत् उपदेश हुआ अब जारी, खुशी मनाओ नर और नारी।
खुदग़र्ज़ों ने डिगरी हारी, कूट रहे हैं छाती॥
वर्मा कहे सोलाने में॥ पद० ४॥

दादरा २८७

इसी कारण से तुझको जगाय रहे हैं।
टेरैं विधवा अनाथ, कोई देता न साथ। वह रोकरके हमको रुलाय रहे हैं॥ इसी० १॥ धूर्त औ पाखण्डी, बनि योगी और दण्डी। मत वेद विरुद्ध चलाय रहे हैं॥इसी०२॥ कहूँ पै किरानी कहूँ ठाढ़े हैं कुरानी। निज धर्म से मुक्ती बताय

रहे हैं ॥ इसी० ३ ॥ भेड़ बकरी व गाय, लाखों कटती हैं हाय। निज पेटों को क़बरें बनाय रहे हैं ॥ इसी० ४ ॥ साधु और पण्डे कहुँ चोर जार गुण्डे। सब भारत में लूट मचाय रहे हैं ॥ इसी० ५ ॥ जागे नेकहु न हाय ! गये केतहु जगाय। अबतो सारे कारज नसाय रहे हैं ॥ इसी कारण से तुमको जगाय रहे हैं ६

गजल २८८

ऐ बुतपरस्तों, बुतों के भक्तो ! रहोगे सीना फ़िगार कब तक।
हमेशा खूने जिगर को पी पी रहोगे इश्क़े बीमार कब तक ॥
बनते हो जोरू जने २ की भला बुरा कुछ न देखते हो।
फँसाके काकुल के पेंचमें दिल करोगे ज़िन्दगी को ख़्वार कबतक
कंचन को देकर के कांच लेते न होगी हरगिज़ मुराद हासिल।
तुम जिनपै मरते वह तुमसे जलते निभेगी यारी ये यार कबतक॥
तुम्हारे माशूक़ बेवफ़ा हैं तुम बेहया हो जो मरते उन पर।
खाते हो मुँह पर न बाज़ आते पिटोगे बीचों बज़ार कबतक॥
हराम खोरों से दिल लगाते मज़ा न पाते हँसाते आलम।
गुलाबी चमड़े पर सर कटाते बने रहोगे चमार कबतक ॥
न फ़र्ज़ अपने की कुछ खबर है न भूल साबिक़ पर ही नज़र है।
तुम्हारी अक़्लों पै क्या अबर है रहेगी शामत सवार कबतक ॥
दुनिया में आकर धक्केही खाये धोबी के कुत्ते न घाट घर के।
यह भी न सोचे अक़िल के दुश्मन रहोगे मिट्टीमदार कबतक ॥
ये उम्दा मौक़ा मिला है तुमको आंखों से पर्दा उठा के देखो।
नशा य कैसा जमाया तुमने न जिसका उतरा खुमार अबतक

ऐ पाकपरवर ! ऐसच्चेदिलवर ! होईद अबतो तुम्हारा हासिल
बलदेव आके शरण पड़ा है सुनोगे इसकी पुकार कबतक ॥

ग़जल २८९

रहेगी मुख पर ये आब कबतक, रहेगा साहब शबाब कबतक।
यह नींदग़फ़लत काख़्वाब कबतक बचोगेआख़िर जनाबकबतक
यह शान शौक़त ग़ज़ब नज़ाकत, ये नाज़ नखरे अजब क़यामत।
ये जुल्म ज़ोरो सितम शरारत, बने रहोगे नवाब कबतक ॥
है चन्दरोज़ा बहार गुलशन, न ये हमेशा रहे जवानी।
फ़रेब देदे पुलाव ज़र्दा पकेगा कोर्मा कबाब कब तक ॥
सताते हो बेगुनाह, नाहक़, किस घमंड में फिरो हो भूले।
डरो न यारो ग़ज़ब खुदा से करोगे लाखों अज़ाब कब तक ॥
रोते चलेगये यहां से कितने, तुम्हीं अनोखे नहीं सितमगर।
खेलोगे छुप २ के दांव कब तक, चलेगी पट पर मैं नाव कबतक
झूठी हज़ारों बातें बनाते, यहीं से अब तक न बाज़ आते।
लाखों गले पर छुरी चलाते, रहे यह क़ातिल ख़िताब कबतक॥
ग़रीबों का जब गला दबाते, तरस न दिल में ज़रा भी खाते।
हरामज़ादों को ज़र लुटाते, उड़े ये गुलगूं शराब कब तक ॥
क़ज़ा का पैग़ाम है आनेवाला, चलोगे आख़िर मुँह करकेकाला।
पूछेगा हाकिम इसका हवाला, न दोगे आख़िर जवाब कबतक
दुनियामें है येदोदिनका मेला.हिलमिलकेरहना हैसबकोलाज़िम
इस चार दिनकी ही चांदनीमें, करोगे हमसे हिजाब कबतक॥

ये उम्दा मौक़ा मिले न हरदम, ए सोने वालो विचार देखो।
अब खोल आंखें दुनियाको देखो, रहेगा मुँहपर नकाब कबतक॥
बेदार होकर बलदेव जल्दी, अब याद हक़ में लगाले दिलको।
पड़ा रहेगा बुतों के दर पर, बता दे खाना खराब कब तक॥

भजन २६०

टेक—क्या अब भी नहीं जागोगे, सूर्य वैदिक निकला भाई॥
उठो २ ग़फ़लत को त्यागो, उम्र गुज़र गई अब तो जागो।
खो बैठे सर्वस्व अभागो, कैसी नींद छाई॥ क्या० १॥
जग जाना इक़बाल तुम्हारा, हा! हा! मिला खाक में सारा।
कहते सीना फटे हमारा, सुना नहीं जाई॥ क्या० २॥
इष्ट मित्र निज के सुत नारी, प्राण प्रिया सन्तान तुम्हारी।
होती जावे बारी २ यवन और ईसाई॥ क्या० ३॥
आंखें मलकर मुँह धो डालो, सत्य ज्ञान के जलमें न्हालो
पुरुषारथ का खड्ग, सँभालो, शर्मा समझाई॥ क्या०॥

भजन २६१

अबतो अबुध आलसी जागो।
उदित भयो विज्ञान दिवाकर मन्द मोह तम भागो।
डूबगयो दुर्जन तारागण वृन्द विषय रस पागो॥ १॥
साहस सर में कर्म कमल बन अब फिर फूलन लागो।
प्रेम पराग हेतु सज्जन कुल भृंग यूथ अनुरागो॥ २॥

सुख सम्पति चकवा चकई ने मिल वियोग दुख त्यागो।
जाय दुरो आलस उजाड़ में दैव उलूक अभागो॥ ३॥
सकल कला कौशल चिड़ियों ने राग कर्यो प्रिय रागो।
हिल मिल गैल गहो उद्यम की पीछो तको न आगो॥ ४॥

भजन २६२

भाई धर्म बचालो, बिगड़ी बनालो, होश सँभालो,
जीना है दिन चार १॥
डूब चली है नाव धर्म की बीच भँवर मँझधार।
प्राणों से प्यारा धर्म हमारा हमको छोड़ चला॥ भाई धर्म०२॥
देखो प्यारो समझ लो तुम अब भी करलो सुधार।
धर्म मरा तो जानलो यह तुमको भी देगा मार॥ भाई धर्म०३॥
धर्म बचाओ भाइयो तुम अपना भला जो चाहो।
सब जग धन्धे झूंठे हैं इनमें न दिलको फँसाओ॥ भाई धर्म०४॥

भजन २६३

उठ मुँह धो डालो बहुत ही सुलाया आलस नींद ने।
फूट मद्य पी अरु सोये, बुद्धि बल के सर्वस खोये॥
यवन मत दिखाया आलस नींद ने॥ उठ० १॥
ग्रन्थ सत जलाये सारे, अरु जनेऊ तोड़े न्यारे।
हिन्दू पद दिलाया आलस नींद ने॥ उठ० २॥
चमचमात असि दोधारे, खून से सनाये गारे।

धर्म यों छुड़ाया आलस नींद ने ॥ उठ० ३ ॥
बिन बिवाही बेटी प्यारी, रोती अरु कलपती सारी।
हम से किन छुड़ाया आलस नींद ने ॥ उठ० ४ ॥
थे गुलाम लौंडी कहां के, सौंखे रहने वाले यहां के।
हां ! हा ! क्या कराया आलस नींद ने ॥ उठ० ५ ॥
नाना मत अन्धेरा भागा, वेद सूर्य चमकन लागा।
हा ! क्या फिर सुलाया आलस नींद ने ॥ उठ० ६ ॥
कमल ज्ञान बिकसा पाठक, सकुचे धूर्त कैरव बाधक।
जाने क्या सुंघाया आलस नींद ने ॥ उठ० ७ ॥

भजन २९४

भाई धर्म की नैया बचा लेनारे, डूबी जाती किनारे लगा देनारे
मिल आपस में सब भाई बनो, एक दूजे के सबही सहाई बनो
पुरुषार्थ का बीड़ा उठा लेनारे। डूबी० १ ॥
ये धर्म की नाव हमारी है, पड़ी बीच भँवर मँझधारी है।
कोई ऐसी तदबीर बना लेनारे ॥ डूबी० २ ॥
कीन्हीं पापों ने नैया जो भारीहै, हुई इसलिये बहुत लाचारीहै।
कर्म धर्म के चप्पे लगा देनारे ॥ डूबी० ३ ॥
छुट नैया से जो हैं जुदाई हुये, श्रोते खाखाके बहुत सौदाईहुये।
बांह गह करके साथ मिला लेनारे ॥ डूबी० ४ ॥
स्वामी आये बिरोधन के टारनको, संसार की दशा सुधारनको।
तुम क़दम न पीछे हटा लेनारे ॥ डूबी० ५ ॥

दादरा २९५

टुक देखो तो आंख उघार भारत की दीन दशा।
शेर-बिलखाती रोती हैं विधवायें ज़ार ज़ार खड़ी।
यह कैसी हाय पड़ी इन पै मुसीबत है कड़ी ॥
शुमार करती हैं दिन रात ज़िन्दगी की घड़ी।
तुम्हारे कान में आवाज़ क्या कभी है पड़ी ॥
कीन्हीं कितनी तुमसे पुकार ॥ भारत की दीन दशा ॥१॥
शेर-अनाथ बच्चे बिलखते हैं भूख के मारे।
मात पितु बन्धु नहीं कोई जिनके रखवारे ॥
पाल लेते हैं मुसल्मां ईसाई बेचारे।
इस तरह कितने बिछुड़ते हैं तुम्हारे प्यारे ॥
कभी कीन्हा है इनका शुमार ॥ भारत की दीन दशा ॥२॥
शेर-एवज़ में घास के जिस मांका दूध तुमने पिया।
ज़िन्दगी बख़्श पिसर भी था तुम्हें जिसने दिया ॥
हा ग़ज़ब उसका न उपकार तुमने कुछ भी किया।
दुर्दशा देख तुम्हारा कभी धड़का न हिया ॥
ऐसे जीने से मरना है सार ॥ भारत की दीन दशा ॥३॥
शेर-अब सुनायें तुम्हें कन्याओं के दुखका क्या हाल।
पैदा होते ही पिता मां को हुई गोया काल ॥
उमर भर कोई भी उनसे नहीं रहता है निहाल।

फिर पढ़ाने वा लिखाने का करे कौन खयाल ॥
सभी रहती हैं मूर्खा गँवार ॥ भारत की० ॥ ४ ॥

शेर-थे जो द्विज वर्ण परम पूज्य और सदाचारी ।
गौतमो व्यास कपिल मनु कणाद ब्रह्मचारी ॥
हाय ! उस कुल में हुए मूर्ख और दुराचारी ।
धर्म-पथ छोड़ सभी बैठे हैं नर और नारी ॥
इसी कारण हुए अब ख्वार ॥ भारत की० ॥ ५ ॥

शेर-हजारों रुपया बेकार ही लुटाते हैं ।
अनाथ अन्धे अपाहिज न कौड़ी पाते हैं ॥
किसी के द्वार अगर जा अड़ी लगाते हैं ।
जवाब में कभी खाली न हाथ पाते हैं ॥
चाहे सरको पटके हज़ार ॥ भारत० ॥ ६ ॥

शेर-मन बचन कर्म से देशो धरम पै हांके निसार ।
सारे संसार में वेदों का करो तुम प्रचार ॥
होके दृढ़ यम वा नियम का करो पालन नरनारि ।
मित्र की तुमसे विनय अब है यही बारम्बार ॥
मिलिहैं सुख तुम को अपार ॥ भारत की० ॥ ७ ॥

भजन २९६

धन धर्म बचालो प्यारा, देखो लुट रहा देश तुम्हारा ॥
पापिन फूट के दल आ छाये, ईर्षा द्वेषके बान चलाये जी
चली क्रोध की तोप अपारा ॥ देखो० १ ॥

फैले धुयें अविद्या के भारी, हुई दिन से निशा अँधियारी जी !
चहुँओर से मचे हाहाकारा ॥ देखो० २ ॥
चली बाल विवाह कटारी, जिसने लाखों की गर्दन मारी जी !
बही नदिया सी खून की धारा ॥ देखो० ३ ॥
नाना मतों की आग लगाई, नहिं नेक भी रक्षा पाई जी !
अब भी संभलो क्यों नहि प्यारा ॥ देखो० ४ ॥
जल्दी मेल की फौज बनाओ, और प्रीति के बान चलाओ जी !
लेलो शांति की तोप हज़ारा ॥ देखो० ५ ॥
फैले ज्ञान का तेज तुम्हारा, चमके वेद धर्म रवि न्यारा जी !
तबही नाश हो वह अँधियारा ॥ देखो० ६ ॥
ब्रह्मचर्य्य का लेके कटारा, काटो शत्रु का वह दल सारा जी !
तबही बचजाय धर्म तुम्हारा ॥ देखो० ७ ॥
नाना पन्थों की अग्नि बुझाओ, उसपै श्रुति का जल बर्षाओ जी !
त्यागो ग़फ़लत की नींद अपारा ॥ देखो० ८ ॥
फूट शत्रु को पीछे हटाओ, बल्कि धूल में जल्दी मिलाओ जी !
कहे पाठक लो प्रभु का सहारा ॥ देखो० ९ ॥

ग़ज़ल २९७

है जाना देश देशान्तर सनातन धर्म में भाई ।
उसे क्यों बन्द कर तुमने मुसीबत देश पर लाई ॥
जिसे पाताल कहते थे वह है अब देश अमरीका ।
ऋषी सन्तान जाते थे वह अर्जुन कृष्ण सुखदाई ॥
गये थे व्यासजी भी वां महाभारत से साबित है ।

औ उद्दालक ऋषी जी से की अर्जुन ने शिनालाई ॥
कहा तशरीफ़ ले जाना महाशय देश भारत को।
युधिष्ठिर ने रचा है यज्ञ उस को देखना जाई ॥
थे मैक्सीको रियासत में जो सूरज वंश के राजा।
उन्हीं की एक लड़की थी ब्याह अर्जुन के संग आई॥
पुराने रहने वाले हैं जो मैक्सीको रियासत के।
उन्हें "रेड इंडियन" कहते मुवर्रिख धर्म ईसाई ॥
उन्हीं लोगों के अंदर हैं मसायल वेद पौराणिक।
प्रचार उनका किया जाकर जो ऋषी संतान है गाई ॥
तनासुख के वह कायल हैं हवन करते थे रोज़ाना।
निशां उसका ये है अबतक कि अग्नि नहिं बुझन पाई॥
हैं मिस्ले पार्सी, लोगों के रखते अग्नि को हरदम।
इन्हें आतिश परस्तों की है पदवी इसने दिलवाई ॥
हैं औतारों को यह मानें जो हैं कच्छ और मच्छादी।
परस्तिश इन्द्र सूर्य कर दिये मन्दिर हैं बनवाई ॥
जो मैक्सीको के मन्दिर हैं है उनमें ऐसी एक मूरत।
कि जिसका जिस्म आदमका व सर हाथी का दिखलाई॥
नहीं हाथी की पैदायश है अमरीका में ऐ प्यारो।
बिना हिन्दू धरम के ऐसी रचना किसने करवाई ॥
जो तसवीरें हैं मैक्सीको के मज़हब के पुजारिन की।
खड़ा है सांप फन काढ़े सरों पै बन के भयदाई ॥
समय सूर्य ग्रहण के यह मचा के शोर हैं नाचैं।
निगलना भूत का सूर्य को बचना इससे बतलाई ॥

वह मूरति शिव गणेश दी कथा यह राहु से मिलती।
करो अब गौर तुम दिल में सनातन धर्म अनुयाई ॥
शुक स्वामी दयानन्द का करो सब देश हितकारी।
कृपा राधाशरण स्वामी से ध्वनि यह देश में छाई ॥

भजन २६८

यह धर्म हमारा प्यारा, कोई दिनका है बनजारा।
करो होश और निद्रा त्यागो, अब तो ग़फ़लत से जागो-जी।
नहीं रंज सहोगे भारा ॥ कोई० १ ॥

हमें खाने को लाखों बलायें, मुंह खोल २ कर धायें-जी।
लगी करने वह भच्छ हमारा ॥ कोई० २ ॥

गई फिर तक़दीर हमारी, लगे क़हित भी पड़ने भारी-जी।
मचा देश में हाहाकारा ॥ कोई० ३ ॥

कई भाई भूख के मारे, गये त्याग प्रान बेचारे-जी।
पीछे छोड़ के सब परिवारा ॥ कोई० ४ ॥

कई छोड़ वतन उठ धाये, जहां जिस के सींग समाये-जी।
तजि बहिन भाई सुत दारा ॥ कोई० ५ ॥

यह हालत देख ईसाई, और मिसेज रामाबाई-जी।
उन ने लेने को हाथ पसारा ॥ कोई० ६ ॥

हुए लाखों यतीम किरानी, होय वैदिक धर्म की हानी-जी।
लगा औरों का बजने नक़ारा ॥ कोई० ७ ॥

अब भी वक्त है होश में आओ, पैसा २ भी अगर मिलाओ-जी।
तब भी बच जाय धर्म तुम्हारा ॥ कोई० ८ ॥

करो पूर्ण दया उर धारे, रक्षा दीनों की प्यारे-जी।
होवे यश, कल्याण तुम्हारा ॥ कोई० ९ ॥

कौड़ी पैसा जो हो सोई देदो, हिस्सा परम धर्म में लेलो-जी।
कहे खन्नादास विचारा ॥ कोई० १० ॥

भजन २९९

ऋषी ऋण कैसे उतारेंगे, लगी घर में फूट की आग।

जिन पर थी निगाह हमारी, थी जिनसे आशा भारी।
कि बन कर पर उपकारी, देश की दशा सुधारेंगे ॥ल०१॥

उन्हें एसी मूर्खता छाई, लगे करने नित्य लड़ाई।
यह देता हमें दिखाई, कि यह सब काम बिगारेंगे ॥ल०२॥

समझे थे जिन्हें हितकारी, वही निकले दुश्मन भारी।
क्या जाने समाज बिचारी, कि यह सब प्रेम बिसारेंगे ॥ल०३॥

जो थे समाज के भूषण, वही हो गये उस के दुश्मन।
लगे खुद आपस में झगड़न, औरों को कैसे सँवारेंगे ॥ल०४॥

आपस में युद्ध मचाओ, नहीं धर्म से प्रेम बढ़ाओ।
कुछ तो दिल में शर्माओ, तुम्हें क्या लोग पुकारेंगे ॥ल०५॥

हा! ईश्वर से नहीं डरते हो, गारत समाज करते हो।
सर मुफ्त पाप धरते हो, तुम्हें जो नरक में डारेंगे ॥ल०६॥

यों सालिगराम पुकारे, तुम्हें ईश्वर जल्द सुधारे।
बढ़े मेल मिलाप तुम्हारे, यही हम अर्ज़ गुज़ारेंगे ॥ ल० ७ ॥

भजन ३००

क्या करना था क्या लगे करन हमें यही अचम्भा है।

कर्तव्य था ईश गुण गाना, शुभ कर्म और धर्म कमाना ॥
पर इनमें लगाया तनिक न मन ॥ हमें यही० १ ॥

था उचित वेद का पढ़ना, नित पंचयज्ञ का करना।
अब छोड़ दिये सन्ध्या व हवन ॥ हमें यही० २ ॥

सब सत्य से प्रीति बढ़ाते, और झूठ से चित्त हटाते।
अब त्याग सत्य, किया झूठ ग्रहण ॥ हमें यही०३॥

जो सबका ईश कहाता, नहीं जिसे देख कोई पाता।
अब उसको भी लगि गये गढ़न ॥ हमें यही० ४ ॥

ज़िन्दे पितु मात न सेवें, पर मरों को भोजन देवें।
लगे ब्राह्मण भी कुलीनपना करन ॥ हमें यही०५॥

ब्राह्मण क्षत्री कहलावें, और भूतों से भय खावें।
लगे मुर्दों से ज़िन्दा भी डरन ॥ हमें यही० ६ ॥

बुड्ढे भी ब्याह करावें, सर सेहरा मौर बँधावें।
खुद साठ वर्ष के, छः की दुलहन ॥ हमें० ७ ॥

कैसी है अविद्या भारी, ईश्वर को कहें वपुधारी।
बतलावें उसका जनम मरन ॥ हमें० ८ ॥

ब्रह्मचर्य आश्रम खोया, बल बुद्धी तेज डुबोया।
नहीं जाते हैं गुरुकुल में पढ़न ॥ हमें० ९ ॥
ऋषियों की भूमि में भाई, अब घोर अविद्या छाई।
पर नहीं देते गुरुकुलों को धन ॥ हमें० १० ॥
जो बुद्धिमान कहलावें, सब को उपदेश सुनावें।
वही खुद आपस में लगे लड़न ॥ हमें ११ ॥
मुश्किल से नर तन पाया, उसे सालिग वृथा गँवाया।
नहीं आया तू ईश्वर की शरन ॥ हमें० १२ ॥

दादरा ३०१

हितैषी बनो सभी प्यारो, कुरीती घर २ से टारो-टेक।
दो०-बने जहां तक मेट दो, बुढ़वा बाल बिवाह।
एक पुरुष रखे नार कई, होरहा देश तबाह ॥
इसने व्यभिचार बढ़ाय दिया।
देश को नीच गिराय दिया ॥ हि० ॥
बिधवाओं की लखि दशा, थर थर जिय कम्पाय।
जहँ तक तुमसे हो सके, इनका दुख दो मिटाय ॥
अदालत फिरती हैं लाखों।
खून तक करती हैं लाखों ॥ हि० ॥
वेश्या आदि प्रसंग से, हुआ देश बीरान।
मद्य मांस भी छोड़ दो, है ये दुख की खान ॥

बिगड़ गये घर के घर लाखों।
गये सड़ २ के मर लाखों ॥ हि० ॥
बेटी पर धन लेय जो, है ये बड़ाही पाप।
हानि बड़ी हो देश की, हिये बिचारो आप ॥
बुड्ढों तकसे ब्याहें लोभी।
बहुत ही धन चाहें लोभी ॥ हि० ॥
आलस का अब दुर्व्यसन, बढ़ गया बेतादाद।
जुवे बहुत से खिल रहे, हो रहा धन बर्बाद ॥
अच्छे भाई काम करो सारे।
फिरो नहिं तुम मारे मारे ॥ हि० ॥
कुये बाग पोखर बना, पुल अरु सड़क सराय।
भोजन बस्तर दीन को धन दो इन में लगाय ॥
सच्चे व्यवहार करो प्यारे।
धर्म अनुसार चलो सारे ॥ हि० ॥
कन्याशाला खोल दो, गुरुकुल दो बनवाय।
विद्या पावें नारि नर, यूं सुख दो फैलाय ॥
शीलता धीरज को धारो।
देश हित तन मन धन वारो ॥ हि० ॥
गुन कर्मों को वर्ण को, मानों जन समुदाय।
छूत छात के बन्ध को, देओ क्यों न तुड़ाय ॥

शूरता से काम करो सारे।
सबका उपकार करो प्यारे॥ हि० ॥

भाई जो तुमसे जुदा, हुआ है या होजाय।
संग लेलो सब काल में, धर्म से लेओ मिलाय॥

शुद्धि का खोलो दर्वाजा।
जिसका जी चाहे वह आजा॥ हि० ॥

नाना पन्थों को तजो, आर्य बनो नर नार।
एक ईश्वर का मानना, बेद बिहित आचार॥

ऐ पाठक होजाओ फिर वैसे।
हुये तुमरे पुरुषा जैसे॥ हि० ॥

ख्याल ३०२

गऊ कन्या बिधवा के दुःख पर ध्यान न दोगे ऐ भाई!।
सुख स्वप्न में मिले न तब तक बिचार देखो अन्याई॥
गऊ हतन होती हैं हज़ारों कन्या रात दिन रोती हैं।
लाखों विधवा बाली उमर को अँसुओं से मुँह धोती हैं॥
गऊ बैलों बिन खेती नाश भई उपाधि लाखन होती हैं।
कठिन क़ैद में विधवा कन्या जन्म अकारथ खोती हैं॥

शेर।

आह इन की ने यह भारत सारा गारत कर दिया।
सुख न स्वप्न में रहा सब दुःखही दुःख भर दिया॥

पाप करने से न डरते धर्म कर से धर दिया।
क्यों वह सुनते हैं किसी की मुल्क मुफ़लिस कर दिया॥
ऐखुदग़रज़ो! डरो ईश से रहम करो तजि कुटिलाई॥सु०१

बिधवा बाली रो रो सर दीवारों से टकराती हैं।
कात पीस बहु उम्र गुज़ारें नाना कष्ट उठाती हैं॥
तुम्हारे धन से लुच्चे लाखों वेश्या मज़े उड़ाती हैं।
पुलाव ज़र्दा उड़े तुम्हारे धन से गऊ कटवाती हैं॥

शेर।

सोचो हिन्दू भाइयो! यह जुल्म क्यों करते हो तुम
मुल्क दुश्मन ज़ालिमों की पर्वरिश करते हो तुम॥
अपने हमवतनों के दुख पर ध्यान नहिं धरते हो तुम।
बेहया बदज़न पै क्यों दिलोजान से मरते हो तुम॥
बेशर्मो! तुम्हें लाज पेट में नाहक बोझ मरी माई॥सु०२॥

हुये हज़ारों शूर वीर भारत में पहले बलवाना।
धर्मवान औ दयावान वियाकी खान जिन्हें जगजाना॥
उन्हीं के कुल में अब तुम ऐसे कटे न चूहे का काना।
ज़नखापन की चलो चाल औ सुनो रंडियों का गाना॥

शेर।

क्या तुम्हारी अक्लों पर अब हाह पत्थर पड़ गये।
बकते बकते रात दिन समझाते हम तो हर गये॥

अपनी नारी छोड़ क्यों रंडी के घर जा सड़ गये ॥
हाय क्यों भारत के गारत करने पर अब अड़ गये ॥
ऐ बेशर्मो!शर्म करो क्यों हँसी बड़ों की करवाई ॥सुख० ३॥

देव भूमि भारत को तुम ने बना दिया बूचड़खाना।
मद्य मांस खाखाकर, कर दिया मुल्क आपना बेगाना ॥
लाखों दीन बेवा अनाथ भारत में तड़पें बे दाना।
रो२ खून जिगर को खातीं तुम्हें न उनका कुछ ध्याना॥

शेर।

धन हमारे देश का बदकार लाखों खा रहे।
भांड़ बेश्या मुफ्तखोरे बैठे मौज उड़ा रहे ॥
है तुम्हें धिक्कार बिध्वा दीन रो चिल्ला रहे।
कुबकू कितने ही अंधे लूले धक्का खा रहे ॥
विनयकरतबलदेवनाथ भारतकीसूरतक्यों बिसराई।
सुख सपने में मिले न तब तक विचार देखो अन्याई ॥४॥

ख्याल ३०३

गऊ कन्या दुख भरें रात दिन तुम बेश्याके दास हुये।
विचार करके मन में देखो अब तुम हिन्दू खास हुये ॥

चौक १

अति निन्दित जो नाम तुम्हारा विदेशियों ने रखदीना।
वास्तव में वह नाम सार्थक अब तो तुम ने करलीना ॥

अनाचार भरमार किये और अधरम से रिश्ता कीन्हा।
मूरखता को मित्र बनाया धर्म अधर्म नहीं चीन्हा ॥
इस कारण से तुम्हारे मित्रो ! सब सुख सत्यानाश हुये ॥ वि०

चौक २

पढ़ देखो इतिहास तुम्हारे पुराने पुरखा थे कैसे।
उलट पलट क्या हुआ देखलो रहे न तुम अब थे जैसे ॥
सबब सोचिये इस अवनति का यतन कीजिये फिर तैसे।
पड़े रहोगे नींद गर्क में मिले नहीं फिर दो पैसे ॥
क्यों पड़गये समझपर पत्थर रुखसत होश हवास हुये ॥वि०

चौक ३

दुराचार यह देख तुम्हारे मुझ से रहा न जाता है।
दशा देश की देख देखकर मुझ को रोना आता है ॥
गऊ कन्या की देख दुर्दशा बिल्कुल जी घबड़ाता है।
तुम इस क़दर ऐश में डूबे भारत प्राण गँवाता है ॥
भाई तुम्हारे भूखों मरते तुम ऐसे ऐयाश हुये ॥ वि०

चौक ४

वेश्या को तुम माल खिलाते निज नारी भूखों मरतीं।
इसी सबब से बहुत नारि घर बार छोड़ बेश्या बनतीं ॥
बहुत मरें विष खाय २ बहु कुवां बावली में पड़तीं।
तुम वेश्या जबतक नहिं त्यागत आतिशेहो काया सड़तीं॥

शर्म न आवे मुँह दिखलाते धन खोकर बदमाश हुये ॥ वि०

चौक ५

वेश्या को धन देदेकर गौवों का गला कटाते हो।
खूब सोचलो तुम्हीं पीर पर कुर्बानी करवाते हो॥
धर्म काज में देत न कौड़ी नाच में झट दे आते हो।
अनाथ हमवतनों के हाल पर ज़रा तरस नहिं खाते हो॥
इन कर्मों से जभी तुम्हारे देश २ उपहास हुये॥ वि०

चौक ६

इसी से पड़त काल हाल भारत का क्या बेहाल हुआ।
सत्यधर्म उठ गया मुल्क से इसी से पायेमाल हुआ॥
हमदर्दी औ भ्रातृभाव का जब से यहां हलाल हुआ।
फूट फैलगई सारे मुल्क में दिलों में सबके मलाल हुआ॥
आंख खोलकर अबतो देखो सुख सारे हैं नाश हुये॥ वि०

चौक ७

हे जगदीश्वर ! जगतपिता !! अब तुम्हीं आपदा निर्वारो।
दे विद्या बुधि ज्ञान करो इस मूरखता को मुँह कारो॥
कठिन कुमति से हे करुणामय ! करो दास को निस्तारो।
परब्रह्म पूरण परमेश्वर ! दुष्ट कर्म से कर न्यारो॥
विनय करत बलदेव तुम्हीं से सबसे निपट निराश हुये॥वि०

❀ ५ हमारी पुर्व दशा ❀

भजन ३०४

सब देशों में मशहूर आर्य्यावर्त कहाता है।
पहलो इतिहास पुराना, जाने है सभी ज़माना।
चाहे अब कोई करो गरूर, गुरू यह समझाजाता है ॥सब०१
जितनी विद्या हैं, सारी, हुई भूमंडल में जारी।
हुआ उनका यां से ज़हूर हम्हें इतिहास बताता है ॥सब०२
क्या कहें अधिक हम भाई, करते अंगरेज़ बड़ाई।
मिल रही साक्षी भरपूर, यही सबकी गुरु माता है ॥सब०३
यूरुपके फिलासफर सारे, मरते यह शब्द उचारे।
प्रभु विनय करो मंजूर (हो आर्य्यवर्त में जन्म) मेक्स मूलर फ़र्माता है ॥ सब दे० ४ ॥
अब वही देश है प्यारा, जिसे हिन्दुस्तान पुकारा।
सब इज्जत मिलगई धूर, देखकर रोना आता है ॥सब दे०५॥
उठो वासुदेव अय भाई, कुछ तो कर देश भलाई।
सब आलस कर दो दूर, ऋषी उपदेश सुनाता है ॥सब०६॥

ग़ज़ल ३०५

कभी हम बलन्द इक़बाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो।
हरफ़न में रखते कमाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
पढ़ते थे जब हम वेद को जाने थे सब के भेद को।

रखते न अपनी मिसाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
पाबन्द थे जब कर्म के माहिर थे अपने धर्म के।
दिल में ज़रूरी सवाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
जब से जिहालत आ गई तारीकी हरसू छा गई।
मुफ़लिस है जो खुशहाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥
हालत दिगरगूं हो गई क़िस्मत हमारी सो गई।
रोते हैं अब्र जो निहाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

ग़ज़ल ३०६

कि न याद हो।
कभी तेरा भारत नाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥१॥
कर्त्तव्य पालन काम था, तू बिश्व बीच प्रधान था।
तेरा बड़ा विज्ञान था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥२॥
निर्दोष नीति-निकाम था, सब भांति प्रेम प्रवीण था।
छल-झूठ-हिंसा हीन था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥३॥
तू तीन लोक ललाम था, नहिं लेश भर भी पाप था।
न अकाल प्लेग प्रताप था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥४॥
तू स्वर्ग सम सुखधाम था, विद्वान वीर सुजान था।
तू आप अपने समान था, तुझे याद हो कि न यादहो ॥५॥
सब विश्व करता प्रणाम था, साहस सुमति भरपूर था।
ऐसा न कायर कूर था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥६॥
आलस्य तुझको हराम था, पूरा बिचार विवेक था।
आचार में तू एक था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥७॥
उद्योग भी अभिराम था,

सिद्धान्त तेरा उच्च था, शुभ लक्ष्य भी नहिं तुच्छ था।
तू ईश लीला धाम था, तुझे याद हो कि न याद हो ॥८॥

गजल ३०७

भारत के वह दिन लौट कर, कभी आयंगे कि न आयंगे।
धन वीरता इलमो हुनर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
कहां वेद विद्या के प्रदर्शक, अग्नि वाय्वादिक ऋषी।
वह देखने में दृष्टि भर कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
जिसमें अनेकों ब्रह्मविद्, ऋषि मुनि महा योगी यहां।
वह दया कर के इधर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
कहां धर्म धारी राम जैसे, और सीता सी सती।
महाराज दशरथ से पिदर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
कहां भीष्म द्रोणाचार्य, एवं कर्ण अभिमन्यू बली।
अर्जुन से फिर यहां वीर वर, कभी आयंगे कि न आयंगे॥
कहां द्रौपदी रुक्मिणि सुभद्रा, गार्गि और सुलोचना।
उनके चरण इस भूमि पर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
श्री कृष्ण से योगी अहो! पैदा न हैं अवनी तले।
गौतम कपिल से मुनिप्रवर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
बुद्ध से हिंसा विरोधी, और शंकर से सुधी।
वह प्रेम से वपु धार कर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥
दयानन्द जी से स्वामी वर, परमार्थ की चिन्ता बढ़ा।
सबको जगाने दर बदर, कभी आयंगे कि न आयंगे ॥

बलदेव भारत वर्ष की हालत पै अश्क बहा रहा।
करने मदद वह शेर नर, अभी आयंगे कि न आयंगे ॥

भजन ३०८

शैर—एक दिन भारत यह सब देशों का बस सरताज था।
जिस ज़माने में यहां पर वेद मत का रिवाज था॥

टेक—भारत को सूना छोड़ के, वह कहां गये महाराजे ॥
गये राम लखण कहां शूर वीर बलधारी।
जिन के बल से पृथ्वी कांपे थी सारी॥
गये कहां युधिष्ठर भीम भीष्म तपधारी।
कहां परशुराम अर्जुन से शस्त्र खिलारी॥

कहां कर्ण गये अभिमानी कहां गुरु गोविन्द लासानी।
परतापसिंह बलवानी, जिन की विख्यात कहानी॥
किये काज उन्होंने बड़े, न मन में डरे, युद्ध में लड़े, नहीं
मुँह मोड़ के, रण अन्दर हरदम गाजे॥ वह कहां० १॥
कहां गये बशिष्ठ और व्यास से ऋषि विद्याधर।
कहां कणाद गौतम कपिल जैमिनी मुनिवर॥
कहां पातंजली से ऋषी और पाराशर।
जिन के प्रताप से विद्या फैली घर घर॥
कहां गये पाणिनी भाई, जिन रचदी अष्टाध्यायी।
कहां गये कृष्ण सुखदाई, जो वेद धर्म अनुयायी॥
गये नारद ब्रह्मा कहां, करूं क्या बयां, रहे नहीं यहां, वह

नाता तोड़ के, जाकर परलोक विराजे॥ वह कहां० २॥
कहां हरिश्चन्द्र से राजा गये सतवादी।
दिये पुत्र स्त्री त्याग और राजगादी॥
कहांगये दशरथ और जनक धर्म अनुयाई।
नहीं टरे बचन से प्यारी जान गँवाई॥
कहां शिवि दधीचि राजाबल, कहां मोरध्वज विक्रम शल।
कहां दिलीप अज रघु निरमल, रहे बने धर्म में निश्चल॥
अब क्या तदबीर बनायें, कहां से लायें, मुफ्त चिल्लायें,
मरें शिर फोड़ के, सब होगये काज अकाजे॥ वह कहां० ३॥
क्षत्रिय कुल में होगये हैं वेश्यागामी।
दी डोर धर्म की छोड़ पाप की थामी॥
ब्राह्मण कुल जो थे ऋषि मुनियों के नामी।
वह होगये विद्याहीन और बहु वामी॥
संध्या गुरु मन्त्र विसारा, लगे अग्निहोत्र नहीं प्यारा।
यों भारत दीन पुकारा, कुल डूबा सभी हमारा॥
अब भी शोचो मतिहीन, बनो प्रवीण, मुरारी दीन, कहे
कर जोड़ के, वेदों के बजाओ बाजे॥ वह कहां० ४॥

भजन ३०९

टेक—भारत क्यों रुदन मचावे, सब दिन होत न एक समान।

शेर

एक दिन वह था कि बल विद्या में हम भरपूर थे।

और दौलतमन्द सब देशों में भी मशहूर थे।
सब हमें झुकते थे वह वो मातहत आप हजूर थे।
जो वचन कहते थे मुख से हर तरह मंजूर थे॥
एक दिन ऐसा होना था, हमें देख २ रोना था।
गौरव सारा खोना था, पड़ ग़फ़लत में सोना था॥
अब क्यों होते दिलगीर, बांधिये धीर, मानो तदबीर।
ईश का मन में कीजे ध्यान॥ भारत० १॥

शेर

कैसे २ शूर विद्यावान और दानी हुये।
हमसरी क्या कर सकें कोई कि लासानी हुये॥
जिन के वश में देवता तक अग्नि और पानी हुये।
वहभी आफ़त में फँसे गो कैसे ही मानी हुये॥
हुये हरिश्चन्द्र सत धारी, बलि पै पड़ी विपता भारी।
सीता सतवन्ती नारी, रहीं वह कुछ काल दुखारी॥
तुम सोच फ़िकर दो टाल, देखो कर ख्याल, प्रबल है
काल। चक्र में जिस के सभी जहान॥ भारत० २॥

शेर।

जिसके थे सौ पुत्र और भारी कुटुम्ब परिवार था।
राज्य था धन था उन्हें हर बात का अख्त्यार था॥
उनको भी एक दिन मुसीबत ने किया बेज़ार था।
कुछ न कहता था समय के चक्र से लाचार था॥

एक दिन वह था अयोध्या में बड़ी थी धूम धाम।
था यक़ीं सबको यही राजा बनेंगे कल को राम॥
एक दिन हुआ मगर वह शोकसागर में तमाम।
क्यों भरे जाते हो भाई और का अब है मुक़ाम॥
चले राज के बदले बनको, तज वस्त्र खाक मल तनको।
क्या मिला कहो रावनको, गया छोड़ यहीं सब धनको॥
यह है दुनियां का फेर, न आंसू गेर, दिलको रख शेर।
राम नगरी चढ़ चले विमान॥ भारत० ३॥

शेर।

धीर पुरुषों का यही है नियम धीरज धारना।
धर्म अपने मन में रखना और न हिम्मत हारना॥
सब्र करना और दशा बिगड़ी को नित्य सुधारना।
सत्य मारग से कभी मनको न अपने टारना॥
हो मित्र छोड़ घबराना, तुम भारत के हो दाना।
देखा है बड़ा ज़माना, फिर क्या तुमको समझाना॥
तुम जपो सच्चिदानन्द, कटें सब फन्द, मिले आनन्द,
कहे शर्मा फिर होवे मान॥ भारत० ४॥

——:*:——

❀ ६ हमारी वर्तमान दशा और ❀ उसका कारण ।

भजन ३१०

क्या हुआ तुझे अय हिन्द ! तेरा था रुतबा कभी आला ॥
कहां से तूने नाम यह पाया, असल नाम को किधर गँवाया ।
उत्तम नाम तेरा आर्यवर्त था,सुन्दर अर्थवाला ॥ क्या० ॥
सब विद्याओं की तू कान थी, सब देशों की तूही जान थी ।
शंकराचार्य गौतम कणाद को, तूने ही पाला ॥ क्या० ॥
राजा भोज ने घोड़ा बनाया, कल कोई उस में ऐसा लगाया ।
सत्ताईस कोस चलता घंटे में, थी तू विद्याला ॥ क्या० ॥
ऐसेही उसका पंखा हिलता, दिवस रैन बिन छूए चलता ।
इसी तरह के लाखों क़ायम थे, तुझ में शिल्प आला ॥ क्या० ॥
अन्य देशी सब यहां थे आये, यहां से विद्या सीख के जाते ।
अब मुहताज तू है औरों का, क्या उलटा चाला ॥ क्या० ॥
कपड़ा तेरा बाहर से आवे, दिया तेरा कोई और जलावे ।
सीने के लिये सुई न घर में, अजब रंग ढाला ॥ क्या० ॥
धन दौलत का क्या था ठिकाना,हासिद था सब तेरा ज़माना ।
बच्चे तेरे अब भूख के मारे, करते आहो ! नाला ॥ क्या० ॥
जाहो हशम जितनी थी तेरी, ग़ज़नी की जब चली अंधेरी ।
चोर लूटकर ले गये सब कुछ, तोड़ ताड़ ताला ॥ क्या० ॥

रही सही जो बची बचाई, नाइत्तफ़ाक़ी ने वह गँवाई ।
अब तो ख्वाब ग़फ़लत से जागो, हो गया उजाला ॥क्या०॥
शूद्र बनकर उमर न घालो, कोई कौशल कला निकालो ।
करो उद्धार कुछ देश अपने का, सेठ बाबू लाला ॥ क्या० ॥
देशी चीज़ बर्तो बर्ताओ, देशी पहनो देशी खाओ ।
मन्नादास कहे होगी उन्नति, रहे बोलबाला ॥ क्या० ॥

गजल ३११

इतनी ज़िल्लत पै भी अफ़सोस ! कि ग़फ़लत है वही ।
धर्म के कामों से हैयात कि नफ़रत है वही ॥
लाख समझाया मगर अब भी न माने अफ़सोस ।
खोटे कर्मों की तरफ़ हाय कि रग़बत है वही ॥
बुतपरस्ती को किया वेदों से साबित मज़मूम ।
मूर्ती पूजा की अफ़सोस कि आदत है वही ॥
सारे संसार की नज़रों में हुये गरचे ज़लील ।
पर दिमाग़ों में भरी आप के नख़वत है वही ॥
वेद मत पर चलो गर शान्ती के ख्वाहां हो ।
सच्चा आनन्द है जिस में कि यह मत है वही ॥

गजल ३१२

रंज क्या २ न सहे धर्म से ग़ाफ़िल होकर ।
पाप क्या २ न किये विषयों पै मायल होकर ॥

राज धन सम्पदा और दौलतों उम्मीद बक़ा।
हाय क्या २ न गया हाथ से शामिल होकर ॥
बुतपरस्ती करी और पूजे क़दम शूद्रों के।
तेरे अहकाम से मालिक मेरे ग़ाफ़िल होकर ॥
अक्ल थी इल्म था और फ़नो हुनर सब कुछ था।
हाय ग़ज़ब कैसे बने नालायक़ो क़ाबिल होकर ॥
पहले अफ़ज़ल थे कर्म जन्मकी परवाह नथीकुछ।
अब ज़लालत में गिरे जन्म से अफ़ज़ल होकर ॥
मानलो मानलो इज़्ज़त जो पुरानी चाहो।
अब भी आर्य बनो सत्धर्म में शामिल होकर ॥

प्रभाती ३१३

तजि तजि निज धर्म मित्र पते दुख पाये।
जब लग निज धर्म जलनि, अग्नि है बनाये।
हाथी अरु सिंह नरहु, सम्मुख नहिं आये ॥ १ ॥
दाह शक्ति त्यागि जबहिं, खेह नाम पाये।
तनिक सी पिपीलिकाहु, रौंदि शीश जाये ॥ २ ॥
ब्राह्मण निज धर्मपालि, ऋषि मुनि कहलाये।
महाराव राजन ने सादर शिर नाये ॥ ३ ॥
पदवी जो मिलत आज, कहत लाज आये।
पीर और बबर्ची खर, भिश्ती बतलाये ॥ ४ ॥
क्षात्र धर्म जब थे, क्षत्रिय मन भाये।
आवत समरांगन में, कालहु भय खाये ॥ ५ ॥

धर्म विमुख ह्वैके अब, दर दर मुँह बाये।
सिंह नाम पाय, स्यार सन्मुख घबराये ॥ ६ ॥
बनिज करि विदेश, बनिक बहुत धन कमाये।
गूजर कृमि भये! बनत कछू न बनाये ॥ ७ ॥
आदर तज द्विजन, शूद्र जबतें निदराये।
सेवा तजि मित्र, भये जाते हैं पराये ॥ ८ ॥

भजन ३१४

वेदों का पढ़ना छोड़ दिया, हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब।
पंचयज्ञ का करना छोड़ दिया, हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब ॥ १
पढ़ते थे जब हम वेदों को, जाने थे सब के भेदों को।
वेदों से मुख मोड़ लिया ॥ हाय ग़ज़ब० २ ॥
कृष्ण से योगी भारी थे, अर्जुन से शस्त्र खिलारी थे।
रामचन्द्र से आज्ञाकारी थे ॥ हाय ग़ज़ब० ॥
बुज़ुर्ग हमारे लासानी थे, दुनियां में वह तो मानी थे।
ज़रा न वह अज्ञानी थे ॥ हाय ग़ज़ब० ४ ॥
वह ब्रह्मचर्य कमाते थे, गृहस्थ में फिर आते थे।
बानप्रस्थ फिर पद पाते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ५ ॥
संन्यास पद फिर पाते थे, लोगों को सत्य बताते थे।
ईश्वर भक्ती कमाते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ६ ॥
शूरवीर रथ पै चढ़ते थे, नहीं शत्रुओं से वह डरते थे।
अधर्म से नहीं लड़ते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ७ ॥

राज धन सम्पदा और दौलतो उम्मीद बक़ा।
हाय क्या २ न गया हाथ से शामिल होकर॥
बुतपरस्ती करी और पूजे क़दम शूद्रों के।
तेरे अहकाम से मालिक मेरे ग़ाफ़िल होकर॥
अक्ल थी इल्म था और फ़नो हुनर सब कुछ था।
हाय ग़ज़ब कैसे बने लायक़ो क़ाबिल होकर॥
पहल अफ़ज़ल थे धर्म अपने की परवाह नथी कुछ।
अब ज़लालत में गिरे अम्म से अफ़ज़ल होकर॥
मानलो मानलो इख़्वान जो पुरानी चाहो।
अब भी आर्य बनो सत्यधर्म में शामिल होकर॥

प्रभाती ३१३

तजि तजि निज धर्म मित्र परे दुख पाये।
जब लग निज धर्म जलनि, अग्नि है बनाये।
हाथी अरु सिंह नरहु, सम्मुख नहिं आये॥ १॥
दाह शक्ति त्यागि जबहिं, खाक नाम पाये।
तनिक सी पिपीलिकाहु, रौंदि शीश जाये॥ २॥
ब्राह्मण निज धर्मपालि, ऋषि मुनि कहलाये।
महाराज राजन ने सादर शिर नाये॥ ३॥
पदवी जो मिलत आज, कहत लाज आये।
पीर और बबर्ची खर, भिश्ती बतलायें॥ ४॥
क्षात्र धर्म जब थे, क्षत्रिय मन भाये।
आवत समरांगन में, कालहु भय खाये॥ ५॥

धर्म विमुख ह्वैके अब, दर दर मुँह बाये।
सिंह नाम पाय, स्यार सम्मुख घबराये॥ ६॥
बनिज करि विदेश, वनिक बहुत धन कमाये।
गूजर कृमि भये! बनत कछू न बनाये॥ ७॥
आदर तज द्विजन, शूद्र जबते निदराये।
सेवा तजि मित्र, भये जाते हैं पराये॥ ८॥

भजन ३१४

वेदों का पढ़ना छोड़ दिया, हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब।
पंचयज्ञ का करना छोड़ दिया, हाय ग़ज़ब सितम ग़ज़ब॥ १
पढ़ते थे जब हम वेदों को, जाने थे सब के भेदों को।
वेदों से मुख मोड़ लिया॥ हाय ग़ज़ब० २॥
कृष्ण से योगी भारी थे, अर्जुन से शस्त्र खिलारी थे।
रामचन्द्र से आज्ञाकारी थे॥ हाय ग़ज़ब०॥
बुज़ुर्ग हमारे लासानी थे, दुनियां में वह तो मानी थे।
ज़रा न वह अज्ञानी थे॥ हाय ग़ज़ब० ४॥
वह ब्रह्मचर्य कमाते थे, गृहस्थ में फिर आते थे।
बानप्रस्थ फिर पद पाते थे॥ हाय ग़ज़ब० ५॥
संन्यास पद फिर पाते थे, लोगों को सत्य बताते थे।
ईश्वर भक्ती कमाते थे॥ हाय ग़ज़ब० ६॥
शूरबीर रण पै चढ़ते थे, नहीं शत्रुओं से वह डरते थे।
अधर्म से नहीं लड़ते थे॥ हाय ग़ज़ब० ७॥

वह पांच यज्ञ करते थे, और वेदों को ही पढ़ते थे।
ईश्वर से वह सब डरते थे ॥ हाय ग़ज़ब० ८ ॥
मची भारत में तबाही है, भाई से रूठा भाई है।
अविद्या हरसू छाई है ॥ हाय ग़ज़ब० ९ ॥
ऋषि दयानन्द ने आनजगाये हैं, गुरुदत्त ने प्राणबचायेहैं।
लेखराम ने प्राण गँवाये हैं ॥ हाय ग़ज़ब० १० ॥
वेदों को पढ़ो पढ़ाओ अब, ईश्वर की महिमा गावो सब।
आर्य कहे जाओगे कब ॥ हाय ग़ज़ब० ११ ॥

दादरा ३१५

मेरा वैदिक फुलवरिया को मन तरसे।
अंगों की सड़कें उप अंगों की रौंसें, उपनिषदों की क्यारी में
गुल बरसे ॥ मेरा० १॥

कर्म उपासना ज्ञानध्यान जहां,वहां जानेको विन्ती करूं हरिसे।
यज्ञ हवन से हो पवन सुगन्धित, सींचे जइयो भक्ति जल से।
पुराणोंने कांटोकी बाड़ लगाई, मैं जाने न पाया इन्हीं के डर से।

ग़ज़ल ३१६

आज कल वैदिक धर्म झूठा फ़िसाना हो गया।
जिससे झूंठे पोप जी का पुर ख़ज़ाना हो गया॥
पाप करते आप और कलियुग के हम ज़िम्मे रखें।
हाय भारत वर्ष तू बिलकुल दिवाना हो गया॥

ऐसी पुस्तक से कहीं इन्सां की होती है निजात।
जो यह कहते हैं कि वह ईश्वर ज़नाना होगया॥
उस दयामय ईश पर झूंठी कथाएं जोड़ कर।
वेद मारग छोड़ कर पापी ज़माना हो गया॥
अब अगर शर्मा न समझे यह हमारा है क़सूर।
सत्य का उपदेश कर स्वामी रवाना होगया॥

भजन ३१७

जब तजा वेद विद्या को तभी से होने लगी हानी।
जिनके हम सन्तान, वह थे विद्वान, बड़े बलकारी।
पच्चीस वर्ष तक रहते थे ब्रह्मचारी॥
पच्चीस साल उपरांत, वह बनके कंत, ब्याहते नारी।
पच्चीस साल फिर करते ख़ानादारी॥
फिर वानप्रस्थ में जाते। ईश्वर की भक्ति कमाते।
संन्यासी पद फिर पाते। सब को उपदेश सुनाते॥
हरफ़न में थे उस्ताद, नेक बुनियाद, जिनकी औलाद,
हुए हम मूरख अज्ञानी। जब तजा वेद० १॥
अर्जुन से क्षत्रिय वीर, बड़े रणधीर, युद्ध करते थे।
वह शस्त्र के थे धनी नहीं डरते थे॥
भीमसेन बलवान, ले तीरो कमान, जबकि चढ़ते थे।
तब शत्रुदल के साथ कैसे लड़ते थे॥

है तुमको याद लड़ाई। जब राम लक्ष्मण दो भाई।
रावण पर करी चढ़ाई। लंका में मची दुहाई॥

मन्तक रियाज़ी की कान, फ़लसफ़ादान, वही विद्वान। नजूमी ज्योतिष के बानी॥ जब तजा० २॥

उन्हीं के हैं हम लाल, हमारा लाल, हुआ यह आकर।
ग़ाफ़िल होकर सो रहे सब माल लुटाकर॥
ऐसे हुए खामोश, जैसे बेहोश, धतूरा खाकर।
लुटगये सभी नहीं देखा आंख उठा कर॥
यहां ऐसी मची तबाही। हमें लूटन लगे ईसाई॥
तब ईश्वर हुये सहाई। इक ऋषि दिये प्रगटाई॥

जिन विद्या का प्रकाश, अविद्या नाश, वेदों का भाष्य। किया जो भगवत् की बानी॥ जब० ३॥

वह महाऋषि दयानन्द, रैनके चंद, करके उजियाला।
सबखोलमतोंके भेद, तो चारो वेदका दीपकवाला॥
अज्ञान रूपी अन्धकार से हमें निकाला।
उड़गया साया जिन्न भूत होके मतवाला॥
अब उठो चुस्त हो जाओ। मत वृथा वक्त गँवाओ।
वेदों को पढ़ो पढ़ाओ। फिर परम सुखों को पाओ॥

कहे खन्ना बनो दिलेर, हो जाओ शेर, सभी हों ज़ेर। सफल हो आर्य ज़िंदगानी॥ जब० ४॥

भजन ३१८

वेद पठन क्यों छोड़ दिया, तूने॥ टेक॥
हिंसा न छोड़ी चोरी न छोड़ी।
होम करन क्यों छोड़ दियारे॥ वेद० १॥
मोह न छोड़ा मान न छोड़ा।
इन्द्रि दमन क्यों छोड़ दियारे॥ वेद० २॥
ठगी न छोड़ी धोखा न छोड़ा।
शास्त्र मनन क्यों छोड़ दियारे॥ वेद० ३॥
धन के गर्व में फिरे भुलाना।
शुद्ध परन क्यों छोड़ दियारे॥ वेद० ४॥
पाठक मिथ्या तजी न वासना।
ईश भजन क्यों छोड़ दियारे॥ वेद० ५॥

दादरा ३१९

प्यारो! काहे धर्म को छोड़ के तुमने दुख है ग्रहण किया।
शेर—सत्य को छोड़ असत्य को पकड़ा कैसा अनर्थ किया।
अब भी जागो प्यारे मित्रो बहुत है दुखित हिया॥
जो बोया था तुमने भाई वह ही काट लिया॥ प्यारो०।
शेर—धर्म कर्म सब छोड़ के तुमने नाश में चित्त दिया।
सम्भलो २ प्यारे भाइयो क्यों विष घोल पिया॥
करो सन्ध्या पढ़ो नित गायत्री हो अति मगन जिया॥ प्या०

शेर-हम दम धीरज दान दया को तुमने जो त्याग दिया ।
इसी सबब ने तुमको भाइयों इतना दुःखी किया ॥
अबभी सम्भलो अबभी सम्भलो कहना धारि हिय ॥प्या०॥

गजल ३२०

गया कहां पर बतादे भारत, वह पहिला जाहो जलाल तेरा ।
कहां गई तेरी शानो शौकत, किधर गया वह कमाल तेरा ॥
कहां गई तेरी वेद विद्या, वह ईश्वरी ज्ञान का खज़ाना ।
अजलमें ईश्वर ने था जो सौंपा, किधर गया है वह माल तेरा ॥
कहां वह ज्योतिष कहां वह मंतक, कहां है वह तफ्हुनर रियाज़ी।
फ़लक से ऊपर जो पहुँचता था, किधर गया वह खयाल तेरा ॥
कहां वह प्रतिभा कहां वह बल है, कहां वह पूर्व चमक दमक है।
कि जिससे मानिन्द मह्रिरे अनवर, चमक रहा था जलाल तेरा ॥
कहां गया तेरा सत्य भाषण, सुकर्म एवं सुधर्म धारण ।
गया कहां पर वह प्रेम पूर्ण, कि था जो अनमोल लाल तेरा ॥
समाधि किरिया व योग बलसे, अजरअमर के भजनमेंखुशथा ।
रहे था भरपूर ब्रह्म विद्या, से देश ! हरदम कपाल तेरा ।
नहीं था दुनिया में तेरा सानी, इसूले इल्मो हुनर में कोई ॥
था सब मुमालिक के माहेकामिल, से ज्यादा रोशन हलाल तेरा।
नहीं था तू ऐसा पाशिकिस्ता, नहीं था ऐसा खराबोखस्ता ।
नहीं था ऐसा ज़लीलो रुस्वा, नहीं ज़िबू था यों हाल तेरा ॥
नहीं थी तुझ में मुक़द्दमें बाज़ी, नहीं थी यों तुझमें कीनासाज़ी।
हमेशा रहता था तुझ से राज़ी, वह क़ादिरे जुलजलाल तेरा ॥

बयाल जो तेरे हो रहे हैं, इनाद बुग्ज़ो निफ़ाक़ कीना ।
फ़ज़ूलखर्ची व रस्मबद ने लिया है खूं सब निकाल तेरा ॥
दुबारा लेकर जनम जो आवें, कणाद गौतम वो व्यास आदी ।
यक़ीं है सर को पकड़ के रोवें, जो देखें ऐसा ज़वाल तेरा ॥
कमाल अफ़सोस! हैफ़ हसरत ! कि तेरी औलाद सो रही है !!
नहीं है कोई कि उठके देखे, कि क्यों है चेहरा निढाल तेरा ॥
वकील मुखतार बाबू पंडित, रईस और चौधरी हैं जितने ।
सभी के सब तुझ से बेखबर हैं, न कोई पुर्सान हाल तेरा ॥
नक़ारखाने में मिस्ल तूती, के ऐसी आवाज़ बेअसर है ।
जगावें क्योंकर किसीको सालिग, बतावें क्योंकर ज़वाल तेरा ॥

भजन ३२१

हा ! देश तेरी हालत पै रोना हमें आता है । हा ! देश० ॥
हा ! कि इस ऋषि भूमि में, भूमि में ।

गऊओं के प्राण निकालत; न कोई भी बचाता है ॥ हा० ॥
हा ! ब्रह्मचर्य तज दीना, तज दीना ।

छाई कि अजब जिहालत, सुकर्म नहिं भाता है। हा ! कि रोना० ॥
हा ! हज़ारों मत फैले, मत फैले ।

कोई न इन से बचाता, देश लुटा जाता है । हा० ॥
हा ! कि छुज्जू सब मिलके, सब मिलके ।

बनो धर्म प्रतिपालक, समय चला जाता है । हा देश० ॥

भजन ३२२

क्या हुआ ढंग बेढंग है, बेहोश नशे में होकर।
नामी घर लुटगया तुम्हारा, यवन और ईसाइयों द्वारा।
पर तुमको आलस रहा प्यारा, कब हुआ भारत का जंग है।
नहीं उट्ठे तब से सोकर। बेहोश० १॥

आदि सनातन वेद बिसारे, मनगढ़न्त पुस्तक रचि डारे।
धर्मयुद्ध से बाज़ी हारे, कैसा किया कुसंग है।
निज धर्म कर्म सब खोकर॥ बेहोश० २॥

अब तो होश में आओ भाई, वैदिक सूर्य दिया दिखलाई।
क्यों आलस ने दिया दबाई, कौन हुई मत भंग है।
अपना कर्त्तव्य बिगोकर॥ बेहोश० ३॥

महर हुई अब दयानन्द की, जिसने खोटी रीति बन्द की।
बासुदेव सब ने पसन्द की, चढ़ा धर्म का रंग है।
सब मैल पाप का धोकर॥ बेहोश० ४॥

गजल ३२३

शैर-एक दिन यह देश सब देशों के सर का ताज था।
वेद मत का प्रचार था और आर्यों का राज था॥
जब से हम ने भूलकर लिया फूट का मेवा जो खा।
दर बदर रुसवा ज़लीलो ख़्वार बिलकुल हो रहा॥
भाई का दुश्मन जो एक भाई ही जब से बन गया।
फिर तो बरबादी का पूरा ही इरादा ठन गया॥

यहां तक बिगड़ा कि अब हालत नज़ा में आरहा।
जिस के हाले ज़ार पर आलम जो आंसू बहा रहा॥
मैं भी इसका हाल अब रो २ के सबको सुनाऊंगा।
और सुनने वालों को भी दो २ आंसू रुलाऊंगा॥

टेक-भारत के हक़ीक़त हाल पर, अब गाना नहीं रोना है।
हुए पहिलवान गुणवान भारत में भारे।
जिन के डर से सुर नर कंपित थे सारे॥
हुए सतवादी धर्मज्ञ ईश के प्यारे।
तन मन धन जीवन दिया धर्म नहीं हारे॥

शैर-हुए इस भारत में पातंजलि, वशिष्ठ और अंगिरा।
कपिल और कणाद, गौतम जाने जिनको वसुन्धरा॥
हरिश्चन्द्र, दधीचि, नृप बलि कर्ण का जगयश भरा।
देदिया सर्वस्व नहीं पग धर्म से जिनका टरा॥

हम उन्हीं के कुल में प्यारे। अब सोते पांव पसारे।
धन, धर्म, कर्म सब हारे। हैं दर दर फिरते मारे॥
सत वैदिक धर्म बिसार, हुए बेकार, तंग अरु ख़्वार।
द्वार घर बैठ कर धरि गालपर, कुछ खोदिया अरु खोना है॥
यह गाना भी रोना है॥ भारत०॥ १॥

पहिले पुरुषों की नीति रीति बिसराई।
पड़ गये कुफ़्र में पाप से प्रीति लगाई॥
दिया खुदग़र्ज़ों ने ऐसा हमें बहँकाई।

रहा हित अनहित का विचार अब नहिं भाई ॥

शैर–हा अविद्या ने हमें हैवां से बदतर कर दिया।
इज्जतो हुरमत गई पमोदर्द से दिल भर दिया॥
सल्तनत भी छिन गई जब धर्म कर से धर दिया।
वो भी दुशमन बन गये पहलू में जिन के सर दिया॥

हम निज दुख किसे सुनावें। कोई हितू नज़र नहीं आवें।
हम जिनकी शरण में जावें। मुँह वो भी हमसे छुपावें॥
भारत पर आया ज़वाल, हुआ पामाल, हाल बेहाल, काल
पड़गया जानो मालपर, अँसुओं से मुँह धोना है॥
यह गाना क्या रोना है॥ भारत० २॥

तजी ब्रह्मचर्य की रीति जब से सुखदाई।
बचपन में ब्याह करने की बान ठहराई॥
तब से बहु रोगन भारत लीन दबाई।
भारतबासी हुए दीन हीन सौदाई॥

शैर–बाल बिधवा हो गईं लाखोंहिं बाल विवाह से।
होगया गारत यह भारत उनकी पुरगम आह से॥
हमल गिरते हैं हज़ारों हिन्द में इस राह से।
वेश्या बनती हैं लाखों पर पुरुष की चाह से॥

बस इन पापों का मारा। हुआ मुफलिस मुल्क हमारा।
पड़ें अकाल वारम्वारा। मरें भूख से लोग हज़ारा॥
नहीं त्यागें कुटिल कुबान, अजहुँ नादान, करत विषपान,

हाजिकर रोते हैं कलिकाल पर, दुख होगया अरु होना है॥
यह गाना नहीं रोना है॥ भारत० ३॥

हट्टे कट्टे मुस्टण्डे बने भिखारी।
चरसी भंगड़ बने पण्डे और पुजारी॥
वेश्यागामी व्यभिचारी चोर अरु ज्वारी।
भारत में दान लेने के बने अधिकारी॥

शैर–लाखों बेवा अनाथ भूखों से यहां चिल्ला रहे।
कुबकू अन्धे अपाहिज लाखों धक्के खा रहे॥
लाखों ईसाई यवन बन २ के धर्म गँवा रहे।
कुली और गुलाम बनकर ग़ैर मुल्कों को जारहे॥

यहां भड़ुवे खांय मलाई। रण्डी की हो पहुनाई।
बलदेव कहे समुझाई। कुछ शर्म करो प्रियभाई॥
क्यों नाहक़ लोग हँसाओ, होश में आओ, अबतो शर्माओ,
अपनी कुचाल पर, या बाक़ी अभी सोना है॥ यह० ४॥

भजन ३२४

शैर–हाय भारत वर्ष तेरी आज क्या हालत हुई।
देखकर दुश्मन के भी चुभती कलेजे में सुई॥
दुख बयां करने में दिलको बेक़रारी हो रही।
तेरे अबतर हाल पर अब सारी खलक़त रो रही॥
कलम रुकती है ज़ुबां कहती न मुझ से काम लो।
करता हूँ कहने की हिम्मत अब कलेजा थाम लो॥

टेक-रोवे भारत जननि तुम्हारी, कैसी विपति पड़ी है भारी।
कैसा दुखों का पर्वत टूटा, सारा धर्म कर्म हा लूटा-जी !
हुआ भारत देश भिखारी ॥ रोवे भार० १ ॥

कैसा देश का दुर्दिन आया, सारे दुखों ने आन दबाया-जी !
लुट गई भारत की निधि सारी ॥ रोवे० २ ॥

लुटा सब ऐश्वर्य तुम्हारा, किया विद्याने तुम से किनारा-जी !
तुम्हें छोड़ विदेश सिधारी ॥ रोवे० ३ ॥

कहीं आ भूडोल सतावे, जिस में महा नाश हो जावे-जी !
फैली रहे कहीं महामारी ॥ रोवे भार० ४ ॥

लाखों जन अकाल ने मारे, लाखों हैजे के बन गये चारे-जी !
कहीं ओलों ने खेती उजाड़ी ॥ रोवे भार० ५ ॥

किसको निज व्यथा सुनावें, क्या करें कहां पर जावें-जी !
हुई बन्द जुबान हमारी ॥ रोवे भार० ६ ॥

लाखों गऊओं को नित मारें, लाखों विधवा शोक उचारें-जी !
होता न धर्म कहिं जारी ॥ रोवे भार० ७ ॥

अब तो सचेत में आओ, जननी को धैर्य बँधाओ-जी !
बनो बासुदेव हितकारी ॥ रोवे भार० ८ ॥

भजन ३२५

दोहा—विद्या की हानी भई, छई अविद्या आप।
फूट पड़ी कौतुक भये, भारत भरत विलाप ॥
टेक-महाभारत दुखदाई ने, भारत को गर्द मिला दिया।

पहले भारत महाराज था। शोभायुत ताजों का ताज था।
दुनिया के काजों का काज था, अब मैताज बना दिया ॥
दुर्योधन अन्याई ने ॥ महाभारत० ॥

आपस की लड़ २ के मरगये, विद्यावान जगत से टरगये।
वेद के पाठी विप्र किधर गये वैदिक धर्म गँवा दिया।
अपनी मूरखताई ने ॥ महाभारत० ॥

फूट पड़ी आपसकी दहगई, सुख सम्पति प्रभुता सब बहगई।
डेढ़ हाथ की लकड़ी रहगई, शास्त्रों को बिसरा दिया।
आपस की लड़ाई ने ॥ महाभारत० ॥

लखसंहारी बाण कहां गये, गगनमंडल विमान कहां गये।
बल पौरुष गुण ज्ञान कहां गये, सारा तेज घटा दिया।
भाई को मार भाई ने ॥ महाभारत० ॥

कोई हिंदू कोई मुसल्मीन भये, कोई जैनी कोई क्रश्चीन भये।
कोई बौद्ध कोई नवीन भये, ऐसा विघ्न मचा दिया।
पोपों की ठगियाई ने ॥ महाभारत० ॥

एक धर्म का पता न पावे, आपस में कोई मता न पावे।
अज्ञान बिन कोई खता न पावे, जिसने होश भुला दिया।
समझन की कच्चाई ने ॥ महाभारत० ॥

विप्र धर्म विप्रों ने छोड़ा, क्षत्रिन ने क्षत्रापन छोड़ा।
घीसा कहे बुद्धि का तोड़ा, जो समझा सो गा दिया।
हृदय की सुघड़ाई ने ॥ महाभारत० ॥

भजन ३२६

अविद्या पापिन जगत में जुल्म गुज़ारा।

खुदग़र्ज़ों ने खुदग़र्ज़ी से अपना धर्म बिगाड़ा ॥ पा० ॥
अनेक मत होगये जगत में, द्वेष भाव फैलाना।
वैर विरोध बढ़ा आपस में रच दिये ग्रन्थ हज़ारा ॥ पा० ॥
हाज़िर नाज़िर खुदा कुरानी, पर्दानशीं बताना।
होगा न्याय क़यामत के दिन, बन्द पड़ा अब द्वारा ॥ पा० ॥
श्रीभागवत में ईश्वर को कच्छ मच्छ बतलाना।
कहां तक तुमको हाल सुनाऊं ऐसेही पुरान अठारा ॥ पा० ॥
हाय शोक भारत की नारी, होगईं पशू समाना।
क़ब्र ताज़िये फिरैं पूजती, पतिव्रत धर्म बिगाड़ा ॥ पा० ॥
पहले मिलकर प्रीति बढ़ाते, प्रेम भाव फैलाया।
बात २ पर अब लड़ते हैं, हाय शोक है भारा ॥ पा० ॥
ऐसी दशा में ऋषी दयानन्द, आगये सूर्य समाना।
छज्जू धन्य २ स्वामी को, बार २ गुण गाना ॥ पा० ॥

दादरा ३२७

आज भारत में छाय रही काली घटा।

बादल अविद्या के चढ़ आये, वेदों के सूरज को दीना हटा।
दान पुण्य में देते न कौड़ी पापों में रुपये रहे हैं लुटा ॥
अच्छे कामों में ढिंग नहीं आवें, रंडी के चकले में जाता डटा।
अन्तिम विनय यह है तुमसे मेरी, वेदों का पकड़ो प्यारो पटा ॥

भजन ३२८

गिरे हैं देखो वर्ण आश्रम चार।

निज २ धर्म संभालो न जब तक, होगा न पुनर उद्धार ॥ गि०
ऋषी मुनी थे पूरे त्यागी, है उनकी संतान अभागी।
प्रीति निमन्त्रण में अति लागी। मूर्ख दरिद्री हाथ कटोरा,
स्वर्ग बतावन हार ॥ गिरे हैं० ॥

क्षत्रिय सब की रक्षा करते, अष्टादश व्यसनों से डरते।
आज मद्य मांस खाते फिरते। हाय! दया की जगह,
मृग की खलत फिरैं शिकार ॥ गिरे हैं० ॥

वैश्य धर्म से जोड़े थे धन, कृषी बनिज करते थे निशिदिन।
आज ब्याज की है इतनी धुन। दें पचास जो क़र्ज़,
वर्ष पांचक में लेवें हज़ार ॥ गिरे हैं० ॥

शूद्र करें थे सेवा सारे, तीन वर्ण के रहते प्यारे।
आज नहीं मिलते पनिहारे। करें सामना उच्च वर्ण का,
बढ़ा रहे व्यभिचार ॥ गिरे हैं० ॥

गुरुकुल में बनते ब्रह्मचारी, आज मूर्ख सन्तान हमारी।
विद्या गई देश की सारी। घर से लड़ते जो कि,
बने ब्रह्मचारी फिरैं हज़ार ॥ गिरे हैं० ॥

जो गृहस्थ था अति उपकारी, हो ज़वान जीते नरनारी।
पञ्चयज्ञ करते सुखकारी। इनकी यह दुर्दशा सुने से,
बहे नयन से धार ॥ गिरे हैं० ॥

बनिस्थ था विद्या का द्वारा, उसका हमने नाम बिसारा।
वस्त्र गेरुवा जिसने धारा। वही वनस्थी बना रहा,
बाबा का शब्द पुकार ॥ गिरे हैं० ॥

यह ब्राह्मण संन्यासी कहावे, ज्ञान यथारथ जिससे पावे।
'अहम्-ब्रह्म' जो ध्वनि लगावे। आप ही भ्रम में पड़े,
जगत् को मिथ्या माननहार ॥ गिरे हैं० ॥

आर्यसमाज यह याद दिलावे, हीन दशा सुन्दर बनजावे।
कहे पाठक दुनिया सुख पावे। हो विद्या की वृद्धि,
उजाला करदो प्रति घर द्वार ॥ गिरे हैं० ॥

गजल ३२९

मुल्क भारत की अविद्या से खराबी होगई।
चाल खिसलत की हक़ीक़त लाजवाबी होगई॥
थे हज़ारों तत्वज्ञानी मह ऋषी इस देश में।
उनकी यह औलाद जाहिल औ शराबी होगई॥
होगये फ़िर्क़े हज़ारों मुख़तलिफ़ इक एक से।
दीन मत के बाब में बिलकुल नवाबी होगई॥
बाप शैवी बन गये बेटा उन्हीं के शक्ति के।
हैं मियां सुन्नी तो घर ज़ौजे वहाबी होगई॥
एक घर में चार फ़िर्क़े क्यों न हों खाने खराब।
नेस्तो नाबूद की सूरत शिताबी होगई॥
तंगदस्ती मुफ़लिसी भारत में घर २ घुस गई।

दर्दग़म से ज़र्द रुख़ रंगत गुलाबी होगई॥
अब तो चेतो भाइयों! बलदेव मुल्की खैरोख़्वाह।
देखिये इस मुल्क की क्या इनक़लाबी होगई॥

भजन ३३०

यह वही ऋषी सन्तान है, वेदों का जिसे घमण्ड था॥
भूमण्डल में जिनकी कहानी, सुनी जाय इतिहास ज़ुबानी।
अब कैसी यह होगई हानी, जिनका नहीं निदान है॥ वे० १॥
सब यहां के शागिर्द कहावे, इसी देश में पढ़ने आये।
जो सुख हैं सब यहां से पाये, गई कहां वह कान है॥ वे० २॥
प्रभु तेरी है अद्भुत माया, वही देश हिन्दू कहलाया।
किया पाप सब आगे आया, नहीं किसी पर तान है॥ वे० ३॥
वेद छोड़ रच लई कहानी, तलफ़ करी लाखों ज़िन्दगानी।
ज़िन्दा फूक सती कर मानी, इस से बड़ी क्या हान है॥ वे० ४॥
बाल बिवाह की रीति चलाई, करके रांड लाखों बिठलाई।
कितने गर्भ नित होयँ सफ़ाई, क्या खूब अनोखा दान है॥ वे० ५॥
झंडूसिंह अब मत पछताना, फिर के आवे वही ज़माना।
प्रेमी कहे सब सुनियो दाना, जड़ गुरुकुल का स्थान है॥ वे० ६॥

भजन ३३१

जब से छोड़ी कला शिल्पकारी, तब से होगया देश भिखारी।
पहले विद्यालय थे जारी, ऋषि मुनि बनते ब्रह्मचारी जी
जब से बैरिन अविद्या पधारी ॥ तब से० १ ॥

नल नील शिल्पकर भारी, बांधा बन्ध समुद्र मँझारी जी।
जब से हुई निर्बुद्धि तुम्हारी ॥ तब से० २ ॥
जो थीं विद्यायें यहां जारी, उन्हें पढ़ते थे ब्रह्मचारी जी।
भूलें नाम तलक नर नारी ॥ तब से० ३ ॥
योरुपवालोंने चुम्बक शक्तिपाई, लिया कुतुबनुमाको बनाईजी।
तुम पै सुस्ती ने मोहनी डारी ॥ तब से० ४ ॥
बल भाप के रेलैं चलाईं बिजली तार खबर पहुँचाई जी।
तुम ने कोई न बात विचारी ॥ तब से० ५ ॥
फोटू फोनोग्राफ़ बनायें, खींची मूरति गाने सुनाये जी।
रवि वेद की लखि उजियारी ॥ तब से० ६ ॥
थर्मामीटर व बैरोमीटर, नापैं गर्मी व दाब हवापर जी।
तुमको वैरिन निंदिया प्यारी ॥ तब से० ७ ॥
न तो प्राकृतिक उन्नति पाई, नहीं वर विद्या फैलाई जी।
छूटी रचनी विमान सवारी ॥ तब से० ८ ॥
लखो भारत के नर नारी, आलसी हुये हैं भारी जी।
जागें न चेत उरधारी ॥ तब से० ९ ॥
उठो अब भी आलस टारो, कौशलता उर में धारो जी।
कहे पाठक सुनो अनारी ॥ तब से० १० ॥

दादरा ३३२

दुख पावें क्यों ! भारतवासी। टेक ॥
कारण है इसका समय को न बांटें, प्रातः उठते शौच न जाते।
पहले गुड़ २ हुक्के बजाते। हा ! दुख० ॥ १ ॥

दूजा है कारण उमर को न बांटें, बने वनस्थी, नहिं संन्यस्ती।
सारी उम्र ही रहें गृहस्थी। हा ! दुख० ॥ २ ॥
सन्ध्या स्नान करें बीते समय पै, पितृ ऋषी ऋण, बढ़ते दिन दिन। देवयज्ञ तक से भागें जन। हा ! दुख० ॥३॥
पाठक कहे टाइमटेबिल बनाओ, नेम निभाओ, तब सुख पाओ।
उत्तम समय न व्यर्थ गँवाओ। हा ! दुख० ॥४॥

दादरा ३३३

अमली जीवन को क्यों न ! सँवारो ॥
माना कि तुम हो बड़ी अक्लवाले। विपरा नसीहत, खुदरा फ़ज़ीहत। देखो अन्दर है बुरी हालत। हा ! अम० ॥१॥
माना कि तुम हो वकील और मुंसिफ। ये बुद्धिमानी, है हैरानी, बुरी न समझो रिश्वत सितानी। हा ! अम० ॥२॥
माना कि देते हो लेक्चर सुहाने। प्रेम में पूरन, देश के भूषण। नाम पै मरते हो हा निशि दिन। हा ! अम० ॥३॥
मित्रो ! बुजुर्गो ! नमूने बनाओ। सदआचारी, परहितकारी।
पाठक हो सन्तान तुम्हारी। हा ! अम० ॥४॥

दादरा ३३४

दिन २ भारत गिरे है ये प्यारे सुजन।
वेदों की शिक्षा है प्रीति परस्पर,
वंशों में ग्रामों में देशों में भूपरे।
छोड़ा है उन का हा ! पाठन पठन ॥ दिन० ॥१॥

देखा है ये देश हमने बहुत सा,
जैसा है यह देश सबै देश वैसा।
ईर्षा की घर २ लगी है अगिन ॥ दिन० ॥२॥

रण्डी से प्रीति शराब उड़ रही है।
कहीं मांस मछली ये हालत सही है॥
देखा अमीरों का चाल और चलन ॥ दिन० ॥३॥

मामूली नौकर बड़े ठाठ बांधे,
धनवान मैले फटे वस्त्र कांधे।
रिश्वत लेवें इनके रूखे वचन ॥ दिन० ४ ॥

बजरी मिठाई में चर्बी है घी में,
अपना नफ़ा ! कुछ हो व्याधी सभी में।
बनियों को प्यारा है छलरूपी धन ॥ दिन० ५ ॥

रोज़गार पर साख जाती रही है,
घर २ दिवालों की चर्चा वही है।
सारी प्रजा अपनी धुन में मगन ॥ दिन० ६ ॥

अज्ञानी समझो हो जिन को सुहृद्वर,
पञ्चों के कहने में है क़ौम धीवर।
उस में है मेल एकता का परन ॥ दिन० ७ ॥

तुम भी करो मेल छोड़ो अनीती,
तबही बढ़ेगी आपस में प्रीती।
पाठक सफल हो रहन और सहन ॥ दिन० ८ ॥

भजन ३३५

देखोरे भाइयो बिगड़ा है सारा ज़माना।
महाभारत के घोर युद्ध से होगया अपना बिराना ॥ १ ॥
आर्यवर्त्त था देश हमारा, सब देशों में दाना।
हिन्दू वहशी काला काफ़िर हाय उसे अब माना ॥ २ ॥
जगत गुरु ब्राह्मण होते थे जाने है सारा ज़माना।
पीर बवर्ची भिश्ती खर की पदवी उन्हें दिलाना ॥ ३ ॥
सिंह समान गर्जता था यह कभी राजपूताना।
आज नाम पर सिंह लगाकर क्षत्री वीर कहाना ॥ ४ ॥
प्राणी मात्र की रक्षा करना जग से पाप हटाना।
आज उन्होंने धर्म समझ लिया मद्य मांस का खाना ॥ ५ ॥
पशु रक्षा और खेती करना देश २ में जाना।
करें व्यवहार ब्याजले थोड़ा वह है वैश्य समाना ॥ ६ ॥
धोखेबाज़ी वैश्य करें अब हो गये शूद्र दिवाना।
वर्ण आश्रम सारे बिगड़े कुछ नहीं रहा ठिकाना ॥ ७ ॥
उदय भाग्य होगये देश के हुआ ऋषी का आना।
वासुदेव धन स्वामी जी को बार बार गुण गाना ॥ ८ ॥

ग़ज़ल ३३६

भारत की हाय पहली सी हालत नहीं रही।
इसकी वह शान और वह शौक़त नहीं रही ॥
इफ़लास और जुहल हैं बस इसके रफ़ीक़ दो।

अब और तीसरे से विफ़ाक़त नहीं रही।
आये यहां पर कोई क्यों बहरे हुसूल इल्म।
वह पहली इसकी इल्म में शुहरत नहीं रही॥
गौतम कपिल व्यास और पातंजली कणाद।
उनकी सी अब किसी में लियाक़त नहीं रही॥
कमजोरी नातवानी के ऐसे बने शिकार।
घुटनों के बल भी उठने की ताक़त नहीं रही॥
छोटी उमर में बच्चों के होने लगे बिवाह।
ब्रह्मचर्य आश्रम की वह वक़अत नहीं रही॥
बद एतक़ादियों के सब बन गये गुलाम।
वैदिक धरम की हाय हुकूमत नहीं रही॥
क़हतो वबा प्लेग हैं पीछे पड़े हुए।
बचने की इनसे कोई भी सूरत नहीं रही॥
घर २ में जल रही है निफ़ाक़ो हसद की आग।
आपस में मेल जोल मुहब्बत नहीं रही॥
दुनिया के मोह जाल में ऐसे फँसे हैं मूढ़।
शुभकार्यों के करने की रग़बत नहीं रही॥
रंडी के नाच स्वांग में रातें गुज़ारदीं।
लेकिन सभा में आने की फ़ुरसत नहीं रही॥
उलफ़त धरम की छोड़के विषयों में फँसगये।
परमात्मा के न्याय की दहशत नहीं रही॥
जो काम तुझको करना है परदेशी जल्द कर।
ज्यादा यहां पर रहने की मोहलत नहीं रही॥

दादरा ३३७

कैसी होगई हालत तुम्हारी रे।

आर्यावर्त्त कभी शिरोमणि था, आज भारत की होगई ख्वारीरे॥
कभी तो वेदों का डंका बजे था, आज मिथ्या पुराण हुए जारीरे।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उच्च कुल, आर्यों से हो गये अनारीरे॥
भीष्मपिता जैसे ब्रह्मचारी थे, आज घर हुए २ व्यभिचारीरे।
ब्रह्मचर्य धर वेद पढ़ें थे, अब बाल विवाह हुए जारीरे॥
उपदेष्टा कभी संन्यासी थे, आज कपड़े रंग होगये भिखारीरे।
कभी यहां वेदध्वनि होती थी, आज घर २ हैं रंडी पुकारीरे॥
यहां कभी हवन होते थे, आज चरस की उड़ें धुन्धकारीरे।
धर्म अहिंसा छोड़ आज सब, मद्यपी और मांसाहारीरे॥
वासुदेव कहां तक समझावे, इस कारण सब दुखारीरे॥

क़व्वाली ३३८

मदफ़न है हसरतों का हिन्दोस्तां हमारा।
गुलचीं ने हाय लूटा ये गुलिस्तां हमारा॥
इक दिन रहे तरक्की में हम भी रहनुमा थे।
अब लोग पूँछते हैं नामो निशां हमारा॥
यूनान मिश्र रूमा इंगलैण्ड गाल जर्मन।
शागिर्द इक ज़माने में था जहां हमारा॥
दुनिया में हो रहा था भारत वर्ष का चर्चा।

अब और तीसरे से रिफ़ाक़त नहीं रही।
आये यहां पर कोई क्यों वहरे हुसूल इल्म।
वह पहली इसकी इल्म में शुहरत नहीं रही॥
गौतम कपिल व्यास और पातंजली कणाद।
उनकी सी अब किसी में लियाक़त नहीं रही॥
कमजोरी नातवानी के ऐसे बने शिकार।
घुटनों के बल भी उठने की ताक़त नहीं रही॥
छोटी उमर में बच्चों के होने लगे विवाह।
ब्रह्मचर्य आश्रम की वह बरक़त नहीं रही॥
बद् पतक़ादियों के सब बन गये गुलाम।
वैदिक धरम की हाय हुकूमत नहीं रही॥
क़हतो वबा प्लेग हैं पीछे पड़े हुए।
बचने की इनसे कोई भी सूरत नहीं रही॥
घर२ में जल रही है निफ़ाक़ो हसद की आग।
आपस में मेल जोल मुहब्बत नहीं रही॥
दुनिया के मोह जाल में ऐसे फँसे हैं मूढ़।
शुभकार्यों के करन की रग़बत नहीं रही॥
रंडी के नाच स्वांग में रातें गुज़ारदीं।
लेकिन सभा में आने की फ़ुरसत नहीं रही॥
उलफ़त धरम की छोड़के विषयों में फँसगये।
परमात्मा के न्याय की दहशत नहीं रही॥
जो कांम तुझको करना है परदेशी जल्द कर।
ज्यादा यहां पर रहने की मोहलत नहीं रही॥

दादरा ३३७

कैसी होगई हालत तुम्हारी रे।
आर्यावर्त्त कभी शिरोमणि था, आज भारत की होगई ख्वारीरे॥
कभी तो वेदों का डंका बजे था, आज मिथ्या पुराण हुए जारीरे।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य उच्च कुल, आर्यों से हो गये अनारीरे॥
भीष्मपिता जैसे ब्रह्मचारी थे, आज घर हुए २ व्यभिचारीरे।
ब्रह्मचर्य धर वेद पढ़ें थे, अब बाल विवाह हुए जारीरे॥
उपदेष्टा कभी संन्यासी थे, आज कपड़े रंग होगये भिखारीरे।
कभी यहां वेदध्वनि होती थी, आज घर २ हैं रंडी पुकारीरे॥
यहां कभी हवन होते थे, आज चरस की उड़े धुन्धकारीरे।
धर्म अहिंसा छोड़ आज सब, मद्यपी और मांसाहारीरे॥
वासुदेव कहां तक समझावे, इस कारण सब दुखारीरे॥

क़व्वाली ३३८

मदफ़न है हसरतों का हिन्दोस्तां हमारा।
गुलचीं ने हाय लूटा ये गुलिस्तां हमारा॥
इक दिन रहे तरक्की में हम भी रहनुमा थे।
अब लोग पूँछते हैं नामों निशां हमारा॥
यूनान मिश्र रूमा इंगलैण्ड गाल जर्मन।
शागिर्द इक ज़माने में था जहां हमारा॥
दुनिया में हो रहा था भारत वर्ष का चर्चा।

सबकी ज़बान पर था लुत्फ़बयां हमारा ॥

इल्मो अदल में कामिल और हिंदसे के मूजिद ।
था फ़िलसफा में यकता हर नुकतादां हमारा ॥

गौतम व्यास भीष्म थे नामवर यहीं के ।
अर्जुन से तीर अफ़गन था इक जहां हमारा ॥

लीलावती अहिल्या अस्मत मआब सीता ।
इन देवियों से घर था रश्के जनां हमारा ॥

चर्ख़े कुहन ने हम पर लेकिन वह ज़ुल्म ढाया ।
मूनिस रहा न कोई ए मेहरबां हमारा ॥

रौनक़ चमन की सारी फ़स्लेख़िज़ां ने लूटी ।
वीरान हो गया है सब गुलसितां हमारा ॥

इफ़लासो क़हितो ताऊन ने हाय मारडाला ।
फ़ाक़ों के मारे तन है अब नीम जां हमारा ॥

हा ! अहिलहिन्द उठो हालत ज़रा संभालो ।
नक़्शा हुआ दिगरगूं है बेगुमा हमारा ॥

फिरभी अगर है ख़्वाहिश आवे वही ज़माना ।
गुरुकुल में सन्तान भेजो होगा नफ़ा तुम्हारा ॥

सहराय ग़म में बरसों से हम भटक रहे हैं ।
मंज़िल पै पहुंचे या रब अब कारवां हमारा ॥

अपनी ये आर्ज़ू है मेहनत लगे ठिकाने ।
आफ़त से रक्खे चमन वह राजदां ह[illegible]

ग़ज़ल २३६

कभी हम जहां में थे आलीजाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो ।
अन्य देशी पाते थे पनाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

यहां थे पातंजलि नामवर, जिन योगशास्त्र बनाया कर ।
किया राह हक़ से हमें आगाह, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

यहां राम थे दशरथ के जा. जिसने मारीच और ताड़का ।
बालकपने में किये फ़नाह तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

जहां पाणिनि जैसे ऋषि, जिन अष्टाध्यायी थी रची ।
कहां तक थे इल्म में एकता, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

गौतम से थे जो फ़िलासफ़र, जिसने कि न्यायशास्त्र रचा ।
मन्तक की जान बना दिया, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

जहां वेदों जैसा ख़ज़ीना है, उपनिषदों का भी दफ़ीना है ।
देखो तो इनमें है क्या दवा, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

क्यों तुमने इनको छोड़ा है, सत् विद्या से मुँह मोड़ा है ।
कहदो पुराणों में क्या धरा, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

अब आंख खोल दो बरमला, नहीं वक़्त है अब सोने का ।
जैसे किसी ने है यूं कहा, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

गया वक़्त फिर आता नहीं, सदा पेश दिखलाता नहीं ।
कई काल वक़्त गुज़र चुका, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

खन्ना सदा समझाता है, सब खुफ़तगां को जगाता है ।
उठ देखो कितना दिन चढ़ा, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

गजल ३४०

है बेकस अबतो यह भारत, सताले जिसका जी चाहे।
नहीं कोई यारो हामी है, रुलाले जिसका जी चाहे॥

दिया तज धर्म वैदिक को, न जाना नाम विद्या का।
किरानी या कुरानी अब, बनाले जिसका जी चाहे॥

दुहाई भद्र पुरुषों की, दुहाई राव राजों की।
मिटा ध्रुव धर्म जाता है, बचाले जिसका जी चाहे॥

मियां और भूत की पूजा, हना लाखों ही जीवों को।
निडर बन कान नीचों से, फुकाले जिसका जी चाहे॥

बरी धन देख कर कन्या, बड़ा छोटा न वर देखा।
नहीं कुछ झूंठ यह सच, अज़माले जिसका जी चाहे॥

कहे कोई भी जो हित की, उसे समझें हैं ये बैरी।
नहीं शिक्षा को सुनते हैं; सुनाले जिसका जी चाहे॥

दशा बिगड़ी है भारत की, सुधारो दास मिलजुल कर।
पड़ा यह धर्म मिलता है, उठाले जिसका जी चाहे॥

❀ वैदिक विवाह ❀

भजन ३४१

दो०-करो विवाह विचार के, निगमागम विधि शोध।
बिना स्वयंवर क्या करो, यह सब नीति विरोध॥

टेक-शुभ रचो स्वयंवर शादी, सुख सम्पति प्रीति आराम हो।

वर कन्या गुन कर्म में समहों बुद्धि अवस्था में नहिं कमहों॥
तब तो विवाह अति उत्तम हो, सुख से उम्र तमाम हो।
होवे न वैर और व्याधी ॥ शुभ० ॥ १ ॥

बाल उमर में शादी करना, गुड्डा गुड़िया खेल ये वरना।
बेद विरुद्ध दोष सर धरना, विरोध आठों याम हो।
ऐसी मत करो उपाधी ॥ शुभ० ॥ २ ॥

क्या हासिल रण्डी का नचाना, हराम में पैसे का गंवाना।
भांड नचा के कुफ्र मचाना, महफ़िल भी बदनाम हो।
यह क्या बदरस्म चलादी ॥ शुभ० ॥ ३ ॥

आतिशबाज़ी बागोबहारी, धन खोने की राह निकारी।
कितने ही पछतायँ पिछारी, जब कुर्की नीलाम हो।
रोवें सुन ढोल मनादी ॥ शुभ० ॥ ४ ॥

बखेर का करना फ़ज़ूल है, बहुत बखेरो फिर भी धूल है।
पोच कर्म सो दुख का मूल है, कभी सिद्ध नहिं काम हो।
हर तरह समझ बर्बादी ॥ शुभ० ॥ ५ ॥

तुरंग बैल की जोट मिलाओ, सुत पुत्रीपर ख्याल न लाओ।
काह पीसा पीछे पछताओ, बदनामी मुदाम हो।
मैं सांची बात सुनादी ॥ शुभ० ॥ ६ ॥

गजल ३४२

दोहा-करो विवाह विचार के, वेद शास्त्र से सोध।

गजल ३४०

है बेकस अब तो यह भारत, सताले जिसका जी चाहे।
नहीं कोई यारो हामी है, रुलाले जिसका जी चाहे॥

दिया तज धर्म वैदिक को, न जाना नाम विद्या का।
किरानी या कुरानी अब, बनाले जिसका जी चाहे॥

दुहाई भद्र पुरुषों की, दुहाई राव राजों की।
मिटा ध्रुव धर्म जाता है, बचाले जिसका जी चाहे॥

मियां और भूत की पूजा, हना लाखों ही जीवों को।
निडर बन कान नीचों से, फुकाले जिसका जी चाहे॥

वरी धन देख कर कन्या, बड़ा छोटा न वर देखा।
नहीं कुछ झूठ यह सच, अज़माले जिसका जी चाहे॥

कहे कोई भी जो हित की, उसे समझे हैं ये बैरी।
नहीं शिक्षा को सुनते हैं; सुनाले जिसका जी चाहे॥

दशा बिगड़ी है भारत की, सुधारो दास मिलजुल कर।
पड़ा यह धर्म मिलता है, उठाले जिसका जी चाहे॥

❀ वैदिक विवाह ❀

भजन ३४१

दो०-करो विवाह विचार के, निगमागम विधि शोध।
बिना स्वयंवर क्या करो, यह सब नीति विरोध॥

टेक-शुभ रचो स्वयंवर शादी, सुख सम्पति प्रीति आराम हो।

वर कन्या गुन कर्म में समहों बुद्धि अवस्था में नहिं कमहों॥
तब तौ विवाह अति उत्तम हो, सुख से उम्र तमाम हो।
होवे न वैर और व्याधी॥ शुभ०॥ १॥

बाल उमर में शादी करना, गुड्डा गुड़िया खेल ये वरना।
वेद विरुद्ध दोष सर धरना, विरोध आठों याम हो।
ऐसी मत करो उपाधी॥ शुभ०॥ २॥

क्या हासिल रण्डी का नचाना, हराम में पैसे का गंवाना।
भांड़ नचा के कुफ्र मचाना, महफ़िल भी बदनाम हो।
यह क्या बदरस्म चलादी॥ शुभ०॥ ३॥

आतिशबाज़ी बागोबहारी, धन खोने की राह निकारी।
कितने ही पछतायँ पिछारी, जब कुर्की नीलाम हो।
रोवें सुन ढोल मनादी॥ शुभ०॥ ४॥

बखेर का करना फ़ज़ूल है, बहुत बखेरो फिर भी धूल है।
पोच कर्म सो दुख का मूल है, कभी सिद्ध नहिं काम हो।
हर तरह समझ बर्बादी॥ शुभ०॥ ५॥

तुरंग बैल की जोट मिलाओ, सुत पुत्रीपर ख्याल न लाओ।
कह घीसा पीछे पछताओ, बदनामी मुदाम हो।
मैं सांची बात सुनादी॥ शुभ०॥ ६॥

गजल ३४२

दोहा-करो विवाह विचार के, वेद शास्त्र से सोध।

बुरी चाल को त्याग दो, जो कुछ तुम को बोध ॥

टेक-वेदोक्त विवाह किये से सुख सम्पति शोभा प्रीति हो।

सोलह वर्ष की कन्या चहिये, पच्चिस साल सुन्दर वर कहिये॥
बल विद्या गुण कर्म देखिये, जैसी कुल की रीति हो।
समता को निरख लिये से। वेदोक्त० ॥

कन्या चित्र दिखाये वरको, वर का चित्र सुघर दुख्तर को।
उत्तम कुल ढूंढे हमसर को, समधी सम निज मीत हो॥
सो चहिये ज्ञान दिये से। वेदोक्त० ॥

वेद रीति को जाने दोनों, गृहस्थ धर्म पहिचानें दोनों।
वाद विवाद न ठानें दोनों, सुख से उमर व्यतीत हो॥
अधरम को त्याग दिये से। वेदोक्त० ॥

पुष्ट होंयँ सन्तान जिन्हों के, उत्तम शोभावान जिन्हों के।
कह घीसा उर ज्ञान जिन्हों के, सोना स्वप्त फ़जीत हो॥
गुणियों के चरन नये से। वेदोक्त० ॥

भजन ३४३

ख्याल-बिना परीक्षा किये कभी सम्बन्ध मिलाना नहिं चहिये।
नाई बाह्मन के हाथ कभी औलाद बिकाना नहिं चहिये॥
ऐसी कन्या वरो न वर से जो हो पीत वरन वाली।
अधिक अंग हो पति से जिसका अति बकवाद करनवाली॥
हो रोगों से युक्त जो कन्या निश दिन दुःख भरनवाली।

अमित लोम या लोम न तन पर हो भूरी अँखियनवाली॥
खुदग़र्ज़ों के हाथ बिका खुद धोखा खाना नहिं चहिये। ना॥

दोहा-अजा गाय धन धान्य रथ, हाथी घोड़े राज्य।
इतना दे कोई तब भी तू, कर दश कुल का त्याज्य॥

टेक-दश कुलों का त्यागन कीजे, वर कन्या के सम्बन्ध में।
प्रथम सत् क्रिया हीन जो कुल हो भाई।
दोयम सत् पुरुषों में न हो आना जाई॥
सोयम वेदों से विमुख जो दे दिखलाई।
चौथे तन पर हो लोमों की अधिकाई॥

बुद्धि से आप विचारो। आंखों से खूब निहारो॥
ये हैं सन्तान तुम्हारी। क्यों इनकी सुरति बिसारी॥
आगे छै कुल रहे और, कीजिये गौर, कहूँ इस तौर।
बना के छन्द में धर ध्यान मित्र सुन लीजे॥ दश० ॥

है पांचवां कुल जो बवासीर का त्यागो।
छठे दम खांसी और खई से कोसों भागो॥
किस ग़फ़लत में तुम पड़े हो अबतो जागो।
उठो अपने आप इन शुभ कर्मों में लागो॥

सम्बन्ध बुरे न जुड़ाओ। खुद अपने आप मिलाओ॥
क्या इस में चातुरताई। जो बेचें बाम्हन नाई॥

मत मिलो एक गुण कर्म, मुद्दों हो गर्म, बेढ़े बेशर्म। डाल
दे फन्द में, वर कन्या इन्हें न दीजे॥ दश० ॥

है सातवां रुज आमाशय जगत में भारी।
विपता में उसकी कटे व्यवस्था सारी॥
अष्टम मृगी है असाध्य अति दुखियारी।
कर जोड़ जोड़ के कहूँ सुनो नर नारी॥

नहीं इस पर ध्यान धरोगे। जीते जी दुःख भरोगे।
नहीं झूठी बात हमारी। हो रही दुर्दशा तुमारी॥
बुद्धी बिन हुये मति हीन, अंग से क्षीण, द्रव्य बिन दीन।
कटे दिन द्वन्द में, ये कुरीति विष मत पीजे॥ दश०॥

है श्वेत कुष्ट जिस कुल ने नवां बताया।
है गलित कुष्ट जिस कुलमें दशवां गायर॥
जो कोई इन कुलों से पुत्र या पुत्री लाया।
उस ने भी इन रोगों से दुःख उठाया॥

इस लिये जो मेल मिलाना। पता अच्छी तरह लगाना।
जब ठीक पता लग जावे। दोनों का ब्याह रचावे॥
तुम इस विधि रचो विवाह, बढ़े उत्साह, मिटे सब दाह।
बीते जन्म अनन्द में, कहे तेजसिंह दुख छीजे॥ दश०॥

भजन ३४४

दोहा—इतनी बात बिचारना, मात पिता का काम।
उनका भी त्यागन करो, जिनका निन्दित नाम॥

जो नाम निकम्मे भाई, करूं उनका हाल बयान मैं।

कोई धरै नाम नक्षत्र नाम पर भाई।
ज्यों अश्विनी, भरणी, रोहिणी रेवतिवाई॥
कोई वृक्ष नाम पर नाम धरै अलबेली।
कोई तुलसिया गेंदा चम्पा और चमेली॥

कन्या का नाम बिगाड़ें, उसे उल्टी भांति पुकारें।
हो चन्द्रमुखी मुखवाली, कहें उसे भी कलियाकाली॥
रहे उल्टी भांति पुकार, सभी नरनार, न करते विचार।
आज इस आर्यावर्त स्थान में, क्या उल्टी रस्म छुहाई॥जो०॥

कोई नदी नाम पर नाम धरै कन्या का।
कहें गंगा यमुना अजब रिवाज यहां का॥
कोई कन्या पर्वत नाम से नामवती है।
कहें विन्ध्या, हिमालय, कोई पार्वती है॥

ये निन्दक नाम बताऊं। कुछ और भी आगे गाऊं।
ज़रा सुनिये मित्र हमारे। हुये कैसे ख्याल तुम्हारे॥
बिन सोचे समझे धरो, न मन में डरो, शर्म नहीं करो।
रख निन्दित नाम जहान में, क्यों तुम्हें हया नहिं आई॥जो०॥

बहुतेरी कन्या सर्प नाम वाली हैं।
कहें नागी, भुजंगी, जो बुद्धि से खाली हैं॥
कहीं पक्षी नाम से कन्या जांय पुकारी।
कहें कोकिला मैना धन २ बुद्धि तुम्हारी॥

कोई भीषण नामों वाली। भीम कुँवर चंडिका काली।

बिन सोचे नाम धरें हैं। कैसी अनरीति करें हैं ॥
है पूरी अनरीति, वेद विपरीति, अय मेरे मीत। सिवा
नुक़सान के, न मिले नफ़ा एक पाई ॥ जो० ॥

कोई माधोदासी नाम से बोल वानी।
कोई मीरादासी नाम धरें अज्ञानी ॥
ये धर्मशास्त्र ने नाम बुरे बतलाये।
फिर किस विधि ऐसे निन्दित नाम सुहाये॥

जो ऐसे नाम सुन पाओ। मत हर्गिज़ ब्याह रचाओ।
उस कन्या को तज देना। यह धर्मशास्त्र का कहना ॥

ये धर्मशास्त्र का लेख, समझकर देख, नाम रख नेक। खड़ा
इस जलसे के दर्म्यान में, रहा तेजसिंह समझाई ॥ जो० ॥

भजन ३४५

दोहा—अब मित्रो सुनिये ज़रा, हो करके खामोश।
जो ऊपर समझा दिये, यह समझो दश दोष ॥

टेक यही दस दोष बताये हैं, कर तलाश इन को त्यागो ॥
ये रीति वेद अनुकूल है। नहीं इस में ज़रा भी भूल है।
मनुस्मृति का यही रूल है। छन्द पिछले में जो गाये हैं ॥या०
और अब मौजूदा हाल बतायें। पड़े फेरे तो पानी मँगावे।
कहें दोष दूर होजावें। सो दस छींटे लगवाये हैं ॥ यही० ॥
खुदग़र्ज़ों ने छींटे लगाकर। दिये दश दोष हमारे हटाकर।

नहीं तलाश किये कहीं जाकर। हाय ! हम कैसे भुलाये ॥ य० ॥
पद तेजसिंह ने गाया। अब कैसा ज़माना आया।
अपना कुल आप डुबाया। हाय ! हम तरस न लाये हैं ॥

दादरा ३४६

देखोरे भाइयो ! ऐसे विवाह रचाना।
वर कन्या हों जवान दोनों, सुन्दर जोड़ी मिलाना ॥ भा०
वर हो मन्त्र खुद पढ़नेवाला, ऐसे ही हो विदुषी बाला।
अब है ज़माना आने वाला, गुण अरु कर्म स्वाभाव ॥
यथा विधि तुम को पड़े मिलना ॥ भाइयो ! ऐसे० १ ॥
चाहिये मंडप को सजवाना, बड़े २ पंडित बुलवाना।
उत्तम २ यज्ञ रचना, सुन्दर हों व्याख्यान ॥
जगत् से सारी कुरीति मिटाना ॥ भाइयो ! ऐसे० २ ॥
तुम तो बाल विवाह रचाते, मामा जिनके गोद उठाते।
फेरा*तो अब नहीं खाते, कौन प्रतिज्ञा मन्त्र पढ़े ॥
जहँ नींद में हो गलताता ॥ भाइयो ! ऐसे० ३ ॥
रंडी भांड़ों का बुलवाना, अपनी बागों बहार लुटाना।
मतलब समझ नहीं शर्माना, आतिशबाज़ी फूंक के ॥
पाठक धन की धूलि उड़ाना ॥ भाइयो ! ऐसे० ४ ॥

गज़ल ३४७

हुआ वैदिक विवाह जो ये, हरेक घरह्रो तो ऐसा ही ॥

*वर सोता हुआ उठाया, फेरों को पेरे समझता है।

सुने ध्वनि ओ३म् स्वाहाकी, सुभगवरहो तो ऐसा हो।
उमर में हैं युवा दोनों, गुणों में भी बराबर हैं॥
जो कन्याहो तो ऐसी हो, अगर वर हो तो ऐसा हो।
बुलाया इष्ट मित्रों को, दिखाया ब्याह सतयुग सा॥
जमा किये देवता देवी समाधि गर हो तो ऐसा हो।
नहीं है नाच रंडी का, नहीं भाँड़ों की कुछ चर्चा॥
न आतिशबाज़ी फुलवारी, स्वयंवर हो तो ऐसा हो।
सजाया बेल बूटों से, बनाया खूब ही मण्डप॥
किया वेदोक्त सब कुछ ही, धरम पर हो तो ऐसा हो।
बुला पण्डित ये विद्वद्वर, सुनाये धर्म के लेक्चर।
रचा यों यज्ञ बड़ा सुंदर, निडर गर हो तो ऐसा हो॥
उठो पाठक सँभल बैठो, कि वैदिक वायु बहता है।
नहीं रोके रुकेगा अब, समा गर हो तो ऐसा हो॥

दादरा ३४८

सुन सज्जन हुए आनंद उत्तम शादी हुई।

धन्य २ प्रभु की प्रभुताई, जिसने अद्भुत सृष्टि रचाई।
जो है सच्चिदानन्द ॥ उ० १ ॥

धन्य २ स्वामी को भाई, जिसने वैदिक रीति चलाई।
धन्य तुम्हें हो दयानंद ॥ उ० २ ॥

कुल भूषण ब्याहनको आया, उत्तम वर कन्याने पाया।
है पूनो का सा चंद ॥ उ० ३ ॥

वेद रीति से भँवर लड़ाई, हवन हुआ ग्रहपूजा हटाई।
अनरीति हुई सब बंद ॥ उ० ४ ॥
चिरंजीव प्रभु इसको कीजो, आयु तेज विद्या बल दीजो।
मिटे सकल दुख द्वंद ॥ उ० ५ ॥
वासुदेव कहे शुभ दिन आया, वर कन्या का योग मिलाया।
रहा न कोई फंद ॥ उ० ६ ॥

ग़जल ३४९

वचन दो सात जब हमको तभी प्रीतम कहाओगे।
करो इक़रार पंचों में उसे पूरा निबाहोगे॥
पकड़ कर हाथ जो मेरा मुझे पत्नी बनाना है।
तो किश्ती उम्र की मेरी किनारे पर लगाओगे॥
हमारे वस्त्र भोजन की फ़िकर करना तुम्हें होगी।
वचन मन कर्म से प्यारे मुझे अपना बनाओगे॥
विपति सम्पति औ बीमारी ग़मीशादी औ सुख दुख में।
कभी किसी हाल में मुझ से जुदा होने न पाओगे॥
जवानी औ बुढ़ापे में ख़िज़ां बाहार जीवन में।
निगाहे मिहर से हरदम ख़ुशी मुझको दिलाओगे॥
तिजारत नौकरी खेती अर्थ और धर्म सम्बन्धी।
करो कोई काम जब जारी, हमें पहले जताओगे॥
जो बिगड़े काम कुछ मुझसे करो एकान्त में शिक्षा।
मगर नँनदी सहेलिन में न तुम हम से रिसाओ॥
हमें तजि और तिरिया को दिया कभी दिल तो तुमजानो।

किये अपने को पाओगे जो मेरा जी जलाओगे ॥
अग्नि को साक्षी देकर जो अर्धांगिन किया मुझको।
तो फिर बलदेव बायें पर मुझे अपने बिठाओगे ॥

गज़ल ३५०

वचन देता हूँ मैं तुझ को तुझे प्यारी बनाऊंगा।
मगर मैं चन्द बातों का अहिद तुझ से कराऊंगा ॥
तुझे मैं धर्म की खातिर जो अर्धांगिन बनाता हूँ।
अहिद ता उम्र अपने से न पग पीछे हटाऊंगा ॥
मगर तामील हुक्मों पर मेरे रहना कमरबस्ता।
हुई इस काम में गलती तो फिर नीचा दिखाऊंगा ॥
सिवा मेरे जो कोई नर हो चाहे कितनाही बिहतर।
जो की कभी ख्वाब में ख्वाहिश तो दिल तुमसे हटाऊंगा ॥
गृहाश्रम के लिये तुम को किया संगिन व सहधर्मिन।
कठिन इस धर्म आश्रम को तेरे बिन कर न पाऊंगा ॥
बिपति सम्पत्ति में हरदम हमारे साथ में रहना।
गुज़ारा उसमें ही करना कि जो कुछ मैं कमाऊंगा ॥
दया राखो जो कुछ दिलमें तो अपने दिलकी तुम जानो।
मगर मैं धर्म से अपना वचन पूरा निबाहूंगा ॥
वचन बलदेव के इतने जो हैं स्वीकार सत चित से।
तो फिर दिल जान से प्यारी तेरी खिदमत बजाऊंगा ॥

कव्वाली ३५१

तुम से वचन भरा के, पत्नी बनाऊंगा मैं।

जो २ करूं प्रतिज्ञा, पूरी निभाऊंगा मैं ॥ १ ॥
पहिली तो बात यह है, सुनलो ऐ प्राणप्यारी।
गर हो पढ़ी तो अच्छा, वर्ना पढ़ाऊंगा मैं ॥ २ ॥
सच्चा तो व्रत यही है, प्रण आज जो करोगी।
व्रत रहके भूखों मरना, हर्गिज़ न चाहूंगा मैं ॥ ३ ॥
अबतक पाखण्ड तुमने जो कुछ किया सो किया।
छुड़वा के पोप लीला, आर्या बनाऊंगा मैं ॥ ४ ॥
जब २ मिलो किसी से, तब २ झुकाके सरको।
कर जोड़ कर नमस्ते, तुम से कराऊंगा मैं ॥ ५ ॥
ईश्वर बिना किसी की, पूजा न करने दूंगा।
मीरा मसान क़बरें, पूजन छुड़ाऊंगा मैं ॥ ६ ॥
तकलीफ़ में तुम्हारी, बेशक रहूंगा साथी।
लेकिन बुला के स्याने, हर्गिज़ न लाऊंगा मैं ॥ ७ ॥
मात पिता सम्बन्धी, भाई बहिन कुटुम्बी।
कड़वा वचन किसी का, सुनने न पाऊंगा मैं ॥ ८ ॥
भारत की सारी नारी, मूर्खा हुई बेचारी।
उनको धर्म की शिक्षा, तुम से दिलाऊंगा मैं ॥ ९ ॥
माता पिता की सेवा, प्रीती से करनी होगी।
दीनों पशु की रक्षा, तुम से कराऊंगा मैं ॥१०॥
सन्ध्या हवन वो पितृ, बालवैश्यदेव अतिथी।
नित पांच यज्ञ करना, तुमको सिखाऊंगा ॥११॥

मेले तमाशे तीरथ, संगीत नाच रंग में।
जो जो हैं ये कुरीती, सारी हटाऊंगा मैं ॥१२॥
भोजन व वस्त्र भूषण, तुम को मिलेंगे प्यारी।
लेकिन फ़िज़ूलखर्ची, करना छुड़ाऊंगा मैं ॥१३॥
अब वासुदेव तुम ने, शिक्षा करी जो हमको।
जहां तक बनेगा मुझ से, मानूं मनाऊंगा मैं ॥१४॥

❀ बाल विवाह और उसका फल ❀

गजल ३५२

कम उमर के ब्याह ने मिट्टी में मुल्क मिला दिया।
बुद्धि बल बीरज हली कम्बख़्त ने भुगता दिया ॥
देश का दुश्मन जो काशीनाथ इक पैदा हुआ।
शीघ्र बोध बना के जिसने शीघ्र नाश करा दिया ॥
मनुस्मृति और वेद से होकर मुखालिफ़ मूर्ख ने।
अष्टवर्षाभवेत् गौरी कह के सब को डुबा दिया ॥
चल बसी कुव्वत दिमाग़ी मिस्ल हैवां हो गये।
फिर वह करसक्ते हैं क्या निज अक्ल कोही गवां दिया ॥
मर गये थोड़ी उमर में घर में बेवा रोरहीं।
बलदेव इनकी आह ने वीरान मुल्क बना दिया ॥

भजन ३५३

क्यों बालबिवाह रचाय के बल वीर्य का नाश किया है।

हे मतिमन्द ! समझ नहीं आई, बाली कन्या ब्याह बिठाई।
कुछ तो सोचो समझो भाई, उसको रांड़ बिठाय के ॥
क्यों शिर पर पाप लिया है ॥ ब० १ ॥
सोलह वर्ष की उमर जब आवे, ब्रह्मचर्य पूरा हो जावे।
तभी कन्या का ब्याह रचावे, गुण औ कर्म मिलाय के ॥
वेदों ने सुझा दिया है ॥ ब० २ ॥
ब्याह का तुम ने अर्थ भुलाया, खेल लौंडियों का ठहराया।
जो चाहा सोइ नाच नचाया, पोप जाल फैलाय के ॥
यह कैसा नशा पिया है ॥ ब० ३ ॥
अब भी यदि तरक्की चाहो, बालविवाह को दूर भगाओ।
ब्रह्मचर्य्य की रीति चलाओ, मन चंचल ठहराय के ॥
शर्म्मा नहिं लानत जिया है ॥ ब० ४ ॥

गजल ३५४

कहो बचपन की शादी में, नफ़ा क्या तुमने पाई है।
ज़रा आंखों के सुख की तेग़, पुत्रों पर चलाई है ॥१॥
बरस सोलह तलक लड़की, बरस पच्चीस तक लड़का।
कम अज़ कम इतने दिन, ब्रह्मचर्य की आज्ञा बताई है ॥२॥
मगर तुम हाय ! काशीनाथ के, फन्दे में फंस करके।
बिला सोचे मनू और वेद की, आज्ञा भुलाई है ॥३॥
जनम भर के लिये सुख दुख में, जिनका साथ करते हो।
नहीं वह जानते इतना, कहैं किस को सगाई है ॥४॥

भजन २५६

दोहा–भारत में होने लगे, जब से बाल विवाह।
बल विद्या बुद्धी घटा, हो गया देश तबाह॥

टेक–मित्रो ! तुम इसको टारियो है बाल ब्याह दुखदाई।
आठ वर्ष में ब्याह कराया, विधवा कर घर में बिठलाया।
फिर कर्मों का दोष बताया, मन में ज़रा विचारियो॥
क्यों करी अधर्म कमाई॥ है० १॥

जिस दिन युवा अवस्था आवे, बिना ज्ञान के रहा न जावे।
आखिर को निज धर्म गँवावे, उसकी ओर निहारियो॥
ये कैसी इज़्ज़त पाई॥ है० २॥

जब मर जाय पुरुष की नारी, दूजे ब्याह की हो तैयारी।
विधवा रोवे दीन विचारी, इनके संकट टारियो॥
क्यों बने हो तुम अन्याई॥ है० ३॥

अबतो बालविवाह को टालो, शीघ्रबोध पर मिट्टी डालो।
वेद मनू की आज्ञा पालो, विधवा भार उतारियो॥
हो पुनर्विवाह कराई॥ है० ४॥

जबसे बालविवाह हुआ जारी, बल विद्या बुद्धी गई मारी।
ब्रह्मचर्य्य की रीति बिसारी, अब तो इसे सँभारियो॥
कहे वासुदेव समझाई॥ है० ५॥

भजन ३५७

बच्चों का विवाह क्यों करते हो भाइयो।

नहीं पुरुष नारि को जाने। नारि न पति को पहँचाने॥
बहाया पाप प्रवाह॥ १॥

जब बाल पुरुष मरजावे। बस नाम पती घर जावे॥
तब हो कैसे निबाह॥ २॥

वह शिर धुनि २ पछतावे। निशिवासर शोक मनावे॥
न देखा दृगभर नाँह[१]॥ ३॥

यह जिसके पास जाती है। अप शब्द वहां पाती है॥
जिगर में लगती दाह॥ ४॥

कोई पास नहीं बिठलाता। इन्हें भूमि भार बतलाता॥
हुई यह क़ौम तबाह॥ ५॥

जब काम बाण खाती हैं। व्यभिचारिन हो जाती हैं॥
और न पातीं राह॥ ६॥

चाहे मुसल्मान होजावें। चाहे गर्भ पात करवावें॥
होय परबाल विवाह॥ ७॥

यह बाल विवाह मिटाओ। प्राचीन राह पर आओ॥
शास्त्र दे रहे सलाह॥ ८॥

पछताओगे तब मानोगे। जब इसका भेद जानोगे॥
हठ है खाहमखाह॥ ९॥

शर्मा यह सखि सुनाओ। मिल सभी कुरीति मिटाओ॥
काम हो ख़ातिरख़ाह॥ १०॥

१ मालिक पति।

भजन ३५८

बच्चेपन में करें विवाह, बाप मां खुशी मनानेवाले।
क्या है किसका ये सामान, जिसको खबर नहीं उसआन।
बालक है नन्हा नादान, ब्याहें जिसे गोद उठानेवाले॥
होवे बड़ी बहू धन भाग, ललना गलियों गावें राग।
रोटी मांगे सबेरे आग, पपैये पीपी बजाने वाले॥
कितने भेंट शीतलामाय, कितने डूबे नदियों जाय।
रोवें शिर धुन २ पछताय, कुटुम्बी लाड़ लाड़नेवाले॥
जो कोई बचकर हुये जवान, उनसे निर्बल हों सन्तान।
जल्दी होजाय चिन्तावान, वैद्यघर स्याने बुलानेवाले॥
घर में बढ़ जावें तकरार, चूल्हे हों फिर दो के चार।
सोचें पांव कुल्हाड़ी मार, कुवां के बीच डुबानेवाले॥
पाठक हो जाओ हुशियार, जल्दी करलो देश सुधार।
देखो उठकर नैन उघार, विदेशी हँसने हँसानेवाले॥

भजन ३५९

बचपन में ब्याह सन्तति को, फिर रोतेहैं नादान॥ टेक॥
पितु कहते लाल पढ़ने को नहीं जाता है।
गुरु कहते इसे एक हर्फ भी नहीं आता है॥
मा कहती पूत मेरा दिन २ दुबराता है।
मुख पीला पड़गया भोजन नहीं भाता है॥

जिस दिन से ब्याहि घर आया। जाने किसकी होगई छाया।
सब खान पान बिसराया। हुई ज़र्द लाल की काया॥
गुरुओं की बात में आय, लग्न सुधवाय, पुत्र को ब्याहि।
हाय पड़गई ग़ज़ब में जान, दुख होत देख दुर्गति को॥ १॥
कोई कहते मानी हम काशीनाथ की बानी।
दी आठ वर्ष की सुता ब्याहि शुभ जानी॥
गये भाग फूट वर को ले गई भवानी।
कर दई दैव ने बिधवा सुता अयानी॥
बिधना ने बिपति क्या डाली। बिधवा हुई कन्या माली।
ज़रा होजाय चालकुचाली। जाय दोनों कुटुम्ब की लाली।
हो गया दैव प्रतिकूल, हुई क्या भूल, दुःख का मूल, शूल
सम लागत जगत मशान, कैसे राखे राम इज्ज़त को॥ २॥
इस बाल ब्याह की बरकत से बिधवायें।
रोरो के लाखों खून जिगर को खायें॥
छुप २ के करतीं हराम हमल गिरवायें।
हा काम बिवश बिनती हैं लाखों वेश्यायें॥
वह घर में न मौका पावें। तब काशी को चली जावें।
वहां जाके कुकर्म कमावें। दिल खोल के मौज उड़ावें॥
बहुतों को बिरह सताय, सहा नहीं जाय, ज़हर ले खाय।
घाव खंजर से खोवें प्रान, सिर आई देख विपति को॥ ३॥
कोई इस कुरीति को अबहूँ न हाय हटावे।

बड़ी आयु में वर कन्या का, आइयो रचो विवाह।
तुलसीराम वह गृहस्थाश्रम में अपना करें विवाह ॥ भारत०

दादरा ३६२

टेक-शुभ डगरी यह कैसे भुला दई रे।

खोटे कर्म की अपने ही करले, भारत में क्यों नींव जमा दई रे ॥ शुभ० ॥ शुभ गुण कहां से अब आयेंगे, विद्या की रीति छुड़ा दई रे ॥ शुभ० ॥ वाले से बच्चे से वाली सी कन्या, सोती उठाय के विवाह दई रे ॥ शुभ० ॥ कहे तेजसिंह खोटे कर्मों ने, भारत की नैया डुबा दई रे ॥ शुभ० ॥

भजन ३६३

हा क्यों कराओ बाल विवाह को प्यारे इज्जत होती खराब।
रोती कलपती चिल्लाती हैं सारी, देखो यह कैसा इयाब ॥
कर्मों की मारी हैं विधवा बिचारी, होती फिरें हैं खराब।
चश्मों से आंसू यों भर २ के रोतीं, करतीं पती को यह याद ॥
मुझे बाली अवस्था में छोड़ मरा, नहिं माल है कुछ असबाब।
गले ऊंट के बकरी बांध दई, पर उनकी खबर कुछ भी न लई ॥
धन ले ले के बेटी ऊपर नर, बन बैठे हैं खासे नवाब।
मत बाल विवाह रचाओ रे भाइयो ! होता है देश तबाह ॥
कहे नत्थू समझ करो चेतो चेतो ले लो इनका जवाब।

❀ ९ अनमेल विवाह ❀

भजन ३६४

मैया मेरो बाप कुलीन कमाऊ ॥
जिन तेरे तन ते उपजाई, मैं बालिका बिकाऊ।
बेचन चार चमार पाठाये, बारी भाट पुरोहित नाऊ ॥ १ ॥
सौदा कर लाये वे चारों, थैली एक अगाऊ।
बोले सुन यजमान मिलेंगे, पूरे पांच हज़ार पचाऊ ॥ २ ॥
लै बरात व्याहन को आयौ, हाथी पै चढ़ हाऊ।
घर बाहर के ऊकन लागे, थूकन लागे लोग बटाऊ ॥ ३ ॥
जा शंकर को ससुर कहायौ, हा उर दाहक दाऊ।
सो वैरी बूढ़ो बजमारो, मेरो कन्थ कि तेरो ताऊ ॥ ४ ॥

भजन ३६५

वह पुरुष महा चंडाल है, जो कन्या बेचकर खावे।
बड़ा दुष्ट पापी वह जन है, जो कन्या पर लेता धन है।
दया धर्म का वह दुश्मन है, लोभी कुटिल कुचाल है ॥
जो कुल को दाग लगावे ॥ जो० १ ॥
लालच से धन के अन्याई, लड़की के लिये बना क़साई।

बुड्ढे खूसट से उसको ब्याही, जिसका चरा मुंह गाल है॥
और हिला चला नहीं जावे ॥ जो० २ ॥

रूपवती अति सुन्दर बाला, वर है महा बदसूरत काला।
जल्द चिता में जाने वाला, तनकी लटक रही खाल है॥
नित थर थर मूड़ हिलावे ॥ जो० ३ ॥

नहीं जाने बेचारी अबला, बूढ़ा पती लगे या बाबा।
न उसके घूंघट न पर्दा, ख़बर न क्या ससुराल है॥
जो इसका घर कहलावे ॥ जो० ४ ॥

कुछ दिन में बूढ़ा मर जावे, कन्या को कर रांड बिठावे।
सारी उम्र वह दुःख उठावे, सहती विपत कमाल है॥
विरह अग्नी जिगर जलावे ॥ जो० ५ ॥

मोही मात पिता और भाई, चाचा ताऊ ब्राह्मण नाई।
जो कन्या पर करते कमाई, पुख्ता मेरा ख्याल है॥
हर एक नर्क में जावे ॥ जो० ६ ॥

लानित ऐसे मात पिता को, जो बेचें अपनी दुहिता को।
नज़र हिक़ारत से नित देखो, कहे मनु महा चंडाल है॥
देखे से पाप लगजावे ॥ जो० ७ ॥

गजल ३६६

बुढ़ापे की अवस्था में जो ब्याह अपना कराते हैं।
वह एक मासूम कन्या को मुसीबत में फँसाते हैं॥

नहीं मालुम इन बुड्ढों बुजुर्गों को ये क्या सूझा।
कि जो मरते समय अपना अनोखा ब्याह कराते हैं॥
कँप तन और हिले गर्दन नहीं हैं दांत तक मुँह में।
मगर देखो तो बुड्ढे जी फबन कैसी दिखाते हैं॥

जहे सुर्मा मलें उपटन कटाकर मूछ और दाढ़ी।
बरस पन्द्रह या सोला का यह अपने को बताते हैं॥
नहीं आती शर्म उनको ज़रा नौशा कहाने में।
न जाने कौन सी उम्मीद पर कंगना बँधाते हैं॥

बहत्तर साल के हैं खुद बदौलत दस की है कन्या।
नहीं बुड्ढे मियां इस जोड़ पर दिल में लजाते हैं॥
महीना दो महीने बादही यह पीर नाबालिग़।
हमेशा के लिये मरघट में जा डेरा जमाते हैं॥

मज़े से आप तो जाकर चिता में लेट जाते हैं।
मगर ताज़िन्दगी कन्या बिचारी को रुलाते हैं॥
टके के लोभ से पंडित जी भी झट खोल पत्रे को।
बिना सोचे विचारे बेतुका साहा सुझाते हैं॥

उमर भर जान को रोती है उन मिश्रों की यह बेवा।
कि जिनके साथ में बुड्ढों के वह फेरे कराते हैं॥
समझ लें खूब यह मन में मियां बुड्ढे व पण्डित जी।
कभी वह सुख नहीं पाते जो औरों को सताते हैं॥

तअज्जुब है कि जो रोके उन्हें इस फेल बेजा से।
सनातन धर्म का उसको महा शत्रु बताते हैं॥

सफल जीवन है सालिगराम उनका शक नहीं इस में।
जो इन मकरोह बदरस्मों को दुनिया से मिटाते हैं॥

भजन ३६७

हुये कैसे मा बाप पुत्री बेंचकर खावें।
भेड़ और बकरी की नाईं, बेंचे हैं उन्हें अन्याई।
नक़द लेले चुप चाप॥ पुत्री०॥ १॥

कोई तीन हज़ार लगावे, कोई बदले ब्याह करावे।
हाय कैसा है पाप॥ पुत्री०॥ २॥

बच्चे बुड्ढों से ब्याहें, उन्हें करना बिधवा चाहें।
करें नहीं पश्चात्ताप॥ पुत्री०॥ ३॥
नित रोवें और चिल्लावें, और पैला रुदन मचावें।
देख हिय जाता कांप॥ पुत्री०॥ ४॥
ऐ सुता बेंचने वालो, अब ज़ुल्म से हाथ उठालो।
शर्म से लो मुँह ढांप॥ पुत्री०॥ ५॥
मेहनत से टका कमाओ, मत पुत्री बेंच कर खावो।
बनो नहीं पापी आप॥ पुत्री०॥ ६॥
कहे सालिगराम पुकारी, तुम मानों बात हमारी।
जो हो सच्चे मा बाप॥ पुत्री०॥ ७॥

भजन ३६८

ख्याल।

क्यों बिगड़ी यह बात देश भारत पर क्यों आफत आई।

विवाह संस्कारों के बिगड़ने से सब कुछ बिगड़ी भाई॥
कहां गई वह रीति वर्ष पच्चीस का होता ब्रह्मचारी।
यह विवाह था कम दर्जे का सोलह वर्ष कन्या प्यारी॥
पच्चीस वर्ष विद्या पूर्णकर शरीर से हो बलधारी।
वर कन्या गुण कर्म मिलाकर थी विवाह की तैयारी॥
अपने आप करते थे परीक्षा नहीं वकील ब्राह्मण नाई। बि०॥

आज रीति विपरीत देश भारत की हम दिखलाते हैं।
खुद करने का काम उसे गैरों के हाथ कराते हैं॥
कैसा गुण और कर्म अवस्था बिल्कुल नहीं मिलाते हैं।
कोई मरो कोई जियो पेट अपने का काम बनाते हैं॥
फेरो पर बन वकील जाली झूठी रजिस्ट्री लिखवाई॥ बि०॥

हो लिखी कहीं बतलाइये, ऐसी बदरस्म तुम्हारी॥ टेक॥
काशीनाथ ने नहीं फर्माया, नहीं कहीं पुराणों में पाया।
फिर अन्धेर ये कैसे आया, क्यों बेशर्मी छाई है॥
वर बुड्ढा तो कन्या बारी॥ ऐसी०॥

और सुनो बुद्धि का टोटा। कन्या बड़ी और वर छोटा।
और मित्र यह मारग खोटा। चलत लाज न आई है॥
ब्रह्मचारी से हुये व्यभिचारी॥ ऐसी०॥

तजविद कह होश में आओ। मत फिजूल दुनिया को हँसाओ
डूब चुकी क्यों और डुबाओ। कुछ तो ज़रा शर्माइये।
क्या बिल्कुल शर्म उतारी। ऐसी०॥

भजन ३६६

कैसा ग़ज़ब है आह ! किया बुड्ढ़े ने ब्याह, तकै लड़की है राह हा ! शोक शोक शोक, शोक शोक शोक।

तन उबटन लगाय, नैन अंजन लगाय, हा ! मूछैं कटाय, हा ! शोक ३ शोक ३ शोक ३॥ कैसा० ॥ ब्याह भये दिन चार, घर में आई नई नार, करैं खाँ २ से प्यार, हा ! शोक ३ शोक३ शोक ३ ॥ कैसा० ॥ नेक लागी न देर, लीन्हा कफ़ने हा घेर, रहे छुत को यह हेर, हा ! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ हाय बिधवा अनाथ, रोवें मत्थे धर हाथ तुमने दीन्हा न साथ, हा ! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ नष्ट हो गये सुहाग, लगी मदन की आग, गई नीचन संग भाग, हा ! शोक ३ ॥ कैसा० ॥ कहै तुलसी है मीत, नष्ट करो कुरीति, हाय कैसी अनरीति, यह ! शोक३, शोक ३, शोक ३ ॥ कैसा० ॥

भजन ३७०

बूढ़े छैला का ब्याह रचाया, हा ! हा ! अविद्या धन्य है तुझे ॥

घोड़ी चढ़ि आई, जरा सुन लेना भाई।
लाओ भाभी को और काजर गेरन को ॥
जिससे बिकसे बुढ़ापे काया ॥ बूढ़े० १ ॥
भाभी कहां से आवे, सारी पूतबहू कहलावे।
अशर्फी की दादी को, जल्दी बुलवालो।
उसका भाभी रिश्ता बताया ॥ बूढ़े० २ ॥

हिलता छैला का सर, कांपे बुढ़िया के कर।
झट से काजल गेरन को, देर हो घोड़ी चढ़न को ॥
एक आंख में नाखून चुभाया ॥ बूढ़े० ॥ ३ ॥
नारी जो २ आई रहीं हँसी दबाई ॥
कहरहीं सेहरा गावन को, वह उसको वह उसको।
एक चतुरा ने सेहरा यह गाया ॥ बूढ़े० ४ ॥

सेहरा

चिरंजीवै महाराज मेरा हरियाला बनरा।

मूंछ कटाय के छोटी करलई, दाढ़ी दई मुड़ाय ॥ मे० ॥
तन बन्ने के अतलस का बागा, लटक रही सब खाल ॥ मे० ॥
कमर बन्ने के गुजराती पटका, चले डगमगी चाल ॥ मे० ॥
सर बन्ने के सोने का सेहरा, सर के धौले बाल ॥ मे० ॥
मुख बन्ने के पानों का बीड़ा, जैसे ऊंट चबात ॥ मे० ॥
क्या छबि बरनूं मैं मुखड़े की, मुख में नहीं एको दांत ॥ मे० ॥
आठ वर्ष की कन्या कुमारी, बूढ़े को दी दया बिसारी ॥ मे० ॥

बिचारी अस्सी बरस के ने, और बूढ़े छैला ने।
रुपया देकर के ब्याह कराया ॥ बूढ़े छैला० ५ ॥
आठवर्ष की रांड़ होजावे, कैसे मित्रो उम्र बितावे।
डाले गर्भ को, फैलावे हिंसा को।
इन्हीं पापों ने भारत यह डुबाया ॥ बूढ़े छैला० ६ ॥
पाप यहां आये, सब धर्म कर्म गँवाये।

रामप्रसाद कर ईश्वर को याद ॥
दुखड़ा भारत का कहां लौं जाय सुनाया ॥ बूढ़े छैला० ७ ॥

दादरा ३७१

बनि के बन्ना उमर बाली में।

बुधि विद्या बल सकल बिगाखो, पड़े निपट खुआरी में ॥उ०॥
सुख शरीर को नेक न जान्यो, पड़े विपत भारी में ॥उ०॥
निर्बल भई प्रजा भारत की, भुगतत बीमारी में ॥उ०॥
दर दर फिरत न भरत पेट तहूँ, अब खिदमतगारी में ॥उ०॥
अति मतिहीन मलीन दीन हैं, रहे पशु बनचारी में ॥उ०॥
दियो बोय विष स्वर्ग-भूमि सी, या अमृत की क्यारी में ॥उ०॥
ऐसे निर्लज्ज अजहूं नहीं चेतत, भूले सदारी में ॥उ०॥
होश करो बलदेव आगि दै, इस दुनियादारी में ॥उ०॥

दादरा ३७२

बना बनिबे की बुढ़ापे में सूझी।

होत महा अन्धेर देश में, कोई न बात सके बूझी ॥ बु० ॥
दशकी बधू साठ के बालम, भली विधि मिलाई गुरूजी ॥ बु० ॥
तिय भइ तरुण वृद्ध भये बालम, अब नहीं बनत कछु जी ॥ बु० ॥
जब तिय और पुरुष तन चितवत, पति से राखत दूजी ॥ बु०
लगी नारि धन धर्म बिगारन, झुरि २ मरत पशूजी ॥ बु० ॥
निशिदिन कलह कलेश करत जब, तियकी आश न पूजी ॥बु०

बाधा करत भोग में बुढ़वा, तब बिष देत बहू जी ॥ बु० ॥
नरक भोग बलदेव अन्त में, मरत मौत बिन सूजी ॥ बु० ॥

दादरा ३७३

बना बनिबे को बुढ़ापे में डोले।

करत अनर्थ कोई नहीं बरजत, रस में विष मत घोले ॥बु०॥
करत अन्याय तरस नहीं खावे, पुराय पाप नहीं तोले ॥बु०॥
दो पन गये तहू नहीं समझत, जुल्म करत हिय खोले ॥बु०॥
अब तो समझ वृथा मत खोवे, नरतन रत्न अमोले ॥बु०॥
करि२ विषय तनक नहीं धोप्यो, अब क्यों खाक खखोले ॥बु०॥
नौबत बजे मौत की शिर पर, अब तो हाथ जरा धोले ॥बु०॥
अजहुँ बेगि बलदेव सुमिर प्रभु, क्यों न नींद सुख सोले ॥बु०॥

भजन ३७४

बुड्ढे बाबा करें विवाह, मौत के मुँह में जाने वाले।
थर २ कांपे ये है हाल, सारी लटक गई है खाल।
दोनों सूख गये हैं गाल, पोपले हलुवा खानेवाले ॥१॥
मुड़कर होगई कमर कमान, मुड़वा मूंछ बने हैं ज्वान।
बांधा मौर बैठ कर बान, बनगये मौशे कहानेवाले ॥२।
अंजन आंखों लीना सार, डाला गल फूलन का हार।
सिर पै पगड़ी गिल्तेदार, सजगये हँसी करानेवाले॥३॥
देखे जीने से लाचार, नारी तब करती व्यभिचार।

बढ़ते पाप हैं बेशुम्मार, नहीं दिल में शरमानवाले ॥४॥
कितनी रोवें जार बेजार, कितनी विष खाती हैं नार।
सुन२ बेटी के आचार, रोयें छुप२ धन खानेवाले ॥५॥
बढ़गई विधवों की तादाद, सुनता कोई नहीं फर्याद।
पाठक होवें वे बर्बाद, धनी जो ब्याह रचानेवाले ॥६॥

❀ १० विधवा विलाप और ❀ ❀ उनकी अपील ❀

गजल ३७५

लगाके ईश्वर से ध्यान हरदम सुधारो भारत को अबतो प्यारो।
निगाह करके ज़रा तो देखो, यह देश दुखिया है क्यों तुम्हारो॥
तड़प रही हैं बिचारी विधवा, हैं बहते आंखों से खूंके दरिया।
उदास बैठी बिलख रही हैं, नहीं है जिनका कोई सहारो॥
न दूधका दांत जिनका टूटा, न पग महावर है जिनका छूटा।
यह ब्याह रिश्ता है जिनका झूठा, ए मित्र अबतो इन्हें उबारो॥
एक२ साला उमर है जिनकी, अभी हैं माता का दूध पीतीं।
हो देशमें जिनके एसी विधवा, न होवे क्योंकर के मुख कारो॥
अनाथ बच्चे तड़प रहे हैं, ज़मीं पै सर को रगड़ रहे हैं।
बग़ैर भोजन बिलख रहे हैं, हे मित्र देवो उन्हें सहारो॥
यह शिवनरायण है दस्तबस्ता, प्रभू तुम्हीं से विनय है करता।
ये देश भूखो जो मर रहा है, हे ईश अब तो इसे उबारो॥

भजन ३७६

तुम क्यों नहिं मित्र विचारते, विधवा की विपति भारी को।
सासु ससुर देवर पितु माता, कोई इन्हें नहि पास बिठाता॥
कैसी करनी हुई विधाता, विष दे इनको मारते।
दुख में दुख दुखियारी॥ विधवा० १॥

अपने हाथ खाना नहिं खाया, बाली उम्र में ब्याह रचाया।
जाने कौन पती कहलाया, बिधवा उसे पुकारते। कुछ खबर
न बेचारी को॥ विधवा० २॥

रात दिना तुम ऐश उड़ाओ, नाना भोज्य पदारथ खाओ।
चंगों को तुम मुफ्त खिलाओ, लेकिन नहीं निहारते। दुखिया
की आहो जारी को॥ विधवा० ३॥

इन का रोना हँसी तुम्हारी, क्वारी में इज़्ज़त है भारी।
लाखों रोज़ बनें बाज़ारी, लेकिन नहीं सँभारते। शर्मा विधवा
नारी को॥ विधवा० ४॥

गजल ३७७

दुखी रोती थीं विधवायें, ज़रूरत थी सभा होवे।
बचाना दुख के सागर से, ज़रूरी था नफ़ा होवे॥
बहुत थीं चोर फेरों की, नहीं हो पाया था गौना।
न जाना हो पती कैसा, रहा दिन रात का रोना॥
हज़ारों लेके धन घर का, गईं संग भाग जीवन के।

हज़ारों ने जगत से डर, गिराये गर्भ विधवन के ॥
हज़ारों नक़दी के ऊपर, बिकीं हैं बुड्ढे भारी को।
पड़ी बेज़ार रोती हैं, गया जब छोड़ नारी को ॥
हज़ारों खा गईं फांसी, कुओं में कितनी डूबी हैं।
ज़हर कितनों ने खाये हैं, ये सब क़िस्मत की ख़ूबी है ॥
हज़ारों बस गये चकले, बढ़े व्यभिचार दल छाये।
हज़ारों बेगुनाह बच्चे, मगर रोने नहीं पाये ॥
बचाना चाहते हो गर, जो डूबा देश है भारत।
रचाना ब्याह विधवों के, नहीं समझो हुआ गारत ॥
प्रभू भगवन् की कृपा से, विवाह दिनरात होते हैं।
मगर अब भी बहुत सज्जन पड़े निद्रा में सोते हैं।
ये अबलाओं का हितचिंतक, कहे पाठक खड़ा तुमसे ॥
न दुख दो बालविधवन को छुड़ाओ जल्द इस ग़मसे ॥

गजल ३७८

विनय सुनलो बुज़ुर्गों तुम हमारी।
करोड़ों रोरहीं बेवा बिचारी ॥
गुनह हमने किया क्या है बताओ।
मिला एवज़ में जिसके दुःख भारी ॥
तुम्हीं ने तो हमें बचपन में ब्याहा।
तुम्हीं ने शास्त्र की आज्ञा है टारी ॥
मनु और वेद में क्या २ बताया।

रहैं स्त्री पुरुष सब ब्रह्मचारी ॥
मगर तुमको नहीं कुछ ख़्याल आया।
बिना सोचे धरी गलपर कटारी ॥
वर्ण और वर्ग और जाति मिलाई।
मिलाई लग्न राशी और नारी ॥
ग्रह नक्षत्र गण आदि मिलाये।
मगर विधि की लिखी नहीं जाय टारी ॥
तुम्हीं ईश्वर हमें धीरज बँधाओ।
लगा विधवों के सीने ज़ख्म कारी ॥
ज़रा बासुदेव का कहना तो मानो।
करो विधवों के फिर तुम ब्याह जारी ॥

भजन ३७९

विधवा नारि की रे, अपने मन में व्यथा विचारो।
गौर करो कुछ अपने दिल में, विधवा कहे पुकार।
तुम तो ब्याहो दश २ नारी, हमको क्यों इनकार ॥ वि० १ ॥
साठ वर्ष की उम्र में भाई, मरे तुम्हारी बाला।
काम कला को रोक न पाओ, फेर करो मुंह काला ॥ वि० २ ॥
फिर जो ब्याह न होय तुम्हारा, करो नित्य व्यभिचार।
इज्जत खोवो नहिं शर्माओ, बनो धर्म औतार ॥ वि० ३ ॥
बालेपन में पती हमारे, कर गये स्वर्ग पयान।

चढ़ी जवानी मदन हिलोरे, तिनहिं सिखावत ज्ञान ॥ वि० ४ ॥

व्याह काज में हमें देख सब, लेतीं मुँह लटकाय ।
देख निरादर मन में आवे, मरें ज़हर को खाय ॥ वि० ५ ॥

कोई २ नारी शोक से, देतीं अपनी जान ।
अधिक भाग नीचों सँग जातीं, जाने सभी जहान ॥ वि० ६ ॥

घर २ में त्योहार तीज को करती हैं शृंगार ।
बिन पीतम के अंग २ पर, पड़ें अनंग अँगार ॥ वि० ७ ॥

द्विव्या देवी के इक्किस पति, कहा उसे नहिं नीच ।
पद्म पुराण खोल के देखो, भूमि खंड के बीच ॥ वि० ८ ॥

वेद और स्मृति देख के, ऋषी गया बतलाय ।
आपद्धर्म नियोग आदि को, सदाचार ठहराय ॥ वि० ९ ॥

राधाशरण कहै कर जोड़े, ईश्वर सर्वाधार ।
पार करो अबलन की नैया, डूबत है मँझधार ॥ वि० १० ॥

एक दर्द अंगेज नज़्ज़ारा ।

एक कमसिन हिन्दू लड़की शादी के दूसरे ही दिन बेवा होजाती है ! शौहर की लाश को गोद में लेकर मातम करती है और आइन्दा ज़िन्दगी की बेवगी के मसाइब को याद करके बेतरह रोती है, कसरत अन्दोह से बेहोशी की हालत में उसका पति अपनी मजबूरी व क़ौम की बेपरवाही का गिला करते हुए राज़ी बरज़ा रहने की सलाह देता है ।

मगर बामुसीबत उसकी सलाह व तस्कीन ने और दिल को तड़पा दिया, होश आते ही आंख खोलकर वह चीखें मारती है, और हिन्दू क़ौम के ज़ुल्मोसितम से पनाह मांगती हुई मौत के आग़ोश में मुंह ढांप लेती है !! एक के एवज़ दो जनाज़े उठते हैं !!!

मुसद्दस ३८०

[अज़ महाशय अमरनाथ मुहसन]

सर्ताज़ ! मेरे वाली, मेरे प्रान से प्यारे ।
बेवक़्त कहां जाते हो, क्यों हाय सिधारे ॥
छोड़ा है मुझे आपने, अब किसके सहारे ।
इन्साफ़ से कहना, ये यही वादे तुम्हारे ॥
वह कौल कहां और वह इक़रार कहां है ।
दो दिनहीं में बदअहदी के उनवान अयां है ॥ १ ॥

वादा तो था यह साथ न छोड़ेंगे कभी भी ।
आईनये दिल तेरा न फोड़ेंगे कभी भी ॥
इस रिश्तये उल्फ़त को न तोड़ेंगे कभी भी ।
मुँह तेरी मुहब्बत से न मोड़ेंगे कभी भी ॥
क्यों कहिये तो, क्या आपके यह ध्यान में आया ।
क्यों नक़्शेवफ़ा आपने इस तरह मिटाया ॥ २ ॥

सोचो तो कोई ऐसी कमी करता है जल्दी ।

जिस तरह कि पे जाने जहां, आपने अबकी ॥
कँगना है उधर ताज़ा इधर ताज़ी है मेंहदी।
जामे की सफ़ेदी भी ज़रासी नहीं बदली॥

सेहरे भी अभी सरके तो मुर्झाये नहीं हैं।
चूड़े के भी रोग़न में शिकन आये नहीं हैं॥ ३॥

दो चार घड़ी पहिले जो यह घरथा गुलिस्तां।
लो आप के जाने से हुआ साफ़ बियाबां॥
रोते हैं इधर भाइ उधर बहने हैं नालां।
परियां हैं इधर अपने उधर ग़ैर हैं हैरां॥

क़िस्मत से अदावत की सज़ावार तो मैं हूँ।
औरों पै है क्यों ज़ुल्म गुनहगार तो मैं हूँ॥ ४॥

क्या भावजों ने इस लिये सुर्मा था लगाया।
क्या बहनोंने था इस लिये घोड़ी पै चढ़ाया॥
क्या इसलिये जामा था यह शादी का सिलाया।
क्या इस लिये गुलगूना था सेहरे पै लगाया॥

उड़ जाओगे ज्यूँ नगहते गुल बाग़ जहां से।
जाओगे अभागिन के सुहागों को जलाके॥ ५॥

जिस वक़्त से यूं आप ने बदली हैं निगाहें।
उस वक़्त से हि बन्द हैं सब प्यार की राहें॥
हरएक मुझे देखते ही भरता है आहें॥
नय मेरी मुहब्बत है किसी को, न हैं चाहें॥

बेज़ार मेरी शक्ल से है सारा घराना।
बैरी है मेरा प्रानपती, सारा ज़माना॥ ६॥

जिन आंखों में थी फूल कभी, खार हुई हूँ।
मैं अपने ही कुनबे के लिये भार हुई हूँ॥
बेकस हूँ मैं! बेबस हूँ मैं! लाचार हुई हूँ।
सच कहती हूँ मैं जीने से बेज़ार हुई हूँ॥

मनहूस कोई कहता है और कोई अभागिन।
कहता है कोई क्यों न मरी होते ही डाइन॥ ७॥

पे प्रानपती! यूं मुझे ताने न दिलाओ।
मुझ दुखिया पै दुनियाको न इसतरह हँसाओ॥
देखो तो! न जलती हुई को और जलाओ।
ले जाओ मुझे साथ जहां जाना हो जाओ॥

जब आपने ही जाने जहां, ऐसी दग़ा की।
क्या और से मैं रक्खूंगी उम्मीद वफ़ा की॥ ८॥

लो अब तो सहर होने लगी तुम को जगाते।
किस बात से रूठे कि नहीं मनने आते॥
क़िस्मत भी मेरी सोगई है तुम को जगाते।
यह आप के अन्दाज़ निराले नहीं भाते॥

किस सोच में लेटे हो ज़रा सर तो उठाओ।
गो दिल नहीं मिलता है पै आंखे तो मिलाओ॥ ६॥

मैं ग़ैर सही मुझ से अजी बोलो न बोलो।

पर अपने अज़ीज़ों से तो यूं ज़हिर न घोलो ॥
किस हाल में है घर के ज़रा आंख तो खोलो ।
माता की मुहब्बत को कुछ इनसाफ़ से तो ॥
क्या दूधकी धारों का यही मोल है प्यारे ।
सिर पीटती को छोड़ चले आप सिधारे ॥ १० ॥

कहने को अभी और थी दुख दर्द बिचारी ।
कहने भी न पाई थी मुसीबत अभी सारी ॥
इफ़रात ग़मो रंज से ग़श होगया तारी ।
इस ग़श में वह क्या देखती है कर्मो की मारी ॥
सर्ताज वही दूल्हा बना पास खड़ा है ।
और यास भरे लहजे में यूं गोया हुआ है ॥ ११ ॥

ऐ नेकसीयर !! अस्मतो इफ़्फ़त में यगाना ।
ऐ बायसे बहबूदी वो रौनक़ धरे खाना ॥
ऐ मूनिसे लासानी व हमदर्द ज़माना ।
सुनता हूँ तेरे ग़म का मैं मुद्दत से तराना ॥
मैं आजिज़ो लाचार हूँ कुछ कर नहीं सक्ता ।
गो तेरा ही हूँ ! तेरा भी दम भर नहीं सक्ता ॥१२॥

इस गुलशने हस्ती में यही फल थे तुम्हारे ।
लिक्खे थे विधाता ने यही लेख तुम्हारे ॥
रो रो के उतारेगी तू अफ़शां के सितारे ।
और चूड़ा सुहागों का चिता पै तू उतारे ॥

तू बदले में शहनाई के सरकूबी सुनेगी ।
फूलों की एवज़ रश्कचमन फूल चुनेगी ॥ १३ ॥

जो तुझ पै हुई है वह नहीं कोई निराली ।
कोई भी तो घर होगा न इस शुदनी से खाली ।
जो आज चमन में हैं भरी फूलों से डाली ।
कल देखना होती है वही फूलों से खाली ॥
जिस शाख बरहना को बहार आके खिलाये ।
लाज़िम है उसे फ़स्ले ख़िज़ां भूल न जाये ॥१४॥

जाने का मुझे अपने नहीं रंज ज़रा है ।
पर ख़ौफ़ तेरा जानेजहां, मुझको बड़ा है ॥
जिस क़ौम में है तू वह अजब अहलज़फ़ा है ।
नय शर्म ही है इस को न कुछ ख़ौफ़ खुदा है ॥
है नाला ग़रीबों का इसे एक तराना ।
है अश्क यतीमों का इसे मोती का दाना ॥ १५ ॥

नय अक्ल बतावे जो इसे, इसको यह माने ।
नय शास्त्र और पाक किताबों को यह जाने ॥
नय मनु महाराज के लिक्खे को बखाने ।
नय वेदों के अहकाम को अहकाम यह माने ॥
आई है अजब जिहलो जिहालत के ये बस में ।
मनमानी बना रक्खी हैं इस क़ौम ने रस्में ॥१६॥

जो रंज तुझे पहुँचा है कब मुझ से निहां है ।

सूरत से तेरी हाले दिलेज़ार अयां है ॥
आहों से तेरी, दिल में मेरे उठता धुआं है।
लेकिन ऐ मेरी जान, यह बेसूद फ़िग़ां है ॥

तहरीर क़ज़ा आंसुओं से मिटती नहीं है।
आहों से कभी फ़ौजे अलम लुटती नहीं है॥ १७ ॥

मैं चाहता कब हूं कि तुझे ताने दिलाऊं।
मैं चाहता कब हूं कि अक़ारिब को रुलाऊं ॥

मैं चाहता कब हूं कि इसी उम्र में जाऊं।
मैं चाहता कब हूं कि तुझ छोड़ के जाऊं ॥

लेकिन मेरी जां ! इस में नहीं मेरी ख़ता है।
मैं जाने पर मजबूर हूं यह हुक्म क़ज़ा है ॥१८॥

गो आलमे बेहोशी में थी दर्द रसीदा।
इस आख़िरी फ़िक़रे से हुआ और इसे सदमा॥

इस सदमे के लगते ही गिरा और कलेजा।
गिरते ही कलेजे के बिगड़ने लगा नक़शा ॥

मुँह ज़र्द हुआ ! नबज़ें छुटीं ! रिक्क़त तारी।
और देखते ही देखते दुखिया भी सिधारी ॥१९॥

ऐ नाज़रीन ! क्या यासोक़लक़ का है यह मंज़र ?
दिल पानी हुआ जाता है ! दो लाशें बराबर !!!

यह कबकदरो है तो है वह माह मुनव्वर।
दोनों की मुहब्बत तुली कांठ में बराबर ॥

महबूबो मुहब कोई अजल ने नहीं छोड़ा।
यह कौनसा रिश्ता है जो इसने नहीं तोड़ा ॥ २० ॥

ऐ भारतियो ! हाय ये अन्धेर नहीं है।
औलाद पै भी ज़ुल्म सुना तुमने कहीं है ॥

तुमने तो समझ रक्खा है जो कुछ है यहीं है।
नय हशूर का है ख़ौफ़ न दावर का यक़ीं है ॥

मासूम का यह ख़ून न दामन से छुटेगा।
धुलने से धुलेगा न मिटाने से मिटेगा ॥ २१ ॥

कहते हो कि है पुनर्विवाह बायसे ख़िजालत।
कुनबे के लिये फ़ेल है यह बायसे नफ़रत ॥

है चादरे अस्मत के लिये दाग़ निदामत।
हां सोचिएगा जब तो नहीं आती है ग़ैरत !! (कब)

जब कोर्ट में पुलीस के चालान होते हैं।
किस वक़्त ? कहां ? कौन के जब सुनते हो फ़िक़रे ॥

गो लिखी हुई वेदों में है साफ़ इजाज़त।
और की है मनु जीने भी खूब इसकी हिदायत ॥

और अक्ल ने भी दी है इसी ही की शहादत।
हैरान हूं फिर आप को है किस लिये नफ़रत॥

ये याद रहे आप को जीते ही मारोगे।
बेवाओं की शादी में जो ताख़ीर करोगे ॥२३॥

और बेवा भी वह जिसने नहीं देखा ज़माना।

है ख्वेश बेगाना में अभी एक यगाना॥
बातों को समझती है जो मर्गूब तराना।
शादी है अभी जिस के लिये एक फ़िसाना॥

अलक़िस्सा वह बेचारी जो मासूम रही है।
और कुदरती जज़बात से महरूम रही है॥२४॥

जिस क़ौम का यह हाल हो क्या उसको सुनाना।
मुमकिन ही नहीं ज़ालिमों से दाद का पाना॥
सोते का तो है मुश्किकमन सहिल जगाना।
कौन उसको जगाये जो करे महिज़ बहाना॥

फिर याद रहे करते हैं जो ढीले बहाने।
किश्ती नहीं लगेगी कभी उनकी ठिकाने॥२५॥

हक़दारों का यूं बहरे खुदा हक़ न गवांओ।
महकूमों पै अहकाम तहईं न चलाओ॥
मँझधार में है नाव ज़रा ज़ोर दिखाओ।
बेवाओं की शादी में न अब देर लगाओ॥

ऐ मुहसनो अबांव सितम की कोई हद है।
कुछ करके दिखाओ कि यही वक्त मदद है॥२६॥

गजल ३८१

कहां तक चुप रहें प्यारो, नहीं अब चुप रहा जाता।
मुसीबत देख विधवों की, कलेजा मुहँ को है आता॥१॥

बरस छे सात की बच्ची, बना कर रांड़ बिठलाई।
कटे कैसे उमर उसकी, नहीं कोई यह बतलाता॥२॥
बरस अस्सी में भी बीबी, किसी की गर है मर जाती।
बिना परिणाम सोचे झट, है सादी अपनी करलाता॥३॥
कहो क्या खांय कुछ तालीम भी तुमने न दी इनको।
फ़क़त खाने को एक ग्रास, दूसरे गाली पिता भ्राता॥४॥
सिर्फ़ कूड़ा व कर्कट, चौका बर्तन रोटी औ पानी।
कला कौशल सिवा इसके, न कोई और सिखलाता॥५॥
हज़ारों कोशिशों से रोकते विधवों की शादी को।
मगर क़ानून कुदरत को, न कोई रोक है पाता॥६॥
नहीं करते हैं शादी भ्रूणहत्या नित्य होती हैं।
एवज़ में एक के होता है, पैदा लाख से नाता॥७॥
कहो इन बेकसों की दास्तां, ग़म कौन सुनता है।
सदा ज़िंदा नहीं रहते, किसी के भी पिता माता॥८॥
दया कर मित्र हर लो वेगिही अब दुःख विधवों के।
तुम्हारे बिन नहीं कोई, जगत में और सुख दाता॥९॥

गजल ३८२

दुख दर्द अपना किसको सुनायें कहां कहां।
ये दाग़ दिलका किसको दिखायें कहां कहां॥
फैली कुरीति धर्म के विपरीत हिन्द में।
मुश्किल मुसीबतों से बचायें कहां कहां॥
होते हैं बेकसों पै सितम नित नये नये।

ज़ख़्मी जिगर को किसपै सिलायें कहां कहां ॥
होते हैं ज़ुल्म ज़ुल्मतों जोरुश्रों पै शबो रोज़।
पुरग़म पुकार किस को सुनायें कहां कहां ॥
करते विवाह अपने बुढ़ापे लौं बार बार।
ये बाली उमर कैसे गँवायें कहां कहां ॥
करते हैं आप भोग हमें योग सिखायें।
अन्याय इन के और बतायें कहां कहां ॥
किस भांति मन को मार इन्द्रियों को जीतकर।
अबला अज्ञान अलख जगायें कहां कहां ॥
रो रो तमाम उम्र कब तलक बसर करें।
चश्मों से नदी खूं की बहायें कहां कहां ॥
बलदेव प्रमज़दों की तुम्हीं अबतो लो खबर।
सोते हो सुध बिसार के शाहे कहां कहां ॥

गजल ३३८

सदमों की चोट सीने पै खाई नहीं जाती।
ताउम्र ये तकलीफ़ उठाई नहीं जाती ॥
रोना ये शबोरोज़ का रोयें कहां तलक।
चश्मों से नदी खूं की बहाई नहीं जाती ॥
खुदग़र्ज़ होगया है ज़माना ये इस क़दर।
इनसाफ़ की बू तक यहां पाई नहीं जाती ॥
होता है ज़ुल्म रात दिन हम औरतों पै हाय।
तिसपर भी ज़ुबां हमसे हिलाई नहीं जाती ॥

करते हैं ब्याह नाई ब्राह्मणों की राय पर।
बाहम की शक्लो सिफ़त मिलाई नहीं जाती ॥
बचपन में ब्याह देते हैं नालायक़ों के साथ।
विद्या तलक भी हमको पढ़ाई नहीं जाती ॥
हम नारी गँवारी हैं वह शौहर पढ़े हुये।
कितनाही मिलो दिल की जुदाई नहीं जाती ॥
सुधलीजिये बलदेव हम अबलाओं की अबतो।
तुम से मरम की पीर छुपाई नहीं जाती ॥

गजल ३३९

अबतर आंसू बहाना कोई हम से सीख जाय।
बेगुनाह ही मार खाना कोई हम से सीख जाय ॥
आह निकलती है जिगर से और है हालत तबाह।
हर घड़ी जी का जलाना कोई हम से सीख जाय ॥
बेवा को पर्दा रखें औ शक करें हैं हर घड़ी।
उम्र रो-रो कर गँवाना कोई हम से सीख जाय ॥
सासु मां भाभी ननँद सब की सहारें झिड़कियां।
होंठ पर टांका लगाना कोई हम से सीख जाय ॥
ख़्वाहिशे दुनियां का ग़म हमको सतावे हर घड़ी।
ग़म में दम अपना घुटाना कोई हम से सीख जाय ॥
मिस्ल हैवां साथ जिसके चाहे वह करदें हमें।
चुपके चुपके साथ जाना कोई हमसे सीख जाय ॥
हो सती हमराह शौहर तिस पै हम से ये सलूक।

आप खुद मर्घट को जाना कोई हम से सीख जाय ॥
हाथ से इन ज़ालिमों के होगई बस हम तमाम ।
बिन बुलाये मौत लाना कोई हम से सीख जाय ॥
पांव जंजीरे अलम है यह तने नाज़ुक मुदाम ।
खुद बनाना जेलखाना कोई हम से सीख जाय ॥

विधवों की फ़रियाद ३८५

ग़मों दरदो मुसीबत से लबों पर जान आई है ।
कोई सुनता नहीं फ़रियाद ये कैसी तबाही है ॥
बहुत रोती बिलखती हैं तुम्हारी बेटियें बहुयें ।
बुजुर्गो ! भाइयो ! प्यारो ! दुहाई है दुहाई है ॥
बिला मर्ज़ी हमारे साथ जिसके चाहे वह कर दें ।
कहो शादी है या नाज़िल हुआ क़हरे इलाही है ॥
ख़रीदें और बेचें भेड़ बकरी की तरह हम को ।
बुजुर्गों ने करी क्या वाह ! ये उम्दा कमाई है ॥
बिठा कर रांड घर में जानते हैं आबरू अपनी ।
मगर इज़्ज़त नहीं इस में सरासर रूस्याही है ॥
हमल गिरते हैं लाखों क्या नहीं मालुम है तुमको ।
अरे अन्यायियो ! लज्जा कहां तुम ने गँवाई है ॥
कहां जाती रही दिल से शफ़क़्क़त मादरी पिदरी ।
करी दानिस्तां जो हमसे बस ऐसी कज़अदाई है ॥
यही कलमा निकलता है ज़ुबां से अपने अब हरदम ।

न पाये सुख कभी वह जिसने यह रीति चलाई है ॥
करो मत ज़ुल्म हमपर हमतो आपही ग़मकी मारी है ।
सुना होगा खुदा तक नाले की आख़िर रसाई है ॥
कोई पूंछे है जब हमसे कि तुम क्यों रोती हो प्यारी ।
बताओ तुम ने क्यों रो रो के यह नदी बहाई है ॥
कहो तो क्या तुम्हें खाने पहनने को नहीं मिलता ।
वृथा ही बेवजह क्यों तुमने ये शोज़िश उठाई है ॥
तुम्हारा काला मुंह जावो निकल तुम जल्द अब घरसे ।
वृथा ही रोज़ क्यों तुमने करी हम पै चढ़ाई है ॥
पड़ोसिन कहती हैं अक्सर हमें शादी के मौक़े पर ।
यहां मत आवो गाई जाती शादी की बधाई है ॥
दुल्हन नहा धोके बैठी है अभी कंगना पहिन करके ।
तू मत आ सामने उसके अभी मेहँदी लगाई है ॥
तेरा क्या काम है क्यों बदसगूनी है करी आकर ।
चली जा तू यहां से सामने नाहक को आई है ॥
बजुज़ आहे जिगर उस वक़्त क्या मुँह से निकलता है ।
कहें दर्द अपना किससे किसको अपनी मित्रताई है ॥
हमारे रंजो ग़म की दास्तां को कौन सुनता है ।
मुख़ालिफ़ बाप है और दुश्मने जां अपना भाई है ॥
मदन पीड़ा करी है दिल में है रंजो अलम अज़हद ।
कमां है बिस्तरे ग़मगाह टूटी चारपाई है ॥
करें दो चार और छै सात तक तो अपनी सब शादी ।
किसी के आज तक यह बात भी बस दिलमें आई है ॥

कि इन बेचारी अबला बेवों का क्या हाल है अबतर।
है इनकी क्या खता। इन पर जो यह ऐसी तबाही है॥
स्वयंवर होता था पहले यहां शादी के मौक़े पर।
जो उम्दा रस्म थी एक लख़्त वह तुमने मिटाई है॥
बजाये इस के की जारी रसूमाते कबीहा को।
न सोचा कुछ कि खुदग़र्ज़ों ने यह रीति चलाई है॥
हुआ था मुश्फ़िक़ो ग़मख्वार अपना एक यहां पैदा।
ग़ज़ब देखो कि उसने भी करी हम से जुदाई है॥
अहो! वह वेद का ज्ञाता परम ज्ञानी परम कोविद।
कहां है जिसने हमको वेद की आज्ञा बताई है॥
दया थी नाम में आनन्द था उपदेश में जिस के।
हमारी हेतु अपनी जान तक जिस ने गँवाई है॥
मनू और वेद में जब आज्ञा है अक़दसानी की।
तो फिर करने में तुमने देर अब कैसी लगाई है॥
हज़ारों साल तो रोई तुम अब भी क्या रुलाओगे।
बताओ तो सही क्या कुछ तुम्हारे मन समाई है॥
जो खारिज अक़्ल हैं उनका न तुम हर्गिज़ सुनो कहना।
हिये के अन्ध हैं आंखों में चरबी उन के छाई है॥
अकारण ही नहीं इस मुल्क की हालत हुई अबतर।
हमारी आह से इस हिन्द पर आई तबाही है॥
जवानी की लहर उठती है ज्यों मौजे बहरे आज़म।
हया बहजाती है होती किनारे पारसाई है॥
सती होना ही अच्छा था हमारे रांड होने से।

कहां जायें कहें किस से प्रभो! तेरी दुहाई है॥
हमारी ये जवानी और ये पैरहन है ख़ाकी।
लिबासे सुर्ख की जा हैफ़! ये धूनी रमाई है॥
करें आनन्द सब अख़तर शुमारी हमको हो हासिल।
ये क्या इन्साफ़ है और यह तेरी कैसी खुदाई है॥
खिलाते हमको बालेपन में हैं मा बाप गुड़ियों से।
जवानी में उन्हों ने हमको कर रँड़िया बिठाई है॥
ज़ईफ़ी में कहें किस से कि हम पर ये मुसीबत है।
बजुज़ ईश्वर न लाल अपनी न अपनी मा की जाई है॥
सिवा अपने पती या पुत्र के होता है कौन अपना।
जो आड़े वक़्त काम आये अजब मुशकिल बनाई है॥
खिला दो ज़हर या दो तुम मुसीबत से छुड़ा हमको।
खुदा के वास्ते क्यों तुमने ये आफ़त मचाई है॥
किये पहिले जनम में क्या बुरे आमाल थे हमने।
जो हमको क़ैद बेजा से नहीं होती रिहाई है॥
सदा दिन एकसां रहते किसी के हैं नहीं हर्गिज़।
उठाया जिसने दुख उसने कभी राहत भी पाई है॥
वही काटेंगे बस इस रस्म बद को तेग़ हिम्मत से।
जिन्हों ने दे दिलासा धीर कुछ अपनी बँधाई है॥
जो आली हौसला हैं वह नहीं डरते हैं जोहला से।
बस अब अय आर्य भाइयो! दमे मुशकिल कुशाई है॥
मदद मज़लूम वाजिब है यही है फ़र्ज़ इन्सानी।
बहुत सी ने रिफ़ाहे क़ौम में जां तक गँवाई है॥

तुही है सबका एक ईश्वर तेराही नाम जगदीश्वर।
दयालु और दयासागर तुही सब का सहाई है॥
रहीमा आदला बन्दा निवाज़ा नाम है तेरा।
तु कर बखशिश सज़ा आमाल अज़हद हमने पाई है॥
दिले नाशाद क्योंकर शाद हो तेरी कृपा के बिन।
विलाशक नालये बेदाद की तुझ तक रसाई है॥

भजन ३८६

विधवा अनाथ विचारी, हा! सिसक २ रोती हैं॥ टेक॥

कठिन हृदय कैसा कर लीन्हा, दया धर्म सब ही तज दीना।
पहाड़ दुख का ढकेल दीना, विधवा कर मन भारी॥
दबि पड़ी जान खोती है॥ हा० १॥

उठ उद्धार करो क्यों न इनका, लिखा देखलो मनु वेदन का।
तज खटका स्वार्थी दुर्जन का, महाकष्ट दो टारी॥
वह अँसुवन मुख धोती हैं॥ हा० २॥

तुम तो जब रँडुवे हो जाओ, पुनर्विवाह कर चैन उड़ाओ।
कभी जियत शिर खाय बिठाओ, तुम सौतिन हत्यारी॥
यह जान अथिर होती हैं॥ हा० ३॥

खुदगर्जन की सुन गाथायें, जो हानी भई तुम्हें बतायें।
कई करोड़ बिलखें विधवायें, देके शाप अति भारी॥
आखिर इज़्ज़त खोती हैं॥ हा० ४॥

दादरा ३८७

टेक-मत विधवायें बाली रुलाओ जी॥

दो दो बरस कहीं चार २ बरस की। कोई बरस दस खेलें हँस हँस। विधवा हैं नहिं जाने कुछ बस॥ हा मत० १॥

ऐसी ऐसी कन्या जो फेरों की चोर हैं। तरस तो खाओ ब्याह रचाओ। उनका कुछ अपराध बताओ॥ हा! मत०२॥

कितनी गईं संग नीचों के धन ले। गर्भ गिराये ज़हर दिलाये। कितनों ने योंही प्राण गँवाये॥ हा! मत० ३॥

कितनी बाज़ारों में बैठी हैं देखो। बनी हैं वेश्या, कर रहीं पेशा। हा! तुम को पर नहीं अन्देशा॥ हा! मत० ४॥

पाठक कहैं मित्रो! इज़्ज़त बचाओ। होश में आओ, जहां तक पाओ। इनके पुनः संस्कार कराओ॥ हा! मत० ५॥

भजन ३८८

मा बाप बाल विधवन के, भर भर आंसू रोते हैं॥ टेक॥

चिट्ठी में जब खबर ये आई, चेचक में मर गये जमाई।
तनमनकी सुध बुध बिसराई, विकल हो शिर धुन २ के॥
दिल टूक टूक होते हैं॥ म० १॥

पीट २ शिर भरें गिलानी, हा! बेटी तू अभी अयानी।
कैसे कटेगी हाय! जवानी, खेल खेल बालपन के।
यों कह कह मुख जोते हैं॥ म० २॥

जब तेरी टीपना दिखाते, हाय तुझे सुख बड़ा बताते।
दान व्रत कुछ काम न आते, संगी हुये सब धन के।
हम दुख में क्यों रोते हैं ॥ भ० ३ ॥

क्यों अम्मा तू चूरी फोरे, भर २ नैन क्यों आवें तोरे।
क्या कहूं फूटे भाग हैं मोरे, रोवें सभी सुन सुन के।
सुख दुनियां का खोते हैं ॥ भ० ४ ॥

सुन २ के दुख किसकी है छाती, टूक २ हो २ नहीं जाती।
पाठक को यही रीति सुहाती, करो ब्याह भाई इन के।
क्यों पाप बीज बोते हैं ॥ भ० ५ ॥

भजन ३८९

कह रोई बिधवा बाला, उमर मेरी कैसे कटे आली।
ना जानो कब हुई सगाई, ना जानो कब जोर मिलाई ॥
ना मैं दुनिया देखी भाली, चाल चली जाली ॥क०॥
हरा बाग फूल ले आया, बिन जल है अबतो मुर्झाया।
सूख चले पत्ते अरु डाली, छोड़ गया माली ॥क०॥
एक तो थी मैं कर्म की हारी, दूजे बिपता पड़गई भारी।
तीजे चर्चा काल के खाऊं, चौथे गाढ़ खाली ॥क०॥
किससे कहूं बिपत मैं तनकी, जाने कौन पराये मनकी।
कठिन है पीड़ा बालपन की, सही न जाय आली ॥क०॥
किसपर मेहदी हाथ रचाऊं, किसपर रूप औ रंग बनाऊं।
किसपर पहिनूं अनवट बिछुवे, किस पर नथ बाली ॥क०॥

मात पिता नेको न बिचारी, जन्मतही मोहिं क्योंना मारी।
नवलसिंह कहे ईश्वर तू है सब का बाली ॥क०॥

भजन ३९०

बिधवन की भारी, भीर, भरगई भारत में।
जो सुहाग की सार न जानें, केवल पीहर को पहचानें।
ऐसी रांड़ घनी घर घर में, उपजावति है पीर ॥ १ ॥
इनमें आंट रहैगी कबलों, जबलों ये बारी हैं तबलों।
जा दिन आवेगी तरुणाई, कोई न धरैगी धीर ॥ २ ॥
मन मनोज पर प्यार करेंगे, नयना लाज उतार धरेंगे।
रस बिलास बन में बिहरेंगे, सब के रसिक शरीर ॥३॥
जब तुम रोक रोक हारोगे, गिन गिन गर्भन को मारोगे।
हा तब शंकर कौन बनेगो, पंचन में कुल बीर ॥ ४ ॥

भजन ३९१

बिधवा रो २ करें पुकार भारत मान रखाने वाले।
पति दुख के कारन भाई, कितनी होगई हैं हर्जाई।
तुमको शर्म ज़रा नहीं आई, ऋषि सन्तान कहाने वाले ॥ १ ॥
बाली आयू में कर ब्याह, बिधवा करके देत बिठाय।
फिर कर्मों का दोष बताय, छुप छुप गर्भ गिराने वाले ॥ २ ॥
क्यों तुम हत्या रहे कराय, हमतो कहते हैं शर्माय।
कुछ भी समझो दिल में भाय, ये व्यभिचार बढ़ाने वाले ॥ ३ ॥

कहां गये व्यास कृष्ण भगवान, नारद ब्रह्मा मनू महान।
अर्जुन भीमसेन बलवान, पुनर्विवाह चलाने वाले ॥ ४ ॥
मनुस्मृति को देखो जाय, महाभारत को लेवो उठाय।
अथर्व वेद पढ़ो चित लाय, कांड नवम बताने वाले ॥ ५ ॥
अर्जुन कीन्हा पुनर्विवाह, भीषम पर्व रहा बतलाय।
तुमने अब तक लखा न हाय, विधवा भार बढ़ाने वाले ॥ ६ ॥
बलदेव की यही पुकार, घर घर बीर होवो तैयार।
विधवन दीजो पार उतार, पे द्विज वर्ण कहाने वाले ॥ ७ ॥

ग़ज़ल ३९२

क्या २ सितम हम पर सितम आरा नहीं करते।
इस पर भी तो हम आह का नारा नहीं करते ॥
पहले तो जन्मते ही मारते थे माई बाप।
अब खौफ़ गवरमेंट से, मारा नहीं करते ॥
करते हैं मगर और सितम नये नये हम पर।
दुख दर्द दूसरों का विचारा नहीं करते ॥
बूढ़े मरीज़ मूर्खों के साथ ब्याहते।
तकलीफ़ का कुछ ख्याल हमारा नहीं करते ॥
मौजूद एक नारि के करते हैं दूसरी।
खुदगर्ज़ दिल में खौफ़ खुदारा नहीं करते ॥
इस सख्त सँगदिली से रुलाते हैं उम्रभर।
इक दम से सर को जिस्म से न्यारा नहीं करते ॥
अपने तो ब्याह करते बुढ़ापे लों चार चार।

पर बेवा दुख्तरों का दुबारा नहीं करते ॥
खुदग़र्ज़ हो गये हैं यह बाशिन्दगान हिन्द।
कोई भी फ़रज़ंदों का सहारा नहीं करते ॥
सुध लीजिये बलदेव अब अबलाओं की प्रभू।
दीनों को इस क़दर तो बिसारा नहीं करते ॥

भजन ३९३

बिधवों का संताप रातदिन सबको दहता है।

सम्बन्धी रोवें शिर धुन २, विकल हों इस अग्नी में भुन २।
हाय प्रभु हर्ई उठा पिता यों रो २ कहता है ॥ बिधवों० १ ॥
गई विवाह में ताई के घर, जा २ असगुन होय यहां पर।
बुरा मान चाहे भला, अपना शुभ सब कोई चहता है ॥बि०२॥
हा हा व्यथा नहीं कहने की, बारी है दुख में जलने की।
शिर पटके दीवार बहुत कुछ आसू बहता है ॥ बिधवों० ३ ॥
हैं हैं क्या है अम्मा बोली, क्यों रोती है मेरी भोली।
जो चाहे खा पहन, भाई यों आकर कहता है ॥ वि० ४ ॥
अम्मा मैं कहीं भी नहीं जाती, ताई के घर गई हर्षाती।
ललकारा मुझे हाय सब की दुरदुर तन सहता है ॥वि० ५ ॥
कहां रांड तू करती असगुन, अम्मा मुझ पर सहन न होतन।
मन्द भागिनी देखी हाय मेरा जाना दहता है ॥ वि० ६ ॥
अबलों के हित दे तन मन धन, संस्कार पुनि करे यत्न सन।
पाठक जो हो बीर जगत में वही यश लहता है ॥ वि० ७ ॥

भजन ३९४

माय मेरी तुरियां चूं फोर, मुझे नन्दा तरती हाय।
तू तो तड़े थी बनेदी नौद्री, पत तुझे घड़वा दूं तिलदी।
आज उतारे है चूंलिदरी, नथ बिछुये मोर ॥मुझे० १॥
तड़ छड़ झांझन अरु बाली, झांवर तुइयां मेरी निताली।
हार पँचलड़ी भू में डाली, क्यों फंद तोरे ॥मुझे० २॥
हाय माय तू हो दई बैरिन, छोड़ मुझे मैं जाऊं हूं थेलन।
ताले तरोड़े है क्यों हाथन, है दौरे दौरे ॥ मुझे० ३ ॥
माता सुन २ खाय पछाड़े, खून बहे शिर दे दे मारे।
छिपे चन्द्र नैनों के तारे, फूटे भाग तोरे ॥मुझे० ४॥
हाय शोक दिल टुकड़े होवे, ज्यों वह विधवा कन्या रोवे।
पाठक खेल कूद सोवे, झूले हिंडोरे ॥ मुझे० ५ ॥

भजन ३९५

छोड़ दे अब मेरी मैया मेरा हाथ दूखने लदा।
छोतीं २ फूर्ती सारी, अच्छी अब मत फोले प्यारी।
नई मँगा दई बन्दी बारी, लादे वा मैया ॥मेरी० १॥
तुरियां तो सब फूर्ती मेरी, छन कंगन तो सासू केरी।
खन्दुये निकालेसि मुँह बाले, दी संदयासी धेया॥मे०२॥
चूं अम्मा तू रोये जावे, चूं तेरी अँखियां भर२ आवे।

भूख लदी रोती नहिं लावे, दे दे दे देया ॥मेरी० ३॥
हायशोक यों रोवबाला, कोईनहिं रहा समझानेवाला।
पाठक ईश्वर तू रखवाला, सबका रखवैया ॥ मेरा० ४ ॥

भजन ३९६

विधवा लाचार, व्यथा सुने जिया धड़के।
गोदी ले फिराये फेरे, बालम मृत्यू ने घेरे।
नहीं कुछ जाना सार ॥ १ ॥
वह मात पिता की प्यारी, मांगे गहना नई सारी।
देख तीजो त्योहार ॥ २ ॥
बे सुध हो माता बोली, नहीं पहना करती भोली।
बही नैनन जलधार ॥ ३ ॥
तू तो विधवा है बेटी, खिली क़िस्मत जाय न मेटी।
न कर सकी शृंगार ॥ ४ ॥
गईबीत उमर सब बाली, और उसने सुधि सँभारी।
रोवे छुप २ घर बार ॥ ५ ॥
टहले में चाची के जावे, गुसेल हो नाक चढ़ावे।
सौ सौ दे ललकार ॥ ६ ॥
कोई आत्मघात करती है, कोई फांसी खा मरतीहै।
कोई विष खाती नार ॥ ७ ॥
इतिहास पुराणस्मृती, श्रुति भी क्या आज्ञा करती।
व्यवस्था लो नर नार ॥ ८ ॥

मतविधवाबाल रुलाओ, अब इनका दुःख मिटाओ।
बढ़ाओ मत व्यभिचार ॥ ६ ॥
है कौन वीर बलधारी, जो इन्हें देय सुख भारी।
हो पाठक तैयार ॥ १० ॥

भजन ३६७

विधवा रोवे दे किलकारी, तुम सुनियो देश हितकारी।
मात पिता कह सत्यानाशिन, सासु ससुर बतलावें डायिन।
उनसे ज्यादा हे नारायण! जग में कौन दुखारी ॥तुम सु०१॥
शुभ अवसर में जब कहीं जावें, देख उन्हें सब माथा चढ़ावें।
नहीं पास अपने बिठलावें, उन्हें सुहागिन नारी ॥तुम सु० २ ॥
गहना पाता उनसे छीना, फटा दुपट्टा दामन दीना।
उनका फिजूल समझें जीना, सासु ससुर महतारी ॥तुमसु०३॥
जब कि तरंग काम की आवे, व्याकुल हो मन में बिलखावे।
उसकी दवा कहां से पावे, कहता यही मुरारी ॥ तुमसु० ४ ॥

दादरा ३६८

विधवा रोवे है दीन बिचारी रे।
बालपन में रांड हुई हूं खोटी है क़िस्मत हमारी रे ॥ १ ॥
मात पिता ने क्यों न विचारी जन्मत ही देते मारी रे ॥ २ ॥
हमको तो कुछ खबर नहीं है कब हुई शादी हमारी रे ॥ ३ ॥
फटा दुपट्टा हमको दीना हाय छिनगया चीर हज़ारी रे ॥ ४ ॥

करना कहें नियोग बुरा है हालत कैसी बिगारी रे ॥ ५ ॥
पांडव अब नियोग से पैदा, फिर क्यों है इनकारी रे ॥ ६ ॥
सती का होना बंद हुआ है, हुक्म नहीं सरकारी रे ॥ ७ ॥
कांजीमल यह बात बतावे इससे ही देश दुखारी रे ॥ ८ ॥

लावनी ३६९

सात सखी मिल करें रुदन यों निज २ व्यथा सुना सारी।

कौन पाप बह उदय भये हैं कहा विपति हरि ने डारी ॥
एक कहे सुनो सखी हमारो जिया विकल दिनरात रहे।
देख २ पति मूरख अपना कष्ट मेरा तन सदा सहे ॥
बैठ २ नीचों की संगत ओछी मत दिन रात गहे।
यदि कोई समझावे है तो रार करे कटु वचन कहे ॥
करें सभी अपमान हंसे ठट्टा दे दे कर नर नारी ॥ला०१॥
भली सखी इक कहे दूसरी यदि बालम तेरा गुणहीन।
विकल रहूं मैं सदा तड़पती जैसे प्यासी जल बिन मीन ॥
रोगी रहें सइयां नित मेरे सब प्रकार वह हैं तनु छीन।
हार गये सब औषध करके वैद्य डाक्टर महा प्रवीन ॥
दूर न दुख हो हाय हमारा कहा करूं मैं दुखियारी ॥ला०२॥
दृष्टि अगारी रहे तेरा पति धरो धीर या विधि प्यारी।
कहे तीसरी विपति सुनावत आवे मोहि लज्जा भारी ॥
चसका इन्हें परो जूआ को गये हार सम्पति सारी।

लगे करन चोरी तब इनकी भई पुलिस द्वारा ख्वारी ॥
आप पड़े दुखसागर में औ(मोहि डुबाया मझधारी ॥सा०३॥

रोग धोग सब जाय सखी।री कहे चौथी यों खाके वात।
पीतम मेरे रहें नशे में पियत सखी दिन रात शराब ॥
सुलफा गाजा और अफ़ीम की लतने काया करी खराब।
हाय कहा इनको यह सूझी खो बैठे सारी ही आब ॥
नालिश डिगरी नित होती है कहा करूं मैं दुखियारी ॥सा०४॥

कहे पांचवी व्यथा पिया की, रोय रोय यों मृगनैनी ॥
लूट लियो धन माल जवानी दिखा २ चितवन पैनी।
नवयुवती से फँसे जाय कहीं, कहूं हक़ीक़त क्या बहनी ॥
रोग अग्नि ज्वालादिक देके, गहा दई कर में टहनी।
ले कटार लज्जा के वश हो मरूं हाय मैं तन मारी ॥सा०५॥

हाय हाय कर कहे छठी यों, मरियो मेरे माई बाप।
भार में देखो डारि दई मैं, अलग भये धन लेकर आप ॥
कुछ पीछे सौ वर्ष के बालम, रहें सदा कफ खांसी ताप।
घड़ी पलक में रांड बनाव, निशिदिन मोकूं पश्चाताप ॥
कहा करूं हा! मैं मदमाती, त्याग देऊं इज़्ज़त प्यारी ॥सा०६॥

कहे सातवीं ब्याह भयो कब, कैसे थे मेरे भरतार।
सुना करूं मैं मात पिता से, रांड भई छूटा घर बार ॥
त्राहि त्राहि मैं किस विधि रोकूं उमड़ रही है यौवन धार।
धिक २ मेरो या जग जीवन, उठा लेहु अब तो करतार ॥
नाश जाय इन हत्यारन को बना दीन्ह मोहि हत्यारी ॥सा०७॥

दीनानाथ सुध बेग लीजिये, हम अबला चिल्लाती हैं।
या तो रक्षा करो नहीं तो, उठा लेहु दुख पाती हैं ॥
नयन लगे दुख हरो नाथ, हम सब तुमकोही ध्याती हैं।
देर न हो विशेष कर तुमको, ध्यान बीच हम लाती हैं ॥
ऐसी शिक्षा देह नरों को बन जावें तिय हितकारी ॥सा०८॥

भजन ४००

दो०-विधवा नारिन के जहां, धर्म कहें तेहि योग।
बहुत बताये भी कहां, आपतधर्म नियोग ॥
तापर पोप समाज जो, नूतन वचन बनाय।
ढांपन चाहत उन्हीं से, रजकहिं चन्द्र छिपाय ॥

जो आपद्धर्म बताया, उस पर हम तुम करें विचार ॥ टेक ॥

अहल्या द्रौपदी तारा, कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं, महापातक नाशनम् ॥

मन्दोदरी द्रौपदी तारा, कुन्ती और अहल्या दारा।
सुमिरे नित्य होय निस्तारा, पातक देवे टार ॥ जो० ॥

इन में की मन्दोदरी नारी, रही विभीषण के घर प्यारी।
पांच पती में रही बिचारी, एक द्रौपदी नार ॥ जो० ॥

रामचन्द्र जब मारा बाली, सो नारी सुग्रीव सँभाला।
तारा नाम कहाने वाली, किया नियोग प्रचार ॥ जो० ॥
वीर्य दान कुन्ती ने लीना, तीन देवतन से सँग कीना।

पातक यौंहीं नाश कर दीना, भारत हेतु विचार ॥ जो० ॥

नाम अहल्या जिसका आया, इन्द्रादिक सँग गमन बताया।
फिर पीछे कन्या ठहराया, धन धन बुद्धि तुम्हार ॥ जो० ॥

दिव्या देवी थी एक नारी, इकिकस पति की भई पियारी।
देखो पद्मपुराण मँझारी, फिर कैसी तकरार ॥ जो० ॥

एक नारि ग्यारह भरतारा ऐसा भजन बनाकर सारा।
अब तक भी वह नहीं सँभारा, अब तो देहु बिसार ॥ जो० ॥

एक पुरुष सँग एकही नारी, इससे अधिक न कहीं उचारी।
आर्य सभा समझाने हारी, समभाव कर प्यार ॥ जो० ॥

न्याय तुला पर तौलो प्यारा, हठधर्मी से करो किनारा।
पाठक कहे ये हितू तुम्हारा, तजो असत् व्यवहार ॥ जो० ॥

भजन ४०१

मेरे प्यारे मित्रो ! विधवा विवाह रचाना।

आत्मघात अरु बदनामी से इज्ज़त चहिये बचाना ॥
ब्राह्मण संग ब्राह्मणी ब्याहो, क्षत्री अरु क्षत्राणी मिलाओ।
वैश्य और वैश्यानी लाओ शूद्र और शूद्रानी सुन्दर।
ऐसे जोड़े मिलाना भाइयो ॥ वि० १ ॥

छै ही वर्ष की आयू माहीं, ब्याह भयो गौना भयो नाहीं।
कौन कहे वह कन्या ब्याही, पति गये परलोक उसे।
क्यों न कन्या पदवी दिलाना ॥ वि० २ ॥

जैसे एक कागज़ लिखवाया, उसे रजिस्ट्री जाय कराया।
नाजायज मुंसिफ ने पाया, लेन देन नहीं हुआ था।
उस को समझो चतुर सुजाना ॥ वि० ३ ॥

कितनी स्वतन्त्र आयु खोतीहैं, कितनी आत्महत्या होतीहैं।
कितनी हा ! प्रति घर रोती हैं, महा अनर्थ को देख के।
पाठक तुम को पड़ा जगाना ॥ वि० ४ ॥

भजन ४०२

विधवा कह रहीं पुकार के, मेरा दुश्मन हुआ ज़माना।
प्रथम तो मेरा जननाही किसी को न भाया।
मेरे मा बापों ने पुत्र को होना चाहा ॥
हुआ रंज बहुत गर पुत्री हुई सुन पाया।
पर खैर करी जो मुझे नहीं मरवाया ॥

कितनी मेरी संग सहेली, नहीं मां की गोद में खेली।
से घुट २ चलीं अकेली, सुन ईश्वर सब के बेली ॥
ह हुये घोर अन्याय, गले घुटवाये, दया नहीं लाये, चले
नियम सरकार के, जो मारे होय जेलखाना ॥ मेरा० १

मुझे डरे परे कर पांच वर्ष तक पाला।
बच्चों के खेल में समय मेरा सब घाला ॥
गुड़ियों के विवाह का संस्कार यह डाला।
कर दिया बन्द विद्या पढ़ने का ताला ॥

ब्राह्मण और नाई बुलाये, बर देखन को भिजवाये।
जहां घी और बूरे उड़ाये, झट वहीं तिलक कर आये॥
बूढ़े या बच्चे सजन, मिली नहीं लगन, हुये फिरें मगन।
सभी घर बार के, जल्दी से विवाह रचाना॥ मेरा० २॥

पत्रा पांडे ने आकर लगन सुझादी।
कह मीन मेष दोनों की राशि मिलदी॥
सबनेजुड़ मिल यही कहा जल्द करो शादी।
करगुड़ियों कासा खेल में वाल विव्हादी॥

झूलना।

कुछ दिन में खबर ससुराल से जब यह आई।
मरगये पति सिर के सुहाग सुखदाई॥
मैं खेल रही थी मां ने लिया बुलाई।
लगीं कहने बेटी फूटगया तेरा कर्म है॥ १॥

रोते २ हाथों की चुड़ियां तोड़ी।
पैरों में से काढ़ी बिछुओं की जोड़ी॥
मेरे माथे पर बिन्दी थी वह भी फोड़ा।
हाय मैंने ऐसा कौन किया कुकर्म है॥ २॥

अब सोचो तो सब भाई, कहां घुसड़ गई पंडिताई।
यह कैसी लगन सुझाई, जो विधवा कर बिठलाई॥
सब कहें फूट गया भाग, रहा नसुहाग, गई लग आग।
सब शृंगार उतार के, दे दिया फ़क़ीरी बाना॥ मेरा० ३

पर जब तो मेरी उमर बहुत थी बाली।
जो खेल कूद में मां बापों ने टाली॥
पर अब तो आने लगे फूल और डाली।
जभी छोड़ चला मैं करूं हाय! क्या आली॥

छंद।

कुछ तो कहो मैं क्या करूं जाता रहा सरताज है।
मेरे जी में थी हूँगी सती नहीं होने देता राज है॥
मां बाप से कैसे कहूँ मुझे कहते आवे लाज है।
मैं आप से गई जगत से गई इसका कौन इलाज है॥
अब क्या करूं जाऊं कहां रो २ पड़ी आवाज़ है।
किससे कहूँ कोई ना सुने बिगड़ा मेरा सब काज है॥
मैं काम अग्नि से जरूं, जी में आये मरूं, ख़ुदकुशी करूं,
पुलिस से डरूं। बस बैठ रहूं मन मार के, था इस से
शुभ मरजाना॥ मे० ४॥

कुछ तो मेरा इन्साफ करो अब भाई।
क्या आर्यावर्त में सभी हुये अन्याई॥
अब करो दया की दृष्टि बहुत दुख पाई।
मैं कैसे काटूं उमर रहा नहीं जाई॥

छन्द।

दुनिया के सुख भोगें वही जिनका जिये भर्त्तार है।
मेरा जन्म वृथा ही जारहा जानी नहीं कुछ सार है॥

मन की विथा किस से कहूं मतलब का सब संसार है।
मैं रात दिन तड़पूं पड़ी जीना हुआ दुशवार है॥
जब पुरुष की नारी मरे विवाह दूसरा तैयार है।
पर बेखता विधवा विचारी को नहीं अधिकार है॥
अब तो यह कुरीति निकालो, बेखता न मारे डालो।
वेदों की आज्ञा पालो, मेरा जाता धर्म बचालो॥
मत बासुदेव अब डरो, पुनर्विवाह करो, इनके दुख हरो।
देखो स्मृति विचार के, सब ऋषि मुनियों ने माना॥ म०५॥

भजन ४०३

बहे नयन जलधार देख बाल विधवन को।
हाय कैसी चिट्ठी आई, चेचक में मरे जमाई।
हिये में लगे कटार॥ देख० १॥
मां बाप भाई रोते हैं, आंसू से मुख धोते हैं।
बेटी क्या जाने सार॥ देख० २॥
झट मां ने सुता बुलाई, लिया गोद उसे बिठलाई।
फोड़ी चुरियों की लार॥ देख० ३॥
अनवट बिछुवे नथ बाली, सब रो रो २ निकाली।
निकाला गले से हार॥ देख० ४॥
सिर पीट मात रोती है, पर कन्या खुश होती है।
मांग गुड़ियों की पिटार॥ देख० ५॥

सिर का शृंगार उतारा, और गीला वस्त्र डाला।
बनादी विधवा नार॥ देख० ६॥
मुझे बालपन में ब्याहा, सारा सुहाग हुआ स्वाहा।
नहीं देखा भर्त्तार॥ देख० ७॥
कहे ऊधोराम समझाई, बनो वेदों के अनुयाई।
करो फिर से संस्कार॥ देख० ८॥

दादरा ४०४

खड़ी रोवे एक विधवा बिचारी रे।
हाय! नाश जइयो काशीनाथ का, गर्दन पै धर गया आरीरे॥
होतेही पैदा करदें सगाई, फिर ब्याह की तैयारी रे॥ खड़ी०॥
फेरोंसे पीछे प्रीतम को लेगई, वो माताकी बीमारीरे॥ ख०॥
चढ़ी जवानी अब कैसे काटूं, जब देखूं दुनियादारीरे॥ ख०॥
हाय बैरी हुआ है बाप हमारा, दुश्मन हुई महतारी रे॥ ख०॥
अपने विवाहतो करतेहैं चारश्हम करलेंतो जुर्मभारीरे॥ ख०॥
छिपश्हम पापलाखों कमावें, लाखों जान जांय मारी रे॥ ख०॥
कहेतेजसिंह तुमअबभी तो सोचो, क्योंहुए मूर्खअनारीरे॥ ख०॥

दादरा ४०५

उन्हें मुझपर तरस नहीं आयारे।
सात बरस की मैं साठ के बालम, कैसा ये जोड़ मिलायारे॥
ले करके नक़दी पापी पिता ने, कुंयें में मुझको गिरायारे॥ उ०॥

सह २ के मरियो वह पंडित पुनीता, जिसन लगन वह सुभा-
यारे ॥ उ० ॥ कीड़े पड़ें उस मिस्सर के तनमें, जिसने विवाह
यह करायारे ॥ उन्हें० ॥ काटूंगी क्यों कर उमर का रँडापा,
यह न उन्होंने बतायारे ॥ उन्हें० ॥ लालच के बस हो इन सब
ने ज़ालिम, कैसा पाप कमायारे ॥ उन्हें० ॥

ग़ज़ल ४०६

हम से शौहर की जुदाई अब सही जाती नहीं।
चैन दिन को रातको आंखों में नींद आती नहीं ॥
ऐसे दुष्टों का बुरा हो ब्याह बचपन में करें।
विधि मिलाते पंडितों को कुछ समझ आती नहीं ॥
रांड होकर उम्र भर हम दुःख सहती ही रहें।
तब भी अंधों के हृदय में कुछ शरम आती नहीं ॥
पति के जीते औरतों का दुःख सुख पूछें सभी।
साथ छोड़ा जब सनम ने फिर कोई साथी नहीं ॥
हाल दिल किससे कहें अपना सुनायें किसको ग़म।
है शरम की बात औरोंसे कही जाती नहीं ॥
देखकर हमपर मुसीबत कुछ यतन करते नहीं।
वे अधर्मी पापियों! तुम को दया आती नहीं ॥
सोच लो अपने ही दिलमें जो मुसीबत हम पे है।
काम की पीड़ा ये तुम से भी सही जाती नहीं ॥
करते हो दो चार शादी और भी रंडी से प्यार।

क्या खता हम से हुई तुम को दया आती नहीं ॥
रस्म तोड़ो बचपने के ब्याह की सब सज्जनों।
श्रीराम भारत की भलाई और दिखलाती नहीं ॥

ग़ज़ल ४०७

तड़पती हैं पड़ी बेवा ज़रा इस ग़म पै दिल दीजै।
है छोड़ा साथ खाविंदने. रहिम कुछ आपही कीजै ॥
किया वादा था स्वामी ने, न पूरा कर चले कुछ भी।
छुटी मँझधार में किश्ती, पकड़ कर पारही कीजै ॥
नहीं माता पिता साथी, न साथी कोई ससुरारी।
तरस खाकर ज़रा इनपर, यही तदबीर अब कीजै ॥
रचाकर ब्याह फिर इनका, रहिम दिल होके सब सज्जन।
रिहाई ग़म से कर इनकी, यही दुनिया में यश लीजै ॥
कहां जावें कहें किस से, सुनेगा कौन अब इनकी।
हितैषी हो जो भारत के, तो इनका साथ ही दीजै ॥
न भूलें उमर भर नेकी, जो होगी साथ में इनके।
उठाओ ब्याह का बीड़ा, न कुछ अब देरही कीजै ॥
मुसीबत देख बेवों पर तरस श्रीराम आता है।
सो अब मिलकर सभी सज्जन, मुसीबत से रिहा कीजै।

———

❋ ११ अबला-विनय ❋

गजल ४०८

विद्या का हम सबों को पिता दान दीजिये।
हमारी विनय ज़रासी है यह ध्यान दीजिये॥
पशुवत् हमारी आज कल जो होरही गती।
किसका है यह नतीजा इसे जान लीजिये॥
शिक्षा में अपने पुत्रों के हों इस क़दर यतन।
क्या हम नहीं हैं बेटी ज़रा कान कीजिये॥
सत् शास्त्र और वेदों में देखो है क्या लिखा।
समदृष्टि राख सब का पिता मान कीजिये॥
सोना न रूपा मोती न कुछ मांगती हैं हम।
ज़ेवर हमें विद्याही फ़क़त दान दीजिये॥
लीलावती सुमित्रा सी बनना है क्या कठिन।
सम्भव है सभी इससे हां अनुमान कीजिये॥
सुलभा ने जनक की जो परीक्षा वेदांत ली।
कारण वह कौन था अनुसन्धान कीजिये॥
ज्ञानी पती अपने को सुड़ैला ने जो किया।
बस विद्याही की महिमा थी यह जान लीजिये॥
कन्यों की पाठशाला यहां ठौर ठौर हो।
उपकार हो 'सुधार हो प्रमाण कीजिये॥
पढ़ने से ज्ञात होता है सीता के ज्ञान का।

विद्यावती बनाओ हमें ज्ञान दीजिये॥
स्वीकार निर्बलों की सदा से हुई पुकार।
विद्या की देदो औषधि बलवान कीजिये॥

भजन ४०९

दोहा–जिस घर में होता नहीं, नारिन का सत्कार।
नरक तुल्य वह भवन है, निष्फल सब व्यवहार॥
स्त्री-शिक्षा का न हो, जबतक मित्र प्रचार॥
करो हज़ारों यत्न पर, हरगिज़ हो न सुधार॥
टेक—मित्रों कैसे हो कल्याण, जब तक पुत्री नहीं पढ़ाओ।
ईश्वर ने दिया अधिकार बराबर सब को।
जल वायु अग्नि आहार बराबर सब को॥
ऋतु सर्दी गर्मी बाहार बराबर सब को।
ऐसे ही विद्या भण्डार बराबर सब को॥
जितने ही नर नारी हैं, सब विद्या अधिकारी।
जब प्रभू न्यायकारी हैं, सब केही हितकारी हैं॥
पर तुम ने किया अन्याय, शूद्र बतलाय, शोक है हाय,
बनाया उनको पशू समान॥ जब तक० १॥
गाड़ी के तुल्य सबने यह गृहस्थ बताया।
स्त्री पुरुषों को दोनों धुरे ठहराया॥
बस दोनों धुरों को जिसने सम बनवाया।
इस गृहस्थी रूप गाड़ी को उसने चलाया॥

जहां स्त्रियें आदर पावें, वह भवन स्वर्ग बन जावें।
सत्‌विद्या पढ़ें पढ़ावें, सब साधन सुख वहां आवें॥
हों धुरे बराबर जहां, सुक्ख हो तहां, किया है बयां,
शास्त्र मनु वेदों का प्रमाण॥ जब तक० २॥

हा! एक समय वह था कि देश की नारी।
थीं पढ़ी लिखी विद्वान पण्डिता सारी॥
देखो उपनिषद उठा कर ज़रा विचारी।
सुलभा आदि ने शास्त्रार्थ किये भारी॥

छन्द

दमयन्ती सीता गार्गी लीलावती विद्याधरी।
विद्योत्तमा मंदालसा थीं शास्त्रशिक्षा से भरी॥
कैसी विदुषी स्त्रियें भारत की भूषण होगईं।
धर्मव्रत छोड़ा नहीं गो जान अपनी खोगईं॥
इस कारण देश हमारा, था उन्नति करने हारा।
सब विद्या का भंडारा, गुरु कह कर सब ने पुकारा॥
वही आर्य्यावर्त्त अब देश, भोग रहा कलेश, धर्म नहीं शेष,
क्योंकि नहीं स्त्रियों का सन्मान॥ जब तक० ३॥

यदि माता पढ़ी होतीं तो हमको पढ़ातीं।
बचपन में हमें विद्या भूषण पहनातीं॥
ले गर्भाधान से सब संस्कार करातीं।
यज्ञोपवीत कर गुरुकुल में भिजवातीं॥

यह मातृमान कहलावें. शिक्षित सन्तान बनावें।
जो गुण माता में पावें, वही पुत्र पुत्री में आवें॥
जो माता हो विद्वान्, सिखावे ज्ञान, करो तो ध्यान, तभी
होवे उत्तम सन्तान॥ जब तक० ४॥

जो बीड़ा देश सुधार का मित्र उठाओ।
स्त्री शिक्षा का पहिले यत्न कराओ॥
यह रक्खो याद जबतक नहीं पुत्री पढ़ाओ।
तो देवासुर संग्राम घरों में पाओ॥

झूलना।

दिन भर में काम कर पुरुष थके घर आवें।
घर आते ही सासु बहू में युद्ध हुआ पावें॥
यह दशा देखकर खड़े ही भस्म हो जावें।
बस मित्रो! बिन शिक्षा के यह तकरार है॥
यदि चाहते मित्रो! सुधरे दशा हमारी।
तो वेद मनू की कर दो आज्ञा जारी॥
मनु कहते हैं जिस घर में पुजती है नारी।
वही घर सारे सुखों का भण्डार है॥
बिन स्त्री शिक्षा भाई, नहीं किसी ने उन्नति पाई।
कहे वासुदेव समझाई, सृष्टी क्रम रहा बतलाई॥
यही विनय करूँ कर जोड़, कीजिये गौर, पुत्रियों की ओर,
बढ़ाओ अबलाओं का मान॥ जब तक० ५॥

भजन ४१०

तुम सुनो पुकार कन्याओं की मिल कर।
जब होवें पुत्र तुम्हारे, बजें हर्ष के नित्य नक्कारे।
मना के जय जय कार ॥ १ ॥
यदि सुता हुई सुन पाओ, तब शोकातुर हो जाओ।
न कुछ भी करो विचार ॥ २ ॥
चाहो क्यों बुरा हमारा, है भाव मिटाओ सारा।
हुआ है भारी विगार ॥ ३ ॥
हम से सब चीज़ छुपाओ, मोटे कपड़े पहनाओ।
पुनि २ है धिक्कार ॥ ४ ॥
करो फ़र्ज़ सुता मर जावे, तो पुत्र कहां से आवे।
ज़रा तो करो विचार ॥ ५ ॥
हुआ दुर्लभ जग में जीना, विद्याधन हम से छीना।
कहा नहिं है अधिकार ॥ ६ ॥
जब तक नहीं हमें पढ़ाओ, पूरा सुख तुम नहीं पाओ।
भरोगे दुःख अपार ॥ ७ ॥
यह वासुदेव समझावे, क्यों नहीं ध्यान में आवे।
सुताओं का उपकार ॥ ८ ॥

गजल ४११

कन्या विचारियों पे जो करते दया नहीं।
दुश्मन किसी जनम के हैं माता पिता नहीं ॥ १ ॥

जो ज़ुल्म लड़कियों पे यां होते हैं आज कल।
वहशी सी क़ौम भी रखती रवा नहीं ॥ २ ॥
पैदा अगर हो लड़का तो खुशियां मनायें सब।
लड़की अगर हो शोक की कुछ इन्तहा नहीं ॥ ३ ॥
पैदा ही होते घुटते हैं सदहा के हा ! गले।
सदहा को मर्ज़ में कोई मिलती दवा नहीं ॥ ४ ॥
लड़कों के लाड़ प्यार में करदें हज़ार खर्च।
पर लड़कियों के वास्ते घर में टका नहीं ॥ ५ ॥
इन देवियों को समझा धन है पराये घर का।
अफ़सोस इस समझ पै क्यों पत्थर पड़ा नहीं ॥ ६ ॥
बकरी व भेड़ की तरह बिकती हैं सैकड़ों।
शिकवा न उनको बाप से मा का गिला नहीं ॥ ७ ॥
ऐसी उमर में हो गईं बेवा हजारहां।
पत्नी पती के शब्द से जो आशना नहीं ॥ ८ ॥
बचपन की शादियों की बदौलत हा ! बीस लाख।
बच्ची हैं रांड जिनको खबर भी ज़रा नहीं ॥ ९ ॥
बेकस बुझायें किस तरह कहिये विरह की आग।
आंखों में आंसुओं का भी क़तरा रहा नहीं ॥ १० ॥
चक्की व चर्खा दो ही हैं सुनने को हाल दिल।
ग़मख्वार हाय इनका कोई तीसरा नहीं ॥ ११ ॥
आहों से इनकी हिल गई भारत की सरज़मीन।
भारत निवासियों का मगर दिल हिला नहीं ॥ १२ ॥

इन बेकसों के शाप से भारत पै इन दिनों।
कहिये? वह कौन सी है जो आई बला नहीं ॥१३॥
ज़ालिम जो बेज़बानों पै ज़ोरो जफ़ा करें।
रख याद उनका भी कभी होता भला नहीं ॥१४॥

गजल ४१२

वाक़ई निसवान का अय पुरुषों! सताना मना है।
ज़ुल्म करना उप पै उनका दिल दुखाना मना है॥
रंडियों से दिल को अय पुरुषो लगाना मना है।
पत्नियों से अपनी आंखों का चुराना मना है॥
कारख़ाने खोलिये या फिर तिजारत कीजिये।
लड़कियों को बेंच कर धन का कमाना मना है॥
किस लिये फिर मांस को अपनी बनाई है गिज़ा।
जब कि वेदों में लिखा है मांस खाना मना है॥
तन्दुरुस्ती के लिये अच्छा है गंगाजल से ग़ुस्ल।
मोक्ष इच्छा के लिये गंगा नहाना मना है॥
अच्छे कामों में लगाना आर्य धन को मगर।
नाच में और रंग में धन का लुटाना मना है॥

गजल ४१३

पढ़ना किस का वेद भी हम को सुनाना मना है।
दीनों दुनिया की हमें विद्या सिखाना मना है॥
किस की आज़ादी कहां के और हक़्क़े हमसरी।

बात कैसी हम को तो लब तक हिलाना मना है॥
हाय! यह जोशिशबाब और उस पै ये वैधव का रोग।
सर को ख़म रखती हैं गर्दन का उठना मना है॥
आप तो दिन भर मटरगश्ती करें बाये नसीब।
और हमको ताज़ी वायु का भी खाना मना है॥
आप तो शादी पै शादी अपनी करलें आर्यो।
लेकिन हम को दूसरी शादी कराना मना है॥

भजन ४१४

यदि चाहो कल्याण, करो पुत्री सन्मान, दो विद्या का दान, तुम हे बन्धु, हे बन्धु, हे बन्धु॥१॥ सम है अधिकार, यह नियम विस्वांधार, पढ़ें विद्या नर नार, सब हे बन्धु॥२॥ तुमने किया अन्याय, इन्हें शूद्रा बताय, दिया पढ़ना छुड़ाय, हा! हे बन्धु०॥३॥ बिना विद्या के भाई, नर पशु कहाई, सब सुनियो चितलाई, अब हे बन्धु०॥४॥ द्रौपदी सीता महान, भई कैसी विद्वान, थीं गुनों की खान, सब हे बन्धु॥५॥ देखो सभा मँझार, मण्डन मिश्र की नार, शंकरा चार्य पछार, दिया, हे बन्धु०॥६॥ कहै तुलसी हरबार, सुनिये विनय हमार; पुत्रीशाला करो तैयार, अब हे बन्धु०॥७॥

भजन ४१५

कन्या पढ़ें जासों खोलो पाठशाला॥ टेक॥
सुन्दर गुरुकुल कई खुले हैं, पहला गुजरांवाला।

इन बेकसों के शाप से भारत पै इन दिनों ।
कहिये ? वह कौन सी है जो आई बला नहीं ॥१३॥
ज़ालिम जो बेज़बानों पै ज़ोरो जफ़ा करें ।
रख याद उनका भी कभी होता भला नहीं ॥१४॥

गजल ४१२

वाक़ई निसवान का अय पुरुषों ! सताना मना है ।
ज़ुल्म करना उप पै उनका दिल दुखाना मना है ॥
रंडियों से दिल को अय पुरुषो लगाना मना है ।
पत्नियों से अपनी आंखों का चुराना मना है ॥
कारखाने खोलिये या फिर तिजारत कीजिये ।
लड़कियों को बेच कर धन का कमाना मना है ॥
किस लिये फिर मांस को अपनी बनाई है ग़िज़ा ।
जब कि वेदों में लिखा है मांस खाना मना है ॥
तन्दुरुस्ती के लिये अच्छा है गंगाजल से ग़ुस्ल ।
मोक्ष इच्छा के लिये गंगा नहाना मना है ॥
अच्छे कामों में लगाना आर्य धन को मगर ।
नाच में और रंग में धन का लुटाना मना है ॥

गजल ४१३

पढ़ना किस का वेद भी हम को सुनाना मना है ।
दीनों दुनिया की हमें विद्या सिखाना मना है ॥
किस की आज़ादी कहां के और हक के हमसरी ।

बात कैसी हम को तो लब तक हिलाना मना है ॥
हाय ! यह जोशेशबाब और उस पै ये वैधव का रोग ।
सर को ख़म रखती हैं गर्दन का उठना मना है ॥
आप तो दिन भर मटरगश्ती करें बाये नसीब ।
और हमको ताज़ी वायु का भी खाना मना है ॥
आप तो शादी पै शादी अपनी करलें आर्यों ।
लेकिन हम को दूसरी शादी कराना मना है ॥

भजन ४१४

यदि चाहो कल्याण, करो पुत्री सन्मान, दो विद्या का दान, तुम हे बन्धु, हे बन्धु, हे बन्धु ॥ १ ॥ सम है अधिकार, यह नियम बिस्वाधार, पढ़ें विद्या नर नार, सब हे बन्धु ॥ २ ॥ तुमने किया अन्याय, इन्हें शूद्रा बताय, दिया पढ़ना छुड़ाय, हा ! हे बन्धु० ॥ ३ ॥ बिना विद्या के भाई, नर पशु कहाई, सब सुनियों चितलाई, अब हे बन्धु० ॥ ४ ॥ द्रौपदी सीता महान, भई कैसी विद्वान, थीं गुनों की खान, सब हे बन्धु ॥ ५ ॥ देखो सभा मँझार, मण्डन मिश्र की नार, शंकरा चार्य पछार, दिया, हे बन्धु० ॥ ६ ॥ कहे तुलसी हरबार, सुनिये बिनय हमार; पुत्रीशाला करो तैयार, अब हे बन्धु० ॥ ७ ॥

भजन ४१५

कन्या पढ़ें जासों खोलो पाठशाला ॥ टेक ॥
सुन्दर गुरुकुल कई खुले हैं, पर (?)ला गुजरांवाला ।

दी यह सिकन्दराबाद कांगड़ी, चौथा बदायूं में भी तुमने ढंग डाला ॥ कन्या० १ ॥

विद्यावान पूर्ण ब्रह्मचारिन, शीघ्र बनाओ बाला।
पढ़ पढ़ाय कर दूजा आश्रम, जिस से बनेगा मित्रो पूरे सुख वाला ॥ कन्या० २ ॥

नाड़ी गण अरु वर्ण यथा विधि, मिले मित्र तेहि काला।
फिर स्वभाव गुण कर्म देखके वर कन्या का सम्बन्ध हो निराला ॥ कन्या० ३ ॥

बनें गार्गी सुलभा जैसी, यह तत्वज्ञ विशाला।
पाठक को तब हो प्रसन्नता, जीतें सभायें काट डारें भ्रम जाला ॥ कन्या ० ४ ॥

भजन ४१६

नर पैदा हों ऋषि मुनि नारियों से।
गौतम ऋषि जिसने न्याय बनाया, पातंजलि जिसने योग
दुग्ध पिये महतारियों से ॥ नर० ॥
कपिलदेव जी सांख्य के कर्त्ता, जैमिनिजी मीमांसा रच यता।
पाई शिक्षा महतारियों से ॥ नर० ॥
हुये कणाद वैशेषिक वारे, व्यास बेदान्त के रचने हारे।
पाले माताओं ने झाड़ियों से ॥ नर० ॥

मित्रो तुम इनका आदर सत्कार करो, जो चाहैं सो लाके सामने धरो। कड़वा न बोलो विचारियों से ॥ नर० ॥

सुन्दर उपदेश दे कुसंग छुड़ाओ, विद्या में जप तप में लगाओ। रक्खो सम्बन्ध सत्कारियों से ॥ नर० ॥

पाठक जो अपना चाहो भला तुम मातायें शिक्षक अपनी बनाओ तुम। बच जाय भ्रमकी बीमारियों से ॥ नर० ॥

* १२ स्त्री-शिक्षा *

ग़ज़ल ४१७

उठो बहनो! पढ़ो विद्या, यही शिक्षा हमारी है।
बिना विद्या के पढ़ने से बुरी हालत तुम्हारी है ॥ १ ॥

तुम्हारा नाम शूद्रों में हुआ शामिल है ऐ बहनो।
बनी हो पैर की जूती यही दुख हमको भारी है ॥ २ ॥

तुम्हारा मान और इज्ज़त नहीं अब कुछ रहा बाक़ी।
सबब इसका यही है री अविद्या तुमको प्यारी है ॥ ३ ॥

तुम्हीं को कहते थे लक्ष्मी तुम्हाराही नाम था देवी।
तुम्हारे ही मूर्ख होने से हुआ भारत दुखारी है ॥ ४ ॥

यही वसुदेवकी विनती, न जबतक तुम पढ़ो विद्या।
तभी तक यह बुरी हालत, हमारी और तुम्हारी है ॥ ५ ॥

भजन ४१८

दोहा

कौशल्या माता भई, जब में परम अनूप।
तासु पुत्र श्रीरामजू, भये आर्य कुल भूप ॥ १ ॥
सीता सुमति सुशीलता, सब जग में विख्यात।
जिहि चरित्र उपमा लिखत, कविजन मन सकुचात ॥२॥
देवहुती विद्याधरी, अनुसूया गुण गेह।
पति व्रत धर्म सिखावती, विद्या सहित सनेह ॥ ३ ॥
नाम गार्गी जग विदित, अति विरक्त संसार।
ब्रह्मचारिणी परम दृढ़, विद्या सिन्धु अपार ॥ ४ ॥
सभा बीच गर्जत रहीं, वेद शास्त्र सुख द्वार।
मानी पण्डित जय किये, रहे सभी मन मार ॥ ५ ॥
ज्ञानवती मन्दालसा, परम शील सन्तोष।
विद्या बुद्धि सुसभ्यता, धर्म धैर्य धन कोष ॥ ६ ॥
गान्धारी शुभ कुलवती, पतिव्रत धर्मागार।
सुख में सुख दुख में दुखी, रही स्वपति अनुसार ॥ ७ ॥
भीपटरानी रुक्मिणी, पतिव्रत धर्म निकेत।
तन मन धन अर्पण कियो, पती प्रेम के हेत ॥ ८ ॥
पार्वती शुभ गुणवती, पती प्रेम आधार।
जिहि गुण सुन शिक्षा लहैं, सब कुलवन्ती नार ॥ ६ ॥

विद्यानिधि लीलावती, भारत जीवन प्राण।
तासु रचित पुस्तक सुभग, मानत सभी प्रमाण ॥१०॥
दमयन्ती के चरित सुन, बहत नयन से नीर।
जिहि न होय रोमांच तन, को जग में अस धीर ॥११॥
क्षत्रिय सुता शकुन्तला, सत्य शील सुविवेक।
लाखन संकट बन सहे, एक धर्म की टेक ॥१२॥
पतिव्रत कोटिन भई, गिनै सबन अस कौन।
जिहि चरित सुन होत हैं, सभी कवीश्वर मौन ॥१३॥
पहिले बाला जो भई, सब विद्या की खानि।
हाय! आज अक्षर पढ़त, अबला करत गलानि ॥१४॥
एक दिवस भारत हतो, सुख सम्पति भरपूर।
भई नारि विद्या रहित, कीनो चकनाचूर ॥१५॥

दादरा ४१६

केसी शिक्षा दें माता हमारी।
बचपन से जहँ देतीं सुन्दर सिखावन।

सोता पावें, तकिया लगावें, मां सोवे यों धोखा सिखावें। हा! कैसी० १ ॥ जहँ कहती बेटा पढ़ावेंगे तुमको! क्यों? बहँ यों सुनावें, रंडी बुलावें, नन्हीं बहू से ब्याह करावें, हा। कैसी०२॥ महात्माओं के जीवन सुनाती जहँ, वहां कहानी चुड़ैल मसानी सुना किये डरपोक अज्ञानी। हा! कैसी० ३ ॥ जहां कहती

देखो बेटा चोरी न कीजो। बच्चा किसी का उठा लाये पैसा, उस का मंगा दें वर्फ़ी पेड़ा। हा ! कैसी० ४॥ क्यों ना ? पढ़ाती हो, तो दें ये उत्तर जो जीवेगा, तो पढ़ लेगा उमर पड़ी है क्या है चिन्ता। हा ! कैसी० ५॥ पाठक कहे बहिनो ! अब भी समझ लो. यही तुम्हारे, प्राण अधारे, सुधर सके हैं। जबलों बारे। हा ! कैसी० ६॥

भजन ४२०

सुख नहिं मिलना यार, मूर्ख नारि से हर्गिज़।
मुंशी मास्टर और पण्डित, घर में हो जायँ सब खण्डित।
जब होती तक़रार ॥ मू० १॥
अंगरेजी अर्ज़ी वाले, सब फिर किल दांत कराले।
मिले जब मूर्खा नार ॥ मू० २॥
जो एम. ए. की डिगरी पाते, खुद उनकी हँसी उड़ाते।
घर में तिरिया निपट गँवार ॥ मू० ३॥
बिरिंग वाटर मांगा आई, बासी रोटी ले आई।
हुआ अनुचित व्यवहार ॥ मू० ४॥
बाहर चलती पण्डिताई, घर में आ सब रिल जाई।
तिरिया जब दे ललकार ॥ मू० ५॥
ये सारे दुःख उठाते, बुरा त्रियों का पढ़ाना बताते।
कहां दई बुद्धि विसार ॥ मू० ६॥

इस दुख से जो बचना चाहो, कन्याओं को जल्दी पढ़ाओ।
करो विद्या विस्तार ॥ मू० ७॥

भजन ४२१

आलसी नार।

फूहर आई घर में नार, धन्य भाग तेरे भर्तार।
सूद साद रक्खे नहीं घरकी आलों में है पड़ी अँदरकी ॥
एक ताक में रुपया धरा, दूजे में है गहना पड़ा।
दो दो दिन में लखती सूनी, घर में ढरी लगी है दूनी ॥
चांवल दाल बँधी है पोट, वही पोट, रही भू में लोट।
छपड़े में जो पापड़ धरे, चूहे ले लें भट में पड़े ॥
बिखरे बरतन बिखरी दाल, उघरे पड़े हैं सारे माल।
आंगन बीच में चर्खा खड़ा, धूरे उलटा पीढ़ा पड़ा ॥
हरदम घरके खुले किवाड़, कुत्ते बिल्ली करें बिगाड़।
रोटी टुकड़े जहँ तहँ परे, कौवे उड़ आंगन में गिरे ॥
चून चक्र घर बिगड़ा पड़ा, मालिक देखे दुक २ खड़ा।
जब फूहर ने रोटी करी, आधी कच्ची आधी जरी ॥
निमक पड़ा है बेतादाद, साग दाल कुछ नहीं स्वाद।
जो पूछो लड़ने का हाल, इस में पूरा करे कमाल ॥
ध्यान लगा लड़नेमें सारा, इसी सबब बिनका घर द्वारा।
अच्छा मिला अगर घरवाला, अपना घर उन आप संभाला ॥
जो मिल गये ऊत के ऊत, तो मारन लगे पड़ापड़ जूत।
आया बसन्त यों पाठक कहे, फूहर नारी हरदम दहे ॥

भजन ४२२

सुघड़ नार ।

सुघड़ नार का सुनों हवाल, सभी चीज़ की करे सँभाल ।
लीप पोत घर कर सफ़ाई, चन्दा सी उजियाली छाई ।
जो चीजें उसने मँगवाई ताल जांच घर में लिगवाई ।
हर एक चीज की जगह ठहराई, काम किया वहिं धरआई ।
कुएंड में भी पड़ा है ताला, चाबी गुच्छा कीख में डाला ।
रुपया अलग अलग है जेवर, खाट खड़ी है एक कोने पर ।
चुन कर धोती खूंटी धरे, कपड़े बड़े अरगनी परे ।
बूटे फूल गोखरू जाले, गुळूबन्द बुन्ने दस्ताने ।
उम्दा २ कहे कहानी, बने बहादुर बालक ज्ञानी ।
पिता बचन तुम मानो ऐसे, रामचन्द्र ने माने जैसे ।
बालक याने हों या स्याने उजले रहें वह कहना माने ।
कपड़े धोबी लेजाय लावे, गिन गिनाय सारे लिगवावे ।
लिखे हरएक घरका असबाब, आमद खर्च का अलगहिसाब
जो खुद पै लिखना नहिं आवे, किसी परोसिन से लिखवावे ।
प्रीतम से निज राजी रहे, काम करे जैसे वह कहे ॥
जब बोले तब मीठी बानी, लज्जवन्ती चतुरा गुणखानी ।
पाठक समझो जीवनमूर, होंय दरिद्दर सारे दूर ॥

भजन ४२३

बहनो ! तुम यह गुण धारलो, मन चाहा फल पाओगी ।

बाली उमर में विद्या पढ़ना, घर में नहीं किसी से लड़ना ।
यथा योग प्रिय भाषण करना, कड़वे बचन सहार लो ॥
सब दुख से छुट जाओगी ॥ म० १ ॥

धर्म कमाई से धन जोड़ो, बुरे कर्म से मुखड़ा मोड़ो ।
करना फ़जूल खर्ची छोड़ो घर का खर्च विचार लो ॥
नहीं मूर्खा कहलाओगी ॥ म० २ ॥

घर के कामों में चतुराई, तब बर्त्रों की करो सफ़ाई ।
अब त्रियो ! सुनो कान लगा, गर्भाधान सुधार लो ॥
अति उत्तम सुत जाओगी ॥ म० ३ ॥

सेवा करना सासु ससुर की माता पिता पती देवर की ।
यह आया है परमेश्वर की बिगड़ी दशा सुधार लो ॥
पतिव्रता कहलाओगी ॥ म० ४ ॥

धीरजता धारो हे नारी, ज्यों द्रौपदी सीता ने धारी ।
तेजसिंह कहे सुनो हमारी, भारत नाव उबार लो ॥
जग में यश फैलाओगी ॥ म० ५ ॥

होली ४२४

क्यों बनी हो गँवारी, पढ़ी नहीं विद्या भारी ।
बिन विद्या के पावे न आदर, पुरुष होयँ या नारी ।
विद्या से जो नहिं शोभित हो, समझें हैं उसको अनारी,
सुनो तुम भारत नारी ॥ क्यों० १ ॥

सुख सम्पति जो चाहो जगत् में, रहो पति आज्ञाकारी ।
सासु ससुर अरु ननँद जिठानी, उनकी करो सेवा भारी,
मानो यह सीख हमारी ॥ क्यों० २ ॥

पति आज्ञा जो करे है उलंघन, जानो उन्हें व्यभिचारी ।
ऐसों की संगति जो बैठे हैं, वह भी हों हत्यारी, हों कितनी
ही रूप सँवारी ॥ क्यों० ३ ॥

पहली नारी देखो दुलारी, कैसी थी सीता नारी ।
पतिव्रता कहलाई जगत् में तजकर महल अटारी, चली बन
जनक दुलारी ॥ क्यों० ४ ॥

श्यामसुन्दर कहैं तुम्हारो हितैषी, कीजो शोच बिचारी ।
प्राण जाँय पर धर्म न छोड़ो, दुख हो कितनाही, भारी, मरो
चाहो खाय कटारी ॥ क्यों० ५ ॥

सुहाग ४२५

बहनोरी करलो सच्चा शृगार ।
जिस शृंगार से प्रभु मिल जावें सब का प्राण अधार ।
जिस भूषण में होवे न दूषण, करलो उसी से प्यार ॥ब०१॥
सच्चा भूषण वह है विद्या, लूटे न चोर चकार ।
नहिं वह टूटति नहिं वह घिसती, जिसका लगे न भार ॥ब०२॥
पति के प्रेम की माला पहनो, सेवा समझ लो हार ।
धर्म की चरचा चूड़ी समझो, आर्सी तत्व विचार ॥ब०३॥
पति आज्ञा को नथ एक समझो, भक्ति को कंगन जान ।

ब्याहसे प्रथम हँसलीसो हँसली, शीलको हँसली मान ब० ४ ॥
दया धर्म दो झुमके बना लो, टीका परउपकार ।
लौंग बुलाक है घर की सेवा, गहना यह क़ीमतदार ॥ ब० ५ ॥
होय बिछोवा ना सन्ध्या का, यह बिछुवा दरकार ।
विद्या धरम में कीरति होवे, झांझन की झनकार ॥ ब० ६ ॥
वेदी बन्दना कर स्वामी की, ज्ञान का सुरमा डार ।
मुकुन्द कहे सब सुख से रहोगी, मान करे संसार ॥ ब० ७ ॥

दादरा ४२६

चेतोरी भारत नारी ओ भारत नारी। होगई बड़ी हानि ॥ चे० ॥
विद्या में तन मन देदो, हां तन मन देदो। करे यही कल्याण ॥
विद्या का पढ़ना सीखो, हां पढ़ना सीखो। जिससे हो फिरनाम ॥
कीजो पतिकी सेवा, पतिकी सेवा। यही नियम व्रत दान ॥
कब्रों पै जाना छोड़ो, हां जाना छोड़ो। भ्रष्ट हुई सन्तान ॥
निद्रा से अबतो जागो, हां अबतो जागो। कैसी सोई चादरतान ॥
मूर्खों ने तुमको लूटा, हां तुमको लूटा। नहीं सूझे लाभ हानि ॥
अबभी जो बचना चाहो, हां बचना चाहो। विद्या में दो दान ॥
बहनो! धर्मव्रत धारो, धर्मव्रत धारो। करे मुकुन्द बयान ॥ चे० ॥

भजन ४२७

मेरी प्यारी बहनो सोई हो बड़ी ही गाढ़ी नींद में ॥ बड़ी० ॥
पति की तो सेवा करना, बालकों को शिक्षा देना ।
तुमने तो भुलाया गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

अच्छी २ विद्या पढ़ना, धर्म का तो संग्रह करना।
साराही गँवाया गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

ईश एक सच्चा तुमने, सारी रचना की है जिसने।
उसको भी भुलाया गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

देवता हज़ारों माने, कब्र भूत मुल्ला स्याने।
तुमने स्वप्न देखा गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

क्या बनावे पाठक आगे, अग्निहोत्र आदि त्यागे।
धर्म तो बिसारा गाढ़ी नींद में ॥ मेरी० ॥

भजन ४२८

बिन विद्या नहीं टलेगी बहनो मूरखता जोई।
कोई गुरूकर कंठी पहने, कोई बहुत व्रत लगी रहने।
तुलसा ब्याह किये क्या कहने, गुड्डा रचे कोई ॥ वि० ॥
तेंतिस कोटि देवता पूजे, मथुरा आदि तीर्थ रहे दूजे।
इनको छोड़ ताजिये सूझे, सब इज्ज़त खोई ॥ वि० ॥
मीरा माने सैयद मुल्ला, डोरी गण्ड की हा हुल्ला।
भूत भवानी खुल्लमखुल्ला, कैसे मुक्ति होई ॥ वि० ॥
कुछतो सोचे बहनो! मन में, पति पूजा करलो यौवन में।
पाठक शील रखो निज तन में, पूजो क्या होई ॥ वि० ॥

भजन ४२६

बहनो! है फ़रियाद सुनियो ज़रा हमारी ॥ सुनि० ॥

जब तुम से पढ़ना आवे, जैसे यह नीति सिखावे।
तभी सुधरे औलाद ॥ सुनि० ॥

तुम नहीं व्यवहार को जानो, बरताव नहीं पहचानो।
तभी होता है विवाद ॥ सुनि० ॥

तुम सदा दुखी रहती हो, मालूम है क्यों सहती हो।
अविद्या करे फ़िसाद ॥ सुनि० ॥

विद्या ही दुःख मिटावे, मन माना नर सुख पावे।
करो तन मन से याद ० ॥ सुनि० ॥

भजन ४३०

ख्याल।

अपना पतिव्रत धर्म स्त्री जो जग बीच निभाती है।
रहे सदा आज्ञा में वही सतवन्ती नारि कहाती है ॥
चाहे बुरा गुणहीन पती हो उसको शीश नवाती है।
निर्धन रोगी क्रोधी से वह मन में नाहिं दुख पाती है ॥
यज्ञ नियम व्रत धर्म समझ सेवा में चित्त लगाती है ॥
मन बानी काया से प्रेम पद में वह खुशी मनाती है ॥
अपने पती का ध्यान गैर का सुपने में भी नहीं लाती है।
निस्सन्देह छूट वह दुख से शर्मा सुख को पाती है ॥
टेक-एक पतिव्रत धर्म निबाहलो जो चाहो मुक्तिपद लहना।
कीजे नित्य पती की सेवा, दोनों लोकों में सुख देवा।

सब से उत्तम है यह मेवा, बड़ी रुचि से खायलो।
मत वञ्चित इससे रहना ॥ १ ॥

झूठे सब शृंगार छोड़िये, राग ईर्षा मन से तोड़िये।
विद्या से एक रिश्ता जोड़िये, सारा अंग सजाय लो ॥
है सब से उत्तम गहना ॥ २ ॥

सासु ससुर अरु ननँद जिठानी, भाभी हो चाहे हो देवरानी।
इन से कटु मत बोलो बानी, सब से प्रेम बढ़ायलो ॥
जो कहें करो वही कहना ॥ ३ ॥

रहो पती की आज्ञाकारी, मिलै तुम्हें सुख सम्पति सारी।
आशा पूरण होय तुम्हारी, मन चाहा फल पायलो ॥
शर्मा कहे तुमसे बहना ॥ ४ ॥

दादरा ४३१

पति अपने में राखो ध्यान, बढ़कर धर्म नहीं।

तन भी दीजै मन भी दीजै, अर्पण कीजै प्रान ॥ बढ़० ॥
जो पति की आज्ञा शिर धारो, सुन्दर हो सन्तान ॥ बढ़० ॥
ऋषि मुनि गावैं, वेद बतावैं, सुख हो बे परमान ॥ बढ़० ॥
सम्पति पाओ दुख बिसराओ, पाओ पद निर्वान ॥ बढ़० ॥
संध्या करलो ओ३म् सुमिरिलो, भरलो मनमें ज्ञान ॥ बढ़० ॥
जो पतिकी आज्ञा नहीं मानो, तो हो नरक निदान ॥ बढ़० ॥
सुख की निधि जो चाहो बहनो, मेरा कहा लो मान ॥ बढ़० ॥

भजन ४३२

सीता की ओर निहार लो, जो थीं सतवन्ती नारी ॥
गईं संग में पति के बनको, छोड़ सभी सुख सम्पति धनको।
कष्ट दिया अति अपने तन को, उसका चरित विचार लो ॥
सब छोड़ महल अटारी ॥ जो थीं० १ ॥

रहती थीं जो रंग महल में, रहीं टहलनी जिनकी टहल में।
नंगे पैर गईं पति की गैल में, ऐसा ही व्रत धारलो ॥
जो धारा जनक दुलारी ॥ जो थीं० २ ॥

हुई कान्ती दुगनी सुख की, जिन परवाह करी नहीं दुख की।
सभी लालसा अपने सुख की, पति पै तादश वार लो ॥
रहीं सदा जो आज्ञाकारी ॥ जो थीं० ३ ॥

पति सेवा में चित हित दीजे, आज्ञा भंग कभी नहिं कीजे।
मेरा कहा मान अब लीजे, अवगुण सभी विसार लो ॥
बहनो यह कहे मुरारी ॥ जो थीं० ४ ॥

भजन ४३३

पति को पूजलेरी, है वह असली देव तुम्हारा।
बाल अवस्था मात पिता ने पालन किया तुम्हारा।
यौवन काल पाय पति रक्षक मन में क्यों न बिचारा ॥१॥
पाणिग्रहण समय आपस में क़ौल हुये थे भारी।
उनका कर स्मरण पतिव्रत नियम निभाओ प्यारी ॥२॥

हाय अविद्या वश जीवन को मत कुनिन्द्य ठहराओ ।
उन्नति समय धार्मिक जग में सती भाव दरसाओ ॥३॥
असली धर्म भजन के द्वारा रामचन्द्र ने गाया ।
मानो कही पतिव्रत धारो शुभ अवसर है आया ॥४॥

ठुमरी ज़िला ४३४

सखि सोइ सुन्दरी पियकी पियारी ।
जाकी सुरति एक पल स्वप्नहु होत न पिय से न्यारी ॥१॥
अपनो परम धर्म पति सेवा जाने हृदय बिचारी ।
तीरथ की इच्छा जो होवे पीवे चरण पखारी ॥२॥
और पुरुष को पति करि जाने सो नारी कुलटारी ।
अपने पति को जो तिय सेवै सोई पति बरतारी ॥३॥

ठुमरी ज़िला ४३५

सखि मैं धन्य सुहागिन नारी ।
मेरो पति पूरण परमातम अजर अमर अविकारी ॥१॥
औरनके पति एक दिन बिछुरत तजि निज सुन्दरि प्यारी ।
मेरे प्राणनाथ मोंहि एक छिन करत न उर से न्यारी ॥२॥
जाकी खोज करत निशिवासर बड़े बड़े तप धारी ।
चकित होत बरनत श्रुति गुण जेहि नेति २ कहिहारी ॥३॥
संयम नियम शृंगार है मेरो श्रद्धा सहित सँवारी ।
पहरो विविध विवेक के भूषण ज्ञान को अंजन सारी ॥४॥

ओ३म् नाम कुंकु का टीका मस्तक पर सुखकारी ।
श्रुति के वचन कान में मोती तिनकी बहु शोभारी ॥५॥
इन्दुमती निज पति के चरनन तन मन धन सब वारी ।
आओ सखि तुमहूं या जग में बनि जाओ गुण वारी ॥६॥

दादरा ४३६

बहिनो सुनना दया करके मेरा कथन ।
जैसी थी सीता पतिव्रता नारी, ऐसा बना लो अपना चलन । महलों का रहना त्यागकर उसने, पती संगजाकष्ट भोगा था बन॥ छोड़कर वस्त्र रेशमी जोड़े, वृक्षों के पत्तों का पहिनना ओढ़न। बहुत तरह के निज कष्ट भोगे, पर नहीं छोड़ा पतिका पूजन ॥ माता सीता ने ये कष्ट भोगे, लागी पति से थी उनकी लगन। तुम भी पति अपने की आज्ञा पालो, जैसी सीता बना लो तुम अपना चलन । निर्लज्ज गाने बिवाहों के छोड़ा, गाओ हरी के सुहाने भजन ॥ बहिनो० ॥

भजन ४३७

अय रावण तू धमकी दिखाता किसे, मुझे मरने का खौफ़ो खतर ही नहीं । मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना, तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं ॥ अय० १ ॥

तू जो सोने की लंका का मान करे, मेरे आगे यह मिट्टी का घर भी नहीं । मेरे दिल का सुमेरु डिगेगा कहां, मेरे मन में किसी का डर ही नहीं ॥ अय० २ ॥

आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिल के सभी, क्या मजाल जो शील को मेरे हरें। तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया, मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं ॥ अय० ३ ॥

तू ने सहस्र अठारह जो रानी बरीं, तुझे इतने पर आया सबर ही नहीं। पर त्रिया पै जो तूने ध्यान दिया, क्या नर्क का तुझ को खतर ही नहीं ॥ अय० ४ ॥

मेरी चाह जो थी तेरे दिल में बसी, क्यों न जीत स्वयंबर तू लाया मुझे। वह था कौन शहर मुझे दे तू बता, जहां स्वयंबर की पहुँची खबर ही नहीं ॥ अय० ५ ॥

जो हुआ सो हुआ अब भी मान कहा, मुझे राम पै जल्दी से दे तू पठा। कहे सीता वगर्ना तू देखेगा क्या, चन्द रोज़ में अब तेरा सर ही नहीं ॥ अय० ६ ॥

भजन ४३८

दो०—अब तो चेतो नींद से, प्रिय भगिनी और माय।
तुम्हरी ग़फ़लत नींद से, भारथ उजरा जाय ॥

टेक–अरज ये बहनो हमारी है उठो बैरिन अविद्या को त्यागो।
तुम फँस के अविद्या में प्यारी, गृह आश्रम की करदी ख़्वारी।
हुई भारत की संतति अनारी, फिरत दर बदर दुखारी है॥अ०२
तुम्हें अविद्याने यह दिन दिखाया, गुण गौरव भी सारा गँवाया।
कोई सूझे न अपना पराया, न कुछ इज्ज़त रही तुम्हारी है॥अ०२
कुल लज्जा तुम्हारा धर्म है, उसे तजना ही खोटा कर्म है।

गाली गाते न तुमको शर्म है, लोग सब कहते गँवारी है ॥अ०३॥
पढ़ो विद्या धर्म को सँभारो, और सन्तान अपनी सुधारो।
मत आलसमें समय गुजारो, उठो सुधिबुधि क्यों बिसारी है ॥४
सती सीता की ओर निहारो, सावित्री की करनी बिचारो।
दमयन्ती ने दुख सहे भारो, धर्म अपने से न हारी है ॥ ५ ॥
तजो मेलों मदारों का जाना, है इस में धर्म का गँवाना।
निज प्रीतम से प्रीति लगाना, पन्थ यह कल्याणकारी है ॥६॥
तजो नशे की चीजों का खाना, बल बुद्धी का नित्य बढ़ाना।
मत धूर्तों के फ़न्दे में आना, कुशल इस में ही तुम्हारी है ॥ ७ ॥
तजोपरघरकासोना औरखाना, तजोआपसकालड़नालड़ाना।
कहै बलदेवयह नाजुकज़माना, समझोगे घरनाहुशियारी है ॥८॥

भजन ४३९

नींद क्यों ऐसी है छाई मेरी बहनो! खोलो आंख।
सीता रुक्मिण कुन्ती प्यारी, अनसुइया मन्दोदरि नारी।
विद्योत्तमा द्रौपदी सारी, कीरति जग पाई ॥ १ ॥
लीलावती भोज की रानी, जिसकी महिमा जाय न जानी।
कैसी बड़ी गणित बखानी, चकृत कविराई ॥ २ ॥
विद्याधारी गार्गी तारा, ऋषि पत्नीं बहु जगत मंझारा।
जिन का गावे यश संसारा, सुन सुन पण्डिताई ॥ ३ ॥
विद्या बिना पशु है जैसा, तिनको कहा शास्त्र में ऐसा।
यह क्या जाने धर्म है कैसा, पाठक समझाई ॥ ४ ॥

दादरा ४४०

गिरी हुई है दशा ये सुधारोरी, गिरी हुई है ॥ टेक ॥
पहिली थीं विदुषी वेदों की ज्ञाता ।
तुमने तो पढ़ना बिसारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
रोगों में वैद्यों को वे थीं बुलातीं ।
तुमने तो स्याना पुकारोरी । गिरी हुई० ॥
वे तो बिवाहों में सुन्दर गीत गातीं ।
तुम तो सीठने प्रचारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
वे तो हवन से पवन थीं सुधारें ।
धूनी से तुम तो बिगारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
आग लगी घर सब कुछ लुटाओ ।
तुम तो उतारे उतारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
नजर हुई जान मिर्चें जलाओ ।
दुटके करो हो हज़ारोंरी । गिरी हुई० ॥
दाने दिखाओ चामुण्डा पै जाओ ।
मुर्गों को नाहक में मारोरी ॥ गिरी हुई० ॥
ज्ञानी बनो शिक्षा दो सब को सुन्दर ।
पाठक हित् है तुम्हारोरी । गिरी हुई० ॥

भजन ४४१

टेक-पत्थर पूजों पति छोड़ के, तुम क्यों नहीं शर्माती हो ।
पति के सँग फेरे पड़ प्यारी, क़ौलोक़रार हुये थे भारी ॥

सदा टहलनी रहूंगी तुम्हारी, उस से नाता तोड़ के ।
जल ईंटों पै छिड़काती हो ॥ तुम क्यों० १ ॥
सब नारि आओ घरवर से देखो ईंट उठाकर कर से ।
इस में देवी घुसी किधर से देखो इस को तोड़ के ।
अब क्यों दहशत खाती हो ॥ तुम क्यों० २ ॥
धोबी धीमर नीच बरण हैं, जिनकी तुमने लई शरण है ।
तुम को तो नहीं जरा शरम है, दोनों ही कर जोड़ के ।
झट पैरों पड़ जाती हो ॥ तुम क्यों० ३ ॥
तेजसिंह माता वोही है, वर्षों गीले में सोई है ।
तुमने बुद्धि कहां खोई है, उस माता को छोड़ के ।
अब क्यों धक्के खाती हो ॥ तुम क्यों० ४ ॥

दादरा ४४२

करो पति पूजा बनो पिया प्यारी ॥
पति अतिरिक्त पूज्य नहीं कोई, मानो सत् श्रुति कहत पुकारी ॥ करो० ॥
मत तुम फिरो वृथा भ्रम भारत, बड़ पीपल जड़ पूजत झारी ॥ करो० ॥
इन बातन से धर्म नशत है, पूजो कबहुं मत पीर मदारी ॥ करो० ॥
भूतन पै नहीं पूत मिलत कहुँ, बिगड़ गई कैसी अकल तुम्हारी ॥ करो० ॥

विद्या पढ़ मूरखता मेटो, फिर मन में ज़रा देखो
बिचारी ॥ करो० ॥

भई पूर्व भारत में बिदुषी, शुभ गुण खानि अनेकन
नारी ॥ करो० ॥

पशुवत भई तहां तुम सुभगे, अपनो पतिव्रत धर्म
बिसारी ॥ करो० ॥

अजहुं त्याग बलदेव मूर्खता, लेहु शीघ्र निज धर्म
सँभारी ॥ करो० ॥

दादरा ४४३

मेरी बहनो अक़ल कहां गँवाय दई ॥

पीरों फ़क़ीरों के पावों में लागी। अपने पती की सेवा
भुलाय दई ॥ मेरी० ॥

मीरा मुहर्रम व गाज़ी मियां की। खीलों बताशों से क़बरें
भराय दई। मेरी० ॥

आपही मरे क्या जिलावें किसी को। क्या कुछ समझ के
तू बहिनी वहां गई ॥ मेरी० ॥

झाड़ों को वृक्षों को पत्थरों को पूजो। चेतन बताकर हाय
देवी बताय दई ॥ मेरी० ॥

गाली बको बुरी ब्याह के समय में। हा! हा!! अविद्या
यह किसने सिखाय दई ॥ मेरी० ॥

गृह के फलों को बड़ा सच्चा मानो। झूठों ने अपनी माया
फैलाय दई ॥ मेरी० ॥

पाठक है मन से हितैषी तुम्हारा। उसने तुम्हें चुन के शिक्षा
बताय दई ॥ मेरी० ॥

भजन ४४४

लो पतिव्रत धार है यह धर्म तुम्हारा।

पति की आज्ञा शिर धारो, सारे मत वाद बिसारो।
कहें सत्यपुरुष विचार। १ ॥

गृह काज में दक्ष कहाओ, अज्ञान अनीति मिटाओ।
गावे यश संसार ॥ २ ॥

पर पुरुष बन्धु सम जानो, निज पति ही को पतिमानो
शास्त्र के मत अनुसार ॥ ३ ॥

जग में जीवन है थोड़ा, जो नियम धर्म व्रत तोड़ा।
तो मुर्खा धिक्कार ॥ ४ ॥

दादरा ४४५

हाय कैसा ये काम भूली हो अपना पतिव्रत।

अपने पतिको दो २ सौ गारी, स्याने दिवानों को झुक २ सलाम।
अपने ससुरजीकी बनती न रोटी, पीरों फ़क़ीरों कोबर्फ़ीबादाम॥
अड़ोसिन पड़ोसिन से हिलमिल करहतीं सासु से लड़नेमें समझाहै-
नमा अपनेदेवों कीतो सार न जानी, भूतों प्रेतोंको मानो तमाम।

अच्छी कथाओंसे सौ कोस भागो, मेले तमाशों में चार २ मुक़ाम
पाठक कहे देव पति जो तुम्हारा, उस के चरण धोवो सुबहशाम

दादरा ४४६

बहिनो करना बिचार कैसी दशा है तुम्हारी ।
माता भी प्यारी भैया जी भी प्यारे
भाभी को देती हो ताने हज़ार ।
अड़ोसिन भी प्यारी पड़ोसिन भी प्यारी,
दुश्मन है सासू का सब परिवार ।
लड़ती हो सास नन्दों से तुम हो,
गुस्सा उतारो हो बच्चों को मार ।
छुप २ सामग्री को बेचो हो घर की,
दो आने मैं देती आने हो चार ।
जाने पहचानों से घूंघट करो हो,
मेलों में जाती हो मुंह को उघार ।
ईश्वर की स्त्री न सन्ध्या हो करती,
पाठक हा पूजो हो ज़ाहिर मदार ॥

सुहाग ४४७

बहनोरी करलो ऐसे शृंगार ।

१ अंग शुचीकर २ फिर कर मंजन ३ वस्त्र अनूपम धार ।
राग द्वेष को तन मन जल से विद्या बसन संभार ॥ १ ॥

केश ४ सँवारहु मेल परस्पर न्याय की मांग ५ निकार ।
धीरज रूपी ६ महाउर धारहु यश हो ७ टीका ललार ॥२॥
तृण न व्यर्थ पैसो ८ तिलधारो ९ मिस्सी पर उपकार ।
लाज रूपी १० कज्जल नयन में ज्ञान ११ अँगजा चार ॥३॥
१२ आभूषण यह तन में पहनो १३ शम सन्तोष विचार ।
मेंहदी पुष्प १४ कलिसों कर शोभित दान सुभग आचार ॥४॥
१५ बीड़ी विनय की रखना मुख में १६ गंध सुसंगति धार ।
पिया तेरा देखत ही रीझै लखि सोलह शृंगार ॥५॥

भजन ४४८

मेरी बहिनों ने अपना धर्म नहिं जाना ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥

सासू का देतीं ताना, सुसरे को जुदा बखाना । प्रीतम को नहिं पहिचाना, नाहक को झगड़ा ठाना ॥मेरी० १॥ डोरों पर झगड़ा डाला, गरडों का पन्थ निकाला । टुटकों का हाल निराला, वैद्यों का कहा न माना ॥ मेरी० २ ॥ आपस में करी लड़ाई, हँसवाये लोग लुगाई । जो ज़रा रोग हो जाई, बुलवाया घर में स्याना ॥मेरी० ३॥ पाठक कहे प्रीति बढ़ाओ, मत मूर्खों को बुलवाओ । मिल मिल कर बैठो गाओ, सुख पाओ बड़ा निदाना ॥ मेरी० ४ ॥

दादरा ४४९

पहनो पहनो री सुहागिन ज्ञान गजरा ।

दया धर्म की ओढ़ो चुनरिया, शील का नेत्रों में डारो कजरा।
लाज करो तुम पर पुरुषों से, अपने पति का देखो मुखरा॥
सास ससुर की सेवा कीजो अपने पति से न कीजो झगरा।
कहै अनाथ बिना विचारी बहिनो! सहती हो तुम अति दुखरा॥

भजन ४५०

दोहा–जिस घर में नहीं होत है, नारिन को सत्कार।
कहत मनू निज शास्त्र में, सो घर होत उजार॥
भारतवासी आज यह, मनु का वचन भुलाय।
भांति भांति के करत हैं, अबलन पर अन्याय॥

टेक–इन भारत की अबलान पर, हा! कैसा जुल्म होता है।
जन्मतही सब शोक मनाते, पालन में नहीं प्रेम दिखाते हैं
विद्या तक नहीं इन्हें पढ़ाते, ब्याह करत नादान पर।
मुख पै कलंक पोता है॥ हा०! १॥

बूढ़े बालक और प्रमादी, बिना मेल की करते शादी।
फिर हो जब उनकी बर्बादी, इस कुरीति अज्ञान पर।
सारा कुटुम्ब रोता है॥ हा! ०२॥

अनमिल से मन मिले न भाई, नित दोनों में होय लड़ाई।
घर की फूट ने लंका ढाई। वेश्या टिकी मकान पर।
पति उसके संग सोता है॥ हा! ० ३॥
आतिशमें पति सड़कर मरगये, तियके भागपर पत्थर धरगये।

बाली उम्र में विधवा बनगये, आफ़त उसकी जान पर।
खाती भ[ी] अपने पास है॥ हा! ० ४॥

रो २ कैसे [?] मन मतंग अबला कैसे डाटे।
लखि यह दशा [?] हिय फाटे, जो बीतत विधवान पर।
लखि दुश्मन भी रोता है॥ हा! ० ५॥

अबलन पर मत जुल्म गुजारो, शुभ शिक्षा दे इन्हें सुधारो।
अपना धर्म बलदेव सँभारो, हरदम राखो ध्यान पर।
निज धर्म ही दुख खोता है॥ हा! ० ६॥

भजन ४५१

क्या अब भी नहीं उठोगी, बहिनो सोई हो पांव पसार।
सीता को हुआ बनवास, सहा सब त्रास, न कोई पास,
सोच नहीं कीना। विद्या ने जिसका सभी दुःख हर लीना॥
भई कृष्णकुमारी एक, धर्म की टेक, कि जिसने विवेक, पिता
हित कीना। क्या नहीं उमड़े जी, जिसने प्राण तज दीना॥

चौपाई।

दुर्गावती अहिल्या बाई। दमयन्ती कुन्ती समुदाई॥
जिनकी कीरति जग में छाई। दिखलागई अपनी पंडिताई।

शेर।

शस्त्र विद्या में कोई थी शास्त्र में कोई चतुर।
ब्रह्म विद्या में कोई कोई रसायन की थीं घर॥

कोई वैद्यक शिल्प में व्याकरण मंत्रों भ में कोई।
धनुर विद्या गणित में पुरुषोंते का दी लेगई॥

लीलावती भोज की रानी। थी गणित श[illegible] की खानी॥
पुस्तक रची है लासानी। तजे मान गणित अभिमानी॥

अरी तुम होकर अज्ञान, सोचो नादान, पड़ी क्या बान। हाय क्या तुम नहीं जानो सार, जने कितने दुख भरोगी॥ क्या अब० ॥ १॥

एक विद्योत्तमा महान, रूप गुण खान, महा विद्वान, थी जब वह क्वांरी। नहीं शास्त्रार्थ में विद्वानों से हारी॥

विप्रों ने मिल छल किया, मूढ़ संग लिया, मौन कर दिया। है पंडित भारी। खिजला पढ़ाय कर लाये सभा मंझारी॥

चौपाई।

कन्याने एक अंगुली उठाई। आशय था एक ईश है भाई॥
मूढ़ ने अपनी आंख बचाई। झटपट दो अंगुली दिखाई॥

शेर।

पांच कन्या ने उठाई पंच इन्द्री वश में हैं।
मूढ़ ने थप्पड़ समझ मुक्का दिखा संकेत में॥
पहली दो अंगुलियोंसे समझा था माया ईश को।
अब यह समझी इन्द्रियां वश में हैं मुट्ठी बन्द जो॥
बस इतने पर वह हारी। और ब्याह की की तैयारी।

फिर खुला जाल यह भारी। नहीं घबड़ाई वह नारी॥

रख उसने अपने पास, ज्ञान में फांस, सो कालीदास, नाम जिसका जाने संसार, क्या उसकी रीस करोगी॥ क्या० २॥

मण्डन अरु शंकर गुनी, शास्त्र के धनी, तर्क की ठनी, वाद हुआ भारी। तहां उभय भारती तिय मध्यस्थ विचारी॥

यह थी मण्डन की नार, जाने संसार, मंगा दो हार, दीन गले डारी। जो सूखे पहिले हार कि उसकी बारी॥

चौपाई।

मंडन मिश्र से प्रथम पुकारा। पतिजी गिरगया पक्ष तुम्हारा॥
फिर यह कहा ऐ शंकर स्वामी। हूँ अर्धांगी पति अनुगामी॥

शेर।

पती जी जीते हैं मेरे मुझ को भी अब जीतलो।
तबही समझो जीत को नहीं जीत हो नहिं हार हो॥
आप मेरे सामने इस भांति ही उद्यत रहें।
अंग आधे को न जीता आप इस मुख से कहें॥
शंकर जी करैं बहाना। पर उसने एक न माना।
विद्या को प्रश्न से जाना। नहीं उत्तर बना निदाना॥

ऐसी यह विदुषी भई, नाम कर गई, कीर्ति जब छाई, अरी कुछ मनमें लेउ विचार, गुण उसके चित्त धरोगी॥क्या० ३॥

कुछ अपनी दशा निहार, न जानो सार, शास्त्र आगार, में क्या २ भरा है। तुमने पति देखा कहा जावो बेजा है॥

जानो नहीं तुम निज धर्म, व अपने कर्म, तुम्हारा मर्म, नहीं खुलता है। नहीं खुलीं पाठशालायें जो ऐसी दशा है।

चौपाई।

गिनती हा! सौतक नहीं आवे। क्या अचरज जो धोखा खावे॥
धर्म कर्म फिर क्या चिड़िया है। हा इसका नहीं बोध किया है॥

शेर।

वे चतुर शास्त्रार्थ में अरु तुम हो लड़ने में चतुर।
ऐसी करके बराबरी तुम ने उजाड़े बड़े घर॥
तुम तो पूजो ताजिये क़बरें व पत्थर ईंट को।
पती को पूजें थीं वह सीता को क्यों न देखलो॥

अब भी कुछ होश में आओ। पति ही की दासी कहाओ।
जो कहे उसे कर लाओ। तबही तुम सतपद पाओ॥

पढ़कर पुनि करो विचार, शास्त्र को सार, है यह तैयार, वेद रवि विद्या का भण्डार, कहे पाठक उदित लखोगी॥ क्या० ४॥

भजन ४५२

पतिव्रत है धर्म तुम्हार, निबाहो सुख पाओ॥ टेक॥
पति की आज्ञा को सिर धरना, पितृयज्ञ नित घर में करना।
देव ऋषीऋण चहिये टारना, अतिथि पूज हरबार॥ नि०१॥
प्रातःकाल स्नान कराना, सन्ध्या होम में मदद दिलाना।

पीछे सुन्दर पाक बनाना, दिनचर्य्या अनुसार॥ नि० २॥
सदा बोलना मीठी बानी, प्रेम भक्ति पूजा की खानी।
विनय शील से बस्तु मंगानी, जो चाहिये घर बार॥ ३॥
दूर देश से आयें जब वीरी, करो नमस्ते दोउ करजोरी।
कुशल पूछना मांग बहोरी, कैसे रहे भरतार॥ नि० ४॥
मित्र समझकर नित हित करना, है तो बराबर अधिक समझना
पाठक इहका ध्यान भी धरना, बालक सुधरें तुम्हार॥ नि० ५॥

दादरा ४५३

मेरी भोली सी बहनो! इधर कान करोरी।
वेदों का सूरज यह कितना चढ़ा है।
जिसने जगत को प्रकाशित किया है॥
मत सुन्दर समय को वीरान करोरी॥ मेरी०॥ १॥
पुरुषों ने उठकर सवेरे से देखो।
कैसे बनाये हैं गुरुकुल ये पेखो॥
तुम भी कन्यागुरुकुल का सामान करोरी॥ मेरी० २॥
लाखों बहिन का मिटा है अंधेरा।
तुम को क्या आलस की निद्रा ने घेरा॥
उठ विद्या के अमृत को पान करोरी॥ मेरी०॥ ३॥
तैमूर नादिर ज़माना नहीं है।
जानो हो सब कुछ बताना नहीं है॥
बस सच्ची तरक्की का ध्यान करोरी॥ मेरी०॥ ४॥

साहस व हिम्मत को आगे बढ़ाओ।
वेदों की विद्यायें जग में फैलाओ॥
कह पाठक शुभकर्मों में दान करोरी॥ मेरी० ॥ ५॥

दादरा ४५४

तुमने बुलाये भाभी स्याने, मैं जान गई।
भैया जी आवेंगे तब उन से कहूंगी, भाभी ये कहना न माने॥ मैं० ॥ १॥
पन्नी खराई मिठाई मँगाई की है चौराहे रखाने ॥ मैं० ॥ २॥
लोटे का पानी चौराहे में लौटा, अब लगी बातें बनानें॥ मैं० ॥ ३॥
डोरा कराया गले में बँधाया, भैया जी धोखा न जाने ॥ मैं० ॥ ४॥
मुर्गा मँगाया उस की हत्या कराई, करना जी कैसे बहाने ॥ मैं० ॥ ५॥
पाठक कहे देख आती है बदबू, राई के दाने जलाने ॥ मैं० ॥ ६॥

दादरा ४५५

अब से न स्याने बुलाऊं मैं बाज़ आई।

अच्छी बीबी री मत कहिये पती से।
हाथों को जोड़ सिरनाऊं, मैं बाज़ आई॥ १॥
जैसे कहोगी वैसे ही करूंगी।
तुम्हारी क़सम मैं तो खाऊं, मैं बाज़ आई॥ २॥
चाहे सुख हो चाहे दुःख हो।
पर नहीं धोखे में आऊं, मैं बाज़ आई॥ ३॥
सण्डे मुसण्डों ने मुझे बहकाया।
अब कर मल पछताऊं, मैं बाज़ आई॥ ४॥
भूतों को प्रेतों को अब से न मानूं।
मीरा की जान नहीं जाऊं, मैं बाज़ आई॥ ५॥
स्याने दिवाने जो सर को हिलावें।
इनके न फन्दे में आऊं, मैं बाज़ आई॥ ६॥
पोपों के फन्दे से तुमने बचाया।
जन्म २ गुण गाऊं, मैं बाज़ आई॥ ७॥
अब से करूंगी मैं ईश्वर की भक्ती।
सन्ध्या और हवन रचाऊं, मैं बाज़ आई॥ ८॥
बासुदेव की यह शिक्षा मानूं।
उनका ही भजन सुनाऊं, मैं बाज़ आई॥ ९॥

भजन ४५६

जो चाहो स्वर्ग में बास तुम, इक पतीव्रत धर्म निभाओ।
पतिव्रत धर्म से उत्तम गहना, नहीं दूसरा जग में बहना।

जो चाहती हो इसको पहना। रहो पती की दासि तुम॥
नित आज्ञा उसकी पालो॥ इक०॥

करो नित्य केवल पति पूजा। नारी के लिये देव न दूजा।
अन्य. देव सेवा है बेजा। करो यही विश्वास तुम॥
या. रामायण पढ़ डालो॥ इक०॥

नारि धर्म नहीं दूसर देवा। नारि धर्म केवल पति सेवा।
जो चख लोगी तुम यह मेवा। होगी न कभी निरास तुम॥
बस मन चाहा फल पालो॥ इक०॥

राखो ऐसी शुद्ध तुम काया। अन्य पुरुष का पड़े न साया।
जो तुम ने यह व्रत निभाया। बनोगी देवी खास तुम॥
जब चाहो तब अजमालो॥ इक०॥

पीर फ़क़ीर पुजारी पण्डे। स्याने और भगत मुस्टण्डे।
जिन्हों ने गाड़ ठगी के झण्डे। जाओ न उनके पास तुम॥
मत उनसे कुछ पूछा लो॥ इक०॥

भूत परेत चुड़ैल मसानी। काली और शीतला रानी।
इनको पूजना है नादानी। नाहक़ मरो न त्रास तुम॥
ईश्वर से ध्यान लगालो॥ इक०॥

सीता और सावित्री नारी। द्रौपदी तारा और गान्धारी।
सब थीं पति की आज्ञाकारी। पढ़ देखो इतिहास तुम॥
उन जैसा चलन बनालो॥ इक०॥

हया शर्म का राखो पर्दा। सत्य से शुद्ध करो मन हिर्दा।

बैठे न जिस पर पाप का गर्दा। पहनो ऐसा लिबास तुम॥
और ब्रह्मज्ञान में न्हालो॥ इक०॥

कभी न घर में करो लड़ाई। सास ससुर की करो बड़ाई।
टहल करो उनकी चितलाई। करो न उन्हें उदास तुम॥
खाओ जब उन्हें खिलालो॥ इक०॥

गन्दे राग कभी मत गाओ। ब्याहों में कोयल न बुलाओ।
स्वांग तमाशे में मत जाओ। कभी न देखो रास तुम॥
इन सब पर मिट्टी डालो॥ इक०॥

सालिगराम कहे क्या कीन्हा। तुमने अपना धर्म न चीन्हा।
ठगिया ने तुम्हें धोखा दीना। सत की करो तलाश तुम॥
सत् धर्म से प्रीति बढ़ालो॥ इक०॥

भजन ४५७

जो चाहती हो सुख मेरी बहना, तो तुम यह गुण धारलो।
पतिव्रत धर्म का पालन करके, शुभ जीवन का सार लो॥जो०॥

घर में कलह लड़ाई झगड़े, रूठ मनावा त्यागकर।
चतुराई और हुशियारी से, घरके काम सँवार लो॥ जो०॥

पढ़ो आप सन्तान पढ़ाओ, मूरखता को छोड़ दो।
बिना पढ़े कुछ अक्ल न आवे, मन में खूब विचारलो॥ जो०॥

प्रीति प्रेम कुटुम बालों से तुम को रखनी चाहिये।
सास जिठानी नन्द देवरानी, क तुम वचन सहारलो॥ जो०॥

क़ब्र ताज़िये पीर सीतला, को मत पूजो भूलकर ।
अपने पति और परमेश्वर को, पूज के जन्म सुधारलो ॥जो०॥
पतिव्रता नारी की जग में, होवे यश और कीर्ती ।
सीता सावित्री दमयन्ती, को तुम और निहारलो ॥जो०॥
अन्य पुरुष का स्वप्ने में भी, साया तक मत देखना ।
पतिव्रत धर्म का उत्तम गहना, तन अपने में डारलो ॥जो०॥
पति आज्ञा को भंग न करना, जब तक घट में प्रान हैं ।
सालिगराम कहे मेरी बहनो, सब तुम यह गुण धारलो ॥जो०॥

दादरा ४५८

देखो अबला धरम गईं भूल ! दा० ।
उत्तम विचारों को उर में न लावें, सुख के करम गईं भूल-दा ।
पतियों से लड़ती न करतीं सुकरमों, कुल की शरम गईं भूल-दा
स्यानों दिवानों पै विश्वास राखें, सच्चा मरम गईं भूल-दा ।
माने नहीं करए हित की कही को, हरिका जुरम गईं भूल-दा ।

भजन ४५९

सुनोरी ! बहना बहना बहना, धरो धीरज न हमें रुलाओ ।
यह सुन करके दुखड़ा तुम्हारा, कांपे है यह शरीर सारा ॥
दुखी हुआ है हृदय हमारा, भरे नैना नैना नैना ॥ सुनो० ॥
हमने जब से व्रत तोड़ा, पुत्रियों का पढ़ाना छोड़ा ।
हमने अपने हाथों फोड़ा, अपना लहना लहना लहना ॥ सुनो० ॥

हम पुत्री पाठशाला बनायेंगे, उसमें पुत्रियों को पढ़ायेंगे ।
जब थोड़ी सी फुर्सत पायेंगे, फुर्सत देना देना देना ॥सुनो०॥
यह तेजसिंह ने गाया, तुमने अति दुःख पाया ।
बस वही ज़माना आया, सुख से रहना रहना रहना ॥सुनो०॥

भजन ४६०

दो०-चार तरह की पतिव्रता, जग में पड़ें लखाय ।
उत्तम, मध्यम, नीच, लघु, सकल कहूँ समझाय ॥
जो नारी इस भेद को, सुन ले कान लगाय ।
इस में संशय है नहीं, भवसागर तर जाय ॥
टेक-उसे क्यों त्यागारी, जो था पतिव्रत धर्म तुम्हारा ।
थोड़े सुख के देने वाले, मात पिता और भाई ।
बेशुमार सुख पतिही देता, दोउ लोकन के तांई ॥ उसे० ॥
आपतकाल परखिये चारी, जिनका करूं बयान ।
धीरज, धर्म, मित्र और नारी, कर जग में पहचान ॥ उसे० ॥
बूढ़ रोगी मूरख निर्धन, अन्ध दीन और बहरा ।
करे घृणा तिया एसे पति से, भोगे नरक दुख गहरा ॥उसे०॥
मन और कर्म से रक्खे, पति चरणों में प्रेम ।
स्त्री का एकही जग में, यही धर्म व्रत नेम ॥ उसे० ॥
पतिव्रता हैं चार जगत् में, सुनलो कान लगाय ।
उत्तम मध्यम और नीच लघु, सकल कहूँ समझाय ॥उसे०॥

उत्तम नारी है वह जग में, सुनियो कान लगाये ।
नहीं पुरुष दूजा कोई जग में, स्वप्ने पड़े लखावे ॥ उसे० ॥
मध्यम नारी को तुम जानो, जग में यह पहचान ।
भाई बाप और सुत के सम परपति को रहीं हैं मान ॥उसे०॥

जो करे पराये पतिकी इच्छा, भोग करन की ताईं ।
धर्म विचार दूर हट बैठे, नीच नार बतलाई ॥ उसे० ॥
समय न मिले रहे डर करके, भोग बिना पर पति से ।
महा नीच वह नारि बताई, कहे रामायन इस गत से ॥उसे०॥

जो अपने पति से छल कर, रति करे पराये पति से ।
वह स्त्री सौ कल्प नरक में, बास करे संगत से ॥ उसे० ॥
क्षण भर के जो सुख के लिये, सौ जन्म के दुख की न सूझी ।
उस से खोटी और जगत में, कौन नार है दूजी ॥ उसे० ॥

जो छल छोड़ करे पति सेवा, उत्तम गति को पावे,
बिरोधिनी स्त्री जहां जन्मे, जवाँ रांड हो जावे ॥ उसे० ॥
पति की सेवा जो करती हैं, तन मन धन से नारी ।
रघुनन्दन कहे वही स्वर्ग की, बनती हैं अधिकारी ॥उसे०॥

भजन ४६१

कैसी पतिव्रता वह नारी हैं, द्रौपदी दमयन्ती सीता ।
जब रामचन्द्र ने आज्ञा बन की पाई ।
चले रामचन्द्र और लछमण दोनों भाई ॥

जब सीता ने सुनी संग तुरत उठ धाई ।
पर रामचन्द्र ने बहुतक करी मनाई ॥
डर बहुतेरा दिखलाया । पर संग नहीं बिसराया ॥
तजसुख सम्पति और माया । संग चौदह बर्ष निभाया।
वह नंगे पैरों बन फिरी, रावण ने हरी, पर धर्म से ना गिरी,
देखो कैसे दुःख की वारि है, यह धर्म पतिव्रता सीता । द्रौ०॥

जब कौरवों से पांडव जुये में हारे ।
धन धर्ती और वस्त्र हार गये सारे ॥
उस विपति काल में संग द्रौपदी पग धारे ।
परदेश में जा वैराट में किये गुजारे ॥
वहां कीचक योधा भारा । द्रौपद से पाप विचारा ॥
धोखा दे काम निकारा । द्रौपद ने धर्म नहीं हारा ॥
कहा भीमसेन से जाय, हाल समझाय, दुष्ट को आय ।
दिया तुरत भीम ने मारही, सब कर लीना मनचीता ॥द्रौ०॥

जब नल पुष्कर से सर्व जुये में हारा ।
करवाय मनादी दे दिया देश निकारा ॥
जब नल दमयन्ती छोड़ चले घर सारा ।
बन २ में भूखे फिरे दुःख सहा भारा ॥
चली भूखी मंजिल की मारी । बन में जब सोगई नारी ॥
नल ने तरस देख के भारी । बन सोवत छोड़ी प्यारी ॥
नल ने हृदय किया कठोर, मोह को तोड़, चला मुख मोड़ ।
कुछ किया न सोच विचारही, रानी का किया फ़जीता ॥द्रौ०॥

जब सोवत से रानी उठी बहुत घबराई।
वहां नल को देखा पड़ा न कहीं दिखाई॥
फिर डाढ़ मार कर रो रो कर चिल्लाई।
रोना सुन एक व्याध ने घेरी आई॥

ईश्वर से ध्यान लगाया। उस व्याध से धर्म बचाया॥
घर पिता का पता लगाया। जा स्वयम्बर जब ठहराया॥
वहां नलको लिया बुड़वाय, दुःख बहुपाय, मिले दोउ आय
रघुनन्दन कहे पुकार हो, नहिं तजा धर्म दुख बीता॥ द्रौ०॥

दादरा ४६२

पति पूजो तो मुक्ति तुम्हारी है।

जो पति सेवा करे प्रेम से। सब दिन सुखी वही नारी है॥प०
पिया को छोड़ न पूजो पथरे। सींचो न भर भर झारी है॥प०॥
अपने पति को न्हिलाय धुलाय कर। भोजन में मत कर अवारी है॥ पति०॥ रक्खो शुद्ध सदा सब चीज़ें। मैले से हो बीमारी हैं॥ पति०॥ तेजसिंह पति आज्ञा जो मान। पति की सदा वही प्यारी है॥ पति०॥

दादरा ४६३

विचार करोरी, प्यारी बहनों यह मन में।

यह देश भक्ति जो पहले थी तुममें। कहां गई अब इसका इज़हार करोरी॥ प्यारी०॥ जो तुमने जाये शूर और वीर

कहाये। अब इनको किन में शुमार करोरी॥ प्यारी०॥ कहां तो तुम इस देश की करतीं भलाई। अब क्यों तुम उलटा बिगाड़ करोरी॥ प्यारी०॥ ये दुख का कारण अविद्या है सारा। तुम चाहो तो विद्या प्रचार करोरी॥ प्यारी०॥ कहे तेजसिंह पुत्र और पुत्री सबको। विद्या पढ़ाने का प्यार करोरी॥ प्यारी०॥

भजन ४६४

कट गई है बुद्धि हमारी, शूद्र पग उलटे पुजवावें।
कोई बने देवी के पंडे। माल हराम खा हो गये संडे।
अबलाओं के बांधे गंडे। महन्त कहलावें, सब पूजें
नर और नारी॥ कट०॥
किसी ने बांधी सरपे सेली। बना लिये सब चेला चेली।
आंख दिखावें काली पीली। सब दहशत खावें, डर करा-
मात का भारी॥ कट०॥
करामात का झूठा जाल है। यह सब इन दुष्टों की चाल है।
और भोले से जो पुष्ट माल हैं। मोटे हो जावें, फिर करते
हैं बदकारी॥ कट०॥
जो हम तुम सब विद्या पढ़ते। तो क्यों इन दुष्टों से डरते।
क्यों ये माल हमारा हरते। तेजसिंह गावें, है आगे खुशी
तुम्हारी॥ कट०॥

भजन ४६५

बहे नैयनों से नीर सुनकर ये दुखड़ा तुम्हारा।

तुम क्यों अधीर होती हो, क्यों बार २ रोती हो।
क्यों आंसुओं से मुख धोती हो, क्यों तर करती हो चीर ॥सु०॥
ये हैं शब्द जितने तुम्हारे, नहीं जाते हैं हम से सहारे।
बस वाणी तुम्हारी का म्हारे, जिगर में खटके तीर ॥ सु० ॥
बेशक हमने अन्याय किया, नाश है मुल्क अपने का लिया।
दशा देखे तो कांपे है हीया, कलेजे उठती पीर ॥ सु० ॥
अब यही कोशिस हमारी, कन्या पाठशाला हो जारी।
कुछ खुल गई कुछ खुलने की त्यारी, बंधालो अबतो धीर ॥सु०॥
जिसने आज यह दिन दिखलाया, कन्यादुखपरहै ध्यान दिलाया
पद तेजसिंह ने गाया, धन्य स्वामी को आखीर ॥सु०॥

भजन ४६६

दोहा-अबलाओं की क्या खता, क्यों देते हो दोष।
खता आप की है सभी, रहो मित्र खामोश ॥
टेक-कुछ इनकी खता नहीं है तुम्हारी है बेईमानी ॥
अबलाओं को, शूद्र बताओ, तुम ब्राह्मण क्षत्री कहलाओ।
आप ऊंच उन्हें नीच बनाओ, क्या ये बुद्धिमानी ॥ कु० ॥
जो जननी को शूद्र बताओ, तुम ब्राह्मण कैसे बन जाओ।
इसका भेद हमें समझाओ, ये किस भांत से मानी ॥ कु० ॥
कन्याओं को नहीं पढ़ाया, वेद का नहीं अधिकार बताया।
पशु तुल्य तुमने ही बनाया, आप बने ज्ञानी ॥ कु० ॥
घर की तज कुलवन्ती नारी, उसे त्याग बनते व्यभिचारी।

जो तुम मानो झूठ हमारी, बात नहीं छानी ॥ कु० ॥
ढोल गवांर पशू और नारी, चारों डंडे के अधिकारी।
ऐसे सब कह रहे अनारी, छागई नादानी ॥ कु० ॥
ऐसे पत्नी से प्रीति न करते, जा मूरख रंडी पे मरते।
तेजसिंह तभी दुखड़ा भरते, हुआ देश अज्ञानी ॥ कु० ॥

❁ १६ गुरुकुल महिमा ❁

कव्वाली ४६७

वैदिक धरम की शिक्षा, गुरुकुल से लाभ होगी।
ब्रह्मचर्य आश्रम जो, बुनियाद आश्रमों की।
इस के बिना तुम्हारी, आयु खराब होगी ॥
तालीम आज कल जो, भारत में हो रही है।
वह एक दिन तुम्हारे, शिर पै अज़ाब होगी ॥
हरबर्ड और न्यूटन, कालेज में याद आवें।
ऋषियों की हाय हिस्ट्री, तुम सबको ख्वाब होगी ॥
वेदों को छोड़ देंगे, बच्चों के गीत कहकर!
जब हाथ में तुम्हारे बाइबिल किताब होगी !!
दिन वो तिथी को भूलें, सम्वत् न याद होगी।
तारीख ईसवी पर, गिन्ना हिसाब होगी ॥
जिन भोजनों से प्रतिभा, होती सतोगुणी थी।
उन की जगह पै ज़र्दा, कलिया पुलाव होगी ॥

होटल में जाके शामिल, होंगी तुम्हारी सन्तान।
भोजन क़बाब होगा बोतल शराब होगी ॥
स्त्री पुरुष की संज्ञा, होगी नहीं किसी को।
सहधर्मिनी तुम्हारी, लेडी चुनाव होगी ॥
करते हो काम उलटे चाहते हो उन्नती को।
रफ़तार फिर तुम्हारी, कैसी जनाब होगी ॥
वैदिक धर्म के प्यारो, भारत के रहनुमाओ।
सच्ची स्वदेश भक्ती, वेदों से लाभ होगी ॥
इस वास्ते यह प्यारो, स्वामी ने जो कहा है।
आज्ञा उसी ऋषी की, बस लाजवाब होगी ॥
पे वासुदेव निश दिन, वेदों का नाद होगा।
तबही तुम्हारी इज्जत, और मुँह पे आब होगी ॥

क़व्वाली ४६८

देखो तो आज कैसा, आनन्द आ रहा है।
गुरुकुल का इस ज़मी में, झंडा लहरा रहा है ॥
पौदा लगा ऋषी का, सरसब्ज़ हो चला है।
यह आर्य भाइयों से, इमदाद पा रहा है ॥
गलता जो बीज पहले, फलता वही है प्यारो।
कुदरत का नियम हमको, यह सुध दिलारहा है ॥
इसमें गला है स्वामी, फिर क्यों न फलको देगा।
स्वामी के ब्रह्मचारी, गुरुकुल बना रहा है ॥
ईश्वर तुम्हारी मंशा, पूरी करेंगे एक दिन।

गुरुकुल का देख आशा, ये दिल बँधा रहा है ॥
आवाज अपने कानों, एक दिन सुनोगे प्यारो।
योरुप में आर्यों का, झंडा लहरा रहा है ॥
आवेंगे खत अरब से, उनमें लिखा यह होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी, हलचल मचा रहा है ॥

भजन ४६९

(लावनी)

वर्णाश्रम धर्मों के सारे अभिज्ञान हों गुरुकुल से
चार वेद के ज्ञाता पंडित ज्ञानवान हों गुरुकुल से।
वीर्यवान पूरण बलिष्ठ सुन्दर सुजान हों गुरुकुल से ॥
आर्य धर्म्म तत्वज्ञ सर्वगुण में प्रधान हों गुरुकुल से ॥
स्वामी के कथनानुसार जग का सुधार हों गुरुकुम से।
आप्त ग्रन्थ जो लुप्त हुए तिनका उद्धार हों गुरुकुल से ॥
ऋषियों के कर्तव्य धर्म का भी प्रचार हों गुरुकुल से।
यथातथ्य पा मुक्ति द्वार संसार पार हों गुरुकुल से ॥
टेक—बिन गुरुकुल के ले भाइयो! सुधरे सन्तान तुम्हारी ॥

गुरुकुल ही ने बना कणाद गौतम दीने।
गुरुकुल ही ने ऋषि कपिल जैमिनी, कीने ॥
गुरुकुल ही से बन विप्र सुयश जग लीने।
गुरुकुल ही से बने विप्र जो थे कुछ हीने ॥

गुरुकुल ने देश किया नामी, गुरुकुल ने हुरमत थामी।
बिन गुरुकुल हो गये कामी, खो यश लीनी बदनामी॥

थी जो कि धर्म की डोरी, वह दीनी तोड़, लिया मुख मोड़, भूल चतुराई। बन बैठ आप अनारी॥ सुधरे० १॥

गुरुकुल ही से पढ़ ऋषी मूनी कहलाये।
गुरुकुल ही से पढ़ अनुपम शास्त्र बनाये॥

गुरुकुल ही से बड़े उच्च २ पद पाये।
दुनिया में जिनके नाम जाते हैं गाये॥

गुरुकुल से चित्त लगाओ, मत हटो आगे बढ़जाओ।
बच्चों को वेद पढ़ाओ, जो सच्चे आर्य कहलाओ॥

लेलो भारत की खबर, बांध कर कमर, काम नहीं ज़बर। सुनो तुम भाई, पूरण हो आश हमारी॥ सुधरे० २॥

बिन गुरुकुल पूरी हुई देश की हानी।
ऋषि मुनियों की सन्तान बनी अज्ञानी॥
जो विद्या का भण्डार संस्कृत बानी।
उसे छोड़ पढ़ाओ क़िस्से और कहानी॥

भारत का नसीब फूटा, गुरुकुल का जाना छूटा।
जब नियम ब्रह्मचर्य टूटा, तब अधरम ने आलूटा॥

हुये बल बुद्धी से हीन, आयु से छीन, काम नहीं लीन। ये आफत आई नहीं रहा कोई ब्रह्मचारी॥ सुधरे० ३॥

तुम मन से कोशिश करो बनाओ गुरुकुल।
सब विद्या का भण्डार लखाओ गुरुकुल॥
हो दूर अविद्या फिर खुलवाओ गुरुकुल।
धन बच्चे देकर आप चलाओ गुरुकुल॥

ज़रा देर न इस में कीजै, घड़ी पल २ छिन २ छीजै।
सब दूर अविद्या कीजै, ऊंचा जीवन कर लीजै॥

पहला यह होवे ध्यान, सुधरे सन्तान, देके कुछ दान। करो मन मानी, करता अर्दास मुरारी॥ सुधरे० ४॥

भजन ४७०

ब्रह्मचारी जगत में आवें तो बेड़ा पार हो। पापों और तापों पन्थों के जाल को, तोड़ डालें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

देखो हा हा अविद्या पापों का यहां पर ज़ोर है पापों का ज़ोर है, दुःखों का शोर है, आवें तो बेड़ा पार हो॥ब्र०॥

झूठे चले जो पन्थ हज़ारों इसी जगत में। पन्थों ने डाले रोले, सच्चा न कोई बोले, आवें तो बेड़ा पारहो॥ ब्र०॥

कैसे अर्जुन वा भीष्म योधा हुये यहां भारी। अर्जुन से योधा भारी भीष्म से तप धारी, आवें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र॥

कैसे गौतम कणाद और व्यास हुये यहां दाना। एसे दिमाग़ होवे, भारत के दाग धोवें, आवें तो बेड़ा पार हो॥ ब्र०॥

छोड़ो झूठी मुहब्बत भेजो तुम बच्चे गुरुकुल। जीतें काम क्रोध अहंकार लोभ मोह को, आवें तो बेड़ा पार हो॥ब्र०॥

मारा लक्ष्मण सेही ब्रह्मचारी ने योधा मेघनाद। जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी। विद्वान् पर उपकारी, आवें तो बेड़ा पारहो ॥ब्र०॥

भजन ४७१

धन धन भारत यह भाग तुम्हारे,
आहा ! यहां ये गुरुकुल खुला।

जब से टूटी थी गुरुकुल प्रणाली, भारत हुआ वेद विद्या से खाली। देखो ज़रा दृष्टी उठा, बनगये आश्रम ये बिगड़े थे सारे ॥ धन धन भारत यह भाग० ॥ १ ॥

गुरुकुल को भूले थे भारत निवासी, आकर बता गये इम को संन्यासी। जिसने दिया हमको जगा, ऋषी दयानन्द आके पधारे ॥ धन धन भारत यह भाग०॥ २ ॥

भजन ४७२

कन्यागुरुकुल विषय।

कन्या गुरुकुल करो क्यों न जारी।
देखो इसकी ज़रूरत है भारी ॥ टेक ॥

पढ़कर निकलेंगे जब ब्रह्मचारी, होवें गृहस्थ के अधिकारी जी। चाहिये ब्याहन को वैसी कुमारी ॥ टे० १ ॥

बनते पुत्र हैं जब तत्वज्ञानी, बस न्याय यही है बुद्धिमानी जी। होवें विदुषी भी पुत्री तुम्हारी ॥ टे० २ ॥

सुन्दर जन्मे सन्तान तुम्हारी, धर्मात्मा आदि गुणधारी जी। फैले जग में आनन्द अपारी ॥ टे० ३ ॥

समय सत्ययुग जैसा बनाओ, ढूंढ़ो तो भी अज्ञान न पाओ जी। होवें देवता देवी नर नारी ॥ टे० ४ ॥

जावे धन कितना व्यर्थ तुम्हारा, हा ! हा !! बढ़ अशान्ति मँझारा जी। यहां से रोको बनो उपकारी ॥ टे० ५ ॥

पाठक ग़फ़लत की नींद बिसारो, अपना तन मन धन सब वारो जी। देवो ऋषि ऋण शीघ्र उतारी ॥ टे० ६ ॥

१७ ❀ वीर्य्य-महिमा ❀

ग़ज़ल ४७३

महाऋषि जो हुये ज्ञानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था।
जो द्रष्टा मन्त्र लासानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
रचे वेदांग षट्-दर्शन, कि जिस में चौदह विद्या हैं।
अग्नि तत्वज्ञ मधि पानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
सभी भूगोल को जाना, सभी आकाश को छाना।
विमानों के हुये बानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
हुये चक्रवर्ती महाराजे, सदा से चार युग लाजे।
न था कोई सामने सानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥
जो चट्टे चौथ में खेलें, परीक्षावान 'विद्यार्थी।
यशस्वी तेज बलखानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था ॥

गुरुकुल में पढ़ जाकर सभी सन्तान भेजे थे।
बने हरिभक्त विज्ञानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था॥
जगत जाने है जितना लाभ, गुरुकुल से हुआ पहिले।
बने चौंसठ कला ज्ञानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था॥
न क्यों अफ़सोस हो पाठक, पड़े हो उठ के अब चेतो।
मिले जो रत्न गुणखानी, फ़क़त ब्रह्मचर्य्य का बल था॥

भजन ४७४

यह वीर्य रत्न अनमोल है, यौंहीं मत इसे गँवाओ।

यह वीर्य अमृत कहलावे, मरे हुए को यही जिलावे,
एक बूंद रज पर पड़ जावे, यही आयुर्वेद की तोल है।
उसी वक्त गर्भ ठहराओ॥ मत० १॥

इसी वीर्य रक्षा के कारण, ब्रह्मचर्य्य करते हैं धारण,
होते हैं सब दुःख निवारण, दिया गुरुकुल खोल है॥
जहां विद्या जाय पढ़ाओ॥ मत० २॥

इसको जीत बनो ब्रह्मचारी, भीष्मपितामह से बलधारी।
ऋषी दयानन्द से उपकारी, जिन की चहुं दिशि रौल है।
वैसा ही बन दिखलाओ॥ मत० ३॥

जब से इसका किया अनादर, दुखी हुए सब देश बिरादर,
विद्या बल पुरुषार्थ गँवाकर, अन्दर खाली पोल है।
बाहर चाहे आब बनाओ॥ मत० ४॥

चेहरों पर वह चमक रही ना, बिजली की सी दमक रही ना,
वीरों की वह धमक रही ना, जिन से डरा भूगोल है।
अर्जुन को ध्यान में लाओ॥ मत० ५॥

अब भी इसकी दवा कराओ, गुरुकुल की शिक्षा दिलवाओ
स्वामी जी की आज्ञा पालो, जिस ने करी टटोल है।
तभी वासुदेव सुख पाओ॥ मत० ६॥

ग़ज़ल ४७५

सुख मूल ब्रह्मचारी, आश्रम को जो हैं खोते।
पूर्णायु में पड़कर, क़िस्मत को अपनी रोते॥१॥
पहिला क़दम ही रखते खन्दक में गिर गया जो।
फिर कोई काम उस के, हर्गिज़ सफल न होते॥२॥
अनमोल रत्न धीरज, ज़ाया वृथा जो करते।
अमृत की काट जड़ को, विष का हैं बीज बोते॥३॥
सञ्चय इसी को करके, निर्बल बली हैं होते।
दुश्मन का भय न करके, सुख नींद हैं वह सोते॥४॥
बायस जो ज़िन्दगी है, उसकी क़दर करो तुम।
खाओगे मित्र वर्ना दुख सिन्धु माहिं गोते॥५॥

भजन ४७६

दोहा–ब्रह्मचर्य की रीति जब, गई भारत में टूट।
तब से बस इस देश का, गया नसीबा फूट॥
टेक–जब से यह मर्यादा टूटी, गये धर्म कर्म सब छूट।

जहां होते थे बली ब्रह्मचारी, जिनके बाण लख संहारी।
अब होगये हैं रोगी भारी, जब से ये शुभ डगरी छूटी ॥जब०॥
इस बाली उमर के व्याहने, हा! बाली कन्याओं की आहने।
हा! इसी रस्म बेजा ने, हमारी सुख सम्पति लूटी ॥जब०॥
यहां कितने ही आलिम आये कितने ही उपदेश सुनाये।
नहीं समझे बहुत समुझाये, उलटी और हिये की फूटी ॥जब०॥
कहे तेज़सिंह तुम विचारो, ब्रह्मचर्य न जब तक धारो॥
चाहे फ़िजूल लाखों बघारो, तुम्हारी सब शेखी झूटी॥ ज० ॥

भजन ४७७

नर नारि सदा रोते हैं, इस ब्रह्मचर्य्य को खोय के।
खेल कूद में उमर गँवाते। विद्या में ना चित्त लगाते।
बाली उमर में व्याह कराते। बड़े मगन मन होय के॥
कच्चा वीरज खोते हैं॥ नर०॥
दुर्बल होय लगे दुख पाने। निर्बल हों जिन के सन्तानें।
बढ़े रोग ना अक़ल ठिकाने। वैदिक धर्म बिछोय के।
मूरख व्याकुल होते हैं॥ नर०॥
होत प्रमेह कांप कर चलते। जल्दी डाढ़ दांत सब हिलते।
नयनों जल नज़ले के ढलते। चलत अन्ध हैं टोय के।
फिर सुख से ना सोते हैं॥ नर०॥
पहले वर्ष सवासौ जीते। अब तो बरे साठ से बीते।
घीसा कहे होय मन चीते। फिर वही धर्म संजोय के।
क्यों विपद भार ढोते हैं॥ नर०॥

❀ १८ वेश्या दोष दर्पण ❀

भजन ४७८

दोहा-विषयों में रममाण हो, जीवन दिया गँवाय।
कटे न बासर पल घड़ी, रहे अधिक दुखपाय॥
टेक-व्यभिचारी नर अज्ञान से अनमोल रतन खोते हैं।
सारा ही धन रंडी के घर पहुँचाया।
धन रहा न तब चोरी में ध्यान जमाया॥
कहिं पकड़े गये तो मज़ा किये का पाया।
इस रंडीबाज़ी ने सब का मान घटाया॥
सब धन और माल गँवावे, पर सब्र न दिल को आवे।
जब बढ़े रोग पछतावे, नहीं गया वक्त फिर पावे॥
कहिं लिया पुलिस ने पकड़, बदन दिया अकड़, निकलगई
अकड़, क़ैद में जाय के, मल २ के हाथ रोते हैं॥ अन० १॥
कहिं डाल बाल में तेल करी तैयारी।
रँग होठ पान से चल दियो निपट अनारी॥
ले हाथ छड़ी रूमाल गई मतिमारी।
गये रंडी के दरबार बात हुई जारी॥
वह हंस २ बात बनावे, यह फूला नहीं समावे।
वह ज्यों २ भौंह मटकावे, यह अहो भाग्य ठहरावे।
सब तजी आबरू यार, हुये क्यों ख्वार, छोड़ घरबार, मरे
बिलखाय के, यह पड़े यहां सोते हैं॥ अनमो० २॥
क़हिं मद्यपान कर चले निपट मतवाले।

दो चार रुपैये चले जेब में डाले ॥
रंडी के जाय दरबार किये मुंह काले।
धिक लोक और परलोक नशावन वाले ॥

सब कुल की लाज गँवाई, लई पली वे शरमाई।
लानत धिक्कार उठाई, नहिं डूब मरे अन्याई ॥
नहिं भय ईश्वर का करें, दिल में ना डरें, मान सब हरे,
यह इश्क़ लगाय के, बदनाम बहुत होते हैं ॥ अनमो० ३ ॥

रंडी के रूप पर जो तबियत लाते हैं।
धन यौवन खोकर अन्त नरक जाते हैं ॥
जब होय आतिशक दिल में पछताते हैं।
क्यों पछतावें अब किये का फल पाते हैं॥

यह पंथ बड़ा है भारी, करते हैं जग में ख़्वारी।
घर कहे रोय कर नारी, गई क़िस्मत फूट हमारी ॥
है ज़रा देर आनन्द, मूर्ख मतिमन्द, भरे दुख द्वन्द, है वीर्य
गँवाय के आपत्ति बीज बोते हैं ॥ अनमो० ४ ॥

यह वेश्या है विष की बेल सुनों तुम भाई।
बदनाम करे यहां अन्त नरक ले जाई ॥
कोई करो न कबहूँ प्रीति इससे मनलाई।
नहीं चन्द रोज़ में होवेगी लोक हँसाई ॥

यह सुन्दर रूप दिखावे तन मन धन सब ले जावे।
जो तबियत इनपर लावे, फिर हाथ मले पछतावे ॥

मत करियो इनसे प्यार, जगन हर बार, कहे करतार, को
शीश नवाय के, यह काम बुरे होते हैं ॥ अनमो० ५ ॥

ख़्याल ४७६

हाथ में आकर हुस्न परस्तों दिलको लगाना अब भाई।
इश्क की तह में छिपे हुए हैं, ग़मो मुसीबत रुसवाई ॥
मजनू हुआ लैला पर आशिक रो रो जिगर खूं को खाया।
खाक किया सब जिसम को अपने, जहां में पागल कहलाया ॥
फिर शीरीं फ़रहाद का क़िस्सा, सब के सुनने में आया।
ग़रज़ जिसने किया इश्क, आखिर में वोही पछताया ॥
लाखों हुये बर्बाद इश्क में, खाक मिट्टी करवाई।
इश्क की तह में छुपे हुये हैं ग़मो० ॥ १ ॥
जबकि साहिबे हुस्न आपकी, निगह कोई पड़ जाता है।
मिली आंख से आंख तो दिल पे, उसका अक्स हो जाता है ॥
हमकलाम होते ही असर जादू सा तुम्हें दिखलाता है।
उसके सिवा कोई और तुम्हें फिर देखा भी नहिं भाता है ॥
बेवकूफ़ बेदीन बेशर्म बनोगे बेशक सौदाई।
इश्क की तह में छिपे हुए हैं ग़मो० ॥ २ ॥
तुम्हारे दिल की असली हक़ीक़त उनको अयां होजावेगी।
उसी समय से उनके दिल में घनी हिमाक़त आवेगी ॥
तुम्हारी जां पर रक़ीब होंगे मौत तुम्हें तब भावेगी।
आग लगे सारे शरीर में फेर न बुझने पावेगी ॥

खून हुये इस तरह हज़ारों मरगये लाखों विष खाई।
इश्क की तह में छिपे हुये हैं ग़मों० ॥ ३ ॥

बदकारी का खिताब पाना तरह २ के ग़म खाना।
जीते हुये जलाना निजको शिक्षा भला नहीं पाना ॥

बेईमान बेदीन कहाना खुशी से दोज़ख में जाना।
है यह तुम्हें ग्रहण तो बेशक इश्क के कूचे में आना ॥

न हो यक़ीं बलदेव का तुमको तो बेशक लो अज़माई।
इश्क की तह में छिपे हुए हैं ग़मों० ॥ ४ ॥

भजन ४८०

जब से वेश्या लगी प्यारी, तब से होगये भ्रष्टाचारी।
वेश्या को द्रव्य लुटाया, कहीं घरभी रिहन कराया जी।
हुई बहुतों की डिगरी जारी ॥ तब से० ॥
कड़े छड़े झूमर गढ़वाई, दिये नाना वस्त्र सिलाई जी।
घर में माता बैठी उघारी ॥ तब से० ॥
मदिरा से प्रीति लगाई, बकरों की नारि कटाई जी।
लीन्हीं गोहत्या शिर भारी ॥ तब से० ॥
धन योवन धर्म गँवाया, हाथ रोग आतिशक आया जी।
दवा रो २ करे घर नारी ॥ तब से० ॥
सब कुल की लाज गँवाई, बेशर्मी की करी कमाई जी।
देख हँसते सब नर-नारी ॥ तब से० ॥

तुव वीर्य्य से कन्या हो भाई, लाखों बनेंगे तेरे जमाई जी।
कैसा मित्र गई मति मारी ॥ तब से० ॥
कहै तुलसीराम सुभाई, तजो वेश्या को जल्दी भाई जी।
है कुलघातिन हत्यारी ॥ तब से० ॥

भजन ४८१

इस से रहना हुशियार तुम व्यभिचार बुरी बीमारी ॥
वीर्य एक अनमोल चीज़ है, जवांमर्द बिन इसके हीज़ है।
इस बिन सारा तन मरीज़ है, आब उतर जाय सारी ॥व्य०१॥
सुज़ाक आतिशकका यह घर है, छीन प्रमेह का इसमें डर है।
आलस हरदम चेहरे पर है, तन रहता है भारी ॥ व्य० २ ॥
फ़िक्र सदा दिलपर रहतीहै, आंखनाक अकसर बहती है।
देह सदा पीड़ा सहती है, अक्ल जाय सब मारी ॥ व्य० ३ ॥
धन खोकर दारिद्री होना, पाप कमाना इज़्ज़त खोना।
जब औलाद न हो तब रोना, बनना भ्रष्टाचारी ॥ व्य० ४ ॥
घर की नारि नहीं मन भावे, भुतनी और चुड़ैल कहावे।
बाहर वाली अधिक सुहावे, देवे लाखों गारी ॥ व्य० ५ ॥
वृथा वीर्य अपना मत खोओ खेत में औरों के मत बोओ।
सेज पराई पर मत सोओ, नहीं होयगी ख्वारी ॥ व्य० ६ ॥
ब्रह्मचर्यसा व्रत जगमाहीं, शीतलप्रसाद और कोई नाहीं।
जो या व्रतहि ओर निबाहीं, सोई स्वर्ग अधिकारी ॥ व्य० ७ ॥

भजन ४८२

दोहा—कर २ वेश्या गमन को, बिगड़ जात सब काज।
डूब मरे ना कुयें में, खोके कुल की लाज॥

ख़्याल।

खोके कुल की लाज अधरमी रंडीबाज़ी करते हैं।
बेदशास्त्रअरुन्याय नीति तज ईश्वर से नहीं डरते हैं॥
नंग फ़क़ीर होय धन खोकर दुर्गति होकर मरते हैं।
खेडू का चेला कहे घीसा ध्यान प्रभू का धरते हैं।
टेक-लानत है रंडीबाज़ी आफ़त पड़ जाय अख़ीर में।
एक छोड़कर अनेक करना, वेश्या बन परधन को हरना।
खोटा कर्म होयगा भरना, लिखा हुआ तक़दीर में।
चाहे पण्डित हो या काज़ी॥ ला०॥
गणिका की संगति पाते हैं, सो नर दोज़ख में जाते हैं।
धन यौवन खो पछताते हैं, व्यापे रोग शरीर में।
मानें ना कपटी पाजी॥ ला०॥
सब ऐबों से बुरी है रंडी, धर्म हरन की धुरी है रंडी।
गल काटन की छुरी है रंडी, जैसे धार शमशीर में।
कटने से होते राज़ी॥ ला०॥
जो गणिका से प्रीति करें हैं, अपने कुल को दोष धरे हैं।
डूब कुयें में नहीं मरे हैं, बिंधे इश्क के तीर में।
घीसा की कथना ताज़ी॥ ला०॥

लावनी ४८३

ब्याह आदि मंगल कामों में वेश्या बुला नचाते हैं।
धर्म कर्म जो नष्ट करे उसे मँगलामुखी बताते हैं॥
सन्तानों को जो सजा २ कर महफिल में ले जाते हैं।
गोया बनकर गुरु आप उनको व्यभिचार सिखाते हैं॥
बच्चों के हाथों से द्रव्य वह रंडी को दिलवाते हैं।
दान पुण्य में देते न कौड़ी वैसे लाखों लुटाते हैं॥
रण्डी का सुनने को राग वह बड़ी खुशी से जाते हैं।
कहे मुरारीलाल वेदवाणी से मुंह दबकाते हैं॥

भजन ४८४

तज उत्तम घरकी नारी, रण्डी से चित्त लगाते॥ टेक
ऐसे पापी बहुत अधर्मी, छाई इन पर क्या बेशर्मी।
धन दे मोल खरीदें गर्मी, हयादार बीमारी॥
फिरें टहनी नीम हिलाते॥ रण्डी० १॥
निज घर में जावें गुर्राते, रण्डी के घर सजकर जाते।
लाखों उनकी गाली खाते, फिर भी ताबेदारी॥
करें ज़रा नहीं शर्माते॥ रण्डी० २॥
घर त्रिया को दिया न धेला, रंडी के घर सभी ढकेला।
विषय भोग कर होगया पीला, आई मरने की बारी॥
फिर दवा मँगा कर खाते॥ रण्डी० ३॥

है धिक्कार ऐसे पुरुषों पर, जिनकी रहतीं नारि दुखी घर।
पैदा होते ही गए न क्यों मर, कहता यही मुरारी ॥
आगे को दुःख न पाते ॥ रण्डी० ४ ॥

भजन ४८५

होत बर्बाद घर रण्डी बाज़ी से ॥ टेक ॥
अपनी नारी को छोड़ा, रण्डी से नाता जोड़ा।
घर में किया फ़िसाद ॥ घर० ॥
कैसे थे बड़े तुम्हारे, इन पापों से बचने हारे।
जिनकी हो औलाद ॥ घर० ॥
क्यों उनका नाम डुबोया, सारी इज़्ज़त को खोया।
तजी कुल की मर्याद ॥ घर० ॥
लाखों की बिके ज़िमींदारे, फिरते हैं दर दर मारे।
नहीं जिनकी तादाद ॥ घर० ॥
पहिले तो माल धन सारा, रण्डी के ऊपर वारा।
रोवे फिर कर २ याद ॥ घर० ॥
जब माया दौलत छीनी, बदले में आतशक दीनी।
लो देखो इसका स्वाद ॥ घर० ॥
रण्डी ने मज़ा चखाया, गर्मी ने आन दबाया।
निकलने लगा मवाद ॥ घर० ॥
कहे वासुदेव यह रण्डी, है महादुखों की मण्डी।
करें कहां तक बकवाद ॥ घर० ॥

भजन ४८६

सारी इज़्ज़त मिलगई धूल में नर होगये वेश्यागामी ॥
कल जो घर हाथी नशीन थे, घोड़े पर सोने के ज़ीन थे।
ज़र्क़ बर्क़ जिनके कमीन थे, वह भी फँसे ताबूत में।
ज़र घर की करके तमामी ॥ नर० १ ॥
वेश्या का जब मान बढ़ाया, घर से पतिव्रत धर्म नशाया।
राज बुरे रोगों का आया, इस वेश्या की करतूत से ॥
नामी घर होगये बामी ॥ नर० २ ॥
विद्याहीन विप्र हुये सारे, निर्धन वैश्य बहुत कर डारे।
क्षत्रिय तो बिलकुलही बिगारे, तेज नहीं कलबूत में ॥
सिंहों ने करा ग़ुलामी ॥ नर० ३ ॥
वेश्या से जब प्रीति लगाई, लोक लाज सब खोय गँवाई।
ज्यों श्वानों बिच श्वानी आई, यह गति बाप और पूत में।
होगई औलाद हरामी ॥ नर० ४ ॥

भजन ४८७

इस वेश्या विष की बेल ने, सारा सुख सम्पति खोया है।
ज़रा सुनो लगाकर कान हाल कहूँ सारा।
इस वेश्या से जितना कुछ हरज तुम्हारा।
उठे जब तबले की घोर बजे है नक़्क़ारा।
सुन सारंगी की लहर आये सारा ॥

जब छुम छुम क़दम उठावे, चले क़दम क़दम बल खावे।
जब तिरछी नज़र घुमावे, सब की सुध बुध बिसरावे॥

झूलना।

सब की सुध बुध बिसरावे, महफ़िल कामरूप होजावे। फिर घरबार ज़रा नहीं भावे सुन सुन पायल की झनकार है॥ है जोबन बांका नई उमर की, है पोशाक जड़ाऊ ज़र की। जिसकी पेशानी पर सुर्ख़ी, सुर्ख़ी मायल दो रुख़सार हैं॥

सुर्ख़ी मायल दो रुख़सार, जड़ाऊ हार बना सगार। केश तर करके तेल फ़ुलेल से। व्यभिचार बीज बोया है॥सा० १॥

जब लगे तान की गांसी सुध बिसरावे।
तज कर्म धर्म वेश्या की शरण में आवे॥
जब नैनों के वानों से जिगर छिद जावे।
फिर निज नारी से प्रीति ज़रा नहीं भावे॥

जा वेश्या के घर सोवे, तन मन धन तीनों खोवे।
यह बीज दुखों का बोवे, तन सड़ जाय है फिर रोवे॥

झूलना।

अब तन सड़ा लुटा घर सारा, मूरख फिरता मारा मारा। वह भी करगई आज किनारा, तेरा जिस रण्डी से प्यार है॥ जो कोई देख दुख पावे, न सुत मित्र पास बिठलावे। रोवे शर्म ज़रा नहिं आवे, ऐसे जीने पर धिक्कार है॥

ऐसे जीने पर धिक्कार, है बारम्बार, अरे बदकार। बता दे इस रंडी के मेल से, कितने दिन सुख सोया है॥सा० २॥

सुन निज नारी का हाल नित्य रोती है।
मुखड़े को आंसू बहा बहा धोती है॥
जब उठ विरह की आग प्राण खोती है।
या उसी विरह में रंडी जो होती है॥

वह तिरिया ख़ास तुम्हारी, थी जो प्राणों से प्यारी।
बन बैठी है बाज़ारी, तज लाज धर्म हा सारी॥

झूलना।

इससे क्या शोक तमाम, करती हैं यह बदकार हराम। हुये फिर उससे अहिले हराम, तुम्हारा दुश्मन जो ख़ूंख्वार है॥ हमको एक अचरज है भारा, रंडी से पैदा होने हारा। यह सब खेत और बीज तुम्हारा, तुमको खाने को तैयार है॥

तुम्हें खाने को तैयार, है बारम्बार, ये हैं बदख्वार। फिर इनके दुखदायक जल से, फो बचे दुःख ढोया है॥ सा० ३॥

मैं किस विधि इस दुखड़े का हाल सुनाऊँ।
है महा विपत की खान कहां तक गाऊँ॥
कर जोड़ २ के मित्र! तुम्हें समझाऊँ।
तजो इस वेश्या की रीति प्रीति समझाऊँ॥

मत वेश्या नाच कराओ, जो ऋषि सन्तान कहाओ।
अब तो इससे बच जाओ, मत गो हिंसा करवाओ॥

झूलना ।

धन तुम्हारा वह लेजावे, फिर उस धन से गऊ मँगावे ।
लाके कुर्बानी करवावै, फौरन देती छुरी चलाय है ॥
तुम्हें ज़रा रहिम नहीं आवे, वह तो हाय २ डकरावे ।
तुमको ज़रा शर्म नहीं आवै, अरे रंडी बिन कैसा ब्याह है ॥
करो अब भी ज़रा विचार, सभी नर नार, हो चुका ख्वार ।
तेजसिंह भारत इस बदफेल से, भर २ आंसू रोया है ॥ला०४॥

ग़ज़ल ४८८

हया और शर्म तजि रण्डी सरे महफ़िल नचाई है ।
न समझो इस में कुछ इज्जत सरासर बेहयाई है ॥ १ ॥
निगाह बद से देखें बाप बेटा और भाई सब ।
कहो यह मां हुई भाभी बहू अथवा लुगाई है ॥ २ ॥
दिखाकर नाच औ रुपया नज़र उनसे दिला करके ।
अरे अन्यायी बच्चों को क्या शिक्षा दिलाई है ॥ ३ ॥
लखें कोठों झरोखों से तुम्हारे घर की सब नारी ।
असर क्या नेक उन के दिल में पैदा होता भाई है ॥४॥
ये खातिर देख उसकी सब के दिल में आग लगती है ।
हैं आपस में ये कहतीं वाह क्या उम्दा कमाई है ॥ ५ ॥
कभी बिछुवे न नथ वाली हमें स्वामी ने बनवाई ।
मगर इस बेवफ़ा औरत को दी सारी कमाई है ॥ ६ ॥

करें हम रात दिन घर के हज़ारों काम तिस पर भी ।
बिना बिगड़े हुये कुछ काम जूती लात खाई है ॥ ७ ॥
हुई खातिर कभी ऐसी न जैसी इस की होती है ।
बनी बेगम पड़ी दिन रात तोड़ चारपाई है ॥ ८ ॥
किया है ध्यान मन में कुछ ? कि जो धन इसको देते हैं ।
कटेंगी इस से गो माता यह धन लेता क़साई है ॥ ९ ॥
अरज़ यह शिवनरायण जोड़ के कर तुमसे करता है ।
कुरीती छोड़ दो प्यारो ! इसी में अब भलाई है ॥ १० ॥

भजन ४८९

वेश्या तो दुखकी भूल है, भूले से पास न जाओ ।

धन बल वीर्य नशावे नर का, रस्ता यही भुलावे घरका ।
रोग न कमती हो फिर सरका, सारी इज्जत धूल है ॥
इस बला को दूर हटाओ ॥ भूले० १ ॥

सुन्दर रूप कुरूप बनावे, दिन २ दूना विषय बढ़ावे ।
ज्वारी चोर का लक़ब दिलावे, वेद शास्त्र प्रतिकूल है ॥
मत सत्य मार्ग बिसराओ ॥ भूले० २ ॥

पिता पुत्र गुरु शिष्य के नाते पास २ बैठे दिखलाते ।
बेशर्मी का सबक़ पढ़ाते, इसका नाम फिज़ूल है ॥
मित्रो दिल में शरमाओ ॥ भूले० ३ ॥

जितने फ़ायदे इसके जानो, वे सबही दुखमूल बखानो ।
इतनी समझ नहीं दीवानो, क्या न तुम्हारी भूल है ॥

शुभ औसर में बुलवाओ ॥ भूले० ४ ॥
नारि दुखे दुखी हो पितु माता, धर्म भी सब मिट जाता।
पाठक यह पूरी दुखदाता, मेरे जान तो शूल है ॥
बस इस से प्राण बचाओ ॥ भूले० ५ ॥

भजन ४९०

फ़ायदे सुनो हजार, रंडी नचवाने के ।
औलाद न बूढ़ी होवे, यौवन में छुट्टी होवे।
हो रोगन भरमार ॥ १ ॥
फिर चोर न डाकू आवें, आवें तो क्या ले जावें।
मित्रो करो बिचार ॥ १ ॥
नाती पोते नहिं मरते, यानी जन्म न धारण करते।
होय कुल बंटाधार ॥ ३ ॥
स्त्री गण शिक्षा पावें, अरु बाजारी हो जावें।
रहें फिर खुद मुख्त्यार ॥४॥
वैद्योंको घर बुलवावें, उन्हें धन का लाभ करावें।
प्रमेहादिक विस्तार ॥ ५ ॥
पीरों को जाय मनावें, बकरे भी भेंट चढ़ावें।
पीर हों खुशी अपार ॥ ६ ॥
जब वेश्या धन को पावें, बूचड़ फूले नहीं समावें।
खुशी होते हैं कलार ॥ ७ ॥

कहता होके मतवाला, ऐसे वह बेटे वाला।
खर्च नहीं बारम्बार ॥ ८ ॥
फिर क़र्ज़ ब्याह के भाई, सारी सम्पति मिलजाई।
गिनो मत जइयो हार ॥ ९ ॥
सुन जगन ये बात हमारी, लत वेश्या की है भारी।
बचो पाठक हर बार ॥ १० ॥

भजन ४९१

सुनियो ज़रा गौर से यार, दिल रंडी से लगाने वाले।
यहां थे ऐसे बड़े तुम्हार, जिन्होंने लखी न दूसर नार,
उन के ऐसे तुम औतार, धन रंडी पै लुटाने वाले ॥ १ ॥
जब तुम होजाओ नाकार, रंडी नहिं करने की प्यार,
तुमको घरसे देगी ललार, जिसपर फिरते हो मतवाले ॥ २ ॥
जब हो गरमी का आज़ार, रस्ता होजाय आर से पार।
रंडी तब होके बेज़ार, तेरी सूरत से नाक चढ़ाले ॥ ३ ॥
आखिर जाओ नारि के द्वार, उस पै क्रोध करोगे अपार,
मरहम करवाओ तैयार, मन में शर्म न लाने वाले ॥ ४ ॥
कहता रामप्रसाद पुकार, मत फैलाओ तुम व्यभिचार,
सहनी होगी दुखोंकीमार, होंगे आख़िरको मुंहकाले ॥ ५ ॥

भजन ४९२ .

सूझत नहीं निपट अनारी को।

उलट काम करें निशिवासर फिर ललचे सुख भारी को ॥ १ ॥
पीछे हटे सुजन संगति से नाच में बढ़त अगारी को ॥ २ ॥
दया धर्म को नाम न जानें करत रोज़ खूं ख्वारी को ॥ ३ ॥
दुखी दीन को देत न कौड़ी मारन उठत भिखारी को ॥ ४ ॥
झोरी भरि २ देयँ नाच में निज वेश्या महतारी को ॥ ५ ॥
व्याह काज में उसे बुलावें रथ भेजें असवारी को ॥ ६ ॥
अपढ़ पुरोहित हाज़िर करदिये उसकी खिदमतगारी को ॥ ७ ॥
रंडी भडुवे खांय मलाई भुसी मिले घरवारी को ॥ ८ ॥
पतिव्रतन को धर्म बिगारें भरि २ स्वांग पुजारी को ॥ ९ ॥
बगुला भक्त बन्यो ऊपर से मन में चहत चमारी को ॥ १० ॥
धर्म्मसभा को बन्यो है सभासद तकत फिरै पर नारी को ॥११॥
मांस खाय और मदिरा पीवें धरि के वेश अचारी को ॥ १२॥
कुटिल कुकर्म करत निशिवासर बेटा बनो तिवारी को ॥१३॥
पक्षपात में पगो रात दिन धरे मुकुट सरदारी को ॥ १४ ॥
बदलत समय रंग नित नये २ क्यों नहिं तजत खुमारी को ॥ १५ ॥
चौपट भयो यह भारत तहूँ न तजत बदकारी को ॥ १६ ॥
फेर बकत बलदेव वृथा क्यों सुनत न बात तुम्हारी को ॥१७॥

भजन ४९३

मत वेश्या के फन्दे में आओ जी ।

लाखों हज़ारों घर दीपक बुझे हैं, नालिश न्यारी, डिगरी जारी, गहने घर नीलाम की त्यारी हा ! । १ ॥

लाखों हज़ारों घर रोगी पड़े हैं, नीम की टहनी हो गई लहनी, पूरी आफ़त पड़ती सहनी हा ! ॥ २ ॥

कितने तो गरमी से फूंक पड़े हैं, तेल खटाई मिर्च मिठाई, खावें तो कम्बख्ती आई हा ! ॥ ३ ॥

कितनों के फूटे तालु होगये जुज़ामी, चाची ताई, बहना भाई, पास न आये घरकी लुगाई हा ! ॥ ४ ॥

घरकी वह नारी जिसने खाई सौ २ गारी; धो २ ज़ख्म करती मरहम, शर्म नहीं पर करते हो तुम हा ! ॥ ५ ॥

तुम्हारे बीरज से वहां कन्या जो जन्मे, बनके वेश्या, करेगी पेशा, तुमको नहीं है तनक अंदेशा हा ! ॥ ६ ॥

पाठक कहे मित्र अब कुछ चेतो, धनको बचाओ, इज़्ज़त पाओ, भूल कभी वेश्या के न जाओ हा ! ॥ ७ ॥

भजन ४९४

मानो २ नसीहत हमारी रे ।
शैर-चाल कम उम्र की शादी की जग में फैला दी ।
खेलते और कूदते, करके रांड बैठा दी ।
कैसे काटे उमरिया बेचारीरे ॥ मानो० ॥
सच्चा जगदीश भूल गये, अवतार लिये मान ।
प्राणायाम सन्ध्या छोड़कर घण्टा लगे हिलान ।
फिर स्वर्ग की करते तयारीरे ॥ मानो० ॥

खुशी व ब्याह काज में रण्डी नचाओ मत।
चित ध्यान करके देखलो लगती ये बुरी लत।
आखिर बिगड़े औकात तुम्हारीरे ॥ मानो० ॥
कहे नगन धर ध्यान वक्त अनमोल को न दीजिये।
छोड़ नाहक के बखेड़े शरण प्रभु की लीजिये।
आसान होवेगी मंज़िल तुम्हारीरे ॥ मानो० ॥

भजन ४९५

हैं रंडी मांसाहारी, इनका नाच करादो बन्द!
लाखों घर बिगड़े भाई। हो गई है धन की छाई!
कितनों ने साख गंवाई। पेला है फन्द फन्द फन्द। हैं०॥
कोई सुनकर बना तबलची। कोई जाकर हुआ चिलमची।
दल्लाल बने हैं मशालची। कामी अन्ध अन्ध अन्ध॥ हैं०॥
वेश्या जो धन ले जावें। बकरे गौ आदी कटावें।
फिर पीछे मद्य मंगावें। वे मतिमन्द मन्द मन्द। हैं०॥
कितने चकले में रोते। दुख में खाते हैं गोते।
हा! हा!! क्यों ग़ाफिल होते पाठक वृन्द वृन्द वृन्द॥ हैं०॥

भजन ४९६

डूबे जाते हो क्यों यार दिल रंडी से लगाने वाले॥
पहले करती रंडी प्यार, लेती धन सम्पति सब टार।
पीछे धक्के देती मार मुफ्ती माल लुटाने वाले॥ १॥

जब नहीं रहती धनकी आस, रंडी फिर नहीं आती पास।
करती तुमको अधिक निराश, कुढ़ २ दुःख उठाने वाले॥ २॥
फिर तुम जाते उसके द्वार, देती वह तुम को फटकार।
कहती हट भँडुवे बदकार, जूती लात के खाने वाले॥ ३॥
आखिर देते धर्म गँवाय, तुमको ज़रा शर्म नहीं आय।
करते खिदमत खूब बनाय, लोटा चिलम उठाने वाले॥ ४॥
होते रोग कठिन अधिकाय, होवे काम शरीर बनाय।
जिससे सन्तति जाय नशाय, कुलका नाम मिटानेवाले॥ ५॥
जब तुम देते नार बिसार, उस पर पड़े काम की मार।
तब वह करती है व्यभिचार, जग में हँसी कराने वाले॥ ६॥
रण्डी है औगुन की खान, उस को तुम लेना पहचान।
जिस से कभी न होवे हानि, अपना धर्म बचाने वाले॥ ७॥
कहता राधाशरण पुकार, इस से खूब रहो हुशियार।
जिस से पाओ सुक्ख अपार, भारत वर्ष के रहने वाले॥ ८॥

दादरा ४९७

मत रण्डी का नाच कराओरे, मानो बात हमारी।
सन्तानों को नाच दिखाकर क्यों व्यभिचार सिखाओरे।
यह तो पाप है भारी॥ मत०॥
बेटों पोतों को गोद बिठाकर रण्डी का नाच दिखाओरे।
सिखाओ बदकारी॥ मत०॥
काम दृष्टि से मोहित होकर उस पर नज़र घुमाओरे।
बनो फिर व्यभिचारी॥ मत०॥

एक जगह पर बाप और बेटे। बैठ के नैन लड़ाओरे।
कैसा अनर्थ भारी ॥ मत० ॥
रण्डी को धन देदे करके। नाहक गौवें कटाओरे।
जो हैं पालन हारी ॥ मत० ॥
देखो प्रान किल्यर में जाकर। फिर दिल में शर्माओरे।
तुम चोटा धारी ॥ मत० ॥
दीन अनाथ मरें हैं भूखे, तुम यूं नाच कराओरे।
कहां धर्म बिसारी ॥ मत० ॥
मानो सालिगराम का कहना। धर्म उपदेश कराओरे।
जो है अति शुभकारी ॥ मत० ॥

दादारा ४६८

सइयां न ऐसी नचाओ पतुरियां।

गाने पै रीझो बजाने पै रीझो, बन्दी की छाती में छेदो न छुरियां ॥ सैं० ॥
पापों की पूंजी पचैगी न प्यारे। खाते फिरोगे हकीमों की पुड़ियां ॥ सैं० ॥
डोलोगे डाली डुलाते डुलाते। हाथों में पूरी न होंगी अँगुरियां ॥ सैं० ॥
जो हाय शंकर दया होगी ऐसी तो मेरी कैसे बचाओगे चुरियां ॥ सैयां० ॥

भजन ४६९

ऐ जेण्टिल मैनो! देखो थेटर हाय! हाय!! हाय!!!।
तुमको कुछ खबर नहीं है। क्या हानी पहुँच रही है।
लाखों घर खाक भये हैं। देखो जाय जाय जाय ॥
वहँ लौंडे नाचन आवें। अरु जब बहु रूप बनावें।
जग में व्यभिचार बढ़ावें। स्वर से गाय गाय गाय ॥
पौडर से वे बदसूरत। बनजाते हैं खूबसूरत।
बसजाय मोहनी मूरत। घूरो जाय जाय जाय ॥
पाठक तुम होश में आओ। मत झूठे रूप लुभाओ।
धन धर्म के हेतु लगाओ। घर से लाय लाय लाय ॥

❀ १९ प्रायश्चित्त-विषय ❀

भजन ५००

शेर-वेद के अनुयाइयो, भारत सपूतो सज्जनो!
है निवेदन आप की, सेवा में दिल देके सुनो ॥
आप के कितने ही भाई, आप से जो जुदा हुये।
उनको सीने से लगाओ जोकि तुम पर फ़िदा हुये॥
क़हर के अय्याम में जो कुछ हुआ सो हो गया।
रह गया उसको सम्भालो, खो गया सो खो गया ॥
गौर से सोचो तो कुछ भी है नहीं उनका क़सूर।

गर्दिशे अय्याम में आता है अक्लों में फ़ितूर ॥
रह नहीं सक्ती है कुल मर्यादा आपत काल में ।
फ़र्क़ हो जाता है कुल व्यवहार और सदाचार में ॥
अमन की हालत में उसको फिर सुधारा जाता है ।
धर्म शास्त्रों से वह प्रायश्चित्त पुकारा जाता है ॥
उस के करने में न तुम को जी चुराना चाहिये ।
कर्म वेद अनुकूल में अब दिल लगाना चाहिये ॥
अब उठो सोने में तुम को कई ज़माने हो गये ।
नींद ग़फ़लत में जो थे अपने बिगाने हो गये ॥
देखिये दुनिया में क्या २ हो रहा ज़रा ग़ौर से ।
लूटते रहज़न तुम्हारी क़ौम को चहुँ ओर से ॥
चूहड़े तक बन रहे क्रिश्चियन लाखों हिन्द में ।
क़हते में हो जाते हैं बेदीन लाखों हिन्द में ॥
तुम पड़े सोते हो लाखों छिन गये लख़ते जिगर ।
खोल दो आंख तुम्हारा ख्याल है मित्रो किधर ॥
बेख़बर तुम्हें देखकर दयानन्द तुम को जगा गये ।
धर्म की वेदी पै खन्जर लेखराम भी खा गये ॥
फिर भी इन वाक़ातसे सीखा न कुछ तुमने सबक़ ।
सोते तुम कब तक रहोगे खोल दो अब तो पलक़ ॥
टेक-भाइयों के मेल मिलाप से, कहो कैसे धर्म जाता है ।
नहीं गया धर्म चीनी सफ़ेद खाने से ।
नहीं गया धर्म कन्या के मरवाने से ॥

नहीं गया धर्म पर नारि के बहकाने से ।
व्यभिचार किये और हमलके गिरवाने से ॥
शैर-रण्डियों के इश्क में बदफ़ेल क्या २ नहिं किया ।
लब से लब को मिलाय पानी थूक तक उनका पिया ॥
आतिशक भी फूट निकली खून तक गंदा किया ।
इतने कुकर्म सब किये पर धर्म अपना नहिं दिया ॥
लिया मद्य मांस भी खाई । और शफ़ाख़ाने की दवाई ॥
दी झूठी लाखों गवाही । पर धर्म पै चोट न आई ॥
लिखे दस्तावेज़ नित झूठे, लोग बहु लूटे जात ले न छूटे ।
पेट भरा नित पाप से, कैसा अन्धेर खाता है ॥ कहो० १ ॥
नहीं गया धर्म लड़की के बेच खाने से ।
नहीं गया धर्म पर धन को लूट लाने से ॥
चोरी जारी छल फ़रेब फैलाने से ।
नहीं गया धर्म गौओं के कटवाने से ॥
शैर-पूजते मुर्दे मुसलमानों के हिन्दू सैकड़ों ।
देते क़बरों को झुकाते खाते हिन्दू सैकड़ों ॥
मोलवी मुल्लाओं के घर जाते हिन्दू सैकड़ों ।
बच्चों के मुँह में थुकाते हाय हिन्दू सैकड़ों ॥
पर जो कोई तुम्हारा भाई । किसी क़दर पेंच में आई ॥
हो गया यवन ईसाई । उसे लेने से धर्म नशाई ॥
यह कैसे पजब की बात, कही नहिं जात, सोच कर आत ।

कहो इन्साफ से, गर धर्म से कुछ नाता है ॥ कहो० २ ॥

मैं कहता हूँ कर जोड़ सुनो सब भाई ।
इस मूरखता ने तुमरी कुगत करवाई ॥
इस ना समझी ने तुम्हारे लाखों भाई ।
किये तुम से जुदा और दुशमन दिये बनाई ॥

शेर-देखिये ऐ मित्रो तवारीख़ हिन्दोस्तान की ।
सलतनत इसलाम में सब को पड़ी थी जान की ॥
था ज़माना क़हर का किसको ख़बर थी इमान की ।
दम लबों पर था न थी परवाह शौक़त शान की ॥

लाखों ही आप के भाई । दिये जबरन यवन बनाई ॥
वह गया वक़्त दुखदाई । उन्हें अब तो लेहु मिलाई ॥
उन्हें धर्म शास्त्र अनुसार, करो स्वीकार, ये बारम्बार ।
अर्ज़ है आप से, यही मारग सुखदाता है ॥ कहो० ३ ॥

जो भाई पतित हो जावे शरण में आवे ।
तो बिरादरी उसे शीघ्र ही शुद्ध करावे ॥
गर धर्म सभा इस कर्म से हाथ उठावे ।
तो सभा पतित हो जाय शास्त्र बतलावे ॥

शेर-आप के भाई पतित गर शुद्ध नहीं किये जायेंगे ।
क़ौम के दुश्मन बनेंगे तुम को ख़ूब सतायेंगे ॥
ग़ौर करके देखलो हम तुमको क्या समझायेंगे ।
क़ौम की गर्दन पर उनके सारे पाप भी आयेंगे ॥

इस मूरखता न तुम्हारी । मुर्दार क़ौम कर डारी ॥
अबहूं तो सोच बिचारी । बिगड़ी को लेउ सुधारी ॥
बलदेव कथन पर ध्यान, धरें विद्वान, बड़ा नुक़सान ।
हुआ इस पाप से, दिन २ दुख दिखलाता है ॥ कहो० ४ ॥

दादरा ५०१

बिछुड़े भाइयों को अब तो लगाओ गले ।

एक दिन क़हर भारत पर आया, ज़ोर मुसलमानों का छाया ।
मार २ कलमा पढ़ाया, लाखों बच्चे क्षत्राणियों के जिसमें जले ।
लाखों बच्चे भूखों के मारे, हुये जायें ईसाई बिचारे ।
हृदय न पिघले पत्थर तुम्हारे, गोद गैरों के लाल तुम्हारे पले ॥
अंग बहुत कट गया तुम्हारा, मुसलमान ईसाइयों द्वारा ।
अब भी न तुमने पलक उघारा, तुमसे ही लेकर के फूले फले ॥
बिन अपराध प्रिय भाई तुम्हारे, विपता में तुमसे हुये न्यारे ।
हृदय लगाओ बनाओ प्यारे, कहे हरदत्त जबही ये नैया चले ॥

भजन ५०२

बिछुड़ों को गले लगाओ, नहिं पीछे पछताओगे ।
खाना खा पुत्र हुआ ईसाई, माता की छाती भर आई ।
रोटी खिलाती अलग बिठाई, क्यों न इलाज कराओ ॥
क्या पापी कहलाओगे ॥ नहिं० १ ॥
खर्च करो नहिं आमदनी हो, एक रोज़ बैठो निधनी हो ।

ग़लती तुम से यही घनी हो, शुद्धी सभा बनाओ ॥
धर्महु कहे जाओगे ॥ नहिं० २ ॥

कब तक थे जो तुम्हारे भाई, मुसलमान व यहां के ईसाई।
आज आनकर जो मिलजाई, क्यों नहिं आर्य बनाओ ॥
कब तक सोये जाओगे ॥ नहिं० ३ ॥

भूले हुओं को राह बताओ, बिछुरे हैं जो उन्हें मिलाओ।
गिरे हुओं को शीघ्र उठाओ, पाठक मान बढ़ाओ ॥
नहिं आगे दुख पाओगे ॥ नहिं० ४ ॥

भजन ५०२

एक भाई के लेने से हा ! हा !! जाता है ईमान ॥ टेक ॥
सोचो ज़रा गौर कर भाई। खाओ हो बाज़ारी मिठाई !
खांड दिसावर की डलवाई। हड्डी जिसकी जान ॥एक०१॥
सिगरेट पीते हैं सुलगाई। पियो शफ़ाखानों की दवाई।
जिसमें खरी शराब मिलाई। अक्ल है यहां हैरान ॥एक०२॥
रस गुड़ बूरा बताशा खाते। खील मली पैरों की मंगाते।
बिछुरे भाई क्यों न मिलाते। क्या छाया अज्ञान ॥एक०३॥
एक रुपैया पूरी मिठाई। इतने पर दो झूठी गवाही।
पाठक तजा धर्म हा ! भाई। कैसी पड़ गई बान ॥एक०४ ॥

भजन ५०४

आओ मिल बैठें सारे, हम एक मार्ग करें स्वीकार।

वेदों में ईश ने आज्ञा यही प्रचरी।
सब मिलो परस्पर प्रीति युक्त नर नारी ॥
जो धर्म बुद्धि पर तुले करो स्वीकारी।
जिससे सुख पावें दुख न होय संसारी ॥

कहि मुहम्मदी ईसाई। जैनी हिन्दू सम्प्रदाई।
लाखों मत लिये चलाई। वेदों से भिन्न दुखदाई ॥

कह आर्यसमाज पुकार, उदधि संसार, धर्म मझधार, शीघ्र
ये नाव लगालो पार, तुम सब हो हितू हमारे ॥ आ० १ ॥

इसमें नहिं मित्रो ! कुछ अपराध तुम्हारा।
महाभारत के पश्चात् बढ़ा अँधियारा ॥
विषयी क्षत्रिय हुये वैसाही धर्म प्रचारा।
विप्रों ने भी स्वार्थान्ध हृदय में धारा ॥

इन्द्रिय लोलुप हुये न भी; हुये वही प्रचारक स्वामी ॥
हुये बौद्ध जैन फिर नामी। मूसा ईसा इसलामी।

है वेद सनातन धर्म, जानकर धर्म करो शुभकर्म, मित्रो !
छल बल देहु बिसार, तुम हो सब भांति पियारे ॥ आ० २ ॥

कहा ऋषी दयानन्द ऊँचे स्वर से जागो।
सच बोलो धीरज धरो हिंसा त्यागो ॥
चोरी जारी को छोड़ धर्म में लागो।
वेदों को तज क्यों मृगतृष्णा में भागो ॥

है यही मार्ग सुखदाई। पट शास्त्र पढ़ो चित लाई

चौदह विद्या बतलाई। सारी इन में समुझाई॥
क्या अग्निबाण हथियार, रेल और तार, कलों के कार,
वेद में बरने कर विस्तार, विद्या विमान नभ तारे॥ आ० ३॥
वेदों का गौरव देश देश में छाया।
सब ने इन को विद्या की खानि ठहराया॥
इसी लिये हो उत्सव अरु गुरुकुल बनवाया।
सब पढ़ो सुनो बर बेद समय शुभ आया॥
जितने नर मनुज कहावें। ये सब ईश्वर को ध्यावें॥
सब मिलकर प्रीति बढ़ावें। अपने को आर्य कहलावें।
तज कर मिथ्या अभिमान, धरू ना मान, सकल सुख खान,
सभों से पाठक कहे पुकार, छोड़ो मत न्यारे २॥ आ० ४॥

❀ २० अनाथ-पुकार ❀

ग़ज़ल ५०५

ऋषी मुनियों के बालक दीनों ईमां खोते जाते हैं।
दया जगदीश कर महश के सामां होते जाते हैं॥ १॥
न भोजन है न कपड़ा है न है अब गोद माता की।
यह कहत हाय अम्मां! हाय अम्मां!! रोते जाते हैं॥२॥
गये मां बाप मर भूखों के मारे इन अनाथों के।
यह फ़ाक़ों से मसीहा और मुसल्मां होते जाते हैं॥ ३॥
हुए फ़ाक़ों से बेचारे नहीफ़ो नातवां ऐसे।

उठ उठ कर गिरें गिरें कर ये बेज़ां होते जाते हैं॥ ४॥
तेरी ये बेवफ़ाई क़ौम! जिस दम याद करते हैं।
तेरा मुँह तकते जाते हैं हिरासां होते जाते हैं॥ ५॥
सँभल अय क़ौम हो होशियार अबतो लेखबर इनकी।
तेरे नूरे नज़र नज़रों से पिन्हा होते जाते हैं॥ ६॥
कभी वहभी ज़माना था कि यह ग़ैरोंके मुहाफ़िज़ थे।
अब इन पर ग़ैर क़ौमोंके यह अहसां होते जाते हैं॥ ७॥
तरक्की धर्म की क्या खाक होगी उनसे पसे वक्त।
कि जिनके क़ौमी बच्चे भूक से जां खोत जाते है॥ ८॥

भजन ५०६

रोरो करें अनाथ पुकार भारत मान रखाने वाले।
हम हैं कई बहिन और भ्राता, भूखों मरते हैं दिनरात।
हमको छोड़ मरे पितु मात, तुम्हीं हो धीर धराने वाले॥
पेरी पेट के खातिर भाई, कितने होगये हैं ईसाई।
तुमको लाज ज़रा नहीं आई, ऋषि सन्तान कहाने वाले॥
कहां गये दयानन्द महराज, थापित कर दिये आर्य समाज।
बिगड़े सुधर गये सब काज, मर्षि पदवी पाने वाले॥
यहां थे हरिश्चन्द्र महिपाल, जिनको कंगालो का ख्याल।
देकर उनको धन और माल, मुनि की यज्ञ रचाने वाले॥
कभीरम की यही पुकार, घर घर धर्म घड़ा रख यार।
मुटकी आटे की दो डार, बन जाओ धर्म बचाने वाले॥

ग़ज़ल ५०७

मरे यह दीन जाते हैं बचा लोगे तो क्या होगा।
ये बोझा अपने सर पै गर उठा लोगे तो क्या होगा ॥ १ ॥
तुम्हारे ही तो बच्चे हैं ऋषी सन्तान के खूं हैं।
अगर इन को कलेजे से लगा लोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥
न पितु माता कोई सर पर न भाई बन्धु चाचा है।
रहम इन यामजदों पर तुम बढ़ा लोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥
हा! दुश्मन क़हतसाली ने है इनको तंग करडाला।
यवन ईसाई होने से हटा लोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥
ये गौहर लाल अपनी क़ौम के लुटते चले जाते।
निगाह मिहर से इन को रखा लोगे तो क्या होगा ॥ ५ ॥
रगों में खून ऋषियों का अगर रखते हो कुछ बाक़ी।
तो पालक बेकसों के तुम कहा लोगे तो क्या होगा ॥ ६ ॥
न भोजन खानेको मिलता न कपड़ा तन पै कुछ बाक़ी।
दया मासूम बच्चों पर जता लोगे तो क्या होगा ॥ ७ ॥
विनय ये है बटोही की मदद अब तो कुछ कर दीजे।
पतित जब धर्म से इनको करा लोगे तो क्या होगा ॥ ८ ॥

भजन ५०८

गये मात पिता हमें छोड़ हाय अब कौन बँधावे धीर।
फिरते हैं भटकते दर दर करे कौन लाड़ अब हम पर।

नहीं कोई हमारे सर पर। हाय यूँ फूट गई तक़दीर ॥गये०॥
रहने को नहीं ठिकाना। नहीं मिले पेट भर खाना।
अब तुमहीं हमें बताना। करें क्या जीवन की तदबीर ॥गये०॥
जब भूख और प्यास सतावे। और खान पान नहीं पावे।
तब बस यही पार बसावे। बहा देते आंखों से नीर ॥गये०॥
जब कभी बहुत दुख पावें। बस याद मात पितु आवें।
हम रोदन बहुत मचावें। खींच दिल में उनकी तसबीर ॥गये०॥
पर कुछ नहीं पार बसाती। रह जाते पीट कर छाती।
बस अब दुनिया में नाती। हमारे तुम हो आरजवीर ॥गये०॥
हो तुम्हीं पिता और माता। हो तुम्हीं बहिन और भ्राता।
नहीं और नज़र कोई आता। हरे जो दिलकी हमारेपीर ॥गये०॥
अच्छे कुल के हम जाये। पर विपति ने बहुत सताये।
यां शरण तुम्हारी आये। काटदो अब दुखकी जंजीर ॥गये०॥
अब धर्म और प्राण हमारे। हैं सब आधीन तुम्हारे।
इनकी रक्षा में प्यारे। कमर कस सालिग बन के वीर ॥गये०॥

भजन ५०९

तुमही हो मा बाप कोई और नहीं है।
तुम से अय आर्य पुरुषो, कहते हैं अपने दुखको। ज़रा कृपा करके सुनलो, नहीं सुनोगे तो कुछ हमारा ज़ोर नहीं है ॥तुम०॥
कभी हम भी थे राजदुलारे। मा बाप की आखों के तारे। अब

फिरते हैं मारे मारे, हमें रहने तक का ठौर नहीं है ॥ तुम० ॥ हमें ईसाई फुसलावें, हमारा वैदिक धर्म छुड़ावें। अपना मज़हब सिखलावें, कहें मुक्ति का और कोई तौर नहीं है ॥ तुम० ॥ हिंदुओं ने दया बिसारी, नहीं लेते खबर हमारी हमें समझें गैर अनारी, उन्हें दुख पर हमारे कुछ गौर नहीं है ॥ तुम० ॥ वह मुजरे नाच करावें, वहां धन को खूब लुटावें। हम भूखे रुदन मचावें, वहां दया धर्म का दौर नहीं है ॥ तुम० ॥ अब नहीं कोई और बँधाव, हमें भोजन बना खिलावे। कपड़े जूते पहनावे। बिपता का हमारी कोई और नहीं है ॥ तुम० ॥ हम बालक नन्हे तुम्हारे, फिरते हैं मारे मारे। नहीं रहा अब कोई हमारे, तुमहीं हो बस अब कोई और नहीं है ॥ तुम० ॥ कहे सालिग धर्म को पालो, म्हारे धर्म और प्राण बचालो। हमें पुत्रवत गले लगालो, कहां जांय जाने को ठौर नहीं है ॥ तुम० ॥

दादरा ५१०

देखो अनाथ यहां आये, हमें तो निराश न करो।
निराश न करो, निराश न करो।
तुम्हरी शरण में आये। हमें तो निराश० ॥ १ ॥
हा हमारी माता ने, माता ने।
भूख में गोदी से गिराये ॥ हमें तो० ॥ २ ॥
हा! वे कैसी रोती थीं, रोती थीं।
अन्न के रूख न पाए ॥ हमें तो० ३ ॥

हा! कि उस समय पेड़ों के, पेड़ों के।
छाल और पत्ते चबाये ॥ हमें तो० ४ ॥
हा! कि विपता पापिन ने, पापिन ने।
पानी बिना तड़पाये ॥ हमें तो नि० ५ ॥
हा! कि सम्बत् छप्पन ने छप्पन ने।
दर दर भीख मंगाये ॥ हमें तो० ६ ॥
हा! कि हम हैं सब बच्चे, सब बच्चे।
अच्छे कुलों के जाये ॥ हमें तो० ७ ॥
हो कि दाता धर्म करो धर्म करो।
पाठक ये रो रो सुनाय ॥ हमें तो निराश० ८ ॥

भजन ५११

सुनियें साहब ज़री, देश है अपना होता तबाह।
क़हत रूपी अग्नि के शोले उठते हैं हर आन।
जिसमें लाखों भाई हमारे होते हैं बेजान ॥ सु० ॥
देख देख इस आग के शोले जागे देश तमाम।
ना जाने पर भारत वासी सो रहे बद अंजाम ॥ सु० ॥
अन्य देशी जो उठे बुझाने जाहिर करके प्रीति।
रत्न रत्न वह लगे चुराने खोटी करके नीति ॥ सु० ॥
एक मुसाफिर रास्ते जाता कर गया है हुशियार।
देखो हालत देश अपने की ख्वाब से हो बेदार ॥ सु० ॥

जागो जागो जल्द बुझालो क्यों हो ला परवाह।
फैल गई तो सारे देशको कर देवेगी दाह ॥ सु० ॥
लाखों लड़के और लड़कियां ले गये क्रिश्चन लोग।
आंख नहीं पर खुली तुम्हारी भारी हमको शोक ॥ सु० ॥
पहले थे वह मित्र तुम्हारे अब हैं दुश्मन जान।
पहले रक्षक थे गौओं के अब हरते हैं प्रान ॥ सु० ॥
कौड़ी कौड़ी पैसा पैसा जमा करो हर आन।
जहां तलक हो दीन जनों के अर्पण करदो दान ॥ सु० ॥
बच जावे यह धर्म तुम्हारा छोड़ो सभी प्रमाद।
खन्ने की यह सत्य नसीहत करोगे पीछे याद ॥ सु० ॥

❀ २१ जुआरियों को शिक्षा ❀

भजन ५१२

प्रभु प्रीतम नहीं पहचाना, निशदिन खेल में रे।
पत्ते २ चमके महिमा उसको हाय न जाना।
आफ़ताब सा छिपे जगत में नहिं समझे दीवाना ॥ नि० १ ॥
दुग्गी तिग्गी चौग्गी जीती दहला और गुलाम।
बीबी बादशाह जीतन में इक्का है सरनाम ॥ नि० २ ॥
इक्का सब में अफ़सर होवे जिसका मतलब मेल।
तुम में फूट पड़ी आपस में कैसा खेलो खेल ॥ नि० ३ ॥
रंग बिरंगी बाज़ी जिसका नाम धरा है तास।

वह न सृष्टि का कर्त्ता जाना जिसका जगत उजास ॥ नि० ४ ॥
पाठक का यह सीख मानले क्यों फिरता नादान।
भला २ फिरै भटकता भज प्रभु का धर ध्यान ॥ नि० ५ ॥

भजन ५१३

जुआ बुरा है दुश्मन तुम्हारा।
चारों तरफ़ इसने अग्निया लगादई, तक ही दुआ चौक आ तीया।
लाखों का गुल कर रहा दिया हा! ॥१॥
छक्के छुटे इसके पंजे में आये, यह पौ बारह सत्तरह अठारह।
गहना अब क्या लुटगई दारा हा! ॥२॥
लाखों हवेली गहने धरा है मन में आया ताश उड़ाया।
काफ़तेन गंजिफ़ा जमाया हा! ॥ ३ ॥
लाखों ही इस ने गर्दन उड़ाई, चोरी जारी चुग़ली भारी।
इस ने ही फैलाई सारी हा! ॥ ४ ॥
देखो युधिष्ठिर ने खेला था जुआ, पांचों भाई बन २ जाई।
बारह वर्ष तक भरी तबाही हा! ॥ ५ ॥
ऐसे ही राजा नल खेले थे इसको, दास कहाये दुःख उठाये।
बारह वर्ष तक घर नहिं आये हा! ॥ ६ ॥
पाठक कहे मित्रो इज़्ज़त बचाओ, मेल बढ़ाओ खड्ग उठाओ।
इस दुश्मन को जल्द निकालो हा! ॥७॥

दादरा ५१४

(शतरंज)

हा ! हा गँवावे प्यारे समय तू, मिथ्या ईश्वर का नहीं ध्यानं ।
मात हो जावे पावे प्रभु को योग की चालों के द्वार ।
आवागमन बिच कैसे छुटे हा ! मनमाना शाह तुम्हार ॥हा०॥
इन्द्रियां घोड़े दौड़े जहां तहँ, फ़र्ज़ी जो है तेरो ज्ञान ।
थी तो बिसात पैदल की, पर चलता है फ़ील समान ॥हा०॥
क्यों शतरंज का झाड़ लगाया, भारी तो हो एक रंज ।
इस रुख सोच विचार के देखो, ये विषय कोट दो भंज ॥हा०॥
पाठक कहे देखो थोड़ा समय है, जाता है आवे न हाथ ।
है प्रभु है प्रभु नित्य रटा, यक धर्म ही जावेगा साथ॥ हा० ॥

भजन ५१५

दोहा-विषधर वानर रोगिया, ज्वारी लुच्ची नार ।
पाँचों की कुछ पत नहीं, छठवां झूठ लबार ॥
टेक-खेलन में नफ़ा नहीं है, पेशा बुरा ज्वांरी का ।
धर्म न्याय नृप नीति रहेना, शील दया सुख प्रीति रहेना ।
हार जीत कोई मीत रहेना । किसी खिलाड़ी का ।
पत किसी की नाहिं रही है ॥ खे० ॥
राज पाट धन वस्त्र हरादे । बेटा बेटी को पकड़ा दे ।

और के हाथ में हाथ गहा दे । अपनी नारी का ।
मैं सांची बात कही है ॥ खे० ॥

जीता ज्वारी भड़क बनावे । हारा खोटो पाप कमावे ।
माल बिगाना ठगठग लावे । चोरी जारी का ।
संगत भी सदा बही है ॥ खे० ॥

धर्म त्याग कर अधर्म करना । सत्पुरुषों कभी न बरना ।
घीसा कहे ध्यान उर धरना । कथन हमारी का ।
सत मत की डगर गही है ॥ खे० ॥

भजन ५१६

दोहा-राजा नल से हर गये, डिगे युधिष्ठिर भूप ।
सब प्रभुता घट जात है, जो नर खेलत जूप ॥
टेक-धिक्कार जुआ खेलन को, मत चाल चलो उत्पात की ।
धर्म से बढ़ परताप नहीं है, ओ३म् से बढ़ कोई जाप नहीं है ।
जुये से बढ़कर पाप नहीं है । ये आदत बदज़ात की ।
लानत उन गुरु खेलन को ॥ धि० ॥

जीता ज्वारी धन खोवेगा । हारा मूड़ पकड़ रोवेगा ।
विपत भरे ना सुख सोवेगा । नींद जाय दिनरात की ॥
दुखिया फ़ाफड़ खेलन को ॥ धि० ॥

गहन धरके बालक मारेंगे । छल चोरी पर चित धारेंगे ।
पर तिरियों पै हाथ डारेंगे । टूम तारने गात की ।

अमृत में विष मेलन को ॥ धि० ॥
सर्वस खोये हिर्स मिटे ना। हँसे वो रोये हिर्स मिटे ना।
नार विछोहे हिर्स मिटे ना। सुने न गुरु पितु मात की।
घीसा सब की झलन को ॥ धि० ॥

❀ २२ गौरक्षा-विषय ❀

ग़ज़ल ५१७

दिल में सोचें यह ज़रा मांस के खाने वाले।
जीव हिंसा से बचें सुख के बढ़ाने वाले ॥
तुमने खाया है अगर मांस तो किन पशुओं का।
जो है तुम्हें दूध मलाई के खिलाने वाले ॥
तुमने मारी है अगर जान तो किन जीवों की।
जो सदा बोझ तुम्हारा हैं उठाने वाले ॥
तुमने शक्ती जो दिखाई तो दिखाई ऐसी।
क़र दिये नष्ट पशू हल में चलाने वाले ॥
तुमने जानें हैं गँवाई तो गँवाई किन की।
आड़े वक्तों में जो हैं काम में आने वाले ॥
ऐसे जीवों को सदा मार गँवाया तुमने।
हैं जो दुनियां में पलाज़त को घटाने वाले ॥
हैं यह हक़ रखते सभी तेरी तरह जीने का।
जिनके हैं आप बने खून बहाने वाले ॥

जिनके जीने से हवा शुद्ध हो निर्मल पानी।
ऐसे जीवों के भी हो जान गँवाने वाले ॥
तुलसी उनको तो नहीं तुमने सताया हरगिज़।
जितने हिंसक हैं पशू तुमको सताने वाले ॥

ख़्याल ५१८

रो रो के कहती हैं गौवें सुन लो ऐ ज़ालिम सैयाद।
ज़ुल्म करो हो तुम नहीं सुनते दीनों की दुखमय फ़र्याद ॥

चौक १

मुख में हरदम घास हमारे तुमसे विनती करती हैं।
मरन बाद भी चमड़ा अपना भेट तुम्हारे करती हैं ॥
तुमको नहीं सताती रहतीं जंगल में हम चरती हैं।
दूध और घी नित दें तुमको फिर भी तुमसे डरती हैं ॥
जिनसे तुम नित अन्न कमाओ वह भी हमारी हैं औलाद। ज़ु०

चौक २

अपने दुख का नहिं हमको दुःख तुम्हारी हानी का।
बिना हमारे कठिन काटना समय तुम्हें ज़िंदगानी का ॥
बेटे तुल्य प्यार है हमको रैयत राजा रानी का।
कैसे बतावें ज्ञान नहीं है तुम्हें हमारी बानी का ॥
इस पर भी नहीं शर्म तुम्हें माता पुत्र से चाहे दाद। ज़ु० ॥

चौक ३

गऊ पै करते दया तो क्यों भारत से होता गारत राज ।
गऊ हत्या ने नष्ट कराया है देहली का तख्त और ताज ॥
इस दिन भारत से लगडन को कनक के भर २ जाय जहाज़ ।
गऊ न होगी कहां से फिर खाओगे तुम उत्तम यह नाज ॥
राजा और रैयत की भी भारत में गऊयें हैं बुनियाद । सु० ॥

चौक ४

पुत्र हमारे काम तुम्हारे करें धूप हो चाहे सरदी ।
खावें तड़ातड़ मार किन्तु करते हैं तुम्हारी हमदरदी ॥
तुम ऐसे बेवफ़ा गिराकर गर्दन पर है छुरी धरदी ।
नहीं हिलाते कान देखिये तुम उनकी यह जां मरदी ॥
नवलसिंह कहे समझ बूझलो नहिं हमको कुछ बाद विवाद । सु०

भजन ५१९

कहां गई ऋषियों की संतान, गऊ रात दिना चिल्लाती ।

भारत हुआ दया से खाली, जल गई वेद धर्म की डाली ।
अब ना रही ऋषी प्रणाली, किस पर रक्खूं मान ।
कोई नहीं विपति में साथी ॥ गऊ० १ ॥

जब से बसी मैं भारत देशा ऋषि मुनि रहे रखपाल हमेशा ।
दुख का कभी न देखा लेशा, था मेरा सम्मान । करूं याद
फटे मेरी छाती ॥ गऊ० २ ॥

आर्य पुत्र सब हुये अनारी, वेश्यागामी मांसाहारी । मेरी
जान पर चले कटारी, तुम्हारे भनक ना कान । मेरी कुली
मेट हुई जाती ॥ गऊ० ३ ॥

यदि यह गफ़लत रही तुम्हारी, खेती होना है दुशवारी ।
दयासिंह यों कहे पुकारी जाते कहां किसान हाय !! धर्म
डाल फटी जाती ॥ गऊ० ४ ॥

भजन ५२०

दीनों की आह ! फरियाद कोई सुनेगा ! या न सुनेगा !!

यह अक्ल तुम्हें क्या बुरी है, निज गला गले पर छुरी है ।
कहो बात भला या बुरी है ।
ओ ! बेरहिम सख्त जल्लाद, कोई सुनेगा या न० ॥ १ ॥

यह खिफ़त इनमें जाती है, खावे घास दूध देती हैं ।
यह तो बड़ाही दुख घाती है ।
जो इनको करे नाशाद, कोई सुनेगा या न० ॥ २ ॥

यही क़हतसाली का सबब है, ताऊन का भी यही ढब है ।
ईश्वर का क़हरो ग़ज़ब है ।
क्यों न होवे मुल्क बर्बाद कोई सुनेगा या न० ॥ ३ ॥

गर रही यही इखलाक़ी तुम हम में नाइत्तफ़ाक़ी ।
जो कुछ भी देश की है बाक़ी ।
मिट जायगी देखो बुनियाद, कोई सुनेगा या न० ॥ ४ ॥

ग़ज़ल ५२१

करें हैं मोहसन कुशी बिलाशक, तमाम गौवें सताने वाले।
उन्हीं की जो है बड़ी सहायक, हुये ये जालिम नशाने वाले॥
पियें उमर भरहैं दूध जिसका, हैं खाते मक्खन दही व मस्का।
ग़ज़ब है काटें गला उसी का, उसी का खूं हैं बहाने वाले॥
गऊ के जाये ही हल चलावें, गऊ के जाये ही अन्न कमावें।
जिन्हें कमाकर यह नित खिलावें, वही हैं इनके सताने वाले॥
गऊ के जाये ही दें सवारी, इन्हीं पै निर्भर है काश्तकारी।
इन्हीं की गर्दन पै हा कटारी, चलायें हड्डी चबाने वाले॥
भला है दुनिया में कौन ऐसा, करे जो उपकार गाय कैसा।
खिलाये मक्खन व खाय भूसा, व बैल दे हल चलानेवाले।
किसान भारत के आज सारे, हुये हैं मुफ़लिस बहुत बिचारे।
बिगड़ रहे हैं कर्ज के मारे, यह सब की रोज़ी कमाने वाले॥
कभी जो दशको था बैल आता, वह सौको भी अब नहींहै पाता
पकड़ के रोते हैं अपना माथा, तमाम खेती कराने वाले॥
गो कुशी की ही बदौलत, हुई जो दूध और घी की क़िल्लत।
बतादो आवे कहां से ताक़त, हैं सूखी रोटी के खाने वाले॥
करोड़हा ऐसे हैं यहां जन, जिन्हें नहीं होते घी के दर्शन।
हमेशा करते हैं खुश्क भोजन, शरीफ़ घरके कहाने वाले॥
मिले नहीं जिनको दूध और घी, बढ़े भला कैसे बल ओ बुद्धी।
नहीं समझते मगर कुबुद्धी, ये मांस से तन फुलाने वाले॥
गुनाह मोहसन कुशी सा यारो, नहीं है दीगर ज़रा विचारो।

भला करे जो उसी को मारो, हो कैसे अहसां भुलाने वाले॥
हिज़ूर पंचमजियार्ज आली, हो चूंकि भारत के आप वाली।
तुम्हारी इसने पनाह पाली, तुम्हीं हो इन के बचाने वाले॥
करो दया कर यह हुक्म जारी, न मारी जावें गऊ विचारी।
हुई है भारत प्रजा दुखारी, हैं आप दुख के हटाने वाले॥
किसी को सालिग हैं जोसताते, नहीं वह आराम खुदभी पाते।
हमेशा रहते हैं दुख उठाते, किसी के दिल को दुखाने वाले॥

भजन ५२२

दोहा-गोरक्षा कीजे सुजन, ये भारी उपकार।
इससे रक्षा जगतकी, पलता है संसार॥
टेक-दीनों पर दया करोरे, गौ माता कहै रँभाय के।
दूध दही और घी खाते हो। मावे तक से हर्षाते हो॥
बल बढ़ मोटे होजाते हो। बड़े बड़े सुख पायके॥
दुख सागर से तरोरे॥ दीनों०॥
गोवरसे चौके लगवालो। कंडोंको अग्निमें जलालो।
मूत्रसे उम्दा दवा बनालो। रोगों पर अजमाय के॥
मत मांस से पेट भरोरे॥ दीनों०॥
मरती बार चर्म देजावें। चर्स ढोल जूते बनवायें।
फिर भी हमपर तेग़ चलावें। न्याय नीति बिसराय के॥
ईश्वर से ज़रा डरोरे॥ दीनों०॥
सुत हमार हल कुँयेंमें चालें, मेवा मिठाई अन्न कमालें।

रंक राव प्रजा को पालें, अपना ज़ोर लगाय के॥
फिर भी क्यों प्राण हरोरे॥ दीनों० ॥
गाड़ी तोप रथों में चलते। राजों के भी काम निकलते।
फिरभी कुकर्म से ना टलते। मारत हो तड़पाय के॥
गले पर न छुरा धरोरे॥ दीनों० ॥
तृण घास को चरने वली। जगकी रचा करने वाली।
बिना खता से मरने वाली। वृथा मूड़ कटाय के॥
बिना मौत से यार मारोरे॥ दीनों० ॥
हे राजन्! मेरी अर्ज के ऊपर। कीजो गौर गरज़ के ऊपर।
घीसाराम फर्ज़ के ऊपर। गाता छन्द बनाय के॥
अधरम से अलग टरोरे॥ दीनों० ॥

❋ २३ मांस भक्षण निषेध ❋

गज़ल ५२३

कौन कहता है कि ज़ालिम को सज़ा मिलती नहीं।
नेक कामों की कहो किसको जज़ा मिलती नहीं॥ १॥
जुल्म करते हैं जो मसकीनों पै पाकर कुछ अरूज।
चन्दही दिन में वहां फिर वह हवा मिलती नहीं॥ २॥
ज़र पै हो मग़रूर गिन्ते हैं ज़माने को जो हेच।
एक दिन देखो को सूखी भी गिज़ा मीलती नहीं॥ ३॥
देख तकलीफ़ों में औरों को हँसा करते हैं जो।

पड़के खड्डे हैं उन्हें ढूंढे कज़ा मिलती नहीं॥ ४॥
सुख के पाने के लिये हो दास तू सबसे इक़रार।
इस से बढ़ के और तुझे कोई दवा मिलती नहीं॥५॥

लावनी ५२४

कहो क्या तुमने फल पाया, दीन पशु नाहक कटवाया।
दो०-आठ नरन पापी करत, यक नर मांसहि खाय।
धर्म शास्त्र पढ़ देखिये, मनू रहे बतलाय॥
पाप जग भर में फैलाया॥ दीन पशु० १॥
दो०-जिह्वा सों पानी पियत, जीव! मांस जे खात।
होत नुकील दंत नख, रैनिहु उन्हहिं लखात॥
प्राकृतिक नियम यही पाया॥ दीन पशु० २॥
दो०-मांसाहारी पशुन अस, नहिं शरीर तुव भ्रात।
बानर देह समान हो, बन्यो तुम्हो गात॥
मांस बानर ने कब खाया?॥ दीन पशु० ३॥
दो०-सुख पहुंचावत नित तुम्हें, बकरी भेड़रु गाय।
एसे उपयोगी पशुन, को तुम डारत खाय॥
पेट से मरघट शर्माया॥ दीन पशु० ४॥
दो०-दूध घीव की जड़हि पर, यदि करिहो तुम घात।
खाय कौन सी बस्तु को स्थिर रखि हो गात॥
मित्र ने ऐसा समझाया॥ दीन पशु० ५॥

लावनी ५२५

वेदों में बलिदान बता झूठा इलज़ाम लागते हैं।
ऋषियों के घर ज़िम्मे पाप वह खाके मज़े उड़ाते हैं॥
अपनासा नहीं समझें और को ज़रा तरस नहीं खाते हैं।
दुष्ट राक्षस जान उन्हें, जो मांस बिराना खाते हैं॥
अपने सुई का ज़ख्म होय तो बार २ चिल्लाते हैं।
पशु पर ले हथियार अधर्मी गला काटने जाते हैं॥
लाश तड़पती है उस की वह उल्टी ख़ुशी मनाते हैं।
कहे मुरारीलाल अन्त में जाय नरक दुख पाते हैं॥
जो है सब जग की माता, कैसे बच्चों को खावे ॥टेक॥
जिसको दुर्गा कहें भवानी, देवी चामुण्डा कर मानी।
नहीं उसे कुछ आये गिलानी, ज़रा नहीं शर्मावे॥
डाइन को तरस नहीं आता ॥ जो० १ ॥

मांगे भेंट बकरा और भैंसा, यह अपराध किया अब कैसा।
माता को नहीं चाहिये ऐसा, गला जो कटवावे॥
वह खड़ा २ डकराता ॥ जो० २ ॥

वाममार्ग का है यह झंडा, मर क्षत्रिय खावें सण्डा।
पुजा मूर्खों का है डंडा, क्यों न धर्म मिट जावे॥
औरों का मांस जो खाता ॥ जो० ३ ॥

हिंसा पाप लिखा अति भारी, इससे बचो सभी नरनारी।
मनुष्य वही जो कहे मुरारी, मन में दया जो लावे॥
प्रानी को नहीं सताता ।। जो० ४ ॥

भजन ५२६

देखो कर ध्यान मांस के खाने वालो ॥ टेक ॥
हा ! मनुष्य कहलाते हो, फिर भी तो मांस खाते हो।
न बस में हुई ज़ुबान ॥ मां० ॥

गर तुम्हें मांस खाना था, पशु पक्षी बन जाना था।
बने थे क्यों इन्सान ॥ मां० ॥

अन्मोल देह नर पाई, तज दया बने हैं क़साई।
मांस मदिरा लगे खान ॥ मां० ॥

हा ! ज़रा रहिम नहिं आया, दीनों को मार के खाया।
पेट किया क़बरस्तान ॥ मां० ॥

जब कांटा लगे तुम्हारे, भरते हो तब सिसकारे।
कहो हा ! निकली जान ॥ मां० ॥

दीनों पर छुरी चलावें, वहां ठकुराई जतलावें।
शेर लख हों हैरान ॥ मां० ॥

कोई अण्डे तक खाजावें, वह महा नीच कहलावें।
मूत्र मल लग गये खान ॥ मां० ॥

जो मनुज मांस खाते हैं, वह घातक कहलाते हैं।
मनू ने किया बयान ॥ मां० ॥

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी।
संस्कर्त्ता चोपहर्त्ता च खादकश्चेति घातकाः ॥ मनु० ॥

चौपाई।

लिखे मनु ने आठ कसाई * मनुस्मृती में देखो भाई।
प्रथम सलाह का देनेहारा * दूसर वह जिसने पशु मारा॥
तीजा अंग अलग कर देवे * चौथा वह है मोल जो लेवे।
पंचम मांस बेचने हारा * छटा मांस बनावन हारा॥
सप्तम मांस परोस खिलावे * अष्टम वह ही दुष्ट जो खावे।
वासुदेव कहे समझो भाई * क्यों राक्षस की पदवी पाई॥
कहे वासुदेव सुनो प्यारे। गर बने रहे हत्यारे। मिलेगा नर्क महान॥ मां०॥

भजन ५२७

अहिंसा परमो धर्मो अहिंसा परमं तपः।
अहिंसा परमं ज्ञानमहिंसा परमागतिः॥

टेक-दीनों पै दया बिसराय के, क्यों यारो! ग़ज़ब करते हो।
खग, मृग, मीन, विहंग विचारे, हैं उस परमेश्वर के प्यारे।
उन्हें मारि बनो क्यों हत्यारे, मांस पराया खाय के॥
अपना तोंदा भरते हो॥ क्यों० १॥

दूध दही घृत तुम्हें खिलावें, आप जाय बन में चरि आवें।
मरें तो तुम्हें चाम दे जावें, उन पर छुरी चलाय के॥
नहीं मालिक से डरते हो॥ क्यों० २॥

थे पुरखा धर्मज्ञ तुम्हारे, धर्म अहिंसा पालन हारे।
तिन के तुम उपजे हत्यारे, पेट को क़बर बनाय के॥
पशु मारि मारि भरते हो॥ क्यों० ३॥

दया मनुष्य का परम धर्म है, उसे त्यागना दुष्ट कर्म है।
जरा न तुम को इस की शर्म है, वृथा मनुज कहाय के॥
राक्षस का रूप धरते हो॥ क्यों० ४॥

अपने पुत्र की कुशल मनाओ, पूत पराये नित मरवाओ।
कुछ तो खौफ़ मालिक का खाओ, किस धोके में आय के॥
पशुओं के प्राण हरते हो॥ क्यों० ५॥

जगदम्बा जिसको बतलाते, उसका पूत उसपर कटवाते।
खुश होते निज कुशल मनाते, ऐसे निपट बौराय के॥
फिर रो रो कर मरते हो॥ क्यों० ६॥

यह जग है ईश्वर का प्यारो, बेक़सूर मत किसी को मारो।
शुभचिन्तक बलदेव तुम्हारो, उस को मित्र भुलाय के॥
बड़ी विपति बीच पड़ते हो॥ क्यों० ७॥

भजन ५२८

दोहा-तुम्हरे जिह्वा स्वाद से, जात पशुन के प्रान।
कैसा होत अन्याय यह, समझो सभ्य सुजान॥
टेक-दीन पशुओं को यार, कब तक मरवाओगे।
ये यौवन और जवानी, है दो दिन की मिहमानी।
जाओगे यहां से पधार, तब क्या इठलाओगे॥दी०॥

दुनियां ये चंदरोज़ा है, करो जुल्म सितम जो चाहे।
किया सन्तों ने बिचार, करोगे सोई पाओगे ॥ दी० ॥
बहु न्याय की बातें बनाते, औरों पर छुरी चलाते।
बने फिरते हैं सरदार, ज़मी में घुस जाओगे ॥ दी० ॥
तजके घृत दूध मलाई, रहे हाड़ और मांस चबाई।
बुद्धि पर पड़े अँगार, यम की मार खाओगे ॥ दी० ॥
तुम मांस और का खाते, अरु अपना मांस बढ़ाते।
बने फिरते खूंख्वार, पीछे पछताओगे ॥ दी० ॥
बलदेव कहे सुनो भाई, कुछ करलो धर्म कमाई।
ज़िन्दगी है दिन चार, होश में कब आओगे ॥ दी० ॥

ग़ज़ल ५२९

जुल्म करना छोड़ दे ज़ालिम खुदा के वास्ते।
है यह हरकत नारवां अहले वफ़ा के वास्ते ॥
हैं बनाये सब उसी के जिसने तू पैदा किया।
क्यों सताता है किसी को दो दिना के वास्ते ॥
होगी खुदग़र्ज़ी भला इससे भी बढ़कर और क्या।
जान लेता और की अपने मज़ा के वास्ते ॥
काट कर औरों की गर्दन खैर अपनी मांगते।
दे जगह इंसाफ़ को दिल में खुदा के वास्ते ॥
चन्दरोज़ा ज़िन्दगी तन है ये पानी का बुलबुला।

खामखा बनता है क्यों मुजरिम सज़ा के वास्ते ॥
कर भला होगा भला नेकी का बदला नेक है।
मत किसी को तंग कर हाजत रफ़ा के वास्ते ॥
कर अदा अपने फ़रायज़ होने वाली शाम है।
मत मरे मरदूद अब नाज़ो अदा के वास्ते ॥
भूलकर मालिक को फिरता दरबदर बलदेव क्यों।
जान देता बेहया वस्ले बुतां के वास्ते ॥

भजन ५३०

हिंसा देहु बिसार, नाश हुआ जाता है।
निर्बल को नहीं सताना, शूरों का है ये बाना।
बली पर करते वार ॥ नाश० १ ॥
जितने भी हैं पशु पक्षी, हैं मांस निबल के भक्षी।
डरें बलवान अगार ॥ नाश० २ ॥
जो नर हो मांस को खावे, क्यों नहिं वैसे कहलावे।
जैसे कुत्ते अरु स्यार ॥ नाश० ३ ॥

घनाक्षरी।

भेड़िया बघेरा रीछ शेर चीता तेंदुआ या लोमड़ी बिलाव नोला नाका बन जाना था। चील कौवा गिद्ध गंजा बाज़ बहरी शिकरा, उल्लू या उकाब ही में जाके जन्म पाना था ॥ बीजू बगला, धीवर नीलकण्ठ सांप बिच्छू कछुवा या गिर-

गिट कुछही कहना था। मकड़ी मच्छर मक्खी मोरही बने थे
क्यों ना ! वीर होकर जो हा निर्बल मांस खाना था ॥

चप २ कर पीते पानी, जो मांस खावँ पशु प्रानी।
मित्र देखो निरधार ॥ नाश० ४ ॥

जब तुम मनुष्य कहलाओ, प्राकृतिक नेम तुड़वाओ।
महा छाया अन्धियार ॥ नाश० ५ ॥

पशु रूखा मांस खाते हैं, तुम्हें उबटी के पाते हैं।
करो फिर क्यों अख़्त्यार ॥ नाश० ६ ॥

बलवान से करो लड़ाई, निर्बल पर दया मदाई।
बनो ऐसे नर नार ॥ नाश० ७ ॥

तुम अब भी समझो भाई, तजो हिंसा समझ सुखदाई।
है पाठक धर्म तुम्हार ॥ नाश० ८ ॥

भजन ५३१

मत जग में जीव सताय, ऐसे प्रभू मिलता है ॥ टेक ॥

भुनगे चींटी से लेकर छोटे, हाथी ह्वेल मछली से मोटे।
अपनी मौज जहां चले फिरें लोटें, किसी को मत तड़पाय॥ऐ०॥

जब तेरे कांटा लग जावे, सी सी तुझ से शब्द करावे।
शोक और पर हाथ उठावे, मत ये छुरियां चलाय ॥ऐ०॥

सब का मालिक पिता हमारा, जिसने रचा है यह संसारा।
बड़ा दयालू सब से प्यारा, उसका ये गुण ले पाय ॥ऐ०॥

कुछ दिन का विश्राम तुम्हारा, सत्य अहिंसा चित्त प्यारा।
पाठक कहे ये हित तुम्हारा, मूर्ख ले धर्म कमाय ॥ ऐ० ॥

भजन ६३२

हत्यारे आठ कसाई, महाराज मनू बतलाते ॥ टेक ॥

प्रथम सलाह दे पशू कटावे। हाड़ मांस के स्वाद बतावे।
बन के नावत जीव मरावे। गूंगे पशू कटाते ॥ महा० ॥

दूजा कसाई वह कहलावे। हाड़ मांस जो काट गिरावे।
क़तल पशू की खाल छुड़ावे। खट २ छुरी चलाते ॥ मह० ॥

तीजा क़साई काटन वाला। और बलिदान चढ़ावन वाला।
पशू के प्राण निकालन वाला। कलमा पढ़ ज़िबह कराते ॥म०॥
चौथा मांस खरीदन वाला। सलाह कर पशू लाने वाला।
बधिकको पशू दिलाने वाला। बूचड़ की दल्लाली खाते ॥म०॥

मांस पांचवें तोलन वाला। मरण हेतु पशु देनेवाला।
छठे चौपे बेचन वाला। क़साई के खूटा बँधाते ॥ महा० ॥
छठवां मांस पकाने वाला। देग में लाश जलानेवाला।
चौका मरघट करने वाला। घर भीतर लाश जलाते ॥महा०॥
सप्तम मांस परोसन वाला। परसादी कह बांटन वाला।
मोल बाज़ार से लाने वाला। मांस से तोंद फुलाते ॥महा०॥
अष्टम मांस निगलने वाला। चौथा चौपा खाने वाला।
शर्मा मुर्दा भखने वाला। पेट को क़बर बनाते ॥ महा० ॥

भजन ५३३

मांसाहारी लोगों ने भारत में विघ्न मचा दिये ।

गौ माता सा दुखी न कोई । घी और दूध कहांसे होई ।
बल, विचार प्रिय मेधा खोई दुर्बल निपट बना दिये ।
दुष्टाचारी लोगों ने ॥ भारत० १ ॥

हा ! श्वानों का पालन करते । गौ रक्षा में चित्त न धरते ।
हिंसा करने से नहिं डरते । खट खट छुरे चला दिये ।
आफ़त तारी लोगों ने ॥ भारत० २ ॥

जिनसे है दुनिया का पालन । उन्हें मार क्या सुखहो लालन ।
फँस गई प्रजा बिपत के जालन । उत्तम पशू खपा दिये ।
क्या मन धारी लोगों ने ॥ भारत० ३ ॥

मृगा उछलते दृष्टि न आवें । दरियाओं में मीन न पावें ।
मोर कहां से कूक सुनावें मार मार के ढा दिये ।
बिपता डारी लोगों ने ॥ भारत० ४ ॥

क़बूतरों के गोल रहे ना । तीतर करत कलोल रहे ना ।
शुक मैना अनमोल रहे ना । हरियल गर्द मिला दिये ।
पँढकी मारी लोगों ने ॥ भरत० ५ ॥

अजा भेड़ दुम्बे नहिं छोड़े । ऊन के होगये जग में तोड़े ।
कहां से बनेंगे ऊनी जोड़े । महँगे मोल बिका दिये ।
कीनी ख्वारी लोगों ने ॥ भारत० ६ ॥

पाढ़े नील गाय हनि डारे । ससे स्यार मुर्ग गोह बेचारे ।
ग़रीब कच्छुप नटों ने मारे । ऐसे त्रास दिखा दिये ।
दुख दे भारी लोगों ने ॥ भारत० ७ ॥

जबसब जन्तू निवड़ जायेंगे । सोचो तो फिर ये क्या खायेंग
कह घीसा सब सुख नसायेंगे । सो कारण मैं गा दिये ।
सुन लई सारे लोगों ने ॥ भारत० ८ ॥

भजन ५३४

मांस भक्षण की कोई श्रुती ज़रा मिलती नहीं ।
आज्ञा वेदों में ईश्वर की फिदा मिलती नहीं ॥

इसकी निसबत वेद में ईश्वर का है उपदेश साफ़ ।
कौन कहता है कि ज़ालिम को सज़ा मिलती नहीं ॥

गुलसने भारत हुआ सुन्सान ऐसा किस लिये ।
क्यों वहगुल मिलते नहीं क्यों वह गिज़ा मिलती नहीं ॥
पहले होते थे हवन घर २ नहीं अब नाम भी ।
इस लिये भारत में वह आबो हवा मिलती नहीं ॥

वह ज़माना क्या हुआ जब सबमें प्रीति थी बहुत ।
पुत्रो माता में भी अब महरो वफ़ा मिलती नहीं ॥

भजन ५३५

दोहा–बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल ।
जो बकरी को खाय, तिनके कौन हवाल ॥

मांस २ सब एक से, क्या बकरी क्या गाय।
ये जग अंधा होरहा, जान बूझ के खाय॥

टेक-नर दोज़खमें जाते हैं, बेखता जीव को मार के।

औरों के गलपर छुरी धरें हैं। नहीं संग दिल दया करें हैं॥
पापी कुष्टी होय मरें हैं। दिल से रहम बिसार के
गल अपना कटवाते हैं॥ नर०॥

जो गल कटकर बहिस्त जाना। काट कुटुम को भी पहुँचाना।
और खुदा को दोष लगाना। उसका नाम पुकार के॥
दुख देख न घबड़ाते हैं॥ नर०॥

घास खांय सो गल कटवावें, मांस खांय सो किस घर जावें।
सभैं ना बहु विधि समझावें, खुश होते सिर तार के॥
करनी का फल पाते हैं॥ नर०॥

मांस २ सब है इकसारी, क्या बकरा क्या गाय बिचारी।
जान बूझ खाते नर नारी। रूप दुष्ट का धार के॥
हा! मूत्र मनी खाते हैं॥ नर०॥

बढ़ जाते रोग बदन में, ना कुछ ताक़त बढ़ती तन में।
हे ईश्वर! दे ज्ञान उरन में बख्शें ज्ञान विचार के।
जन घीसा यश गाते हैं॥ नर०॥

❀ २४ मादकवस्तु-निषेध ❀

गजल ५३६

खाना खराब कर दिया बिल्कुल शराब ने।
जो कुछ कि न देखा था दिखाया शराब ने॥
इज़्ज़त के बदले ज़िल्लतें इसके सबब मिलीं।
मुफ़लिस बने मरीज़ बनाया शराब ने॥
बुलबुल की तरह बाग़ में लेते थे चुपचुप।
सरडास नालियों में गिराया शराब ने॥
हम पीनेवाले शर्बते सन्दल थे दोस्तो!।
कुत्तों का मूत हमको पिलाया शराब ने॥
मैदान जंग में थे कभी हम भी सवार।
कीचड़ में नालियों का गिराया शराब ने॥

ख्याल ५३७

त्यागन करो सकल नर नारी दुखदाई दुखदाई है।
भारत को गारत कर डाला यह मदिरा हरजाई है॥

चौक १

सतयुग में पीता शराब था शंखासुर अति बलकारी।
मारागया अधम अभिमानी भई बहुत उसकी ख्वारी॥
हरनाकुश पीकर शराब फिर लगा जुल्म करने भारी।
उसको भी यमपुर दिखलाया देखी शराब ये हत्यारी॥

शेर ।

सुन इसी मदिरा ने हरनाकुश के तईं गारत किया ।
मार त्रिपुरासुर को डाला रावना का जी लिया ॥
कंस को विध्वंस कर यदुकुल का जा छेदा दिया ।
बन गया सुर से असुर एक बूंद जिसने मद पिया ॥
मूल से कुल खोया लाखों का घर घर डाहन छाई है ।भा०

चौक २

जो कहते कालीने पिया मतबात न उनकी तुम मानो ।
भैरों को जो कहैं शराबी उन का भी झूठा जानो ॥
ब्रह्मा ने पी विष्णु ने पी जो कहै चक्र उन पर तानो ।
धूलिमेंउसकोमिलादो मलकरसकल देवताबलवानो॥

शेर ।

जो कहैं शंकर ने पी शराब वर्ण संकर हैं वही ।
पापियों के हैं गुरू मूढ़ों के अफसर हैं वही ॥
शत्रु सारे जगत के और खल निशाचर हैं वही ।
धर्म के वह हैं विरोधी ईश मन्दिर हैं वही ॥
धिक२ उनके मारग को जिन ऐसी कथा सुनाई है । भा०॥

चौक ३

वर्त्तमान का हाल सुनो इस शराब बेहाल किया ।
खराब खस्ता कर लाखों को राजा से कंगाल किया ॥

इस गंदे पानी ने बिलकुल नष्ट धर्म और माल किया ।
मुर्दा कर डाला शराब ने प्रजा को वह पामाल किया ॥

शेर ।

अब सुनो उनकी हक़ीक़त जो फिरैं पीकर शराब ।
गिरपड़े नाली में कुत्ते कर रहे मुँह में पेशाब ॥
गालियां बकने लगे फिर आ पुलिस पहुंची शिताब ।
ले गये मुर्दे को जैसे बहुत की मिट्टी खराब ॥
लड़के ताली लगे बजाने देखन खिलकत धाई है ।भा०

चौक ४

जब पहुँचे थाने में शराबी लगे बोलने जैसे भूत ।
खड़े हुए गिरपड़े ज़मींपर निकल गया धोती में मूत ॥
कुंदी करने लगे सिपाही लगे मारने शिर पर जूत ।
घसीटनेइसक़दर लगे जिस तरह घसीटैं यमके दूत ॥

शेर ।

होगये फिर शिथिल खूबी लात जूते खाय के ।
पड़गये इस तौर ज्यों मुर्दा पड़े मुँह बाय के ॥
कर दिया चालान फिर पहुँचे कचहरी आयके ।
देके जुर्माना छुटे हाकिम के आगे आय के ॥
इसपरभीनहिं शराबछोड़ी फिर बोतलमँगवाईहै ।भा०॥

चौक ५

और बढ़े इस युग में बामी अपना मत फैलाया है।
मीन मांस मदिरा शराब पीने में स्वर्ग बताया है॥
वेलाइन कपटियोंने मिलकर कपट का जाल बिछायाहै।
चारों वरण का धर्म भ्रष्ट कर सब को नष्ट बताया है॥

शेर।

वमन अपने आप थे खाते नशे के बीच में।
शक्ल शूकर की ये बन जाते नशे के बीच में॥
बेह्या बनकर न शर्माते नशे के बीच में।
मां बहिन को अंग दिखलाते नशे के बीच में॥
इस शराब ने कर खराब लाखों की मत बौराई है। भा०॥

चौक ६

औगुन इस मदिरा में भारी पीते ही सीना तड़के।
और बने जिस विधि से वह सब जानत हैं बूढ़े लड़के॥
कुत्ते बिल्ली मक्खी मच्छड़ इस शराब में पड़ २ के।
अर्क इन्हीं सब का खिंचता है मिल जाते हैं सड़२ के॥

शेर।

ऐसी गन्दी चीज़ पीते छोड़ के कुलकान को।
शान को शौक़त को खोते आबरू ईमान को॥

ज़र खरच करके फँसाते हैं बला में जान को।
पीगये बिस्तर और गहिना बेंच के मकान को॥
इस मदिराने मन्दकरी मति लम्पति सकल नशाई है॥भा०॥

चौक ७

शराब पी जब चले शराबी नशे में आंखें करके लाल।
जाय पहुँचे फिर घर पातुर के गिरते पड़ते डगमग चाल॥
नशे में देखा जब पातुर ने लिया छीन पल्ले का माल।
फिर भँडुओं ने पकड़ के चोटी मार के जूते दिया निकाल॥

शेर।

मत पियो मय मत पियो मय है बुजुर्गों का क़लाम।
वेद में इंजील में लिक्खा कुर्आं में भी हराम॥
जो पिये हैं रोज़ मदिरा जायगा खींचा वह चाम।
नर्क की अग्नी में डाले जांयगे चुन चुन तमाम॥
पियो दूध घी छोड़ो मदिरा नहिं जीवन काठनाई है।भा०॥

चौक ८

विप्रों ने बिलकुल बोरी वह लगे बारुणी पान करन।
क्षत्रिय मुँह में लगा के इसको राज पाट खो बैठे धन॥
बन आई नहिं कुछ बनियों से उन्होंने भी करली धारन।
त्यागन की शूद्रों ने मदिरा भक्त बने लेकर सुमिरन॥

शेर।

जिस तरह शूद्रों ने छोड़ी तुम भी लाना छोड़ दो।
रोज़ जाते हो तो मयखाने का जाना छोड़ दो॥
मिस्टर बिलाकट यों कहै मदिरा मँगाना छोड़ दो।
देश हित चहते हो तो पीना पिलाना छोड़ दो॥
शराब पी होटल में आते उलटी समझ बनाई है। भा०॥

भजन ५३८

दोहा–ईश्वर ने बुद्धी करी, सब के लिये प्रदान।
पर मूरख जन खो रहे, कर २ मदिरा पान॥

टेक–मत पियो शराब पागल कर देती है।

कहीं पीटैं कहीं पिटवावें, गाली दे गाली खावें।
इज्जत होय खराब॥ पा० १॥

जब हँसे हस ही जाते हैं, पड़े ज़ोर से चिल्लाते हैं॥
नहीं सुन सके जवाब॥ पा० २॥

कहीं बकें बकेही जाते हैं, या बेसुध ही सो जाते है।
कुत्ते चाहे करें पिशाब॥ पा० ३॥

मांगे कलाल धन आके, तुम चोखी पियो थे जाके।
अबतो मम करो हिसाब॥ पा० ४॥

नहीं आंख नशे में खोलें, रण्डियों के चकले में डोलें।
बने फिर रहे नवाब॥ पा० ५॥

बेहोश हुये फिरते हैं, कहीं नाली में गिरते हैं॥
जहां उठ रहे हुबाब॥ पा० ६॥

जब शराब पी चुकते हैं, फिर कभी नहीं रुकते हैं।
ज़रूरी खायँ कबाब॥ पा० ७॥

जो धन शराब में खोवो, उसे धर्म क्षेत्र में बोओ।
जिससे होय सबाब॥ पा० ८॥

कहे वासुदेव सुनो भाई, करूं कहा तक इसकी बुराई।
समझलो तुम्हीं जनाब॥ पा० ९॥

गजल ५३९

किसने यह बस्ती हिन्द की बर्बाद करदिया।
बतलाओ ऐ जवानो! वह क्या है शराब है॥

ज़रदार के जो जेब में पाई नहीं रही।
मुफ़लिस के ओढ़ने को रज़ाई नहीं रही॥
जिस दर्द की कि कोई दवाई नहीं रही॥ बतला०॥

बूढ़े जवान बच्चों के सब होश खोदिये।
बीज आके जिसने यहां पै तबाही के बोदिये॥
जिसके मुकाबिले में अक्लमन्द रोदिये। बतला०॥

पीरों के अपने जो सदा नीचा दिखाती है।
दुनिया के बेवकूफ़ों को दावों में लाती है॥
बातों में लाके अपने जो गर्दन दबाती है॥ बतला०॥

क्या चीज़ इस जहान में दुश्मन है जानकी।
जो मूजबे तबाही है हिन्दोस्तान की॥
जिस पै आजिज़ है लानत जहान की।
बतला ओ ऐ जवानों ! वह क्या है शराब है॥

दादरा ५४०

छोड़ो २ मेरे भैया नशा पीना।
नशे के पीने में तेरी जवानी खोई गई।
आप तो खोये ये बेटी बिगानी खोई गई॥
मरजाना ये मुँह है लानत जीना॥ छोड़ो० १॥
नशे के पीने से कितनेही घरसे खोये गये।
इससे खोये तो खोये उधरसे खोये गये॥
इस पीने पै तेरा धिक जीना। छोड़ो० २॥
नशे नें दून क्या मारी कि हम शहज़ादे थे॥
करूँ बयान क्या जो मेरे बाप दादे थे॥
जागिरदार थे रईस थे आबादे थे।
इस पीने ने तुझ को बीरान कीना॥ छोड़ो० ३॥
नशे के पीने में खाने खराब होते हैं।
काला मुखड़ा गधे सवार देख होते हैं॥
लेकिन हमजोलियों में जा जनाब होते हैं।
अदू यह सुनके सखुन लाजवाब होते हैं॥
कहै बल्लू यह ऐवे करम हीना॥ छोड़ो० ४॥

भजन ५४१

यही ख्वारी की जड़ है पैमाना रुसवा करे करे सदा।
कीकर की छाल और गुड़का पसीना, ऐली बुरी शैजानके पीना।
उसको थूके उसको थूके, जो हो आक़िल न मुँह को तागाना॥
मारे सियाह है खुदा गवाह है, इसी के हाथों हिन्द तबाह।
करो तोबाह करो तोबाह कभी फन्द में इस के न आना॥ यही०॥

ग़ज़ल ५४२

दिल माही दुनिया से लगाना नहीं अच्छा।
विषयों में सदा उम्र गँवाना नहीं अच्छा॥
मय पीके सदा अकल गँवाना नहीं अच्छा।
मजनूँ कभी अपने को बनाना नहीं अच्छा॥
भूले से भी मयखाने का जाना नहीं अच्छा।
दिल रंडियों से अपना लगाना नहीं अच्छा॥
मय पी के कभी शोर मचाना नहीं अच्छा।
और रंडियों से लुत्फ उड़ाना नहीं अच्छा॥
ज़ीरूह कोई भी हो सताना नहीं अच्छा।
भूले से कभी मांस का खाना नहीं अच्छा॥
अब वह भी जलाने लगे मुर्दों को हैं अपने।
कहते थे जो कल तक कि जलाना नहीं अच्छा॥
हां भूल के भी धर्म के कामों में तुम्हें बाय।
हीला नहीं अच्छा है बहाना नहीं अच्छा॥

मेहनत से जो पैसा भी मिले तो वही अच्छा।
और मुफ्तजो मिलताहो खज़ाना नहीं अच्छा ॥
जिस चीज़ का जो स्वामी हो उसके बिना पूछे।
उस चीज़ को हर्गिज़ भी उठाना नहीं अच्छा ॥
लाखों मिलें ईज़ायें मिलें कष्ट हज़ारों।
पर रास्ती से पांव उठाना नहीं अच्छा ॥
केवल उसी ईश्वर को कमर कीजिये सिज्दा।
सर बुत के कभी आगे झुकाना नहीं अच्छा ॥

दादरा ५४३

कैसा पागल बनावै, खौं २ करावै, चरस का पीना खराब। रोगी बनावे, दर दर फिरावे, धन माल लुटावे, चरस का पीना खराब ॥ इस की यारी है बदकारी, ज़िल्लत भारी, करो तौबा वारी रे। दमें दम में लावे देह जलावे, चरस का पीना खराब ॥ कैसा० ॥

दोहा-इस को मत पीना भाइयो, धुँवा नरक का जान।
पीना इस का छोड़कर, हवन करो सुख मान ॥
सुनो सब नर नारी रे ॥ कैसा० ॥

दोहा-आदत इस की बुरी है, करदे कफ़ का रोग।
जगन मूर्ख जन जाहि को, समझें सुन्दर भोग ॥
जल जांय हड्डी सारी रे ॥ कैसा० ॥

ग़ज़ल ५४४

नशा पीकर के नाहक़ दर्दसर क्यों आप सहते हैं।
सरासर बेवकूफी मोल लेन इस को कहते हैं ॥
बुरी लत पड़ गई जब छूटना फिर ग़ैर मुमकिन है।
इसी के हाथ से लाखों बने घर तुर्त ढहाते हैं ॥
तर्म ज़ो अक़्लको और तन्दुरुस्ती अपनी को खोकर।
लियाक़त सारी खो रिसवा सरे बाज़ार लड़ते हैं ॥
कर्म और धर्म इज्जत बाप दादा ताक पर रखकर।
नशा में मस्त होकर घर में जा रण्डी के रहते हैं ॥
करे सबदोस्तों से इल्तिजा यह शिवनरायन है।
मिठाई दूध घृत मेवा नहीं क्यों न वेग गहते हैं ॥

भजन ५४५

जो चाहते हो खुशी से रहना नशा न पीना।
बुरी बला है यह जाम मीना, नशा न पीनो नशा न पीना।
शराब अफ़ियूं चरस गांजा हर एक से बढ़ के हैं एक आला॥
पुकार के कह रहा है बन्दा नशा न पीना नशा न पीना।
शराबियों की जो देखी हालत, किसी के कपड़े हैं कैसे लतपत॥
कोई कहे है बचश्म इबरत, नशा न पीना नशा न पीना।
कोई तो नाली ही में पड़ा है, किसी का मुँह कुत्ता चाट रहा है॥
कोई यह चिल्ला के कह रहा है, नशा न पीना नशा न पीना।
अगर तुम्हारी है चश्म बीना, चंडू पीना न भंग पीना॥

डुबोयेगा यह तेरा सफ़ीना, नशा ना पीना नशा न पीना ॥

भजन ५४६

क्यों दूध दही का छोड़ के, मदिरा पै मन ललचाया ।
पी शराब आंखे लाल किये मतवाले ।
गिरते सड़कोंपर फिरे खाक मुँह डाले ॥
सब तज के कुलकी लाज किये मुँहकाले ।
इस मयख्वारी ने लाखों के घर घाले ॥
क्यों धन और माल गँवाया, किस काम तुम्हारे आया ।
लाखों का द्रव्य लुटाया, क्या नफ़ा बताओ पाया ॥
अब हो बैठे कंगाल, खोके धन माल, हुआ बेहाल । मरे
शिर फोड़ के, पर सब्र न दिल को आया ॥ मदि० ॥
सब द्रव्य लुटा कर रह गये निपट अनारी ।
अब बात न पूछी जाय हुई जग ख्वारी ॥
कोटेकुलांच भये अब नहीं बनत पिछारी ।
किस विधि निहाल हो असाध्य है बीमारी ॥
कहीं हुआ दर्द सर भारी, कहि पड़गया जुनू पिछारी ।
सूजाक ने की तैयारी, हुआ जीवन तक दुशवारी ॥
जब मद्यपान कर यार, चले बाज़ार, किया कुविचार । बस
रंडी को छोड़ के, कुछ और न दिल में भाया ॥ मदि० २ ॥
उस दुखदाई ठगिनी की बात में आवे ।

उन मीठी २ बात सुना बहँकाय ॥
जब हुआ इश्क़ का जोर मैस्त कहलाये ।
चाहे प्राण जायँ पर रूप देख ललचाये ॥
मुख से दुर्गन्धी लावे, दीवाना कहीं बनावे ।
जब लगे रोग पछतावे, फल में तू दुःख उठावे ॥
नहिं पहले किया कुछ ज्ञान, अरे नादान, करके मदिरापान ।
चले मुँह मोड़के, नाहक में मान घटाया ॥ मदि० ३ ॥
जब तलक रहा धन पास करी मयख्वारी ।
जब रहा नहीं चोरी की हुई तयारी ॥
कहिं लिया पुलिस ने पकड़ छूटहुई भारी ।
तब जाय कैद में हुआ भोग लाचारी ॥
कर मले रोय पछितावे, रो २ दिन रात गँवावे ।
तबियत को यों समझावे, क्यों किये का फल नहिंपावे॥
अब कुछ नहिं बनत उपाय, सोच नित खाय, दिलमें घब-
राय । कहे कहीं जी तोड़के, दिल आखिर यों समझाया॥ मदि०४
यह बुरी चीज़ है पियो न कोई भाई ।
पहले कर कंगाल करावे हँसाई ॥
जिन मूर्खों ने है तबियत इसपर लाई ।
ये बुरीदशा में पड़े भरें कठिनाई ॥
पदवी यहां दिलावे, फिर नर्क अन्त पहुँचावे ।
विषयों में मन लपटावे, दुष्माण खूब समझावे ॥

कहे जगन हर बार, बात यह सार, पियो मत यार, इस मय के नाक सिकोड़ के, सुखका मार्ग बताया ॥ मदि० ५ ॥

भजन ५४७

ये सुलफ़ेबाज़ी छोड़ो, धन की ख़ार छार ख़ार।
आंखों से हो जांय चुन्धे, बांज़ तो बिल्कुल अन्धे।
खौं २ कर करते धन्धे, बहती लार लार लार ॥ ये० ॥
हुये सुलफ़िया यार इकट्ठे, आपस में करते ठट्ठे।
गोली गोली के पट्ठे करते मार मार मार ॥ ये० ॥
जिसने यों सब धन खोया, पछताया पीछे रोया।
नाहक़ तन बोझा ढोया, न जानी सार सार सार ॥ ये० ॥
पाठक भजलो सर्वेश्वर, काया है ये क्षण भंगुर।
क्यों विषयों में रहे दिन भर, होजा पार पार पार ॥ ये० ॥

भजन ५४८

अब हुक्का सरदार, अग्निहोत्र पहिले था।

यह पात्र प्रात शुद्ध होते, अब नैचे आदि उठ धोते।
अग्नि करते तैयार ॥ अग्नि० १ ॥

यह धूम सुगन्धित फैलाते, जब कर्पूरादि जलाते।
तम्बाकू अब धुआँधार ॥ अग्नि० २ ॥

ध्वनि ओ३म् से हवन रचाते, अब गुड़२ शब्द सुनाते।
पियें बहुत नरनार ॥ अग्नि० ३ ॥

यह धूम रोग को नाशे, हुक्का बहु व्याधि प्रकाशे।
करै खौं से प्यार ॥ अग्नि० ४ ॥

जूठन को छूत बतावें, पर पीते नहीं शर्मावें।
लगा रहता है लार ॥ अग्नि० ५॥

शीरा अरु रेह मिलावें, मक्खी आदिक कुटजावें।
तम्बाकू जब हो तैयार ॥ अग्नि०॥

शिक्षा वेदन सुखकारी, सब होम करो नर नारी।
कहे पाठक निरधार ॥ अग्नि० ७ ॥

भजन ५४९

टेक-हुक्के से ध्यान लगाया, तज कर्म धर्म अब सारा।

प्रातःकाल उठ हुक्क नहलावें, सन्ध्या करें न होम रचावें।
भरें चिलम दम फेर लगावें, समझें सब से प्यारा ॥
क्या है यह उलटी माया ॥ हुक्के० १ ॥

हुक्कध्यान और हुक्कज्ञान है, हुक्कनियम और हुक्कदान है।
हुक्क परमपद लिया जान है, हुक्क मोक्ष का द्वारा ॥
यह क्या अज्ञान समाया ॥ हुक्के० २ ॥

हुक्क बगल और हुक्क हाथ में, हुक्क रहे हर जगह साथ में।
हुक्क सभा और हुक्क जात में, करे वही निस्तारा ॥
वेदों का हुक्म भुलाया ॥ हुक्के० ३ ॥

पियें हुक्क औरों को पिलावें, वह जाती में ऊँच कहावें।
शर्मा कहे नर्क को जावें, जिसने यह मन धारा॥
गौरव का धुआं उड़ाया॥ हुक्के० ४॥

भजन ५५०

लावनी-ज़रा ग़ौर कर देखो भाई हुक्के के पीने वालों।
सब का धर्म छुड़ाया इसने, इसे यहां से अब टालो॥
दोनों काल की सन्ध्या हवन गायत्री को क्यों छोड़दिया।
जो थी खास ईश्वर की आज्ञा उसको तुमने तोड़ दिया॥
जबसे हुक्का चला जगत में शुद्धी से मुँह मोड़ दिया।
वासुदेव कहे क्यों दुख भोगो हुक्का क्यों नहिं तोड़दिया॥

दोहा-हुक्के ने संसार में, करी बहुत सी हान।
शुद्धी जग से हटगई, लगे जूठ सब खान॥

टेक-अबतो हुक्के को छोड़दो, क्यों इसे पीये जाते हो।
जबसे बीज हुक्के का बोया, अग्निहोत्र सन्ध्या को खोया॥
धर्म कर्म सब यौंहीं डुबाया, इससे नाता तोड़ दो॥
क्यों विष का फल खाते हो॥ क्यों०॥
जब हुक्के में करते पानी, दुर्गन्धित से होत गिलानी।
बुद्धी को पहुँचावे हानी, सहित चिलम के फोड़ दो॥
क्यों नाहक दुख पाते हो॥ क्यों० २॥
जूठन मनु ने धुरी बताई, मत खाओ भाई की भाई।
इस हुक्के ने जूठ खिलाई, अब इस से मुख मोड़ दो॥

तुम क्यों नहीं शर्माते हो॥ क्यों० ३॥

* २५ अग्निहोत्र-विषय *

भजन ५५१

वेदों की रक्षा का बन्धन होवे यज्ञोद्धार।
ऋषि २ मुनियों का मुख्य विचार॥व०॥

शेर।

सदन शुचि गोमय से जहँ तहँ बांध बन्दनवार थे।
यज्ञशाला में लगाते वृक्ष कदली चार थे॥
घट भरे जल से धरे थे अरु चन्दोआ तान के।
चित्रकारी अनेक कर मण्डप सजे घर बार थे॥
हवनकुण्ड खुदाय सुन्दर समिध स्रुवा जहँ तहँ धरे।
प्रोक्षणी अरणी प्रणीता पूर्णपात्र तयार थे॥
अगर चन्दनइलायची कस्तूरि केसर आदि सब।
आज्य थाली अनेक चांदी के मंगलकार थे॥
चार आसन ऋत्विजों के यथोचित स्थान पर।
वेद मन्त्रों की झड़ी चहुँ ओर प्रिय गुंजार थे॥

चलत

भेदक शक्ति अग्नि जान, मिटे रोग दुख की खान।
हव्य देते थे जिस आन, स्वाहा २ गुंजत कान॥

अबतो २ पलटा है देश हमारा ॥ वेदों० १ ॥

शेर ।

वेद मन्त्रों की हुई रक्षा बनाया नियम ये।
पूर्णिमा श्रावण का राखी रक्षाबन्धन नाम ये ॥
वेद मत पर कितने हमले हो चुके और होरहे।
वीर भी कुर्बान कितने हो चुके और हो रहे ॥

चलत ।

मित्रो ! तुम हो ऋषि सन्तान करना यज्ञों के सामान।
फैले वेदों का विज्ञान, चाहे कितने हों कुर्बान।
उठो, उठो, कह पाठक ये निरधार ॥ वेदों० २ ॥

भजन ५५२

ईश्वर की आज्ञा पालो करो अग्नि होत्र सब भाई।
द्रव्य सुगन्धित पुष्टी कारण, औषध लीजे रोगनिवारक।
मन्त्र पढ़ो विज्ञान विचारक, मित्रो ! आहुति डालो ॥
वायू की करो सफ़ाई ॥ करो० १ ॥

सब से भारी यज्ञ दान है, जिसका वेदों में विधान है।
फल उसका मित्रो ! महान है, कभी न इसको टालो ॥
यह कर्म बड़ा सुखदाई ॥ करो० २ ॥

यह शुद्ध वायू फैलावे, हलकी होकर ऊपर जावे।
वर्षा के संग नीचे आवे, तब पूरं हरषालो ॥
होवेगा अन्न अधिकाई ॥ करो० ३ ॥

यही देवपूजा है भारी, जीवमात्र की जो हितकारी।
पत्थर पूजन छाड़ मुरारी, गौरवता दरशालो ॥
बनो वेद धर्म अनुयाई ॥ करो० ४ ॥

भजन ५५३

है अग्निहोत्र सुखदाई, तुम क्यों नहिं मित्र विचारते।
वायू बिन नहिं जीवन होई, श्वास बन्द कर देखो कोई।
रोज़ मूत्र मल त्यागो सोई, उसको नित्य बिगारते ॥
पर करते नहीं सफ़ाई ॥ १ ॥

द्रव्य सुगंधित औषधि लीजे, मित्र आदि एकत्रित कीजै।
तिनका हव्य अग्नि में दीजै, यह मिल वायु सुधारते ॥
घन वर्षहिं महि नियराई ॥२॥

पूर्वज ऋषि वर्षा वर्षाते, अग्नि अधिक कर वायु चलाते।
उससे बहुत से काम बनाते, व्याधि अनेक निवारते ॥
और अकाल भी मिटि जाई ॥३॥

जो प्रति गृह यह प्रथा चलाओ, पूर्व समय का दर्शन पाओ।
पाठक सब उसके गुण गाओ, जिसे दयानन्द पुकारते ॥
जिन ऋषियों की रीति चलाई ॥४॥

भजन ५५४

जबसे छोड़ी बान अग्निहोत्र की मित्रो।
दिनरात कहत पड़ते हैं, लाखों प्राणी मरते हैं।
मुफ्त में देते जान ॥ अग्निहोत्र० १ ॥

कहिं है विशूचिका मारी, कहिं प्लेग महा दुखकारी।
काम्पते सुन २ प्रान ॥ अग्निहोत्र० २ ॥

वायुतो है बहुत ज़रूरी, बिन जल भी है मजबूरी।
दुहुँ दोषन की खान ॥ अग्निहोत्र० ३ ॥

नहीं अन्न स्वच्छ पाते हैं, हम रोगी होजाते हैं।
व्याधि ने घेरे आन ॥ अग्निहोत्र० ४ ॥

अबभी यदि यज्ञ रचाओ, शुद्धान्न वायु जल पाओ।
नहीं दुःख होय निदान ॥ अग्निहोत्र० ५ ॥

है धन्यवाद स्वामी को, पाठक उसके नामी को।
जिसने किया विधान ॥ अग्निहोत्र० ६ ॥

भजन ५५५

उसके जीवन पर धूल है, जिन ओ३म् का नाम लिया ना।
तैंने नाम रटा किस किसका, बतला फल पाया क्या इसका ॥
तेज चमकता है यह जिसका, सब का आदी मूल है ॥
उसका तो नाम लिया ना ॥ जिन ओ३म्० १ ॥

राम कृष्ण राधा और सीता, रटते रटते जीवन बीता।
सफल हुआ नहिं मन का चीता, समझ यह तेरी भूल है ॥
अमृत रस ज़रा पिया ना ॥ जिन ओ३म्० २ ॥

मनु अध्याय दूसरा भाई, इक्यासी से चित्त लगाई।
पढ़ो श्लोक जहां औं बढ़ाई, जो कि वेद अनुकूल है ॥

टुक तैंने ध्यान दिया ना ॥ जिन ओ३म्० ३ ॥
ईशोपनिषद् यजू का लीजे, ध्यान मन्त्र पन्द्रह पर दीजे।
फिर तो सुमिरन ओं का कीजे, मिटे तेरे दुख शूल हैं ॥
शर्मा बिन ओं जिया ना ॥ जिन ओ३म्० ४ ॥

ग़ज़ल ५५६

ईश्वर को छोड़ और से क्यों दिल लगायेंगे।
ईश्वर परस्त होके क्यों काबा में जायेंगे ॥
माने हैं उसकी ज़ातको जब वाहिदहूलाशरीक।
हम साथ मुहम्मद को न कलमा में लायेंगे ॥
अफ़सोस का मुकाम है हम सोचते नहीं।
इनसां परस्त होके क्या इनसां कहायेंगे ॥
इंजील और कुरान का ज़रिया नहीं विहतर।
वैदिक धरम को मान कर ईश्वर को पायेंगे ॥
लेवेंगे काम अक्ल से जब हर कसो नाक़िस।
शर्मा उधर से छोड़ कर इधर को आयेंगे ॥

गजल ५५७

आप में जब तक कि कोई ईश को पाता नहीं।
मंज़िले मक़सूद तक हरगिज़ क़दम जाता नहीं ॥
ईसवी वो मूसवी हैं सब जिहालत के गढ़े।
धर्म वैदिक के बिना मुक्ती कोई पाता नहीं ॥
लाख जाये तीर्थों में लाख हज्जों में फिरे।

ब्रह्म को जाने न जब तक ज्ञान तो आता नहीं ॥
क्यों लगा कर भोग बुत को उम्र खोवें रायगां।
साफ़ ज़ाहिर है कि पत्थर पूड़ियां खाता नहीं ॥
शीतला बच्चों को जो कि मारती है जान से।
वह हक़ीक़त में तुम्हारी दोस्ती माता नहीं ॥
ख्वाहिशों में हूर गिलमों को किये ईमां खराब।
है मुक़ामे हैफ़ ज़ाहिद दिल में शर्माता नहीं ॥
कुँवारी लड़की के तवल्लुद हज़रते ईसा हुए।
लाख समझाओं मगर यह ध्यान में आता नहीं ॥

भजन ५५८

ईश्वर के बहाने और किसी को जो कोई ध्यावेगा।
यह रख निश्चय वह नहीं मोक्ष को हर्गिज़ पावेगा ॥
वह प्रभु अजन्मा कहावे, नहीं आवागमन में आवे।
जो उसका जन्म बतावे, वही अज्ञानी कहावेगा ॥ईश्वर०॥
वह चैतन शक्ती प्यारा, वह रूप रेख से न्यारा।
पापी वह महा हत्यारा, जो उसकी प्रतिमा बनावेगा ॥ईश्वर०
सब जगका पालन हारा, खुददेह कण्ठ से न्यारा।
किस तर्फ़ है ध्यान तुम्हारा, भोग कोई किसे लगावेगा ॥ई०॥
बिन श्रवण सुने सब वाणी, वह है सब घट का ज्ञानी।
निश्चय वह अति अज्ञानी, जो घण्टे बजा सुनावेगा ॥ईश्वर०
यह सब कुछ उसकी माया, जो बाग़ बगीचा लगाया।
वह डाल डाल में समाया, फूल फिर किसपै चढ़ावेगा ॥ई०॥

नहीं कभी जन्म में आता, नहीं लूटके माखन खाता।
जो उसको दोष लगाता, नर्क में निश्चय जावेगा ॥ईश्वर०॥
है वेद यजुः यह दुहाई, नहीं उसकी प्रतिमा भाई।
फिरक्यों पत्थरकी बनाई, किसेमलके निलावेगा ॥ईश्वर०॥
यह सत्य खन्ने की वाणी, तुम मानो सभी पौराणी।
जिनवेद आज्ञा नहींमानी अन्तमेंवहही पछतावेगा ॥ईश्वर०

गजल ५५९

वैदिक धरम का बोध घटाना नहीं अच्छा।
ईश्वर से अपना चित्त हटाना नहीं अच्छा ॥
शिव व्रत और एकादशी सब वाहियात हैं।
भ्रष्टों के कहने सुनने में आना नहीं अच्छा ॥
मिट्टी में डोरा बांध कर पूजाते कराते हैं ॥
गणपति के झूटे स्वांग पै जाना नहीं अच्छा।
झूटे ग्रहों के फन्दे में लोगों को डाल कर ॥
मुफ्ती किसी से माल उड़ाना नहीं अच्छा।
भूत और प्रेत जिन्न का आलम कोई नहीं।
डील से दूध पेड़ों का खाना नहीं अच्छा ॥
पत्थर को राज़ी करते हैं पशुओं को मारकर।
है बेज़ाबां का खून बहाना नहीं अच्छा ॥
शर्मा गज़ल से टपके तेरे इश्क़े हक़ीक़ी।
बेहूदा राग रागनी गाना नहीं अच्छा ॥

ग़ज़ल ५६०

प्रभु तुझ बे निशान का निशान क्यों करें।

तू है कुल मुहीत सर्व व्यापक अयां है।
तू है सबका मालिक मगर लामकां है।
तेरे रहने को इकजा मकान क्यों करें ॥ प्र० १॥

नहीं तेरे रंग है नहीं तेरी सूरत।
बनावें क्यों जड़ता से पत्थर की मूरत।
बुत बेजां में तेरा गुमान क्यों करें ॥ प्र० २॥

न माना तुझे और इत उत ध्यावें।
बली भेंट बकरे बुतों पर चढ़ावें।
बड़े दुख तो उलटा अहसान क्यों करें ॥ प्र० ३॥

न करतब को जाना लिया बुत सहारा।
प्रारब्ध पर अपना जीवन विचारा।
फिर छल और कपटकी दूकान क्यों करें ॥ प्र० ४॥

धर्म और कर्म में न मन को लगाया।
तुझे जीव हिंसा का मुलज़िम बनाया।
पशू पक्षी तुझ पर कुर्बान क्यों करें ॥ प्र० ५॥

तू है लाशरीक और वाहदहूं लासानी।
नसीहत की सब को सुनावें कहानी।
इबादत में दीगर मिलान क्यों करें ॥ प्र० ६॥

बने ब्रह्मयोगी गुसाईं संन्यासी।
कहें हम तो हो गये बैकुण्ठ वासी।
फिर दुनिया में, खो खो पलान क्यों करें ॥ प्र० ७॥

ब्राह्मण क्षत्रिय महाजन कहावें।
हज़ारों रुपये लेके बेटी पै खावें।
बिकी कन्या का फेरों पै दान क्यों करें ॥ प्र० ८॥

कहे नन्दलाल प्रभु तेरा सहारा।
तुही एक स्वामी है रक्षक हमारा।
शिर्क करके ज़ायां ईमान क्यों करें ॥ प्र० ९॥

भजन ५६१

तरेगा तो वह ही जाके हृदय में हर है॥ गंगा के नहाने से जो पापी नर तर जायँ। मीन क्यों न तरे जाको जलही में घर है ॥ तरे० १ ॥ जटा के बढ़ाने से जो पापी नर तर जायँ। मोर क्यों न तरे जाके लम्बे २ पर हैं ॥ तरे० २ ॥ मूड़ के मुड़ाने से जो पापी नर तर जायँ। भेड़ क्यों न तरी जाको मूंड़ सब धर है॥ तरे० ३। शंखके बजाने सेजो पापी नर तर जायँ। कुत्ता क्यों न तरे जाको शंख कैसो स्वर है। तरे० ४॥ भस्म के रमाने से जो पापी नर तर जायँ। गदहा क्यों न तरे जो लोटे दिन भर है ॥ तरे० ५॥ अग्नि के तपाने से जो पापी नर तर जायँ। भुरजी क्यों न तरे भाड़ झोंके दिन भर है॥ तरे० ६॥

तिलक छाप के लागने जो पापी नर तर जायँ । हाथी क्यों न तरे जाके लगता लेंदुर है ॥ तर० ७ ॥

भजन ५६२

टेक–बिन वेद पता नहिं पाया। उस ईश्वर दीनदयाल का। पूछा जाके मैंने ब्राह्मण से, बोला मिलेगा शिव पूजन से। पूजा करी मैंने लाख यतनसे। नाश किया धन मालका॥ जब शिव मन्दिर बनवाया। सोने का कलश चढ़ाया। पर कुछ भी हाथ न आया ॥ उस ई० १॥

फिर जो मिला दादू मत वाला। उसने कहा जपेल नन्द लाला॥ वही करें तेरा प्रतिपाला। भय मिट जावे काल का॥ मैंने वैसाही अमल कराया। मन्दिर में ढोल बजाया। वृन्दावन चक्र लगाया ॥ उस ई० २॥

जोगी वैरागी सब मैंने छाने। कूड़ा पन्थिये औ मस्ताने॥ जैनी कुरानी किरानी पहचाने। महरम हुआ सब हाल का॥ अब जगन्नाथ उठ धाया। हँस जूठ भात वहां खाया। फिर आगे क़दम बढ़ाया ॥ उस ई० ३॥

फिर मैं द्वारका आया प्यारे। बद्रीनाथ कनखल हरद्वारे॥ तन मल मल के गोते मारे। ना मिला जवाब सवाल का॥ तब खाली लौट घर आया। फिर भी मेरा मन घबराया॥ तब चक्र अक्ल ने खाया ॥ उस ई० ४॥

फिर जाके पूछे मुल्ला क़ाज़ी। कहते हज्ज में अल्ला राज़ी॥ पढ़ निमाज़ जो बने निमाज़ी। खतरा नहीं ज़वाल का॥ इक-ताला ने फ़रमाया। तब मसजिद को उठ धाया। वहां जाकर सिजदा बजाया ॥ उस ई० ५॥

तब भी मुझे शांति नहीं आई। फिर मुझ को मिल गया ईसाई॥ उसने एक कहानी सुनाई। क़िस्सा मसीह के हाल का॥ मेरे मनको भी भटकाया। गिरजे ले जा बिठलाया। कर करके बाज़ समझाया ॥ उस ई० ६॥

सारा जहां मैंने ढूंढा भाला। ढूंढ भाल हो गया मतवाला॥ तत्व मतों का सभी निकाला। बँधा पहाड़ खयाल का॥ जो दिल में किसी के आया। वही लिखकर ग्रन्थ बनाया। पर मुझको नहीं कुछ भाया ॥ उस ई० ७॥

मिला मुझे तब एक संन्यासी। ब्राह्मण वंश दक्षिण का वासी॥ बात मेरी मत जानो हांसी। तोड़ा बन्द जंजाल का॥ सन्ध्या करना सिखलाया। वेदों का ज्ञान बतलाया॥ भक्ती का मार्ग दिखलाया ॥ उस ई० ॥

भूलना ।

मित्रो यह वेही ब्रह्मचारी थे। प्रभु आज्ञा शिर धारी थे॥
तपस्वी जग हितकारी थे। करूं क्या वर्णन बारंबार मैं॥
सुनो अब नाम बताता हूँ। मैं जिनकी महिमा गाता हूँ॥
श्रीमद्दयानन्द स्वामी। हुये भूमण्डल में नामी॥

प्राण किये अर्पण देश सुधार में ॥
सुनो बात मेरी बुद्धिमानो । वह महाऋषि दयानन्द जानो ॥
कहे सिर्फ़ इक ईश्वर मानो । मालिक शाह औ कंगाल का ॥
कहे खन्ना यह उसकी माया । सारा ब्रह्माण्ड रचाया । घटर
में आप समाया ॥ उस ईश्वर० ६ ॥

भजन ५६३

तू कहीं घूम ले प्यारे, बिन साधन मोक्ष मिले ना ॥ टेक ॥
नहीं मोक्ष यमुना जाने से, नहीं मोक्ष गंगा न्हान से ।
पुष्कर तीरथ फिर आने से । होत नहीं निस्तारे ॥
कर्मों का भोग टलेना ॥ बिन० १ ॥
तपो भूमि में ना तपने से, कर की मनका ना जपने से ।
नहीं हिमालय के खपने से, मिले मोक्ष के द्वारे ॥
संसारी फांस खुलेना ॥ बिन० २ ॥
चाहे रामेश्वर हो आओ, चाहे जगन्नाथ को जाओ ।
कुरुक्षेत्र में द्रव्य लुटाओ, सफल न जन्म तुम्हारे ॥
झूठा व्यवहार चलेना ॥ बिन० ३ ॥
कोई दर्शन से मोक्ष बतावे, कोई २ घूम उम्र गँवावे ।
गंगा सहाय सच्ची दरशावे, प्रभु के बिना विचारे ॥
मनकी कामना फलेना ॥ बिन० ४ ॥

भजन ५६४

टलती है तेरी तलाश में, जड़ को चेतन माना है ॥ टेक ॥

जड़ को चेतन मान रहा है तुझ में ना कुछ ज्ञान रहा है ।
दुख में सुख तू जान रहा है, झूठे भोग विलास में ।
नहिं हर को पहिचाना है ॥ जड़० १ ॥
अपना नहिं समझा निस्तारा, तीरथ करने मूढ़ सिधारा ।
मन अपने से भ्रम न बिसारा, लगा है झूठी आस में ।
पहना गुरु का बना है ॥ जड़० २ ॥
निशदिन भूला पोप जाल में, सत्य वस्तु नहिं जमी ख्याल में ।
अपस्वारथ के फंसा जाल में, समझा प्रभु नाहिं पास में ।
उसे हदवाला जाना है ॥ जड़० ३ ॥
जगदीश्वर की सुध बिसराई, बड़ पीपल लिये ईश बनाई ।
बर्मा कहे प्रभु के गुण गाई, लग भक्ती की चास में ।
मुशकिल से जनम पाना है ॥ जड़० ४ ॥

भजन ५६५

वेद सनातन त्यागे, मिथ्या झूठे रचे पुरान ।
इनमें मिथ्या लिखी कहानी, लोगों ने सांची कर जानी ॥
सब नर नारि बने अज्ञानी, होगये पशू समान ॥ वेद० १ ॥
कर उपदेश झूठ का जारी, वेद विरुद्ध बने नर नारी ।
भरतखण्ड की इज्ज़त सारी खोकर बने नादान ॥ वेद० २ ॥
पोपों ने कीनी चालांकी, धर्म यहां पर रहा न बाकी ।
जड़ वस्तू की कराई झांकी, बतला के भगवान ॥ वेद० ३ ॥
बेहोशी को त्यागो भाई, बन जाओ श्रुतिमत अनुयायी ।
गंगा साह बड़ा सुखदाई, वेद धर्म का ज्ञान ॥ वेद० ५ ॥

भजन ५६६

पापों का ज्ञान देखो भारतवासी ।
ब्रह्मा को दोष लगाया, कन्या पर चित्त चलाया ।
कहे भागवत पुराण ॥ देखो० ॥ १ ॥
विष्णु को छली बताया, वृन्दा का सत्त डिगाया ।
कहे यह पद्मपुराण ॥ देखो० २ ॥
शिव को विषयी ठहराया, मोहन के पीछे धाया ।
पढ़ो भागवत पुराण ॥ देखो० ३ ॥
शिवपुराण यूं फ़र्मायें, शिव नंगे होकर धायें ।
ऋषी पत्नी हैरान ॥ देखो० ४ ॥
गोपाल सहस्सरनामी, वह कृष्ण को कहता कामी ।
चोर जारों के प्रधान ॥ देखो० ५ ॥
पुस्तक जो बाल्मीकी की, गति इन्द्र अहिल्या जी की ।
करी कैसी व्याख्यान ॥ देखो० ६ ॥
मैं कहां तक तुम्हें सुनाऊं, निर्दोष कोई नहीं पाऊं ।
जो हैं पोपों के महान ॥ देखो० ७ ॥
यह राधाशरण है गावे पोपों को शर्म नहीं आवे ।
किया कैसा अपमान ॥ देखो० ८ ॥

भजन ५६७

सनातनधर्म और आर्य समाजों में जो अनबन है ।
जहां तक हमने सोचा है, अविद्या इसका कारन है ॥

वह कहते हैं धरम वह है, जो लिक्खा है पुराणों में ।
यह बतलाते धर्म उसको, कि जो वेदों में वर्णन है ॥
वह बतलाते महीधर, सायणा के भाष्य को सच्चा ।
यह कहते कि उनमें, वाममार्ग का निरूपन है ॥
वह बरसों की भी बातों को, सनातनधर्म बतलावें ।
यह कहते आदि सृष्टि से, जो है वह ही सनातन है ॥
वह कहते हैं कि परमेश्वर, जनमता और मरता है ।
यह कहते नहीं उसके लिये कोई भी बन्धन है ॥
वह कहते हैं मूर्ति पूजन को, ज़रिया मन लगाने का ।
यह बतलाते हैं ज़रिया इसका, केवल योग साधन है ॥
वह कहते हैं कि परमेश्वर है, मन्दिर और शिवाला में ।
यह बतलाते कि उनका, ज़र्रा से ज़र्रा भी मस्कन है ॥
वह कहते हैं मिले ईश्वर, मजिज़ घण्टा हलाने से ।
यह बतलाते नहीं बिन योग, उसका होता दर्शन है ॥
वह कहते हैं कि गंगा से, कटे है मैल पापों का ।
यह कहते हैं कि जल से, शुद्ध होसका फ़क़त तन है ॥
वह कहते हैं कि मुर्दा आनकर जी में कनागत को ।
यह कहते हैं कि ज़िन्दाही, फ़क़त कर सक्ता भोजन है ॥
वह कहते हैं जन्म लेही ब्राह्मण, गो निरक्षर हो ।
यह कहते ब्रह्म को जो जानले, वहही ब्राह्मण है ॥
वह कहते हैं न खाने से, मिले बैकुण्ठ में बासा ।
यह कहते हैं न खाना, सिर्फ़ बहरे राहतेतन है ॥
वह बतलाते हैं तीरथ, जायजा फिरने व लुटने को ।

यह कहते हैं बड़ा तीरथ, जो यम नियमों का पालन है॥
वह कहते हैं पशुवध यज्ञ के मौक़े पै जाइज़ है।
यह बतलाते कदापी भी नहीं यह फ़ेल अहसन है॥
वह बतलाते सनातन पीर सैयद ताज़िया पूजा।
यह कहते हैं कि यह हरकत सरासर धर्म खण्डन है॥
वह बतलाते हैं नौ दस साल में बच्चों का ब्याह करना।
यह कहते हैं कि ऐसा ब्याह बल बुद्धि का दुश्मन है॥
वह बतलाते सनातन ब्याह में रंडी नचाने को।
यह कहते हैं कि यह व्यभिचार बदकारी का मखज़न है॥
वह कहते हैं रवा है बाल बिधवाओं का तड़पाना।
यह बतलाते कि बस यह नर्क में जाने का लक्षन है॥
वह कहते हैं समुन्दर यात्रा को फ़ेल नाजाइज़।
यह कहते हैं रवा हर तौर से देशों का भ्रमन है॥
वह कहते हैं नहीं जाइज़ है बिलकुल स्त्री शिक्षा।
यह कहते हैं कि नारी का बड़ा विद्याही भूषण है॥
बिना विद्या के सालिगराम खुलने की नहीं हर्गिज़।
जो इन दोनों फ़रीक़ों में पड़ी इस वक़्त उलझन है॥

दादरा ५६८

प्रभु वह लामकान है, सच्चा वेदोंही ने गाया॥ टेक॥

क्षीरसमन्दर में सोते प्रभु, ऐसा कहें पुरानी। अर्श हफ्त पर लिये फ़रिश्ते, ऐसा कहें कुरानी॥ प्रभु० १॥

पुराण कहे जहँ चार हाथ, वहँ कुरां में यों फ़रमाया। मिट्टी गूँदी खुदा ने खुदही, जब आदम बन पाया॥ प्रभु० २॥

स्वर्ग नर्क दोज़ख बैहिश्त का फन्दा वेदय जान। कर्मों का फल ज़रूर देगा, हूरन दें गिलमान॥ प्रभु० ३॥

दिलमें आया हवाल में नहिं, वेद ये उसका ज्ञान। आसमान से यहीं आई, यों हुआ ज़हूर कुरान॥ प्रभु० ४॥

मूरख क्यों है फिरे भरमता, क्या पढ़ रहा कहानी पाठक कहे अब शरणागत हो, मान २ रे प्रानी॥ प्रभु० ५॥

ग़ज़ल ५६९

हम से धरम का बाज़ छुपाया नहीं जाता।
जो सच है उसे झूठ बताया नहीं जाता॥
गिरिराज जी के क़िस्से का आता नहीं यक़ीन।
उँगली पै एक पहाड़ उठाया नहीं जाता॥
मरियम के पेट से हुआ पैदा इस्रू मसीह।
हमसे खुदा का बेटा बताया नहीं जाता॥
लिक्खा कुरां में क़त्ल करो काफ़िरों को तुम।
बहशीपने पै दिल को जमाया नहीं जाता॥
राज़िक को क़र्ज़ लेने का इलज़ाम लगाकर।
इज़्ज़त को उसकी हम से घटाया नहीं जाता॥
अपने शिकम के वास्ते ग़ैरों की रूह को।
बिस्मिल्ला करके हम से सताया नहीं जाता॥

ईदुज्जुहा के रोज़ उम्मीदे सवाब पर।
बकरों के सर को तन से कटाया नहीं जाता॥
धोके में ऐसे लोगों के हरगिज़ न आइयो।
वैदिक धरम को शर्म्मा गँवाया नहीं जाता॥

गज़ल ५७०

हर एक ने फ़िरक़े बना लिये हैं, किताबें झूठी बना बनाकर।
फँसाया फन्दे में सैकड़ों को, करामात अपनी दिखा दिखाकर॥
कोई कहे मन्दिरों में आओ, कोई कहे मसजिदों में जाओ।
खुदाकी होती है यों इबादत, खुदा खुदा कर खुदा खुदाकर॥
किसीने सूरज लिखा निगलना, किसीने शशि के किये दो टुकड़े
खुदा की बातें फिरें बताते, क़िसाने झूठे सुना सुना कर॥
कहीं पिलावें हैं आब जमजम, कहीं करावें तवाफ़ेकाबा।
खुदापरस्ती से हैं डिगाते, वह बुतपरस्ती सिखा सिखा कर॥
कहीं हदीस और कहीं सिपारा, कहीं पै कुरआं का दे हवाला।
जिहाद से करते कुश्त और खूं हैं दीं बढ़ाते लड़ा लड़ाकर॥
बता कहीं पर ज़मीं बिछौना, कहीं फ़लक़ को है छत बताया।
फँसाते हैं दीन ईसवी में, ईसू को सूली चढ़ा चढ़ा कर॥
कहीं पै ईसा कहीं मुहम्मद, कहीं पै मूसा कहीं पै गौतम।
किये हैं गुमराह सब ने शर्मा, हज़ारों घातें लगा लगा कर॥

दादरा ५७१

अर्य्यों की चलन मुझे प्यारी है।

कहिं प्रद्युम्न सुत माता यशोदा। इधर न प्रभु संसारी है॥आ०॥
दोस्त मुहम्मद कहीं ईसू है बेटा। बेटा न यहां महतारी है॥आ०॥
इधरगुनाहोंमेंचलतीशिफ़ारिश।इधरतोप्रभुन्यायकारीहै॥आ०॥
मुर्दोंको गाड़ें उधर वायुबिगाड़ें। इधर हवनसे सुधारीहै॥आ०॥
उधर दया तज पशुओंको मारें। इधर दया बड़ी प्यारीहै॥आ०॥
उधरउपकारकानकोईभीज़रिया।इधरअनाथरक्षाजारीहै॥आ०॥
पाठक कहें सब वेदोंको मानो। यही तो रीति सुखारीहै॥आ०॥

ग़ज़ल ५७२

मुफ़स्सिल हाल पोपों का हमें सब को सुनाना है।
सुनो इस वास्ते इनका हुआ दुशमन ज़माना है॥
दया औ मक्र से धोखे से बातों से फ़रेबों से।
बता के राह मुक्ती की उदर अपना बढ़ाना है॥
इन्हीं के कहने सुनने से अक़्ल के अंधे भारत ने।
बिमारी खुजली और चेचक को माता करके माना है॥
कहीं चढ़वाते हैं लड्डू कहीं पेड़े कहीं बर्फ़ी।
मुक़द्दम हर तरह रक्खा इन्हों ने अपना खाना है॥
नहीं मालूम क्या पत्थर पड़े हैं अक़्ल पर इनकी।
रखा शिव नाम पत्थर का भला इनका ठिकाना है॥
है शिवजी नाम ईश्वर का नहीं मालूम पोपों को।
उसी को इन्द्र और अग्नी भी वेदों ने बखाना है॥
पढ़ाओ नारियों को तुम कहे इस बात को उल्मा।
अगर मंज़ूर भारत से अविद्या का मिटाना है॥

भगाओ आर्य भाई तुम फ़रेब और मक्र भारत से।
बिठाओ अपना सिक्का तुम जहां पोपों को थाना है॥
तुम्हें उपदेश करना हर घड़ी मुश्ताक़ लाज़िम है।
जो भारतवासियों को पोपलीला से बचाना है॥

भजन ५७३

टेक-पूजे त्योहार, मना देव मन माने।
तिथि वार न छोड़ी खाली। कोई मास न बैठे खाली।
कहें किस भांति विचार॥ म० १॥
घी का कुछ छींटा दीना। कहीं दीपक जलवा लीना।
हवन; का तजा प्रचार॥ म० २॥
अंगारी जलती पाओ। कहीं पैले सदा तुम आओ।
खुशी की नहीं शुमार॥ म० ३॥
तैंतिस हैं देवता भाई। जिन्हें वेद रहा बतलाई।
जो हैं सब सुख के द्वार॥ म० ४॥
तुम अजर अमर अविनाशी।ईश्वर अज विश्वप्रकाशी।
करो प्रभु शीघ्र सुधार॥ म० ५॥
जब दयानन्द ऋषि आये। भाइयो! सोते सभी जगाये।
कहो पाठक यह सार॥ म० ६॥

भजन ५७४

टेक-ईश्वर से चित्त हटाय के, किस बुरे जाल में डाला॥

कभी ऊत भूत पुजवाये कि ललिता माई।
मीरा की कराई हम से कभी कढाई॥
कभी धोखा दे ज़ाहिर की रात जगवाई।
कभी नरसिंह पांडे की दहिशत दिखलाई॥
कभी कलकत्ते की काली, है जिसकी जोति निराली।
चढ़े मांस पिये मद प्याली, चौरासी घण्ट वाली॥
कभी मठ समाधि अरु पीर, बलाकर बीर, मिला तदबीर,
हमें डरपायके, पुजवाया सेढू लाला॥ किस० १॥
कभी चण्डी देवी और कभी चामुण्डा॥
कभी बाबा जी का गले में डाला गण्डा॥
कभी चौंसठ जोगिन और भुइयां कर झण्डा।
पुजवा २ के माल उड़ा गये सण्डा॥
छप्पन कलुआ बतलाये, और बावन बीर गिनाये।
बन्दर हनुमान पुजाये, वहां मोहन भोग उड़ाये॥
कभी लच्ची और मशान, कभी स्थान, जान अज्ञान, समय
को पायके, पुजवाई हम से ज्वाला॥ किस० २॥
कभी क्षेत्रपाल दिक्पाल लंगुर अगवानी।
कभी सांप बांबी पुजवाई सुनाय कहानी॥
कभी लोना चमारी और चुड़ैल मशानी।
कभी बूढ़ा बाबू पर्वत पेड़ और पानी॥
तालाब कभी तलैया, कभी भंगी संग अखैया॥

कभी चौराहे की मैया, चढ़े सूअर यही रवैया ॥
कभी ख्वाजा और मदार, भैरों सरदार, कहूं दरबार ।
इमें बहकाय के, पुजवाया कुत्ता काला ॥ किस० ३ ॥

कभी हमसे शंकिनी और डंकिनी घूरा ।
देवी का बाहन गधा पुजाया भूरा ॥
कभी नगरसेन धोबी और डक्सन सूरा ।
फिर भी पोपों का पेट भरा नहीं पूरा ॥

भज्जू चमार बाराही, मित्रो ! हम से पुजवाई ।
भारत की सभी बड़ाई, दी खो और हँसी कराई ॥
यों कहैं मुरारीलाल, करके अब ख्याल, छीन धनमाल ।
ऐसी भंग पिलाय के, किया देश सभी मतवाला ॥ किस० ४॥

भजन ५७५

टेक-गणपति का रूप बनाय के पीली मिट्टी पुजवाई ।
लम्बा पेट सूंड़ बतलावें, सुन्दर रूप भूत गण धावें ।
सदा कैथ और जामुन खावें, ऐसे वचन सुनाय के ।
ठग ठग के दुनियां खाई ॥ पीली० १ ॥
हे गणेश अतुलित बलधारी, चूहे की वह करे सवारी ।
फिर भी समझें नहीं अनारी, बैठे शीश झुकाय के ।
कैसी मूरखता छाई ॥ पीली० २ ॥
मिट्टी के कहांपट सूंड़ है, कहां दांत और कहां मूड़ है ।
जो तुम को इस में भी हूँढ़ है, देखो डली उठाय के ।
यहां खर्च होय ना, पाई ॥ पीली० ३ ॥

मिट्टी पर छींटे लगावें, चावल और मीठा चढ़वावें ।
कहे मुरारी माल उड़ावें, अन्धे सभी बनाय के ।
क्या अच्छी गप्प उड़ाई ॥ पीली० ४ ॥

गजल ५७६

साधो ! जग को को ? समुझावे ।
तज प्रत्यक्ष सतगुरु परमेश्वर, जड़ को पूजन जावे ॥ १ ॥
जड़ पूजा के फल अदृष्ट हैं, कालान्तर से पावे ।
दृष्ट अदृष्ट उभय फल दायक, सो पूजा नहिं भावे ॥ २ ॥
ले पाषाण मूर्ति कर से गाढ़, बहु विधि रूप बनावे ।
विष्णु शंकर सूर्य्य गणपति, जो कुछ मन में आवे ॥ ३ ॥
दधि घृत पय मधु ले प्रमाण से तामें खांड़ मिलावे ।
यहि विधि से करि पंचामृत तेहि, मूरतिपर ढरकावे ॥ ४ ॥
पुनि ले विमल वारि सुरसरि को, शुद्धस्नान करावे ।
धोय पोंछि चन्दन लगाय के, पट भूषण पहिरावे ॥ ५ ॥
करो प्रतिष्ठा बेदमन्त्र से तामें प्राण बुलावे ।
जो वे मन्त्र सत्य करि माने, निज पितु क्यों न जिवावे ॥ ६ ॥
भोग थार धरि ताके सन्मुख, घण्टा नाद बजावे ।
भोजन कौन ? करै बिन चेतन, उलटि आप ही खावे ॥ ७ ॥
यहि विधि करत करत जड़पूजा, आपहु जड़ बनजावे ।
कहैं कबीर ज्ञान सतगुरु का, कैसे हृदय समावे ॥ ८ ॥

भजन ५७७

साधो ! मोहि कोई समुझावे ।
जीव ब्रह्म दोउ एक कि न्यारे, याको भेद बतावे ॥ १ ॥
एक कहे बहु शंका होवे, दो कहते थांन आवे ।
पृथक २ दोऊ गये माने, शंका शास्त्र बढ़ावे ॥ २ ॥
ब्रह्म अखण्ड अनादि निरन्तर, इमि श्रुति कहि गुहरावे ।
जीव सदा पावे गर्भाशय, सो किमि ब्रह्म कहावे ॥ ३ ॥
सर्व शक्ति युत वह अरु यह तो, अल्प हि काम चलावे ।
वह सर्वज्ञ त्रिकाल का दर्शी, यह कछु लखि नहिं पावे ॥ ४ ॥
अस वितर्क सतगुरु बिन दूजा, को करि कृपा मिटावे ।
ब्रह्म स्वच्छन्द जीव माया वश, प्रकट कबीर दिखावे ॥ ५ ॥

भजन ५७८

टेक-जग ठगने का व्यवहार है, जी चाहे जब आज़मालो ॥
मल मल कर स्नान कराओ, घिस २ चन्दन तिलक लगाओ ।
चाहे जितने भोग लगाओ, करलो यतन हज़ार है ॥
नहीं खाते उसे उठालो ॥ जी चाहे० १ ॥

अज़माये को जो अज़माये, वह तो नाआक़ूल कहाये ।
यह जड़ वस्तू पिये न खाये, वह पूरा मक्कार है ॥
जो रोज़ कहे सो खालो ॥ जी चाहे० २ ॥

क्यों इनकी करता भक्ती है, इनमें नहिं चेतन शक्ती है ।
यह तो पत्थर की किश्ती है, हरगिज़ होय न पार है ॥
चाहे कितना यतन बनालो ॥ जी चाहे० ३ ॥
तेजसिंह चातुर है थोड़ा, लखो वेद में माने सो ही ।
ईश्वर की नहीं प्रतिमा कोई, निराकार आधार है ॥
उसही के तुम गुण गालो ॥ जी चाहे० ४ ॥

भजन ५७९

दोहा-पत्थर पूजे हरि मिलें, तो लें पूज पहार ।
इससे तो चक्की भली, पिसा खाय संसार ॥
टेक-करो चेतन ब्रह्म उपासना, मत करो जड़ों की सेवा ।
जड़ से जड़ हो जावे बुद्धी । ब्रह्मज्ञान की रहे न शुद्धी ॥
प्रतिमा पूजें वेद विरुद्धी । जिन से कोई भी आश ना ॥
दांही चढ़े मिठाई मेवा ॥ मत० १ ॥
सुनें न समझें हिलें न चालें । जिन पर पुष्प और अक्षत डालें ॥
औरों के दुख कैसे टालें । अपनी ही मिटै प्यास ना ॥
सुख कैसे दें तुम देवा ॥ मत० २ ॥
ऋषी मुनी सब यही सुनावें । पुराण भी कहीं यही बतावें ॥
मूढ़ बुद्धि मन इनमें लगावें । पर तुम को विश्वास ना ॥
खा पूरी खीर कलेवा ॥ मत० ३ ॥
पति की सेवा तज कर नारी । मन्दिर में जावें मति मारी ॥
बुरी दृष्टि वहां लखें पुजारी । परोपकार जहां बास ना ॥
है मुफ्त माल धन लेवा ॥ मत० ४ ॥

परमेश्वर है अपने मन में। फिरो ढूढ़ते परदेशन में ॥
भूले हुये फिरो मत धन में। प्रभु का खोज कयास ना ॥
कस्तूरी मृग लो भेवा ॥ मत० ५ ॥

भजन ५८०

टेक-पूजन पाषाण कब तक नहीं छोड़ोगे ॥
प्रतिमा पूजा करवाई, ईश्वर भक्ती छुड़वाई।
बना दिया पशु समान ॥ कब० ॥

नाना पूजा चलीं जब से, जड़ बुद्धि होगई तब से।
रहा नहीं कुछ भी ज्ञान ॥ कब० ॥

क्यों वृथा द्रव्य खोते हो, कल्लर में बीज बोते हो।
मुफ्त में हो हैरान ॥ कब० ॥

कहीं जयपुरसे मंगवाके, अरु नाक कान बनवा के।
दिखाते हैं अज्ञान ॥ कब० ॥

दोहा-कारीगर मूरत गढ़ी, पैरों बीच दबाय।
जो कुछ सत होता यहां, जीता उसको खाय ॥

फिर सभी वस्तु पहना के, अरु मन्दिर में थपवाके।
कहां लो हैं भगवान ॥ कब० ॥

फिर बाजे दिये बजवाई, मन्त्रों की झड़ी लगाई।
कहां अब आगये प्रान ॥ कब० ॥

जब 'न तस्य प्रतिमा अस्ती' फिर हैं यह क्यों ज़बरदस्ती
हुआ क्या है खफ़कान ॥ कब० ॥

सुनो भाइयो ! कान लगाई, जिसने यह सृष्टि रचाई।
उसे लीजो पहचान ॥ कब० ॥

भजन ५८१

दुनिया अजब दिवानी, मोरी कही एक ना मानी।
ताज प्रत्यक्ष सतगुरु परमेश्वर इतउत फिरत भुलानी ॥
तीरथ मूरति पूजन डोल कंकर पत्थर पानी।
बिषय वासना के फन्दे परि मोहजाल उरझानी ॥
सुखको दुख दुखको सुखमाने हित अनहित नहिंजानी।
औरन को मूरख ठहरावत आप बनत है सयानी ॥
सांच कहो तो मारन धावे झूंठ को पतियानी।
कहैं कबीर कहां लग बरनों अभुरत खेल बखानी ॥

ग़ज़ल ५८२

हमने नज़रों से बुतों को जो गिरा रक्खा है।
सर पै बुतखाने को पोपों ने उठा रक्खा है ॥
बुतपरस्तों ने जो वेदों को छुपा रक्खा है।
जललय हक़ को तहे संग दबा रक्खा है ॥
कहदो पोपों से कि खटका न करें आर्यों से।
बनों एक बात में सब भेद खुला रक्खा है ॥
झांझ घड़ियाल से तुम किसको जगाते हो जी।
बाद क्या खूब खुदा तक को सुला रक्खा है ॥
इस तरफ मजमये अग्नियार का है नाम समाज।

खेल तमाशों का यहां नाम लगा रक्खा है ॥
खञ्जर सिद्क अगर म्यान से निकले बाहर।
सर बुतालत का अभी तन से जुदा रक्खा है ॥
काबयो दह कलेसा से हमें काम नहीं।
उसके शैदां है जहां जिस ने बना रक्खा है ॥
सिद्केइस फहिमके और अकलो खिरदके कुर्बान।
खुद तराशा है मगर नाम खुदा रक्खा है ॥
वाह क्या कहना है शर्मा तेरी इन गज़लों का।
तूने भी खूब ही दुश्मन को जला रक्खा है

भजन ५८३

टेक-क्यों स्वारथ के वश होके, पाप जी किया धर्म का नाम।

बूढ़ों का लगन सुना कर ब्याह कराया।
उस अबलाको बस तुमही रांड बिठाया ॥
शास्त्रानुसार तुम ने अन्याय कमाया।
इस भारतीय बेड़े को खूब डुबाया ॥
जो तुम नहीं फेरे फिराते, वह कन्या बेच नहीं खाते।
लाचार बैठ रह जाते, जो तुम उन्हें दण्ड दिलाते ॥
करी तुमने देश की ख्वारी, तुम्हें धिक्कारी, हंसे नर नारी
मिलादी बूढ़ से उसकी राख ॥ क्यों० १ ॥
श्रार मदिरा मांस का तुमने प्रचार बढ़ाया।
श्लोक बना कर मनू वाक्य बतलाया ॥

और मनुस्मृति में तुम ने उसे मिलाया।
और बांच २ कर तुम ने जग बहकाया ॥
तुम्हें स्वारथ ने भर्माया, सारे देश का नाश कराया।
अपनाही मज़ा उड़ाया ज़रा रहम न कन्या पै आया ॥
तुमने स्वारथ के वश आय, गले कटवाय, नाश करवाय।
न आया तुम को ज़रा त्रास ॥ क्यों० २ ॥
जो मांसाशियों का तुम भोजन न खाते।
हो विवश फेर वह मांस को न ललचाते ॥
पर तुम तो श्राद्ध में खूब ही गप्फे उड़ाते।
खिलवा उनको और आप नहीं हो पाते ॥
क्षत्रिय उनको बतलाया, और मांस मद्य खिलवाया।
कहीं बकरों को कटवाया, और देवी पर चढ़वाया ॥
उन पर चलवा हथियार, करा फ़िन्नार, बने सर्दार।
जानो, जब लग तुम्हारे फांस ॥ क्यों० ३ ॥
तुम धर्म के पक्के जभी यार कहलाओ।
अनुकूल स्मृति के तुम भी मांस जब खाओ ॥
जब तुम नहीं खाओ मत उनको खिलवाओ।
जो वह न मानें मत न्योते उन्हें जिमाओ ॥
तुम अब भी धर्म बचाओ, ज़रा रहम देश पर खाओ।
फ़र्मान वेद बजालाओ, रही सहीको अबतो बचाओ ॥
कहे शंकरलाल सुनोयार, बनो मत ख्वार, करो प्रचार।
हुआ है वेदों का सुप्रकाश ॥ क्यों० ४ ॥

लावनी ५८५

अरी अविद्या पापिन तूने, भारत पर विपदा डारी।
कुमति फैला सब देश बिगाड़ा अब तो निकल जा हत्यारी॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र हा! सब की तैं हर बुद्धि लई।
चलन लगे बहु कुचाल जग में धर्म कर्म की सुधि न रही॥
वेद शास्त्र हा सभी छुड़ाये रचदी रचना नई नई।
अरी कलंकिन लाज न आई क्यों भारत पर कुपित भई॥
मात पिता निर्दयी होगये बैठत हैं कन्या क्वांरी। अरी०॥

तैं तस कोटि देवता पूज जिन देवन ना मन आने।
क़ब्र ताजिये ज़िन्न फ़रिश्ते लगे पूजने मन माने॥
कंकड़ पत्थर कछू न छोड़ा तनिक न मन में सकुचाने।
मन की दुबिधा कहीं मिटी ना लगे कर्मकृत फल पाने॥
ऐ बेदर्दिन ज़रा दया कर भारत पर संकट भारी। अरी०॥

सन्ध्या हवन गायत्री छोड़ी जन्म गँवाया भटक भटक।
मूर्त्ति पूज के बने पुजारी दुनिया लूटी मटक मटक॥
पाषाण मूरती धोय २ जल लागे पीवन गटक गटक।
चेलन को दें लो चरणामृत पियो स्वर्ग नहीं रहे अटक॥
क्या २ भाव दिखाये तूने देश बिनाशिन कलहारी। अरी०॥

देखो भाइयो! ज़रा तो समझो इन पोपों के चारीतर।
आप लपालप माल उड़ावें ईश्वर बना रक्खें पत्थर॥
आज मदनमोहन जी भूखे ओढ़न को न रहे खत्तर।

ले गया कोई चुराय दुष्टजन ठाकुरजी के सब बस्तर॥
भूषण लेते चोर आज हैं भूखे श्रीगिरिवरधारी। अरी०॥

घर २ कर के विरोध कपटिन सुख की नींद अबतौ खोई।
अनेक मत कर भरतखण्ड में विष की बेल दारुण बोई॥
डाल फूट सब देश बिगाड़ा झूठ फैला भारत खोई।
पक्षपात ने सर्वस खोया न्याय करैया नहीं कोई॥
वाम आदि कितने पाखण्ड मत भारत में कीन्हें जारी। अ०

देखो भाइयो! इस भारत में कैसी मूरखता छाई।
ब्रह्म सच्चिदानन्द छोड़ के पत्थर पूजा मन भाई॥
सत्य बात को कहें सुनें मत करें पोपजी मनचाही।
जो पूछे उत्तर नहीं देवें करें मन्दमति युध आई॥
असत् बात जो धर्म विरोधी श्रीस्वामी मेटी सारी। अ०॥

आय कहें तो बुरा मानते हिन्दू नाम से हो राज़ी।
विद्याबल पुरुषारथ खोया न्योत खा पूरी भाजी॥
भंग तम्बाकू अफ़ीम गांजा कहीं डटी चौसरबाज़ी।
आर्य धर्म को दे तिलांजली कथने लगे कथा ताज़ी॥
भाई बन्धु परिवार नारि सुत सब की है सम्मति न्यारी। अ०॥

ब्रह्मचर्य पूरा नहीं करते बालबिवाह रचाते हैं।
विद्याध्ययन नियम खण्डित कर बल और वीर्य गँवाते हैं॥
विधवा दुख पर तनिक दया ना सारी उमर रुलाते हैं।
तोड़ वेद मर्याद मूर्ख हा! लाखों पाप कराते हैं॥

मिलरीलाल कहें वेद ध्वनि मंह अब तो तुव रहना ना,री !
अरी अविद्या पापिन तू ने भारत पर बिपदा डारी ॥

भजन ५८५

टेक-किया धर्म का लोप, पोपों ने नये २ मत फैलाय ॥

तज वेद शास्त्र को झूठ पुराण बनाये।
कर ईश बिमुख इन भूत प्रेत पुजवाये ॥

कर २ मिथ्या उपदेश लोग बहँकाये।
कर दिया धर्म का नाश कुकर्म बढ़ाय ॥

इन नाना देव पुजाई, दिया द्वेष भाव फैलाई।
इन अपनी तोंद फुलाई, दिया भारत देश डुबाई ॥

करवाये खोटे काम, किया बदनाम, देश का नाम। धाम धन बैठे सभी गँवाय ॥ किया० १ ॥

कर बाल विवाह दिया ब्रह्मचर्य छुटवाई।
सब बुधि बल विद्या तहस नहस करवाई ॥

भयो वीर्य क्षीण जब रोगन करी चढ़ाई।
तब मीन मेष ग्रह की चाल बताई ॥

तुम्हें खोटा मंगल आया, करो तुलादान फरमाया।
कहीं राहु केतु बतलाया, दे धोखा माल उड़ाया ॥

लिया अपने जाल में फांस, देश का नाश, किया इनखास दास लिये तीनों वर्ण बनाय ॥ किया० २ ॥

मुर्दे का श्राद्ध कराय गया जिमवाया।
वहां लिया इन्होंने माल लूट मन भाया ॥

कहीं काशी मथुरा मुक्तिधाम बतलाया।
कहीं जगन्नाथ में भ्रष्ट भात खिलवाया ॥

कहीं बलिदान बतलाते, बकरों के शीश कटाते।
कहीं पंचमकार कराते, अरु मद्य मांस खिलवाते ॥

किया वृद्ध विवाह प्रचार, बढ़ा व्यभिचार। छार दिया बुद्धि बल वीर्य कराय ॥ किया० ३ ॥

इस कपट जाल को अब तो त्यागो भाई।
करो वैदिक धर्म प्रचार परम सुखदाई ॥

करो यज्ञ हवन जो ऋषि मुनि सबन बताई।
है सुखद सनातन यही रीति चलि आई ॥

करो अपने बड़ों की सेवा, है यही श्राद्ध सुख देवा।
जिन्हें कर गया काल कलेवा, वह खाय न पूरा मेवा ॥

बलदेव कहे घबड़ाय, तेरे गुण गाय, शीश पुनि नाय। धाय प्रभु अब तो करो सहाय ॥ किया० ४ ॥

दादरा ५८६

टेक-देह धारें नहीं प्रभु प्यारे ॥ देही का पाना कर्मों का फल है। ईश्वर हैं सारे कर्मों से न्यारे ॥ देह० १ ॥ ईश्वर तो सब के शरीरों का रचता। ईश्वर की देही को कौन संवारे ॥

देह० २ गर्भोंका रहना कलेशों का सहना । मुक्ती के दाता ने कैसे सहारे ॥ देह० ३ ॥ व्यापक अनन्ता धारे शरीरा । बुद्धी से रीते हैं मस्तक तुम्हारे ॥ देह० ४ ॥ लोटे में सागर मुट्ठी में आकाश । शीतलप्रसाद कहो किसने भरारे ॥ देह० ५ ॥

गजल ५८७

हँसी अपने बुजुर्गों की कराये जिसका जी चाहे ।
कि बेतहक़ीक़ जड़को सर झुकाये जिसका जी चाहे ॥
है वैदिक धर्म रूपी चश्मये आबे बक़ा जारी ।
पिये जल हाथ मुँह धोये नहाये जिसका जी चाहे ॥
दिखाई करके तहक़ीक़ात वैदिक मत की स्वामी ने ।
कि अपने को मज़ाहिब से बचाये जिसका जी चाहे ॥
नहीं है वहस करने में हमें कुछ उज़्र दम भर का ।
हरएक मज़हब के आलिमको बुलाये जिसका जी चाहे ॥
समाजों की न होगी भीमसेन आदी से कुछ हानी ।
खुशी सत् धर्म का दुश्मन मनाये जिसका जी चाहे ।
नहीं मुमकिन है हो सकना फ़िदा अवतार ईश्वर का ॥
अटल सिद्धान्त वेदों का मिटाये जिसका जी चाहे ॥

ग़जल ५८८

नक़ारा धर्म का बजता है आये जिसका जी चाहे ।
सदाक़त वेद अक़दस आज़माये जिसका जी चाहे ॥
भटकते फिरते जाहिल हैं भला अब किस लिये प्यारो ।

गया खुल धर्म का द्वारा है आये जिसका जी चाहे ॥
कलामुल्ला नहीं कोई सिवा एक वेद पुस्तक के ।
तनिक भी इसमें शक हो आज़माये जिसका जी चाहे ॥
लिखा यह वेद पुस्तक में कि एक जगदीश है सबका ।
बग़ैर इसके बुतों को सर झुकाये जिसका जी चाहे ॥
नहीं बैतुल मुक़द्दस में न काबा है मकाँ उसका ।
नहीं पूरब और उत्तर में भ्रमाये जिसका जी चाहे ॥
व्यापक सर्व थल में जो उसे एक देशी मानें ये ।
सरासर अक्ल को अंधा बनाये जिसका जी चाहे ॥
जो पेशी २ करता था न हक़ ने मददगारी की ।
तो फिर ख़ातिर पै उसके जां गँवाये जिसका जी चाहे ॥
शिफ़ारिश नबी पीरों की वह हर्गिज़ है नहीं सुनता ।
अबस इलज़ाम रिश्वत का लगाये जिसका जी चाहे ॥
मनादी शहर में करदो पढ़ो तुम वेद पुस्तक को ।
और हुंडी जाल की झूठी चलाये जिसका जी चाहे ॥
मतों के जाल झूठे हैं फँसे इनमें रहो मत यों ।
यही कहना है सेवक का भुलाये जिसका जी चाहे ॥

दादरा ५८९

हमतो सोते भारत को जगाये जायँगे ।
पुरानी कुरानी जो चाहे सो करें ॥ हम० ॥
काम क्रोध मद लोभ सबों को भंगचरस मद्यादि नशों को ।
लोगों से यह भी छुड़ाये जायँगे ॥ हम० १ ॥

झूठी पुस्तक मिथ्या कहानी, अपस्वारथपन औ मनमानी।
सब के दिलों से हटाये जायँगे ॥ हम० २ ॥

पूजा बुतों की क़ब्रपरस्ती, भेंट कुर्बानी नफ़्सपरस्ती।
अब सब के मनों से मिटाये जायँगे ॥ हम० ॥

मुर्दों की सेवा खाना खिलाना, खावें जो कर धूर्त बहाना।
इन पाखण्डों का भेद बताये जायँगे ॥ हम० ४ ॥

गौ विधवों की आहें जारी, जिस से हुई दुर्गति भारी।
सब प्रकार सुनके सुनाये जायँगे ॥ हम० ५ ॥

पशुओं का निशवासर कटना, भैंटों का करना वायु का सड़ना
अब लोगों से बन्द कराये जायँगे ॥ हम० ६ ॥

भडुवा नचाना रंडी को गाना, रासें कराना धनका गँवाना
लोगों से शुभ कृत्य कराये जायँगे ॥ हम० ७ ॥

भाई से देखो रूठा है भाई, बाहरी और कहीं घर ढाई।
हम फिरसे इन सब को मिलाये जायँगे ॥ हम० ८ ॥

भारत की हुई अजब तबाही, लूटन लगे हमें यवन ईसाई।
हम तो भारत की व्यवस्था सुनाये जायँगे ॥ हम० ९ ॥

ऐसी अविद्याथी हम पर छाई, ईश्वर ने दिया ऋषि प्रगटाई
अब तो स्वामी के गुन सब गाये जायँगे हम० १० ॥

परम गायत्री सन्ध्या हवन अब, वेदों के मन्त्र सुन्दरजो सब
लोगों को अब यह सिखाये जायँगे ॥ हम० ११ ॥

ईश्वरके गुण मिलकर गाओ,बुरे कर्मोंसे मनका हटाओ।
आरज फिर सब आनन्द पद पाये जायँगे ॥ हम० ॥

गज़ल ५९०

जो पत्थर ईमान लाये हुए हैं,
अविद्या में मन को लगाए हुए हैं।
नदी नालों के तीर्थों में भटक कर,
जिहालत से मनको लुभाये हुए हैं ॥
नचा कृष्ण राधाको रासों के अन्दर,
वह योगी को कामी बनाये हुए हैं।
वह ब्रह्मा पै इलज़ाम दुख्तर लगा कर,
बुजुर्गी फज़ीलत घटाये हुए हैं ॥
बतावें जो औतार खालिक का जग में,
वह ईश्वर पै धब्बा लगाए हुए हैं।
दयानन्द स्वामी ने हालत सँभाली,
वह समझे जो बुद्धी को पाये हुए हैं ॥
नहीं उनको आई कभी अक़ल शर्मा,
जो मुर्दों पै दिल को जमाये हुए हैं।

भजन ५९१

झूठे ध्यान से जी, प्रभु प्रियतम नहीं मिलेगा।
उठा बैठ में वक़्त गुज़ारा, कैसे कहे इबादत?

झूठी पुस्तक मिथ्या कहानी, अपस्वारथपन औ मनमानी।
सब के दिलों से हटाये जायँगे॥ हम॰ २॥

पूजा बुतों की क़बरपरस्ती, भेंट कुर्बानी नफ्सपरस्ती।
अब सब के मनों से मिटाये जायँगे॥ हम॰॥

मुर्दों की सेवा खाना खिलाना, खावें जो कर धूर्त बहाना।
इन पाखण्डों का भेद बताये जायँगे॥ हम॰ ४॥

गौ विधवों की आहों जारी, जिस से हुई दुर्गति भारी।
सब प्रकार सुनके सुनाये जायँगे॥ हम॰ ५॥

पशुओं का निशवासर कटना, भेंटों का करना वायु का सड़ना
अब लोगों से बन्द कराये जायँगे॥ हम॰ ६॥

भडुवा नचाना रंडी को गाना, रास कराना धनका गँवाना
लोगों से शुभ कृत्य कराये जायँगे॥ हम॰ ७॥

भाई से देखो रूठा है भाई, बाहरी और कहीं घर ढाई।
हम फिर से इन सब को मिलाये जायँगे॥ हम॰ ८॥

भारत की हुई अजब तबाही, लूटन लगे हमें यवन ईसाई।
हम तो भारत की व्यवस्था सुनाये जायँगे॥ हम॰ ९॥

ऐसी अविद्याथी हम पर छाई, ईश्वर ने दिया ऋषि प्रगटाई
अब तो स्वामी के गुन सब गाये जायँगे हम॰ १०॥

परम गायत्री सन्ध्या हवन अब, वेदों के मन्त्र सुन्दरजो सब
लोगों को अब यह सिखाये जायँगे॥ हम॰ ११॥

ईश्वरके गुण मिलकर गाओ, बुरे कर्मोंसे मनका हटाओ।
आरज फिर सब आनन्द पद पाये जायँगे॥ हम॰॥

गजल ५९०

जो पत्थर ईमान लाये हुए हैं,
अविद्या में मन को लगाए हुए हैं।
नदी नालों के तीर्थों में भटक कर,
जिहालत से मनको लुभाये हुए हैं॥
नचा कृष्ण राधाको रासों के अन्दर,
वह योगी को कामी बनाये हुए हैं।
वह ब्रह्मा पे इलज़ाम दुस्तर लगा कर,
बुजुर्गी फज़ीलत घटाये हुए हैं॥
बतावें जो औतार खालिक़ का जग में,
वह ईश्वर पे धब्बा लगाए हुए हैं।
दयानन्द स्वामी ने हालत सँभाली,
वह समझे जो बुद्धी को पाये हुए हैं॥
नहीं उनको आई कभी अक़ल शर्मा,
जो मुर्दों पे दिल को जमाये हुए हैं।

भजन ५९१

झूठे ध्यान से जी, प्रभु प्रियतम नहीं मिलेगा।
उठा बैठ में वक़्त गुज़ार,, कैसे करे इबादत?

चिल्लाकर बैरों को सुनावे, दुनियादार शहादत ॥झूठे०॥
खुदा तुम्हारा दूर बसे ना, फिर क्यों रौल मचाई ?
गौर करो कुछ दिल के अंदर,इस में नहीं भलाई ॥झूठे०॥
छोड़ वेद को बने पुरानी, भूल गए सब ज्ञान ।
उमर गँवाई, है नाहक में बने मूरख नादान ॥ झूठे० ॥
जड़ वस्तु में कहां ज्ञान हैं ? पूज्य एक ओंकार ।
वेद रीतिसे सुमिरन करले, 'जगन' यही है सार ॥झूठे०॥

भजन ५६२

टक-ढूंढ हारी मेरा प्यारा तो मिले ना ।
ऊँचे सिंहासन तकिए लगाए, उस पै मूरति बिठलाई ।
चारों ओर परिक्रमा करती, बाजोंकी झनकार सुनैना ।
मेरा प्यारा तो सुने ना ॥ ढूंढ़० ॥
बदरी काशी गंङ्गा जी धाइ, पूजे कुण्ड अरु झाड़ी ।
आय पत्थरों में शिर मारा, हर पैड़ी हरिद्वार लखैना ॥
मेरा तो लखैना ॥ ढूंढ़० ॥
देवी देवता सारे पूजे, कोई न छोड़ा खाली ।
एकादशी पूनो व्रत धारा, नोपै नज़र एक बार करैना ॥
मेरा प्यारा तो करैना ॥ ढूंढ ॥
वृथा बखेड़ों से चित्त हटाओ, करो ईश्वर से ध्यान ।
'जगन' रिझाओ अपने प्रभुको, तेरे भवकूप परैना
मेरा प्यार तो परैना ॥ ढूंढ० ॥

भजन ५६३

क्याल-कितने ही मनुष्य यों कहें, आर्य्यों ने ऐसा अन्धेरकिया
तैंतिस कोटि देवता सब परहै पोछारा फेर दिया ॥
असल में तैंतिस कोटि नहीं हैं बस वह देवता हैं तैंतिस
तैंतिस से तैंतिस कोटि बनाये खुदग़र्ज़ों ने हथफेर किया॥
वेद शास्त्र में नहीं कहीं ये सब इनकी चालाकी है ।
तेजसिंह ले उसी जाल में तुम को हकुमत ज़ेर किया ॥
दोहा-देवों के भ्रमजाल में भूला सब संसार ।
देवों का कहूँहाल मैं, करिये मित्र विचार ॥
टेक-वेदों में देव तैंतिस हैं, बता तैंतिस कोटि कहां है ।
प्रथम देवता आठ बसु हैं भाई ।
कहता हूँ इनका हाल सुनो चित लाई ॥
जल, अग्नि, वायु, आकाश अवनि को जानो ।
नक्षत्र, सूर्य, चन्द्रमा आठ ये मानो ॥
तुम्हें आठ बसु बतलाये । सब अलग २ गिनवाये ।
बसुओं का अर्थ कहूँ भाई। जरा तू सुनले चितलाई ॥
इस लिये बसु इन्हें कहैं, जीव सब रहैं, दुःख सुख सहैं ।
न बाहर इनके बिस्वे बीस हैं, सब इन्हीं में आयें जायें ॥
कहूँ प्राण, अपान, व्यान, उदान, सुना के ।
समान, नाग और कूर्म, सुनो चित लाके ॥

और कृकल, धनंजय, देवदत्त, दशवां है।
और रुद्र ग्यारहवां जानो जीवात्मा है॥

दिये ग्यारह रुद्र बताके। सब मित्रों को समझा के।
ये इस लिये रुद्र कहावें। मरते समय रुदन करावें॥
दिये ग्यारह रुद्र बताय, अर्थ समझाय वसु ले मिलाय, ये
मिलाकर वसु रुद्र उन्नीस हैं, अब आगे के और बतायें॥

सम्वतसर के बारह आदित्य कहावें।
हैं यह भी देवता वेदानुकूल कहावें॥
इसलिये देवता इनका नाम धरें हैं।
सब जीवों की आयु को खतम करें हैं॥
करो हवन यज्ञ चितलाई। हैं यह भी देवता भाई।
शतपथ का लेख बतावे। तुम्ह कांड चौदहवें में पावे॥

पढ़ देखो धर के ध्यान, जो हो गुणवान, सबको भी जान।
ये मिलकर सब बत्तीस हैं, बिजली तेंतीस यहां हैं॥ बता०॥

है देव वही जो सब को सब कुछ देवे।
उल्टा देवे और आप न कुछ भी लेवे॥
देखो यह सब को कितना सुख देते हैं।
और आप किसी से कुछ भी नहीं लेते हैं॥
सूर्य की ओर निहारो। बुद्धी से खूब विचारो।
कर प्रकाश जल वर्षावे। दे अन्न न खाने आवे॥
जग रचता बारम्बार, करता संहार, सब का आधार।
देवता चौंतिसवां जगदीश है, पद तेजसिंह कथ गावें॥बता०॥

भजन ५९४

दोहा-औरों को ही देव दें, उन्हें न कुछ दरकार।
अब के देव देते नहीं, लेने में हुशियार॥

टेक-अब के देव हमारे, देखो कैसे हुशियार।
यह उल्टा हम से लेवें। और हमें न कुछ भी देवें।
भुइयां भैरों सरदार॥ अब०॥
दे दिया तो क्या दिया नीका। दे दियां खून का टीका।
मूर्ख लें लगा लिलार॥ अब०॥
यह बकरा वो भैंसा खावें। पानी से नाहिं अघावें।
रक्त की बह रही धार॥ अब०॥
हमें कैसी अविद्या छाई नहीं करता कोई दवाई।
पुत्र जब हो बीमार॥ अब०॥
नीचों की हाहा खावें। कर जोड़ पगों पड़ जावें।
भंगी या होवें चमार॥ अब०॥
यह देव नहीं सब छल है। क्यों जाती रही अक़ल है।
तेजसिंह करो विचार॥ अब०॥

भजन ५९५

दोहा-टके सेर मुक्ती बिके, लो सब इसे खरीद।
रजिस्टरी करवा लो, देंहैं पोप रसीद॥
टेक-कुछ काम न जप तप ज्ञान, से, ले लो सस्ती है मुक्ती।

जगन्नाथ जाने से मुक्ती, जूठा भात खाने से मुक्ती।
अनन्त बँधवाने से मुक्ती, कहीं गंगा स्नान से॥
क्या सहिल निकाली युक्ती॥ ले लो० १॥

एकादशी रहने से मुक्ती, मरा मरा कहने मुक्ती।
पिण्डदान करने से मुक्ती, कभी चरणामृत पाने से॥
कहते हैं कभी नहीं रुक्ती॥ ले लो० २॥

काशी में मरने से मुक्ती, चार धाम करने से मुक्ती।
ईश्वर के लड़ने से मुक्ती, जो है सिद्ध प्रमान से॥
उसकी नहीं करते भक्ती॥ ले लो० ३॥

रुद्राक्ष और तिलकछापसे, दशम भागवत के प्रतापसे।
कभी होवे बम बम के जापसे, और पूजन पाषण से॥
शर्मा सुन तबियत फुक्ती॥ ले लो० ४॥

भजन ५९६

तुमहीं करना इंसाफ़, धर्म सभा के मित्रो!
जिनको तुम कहो पुरानी, क्या नहिं निर्लज्ज कहानी।
हमारा कुसुर मुआफ़॥ धर्म सभा १॥

घनाक्षरी।

देखो चोर जारों के शिखामणी पुकारे विष्णु ब्रह्माको सुनाया निज सुता पीछे धाये हैं। चन्द्रमा बताये गुरुपत्नी के भोगी अरौ गाथा शिवलिंग की सुनाय न लजाये हैं॥ पारा-

शरि ऋषि मत्स्योदरी सों जार करें गौतम की नारि पर इन्द्रहू लुभाये हैं॥ द्रौपदी के पांच पति पाण्डव से धर्म वीर, ऋषियों को दूषण पुराणों ने लगाये हैं॥

प्रभु निराकार बतलाओ, साकार भी उलटा गाओ।
अक़ल के इतना खिलाफ़॥ धर्म सभा० २॥

दया धर्म का अंग बताओ, बकरे बलि दे कटवाओ।
धर्म में देहु शिगाफ़॥ धर्म सभा० ३॥

जाते जब गंगा न्हाने, लगे दुष्ट कर्म्म करवाने।
कहना पड़ता है साफ़॥ धर्म सभा० ४॥

घनाक्षरी।

रंडिन का नाच कहीं जूये की लगाई धुनि, गंगा की क़सम झूठी खायबे को पक्के हैं। भक्ति नहीं ध्यान नहीं साधु सतसंग नहीं, होम नहीं दान नहीं, फिरैं धक्के बक्के हैं॥ कितनों के हाथ छूटे कितनों के पांव टूटे कितनों का लुट धन चोर औ उचक्के हैं। ईश्वर के भक्त ऋषि लोग जहां पाते न हों वहां जांय वही जिन्हें ज्यादा खाने धक्के हैं।

तुमको तो सताती सर्दी, प्रतिमाओं पै हो बेदर्दी।
उढ़ाते क्यों न लिहाफ़॥ धर्म० ५॥

कहै पाठक परखो आओ, चतुर वेद रत्न यहां आओ।
ज्ञान के बनो सराफ़॥ धर्म० ६॥

भजन ५६७

हुआ साबित साफ़ पुराण से नहीं व्यास ने पुराण बनाये ।

विष्णु पुराण और पढ़ो भागवत भाई ।
दोनों में परस्पर देत विरोध दिखाई ॥
जब दोनों पुस्तक व्यास ने खास बनाई ।
फिर किस कारण आपस में होत लड़ाई ॥

लिखा भागवत में लखिलेना, श्री कृष्ण को ईश्वर कहना, ज़रा ध्यान पते पर देना । दिया दशम स्कंध बताय के ॥

झूलना ।

भागवत का दशवां स्कंध, देख अध्याय तीसवां ग्रंथ । हुआ फिर किस कारण मतिमन्द, वहां पर ऐसा किया बयानहै॥ जगत में जितने हैं औतार, कला से हुए हैं बारम्बार । अलहदा है उनसे निराकार, पर कृष्ण खास भगवान हैं ।

यह दशमस्कंध की कथा, ठीक है पता, साफ़ दिया बता, देखो इसको ध्यान से । इस कारण चिन्ह बताये ॥ नहिं व्यास ने पुराण० १ ॥

इसके विरुद्ध विष्णु पुराण पढ़ो प्यारे ।
लगे करने देव ईश्वर की स्तुति सारे ॥
ईश्वर ने-स्तुति सुनी दो बाल उखाड़े ।
एक काला एक सफेद थे न्यारे न्यारे ॥

काला औतार धरेगा, फिर कंस के प्राण हरेगा, दुष्टों का नाश करेगा, हरि छिपे हाल समझाय के ॥

झूलना ।

मित्र है बिचार का स्थान, व्यास क्या थे ऐसे अज्ञान । पहले कहा कृष्ण खास भगवान, लिखा फिर उन्हें बाल भगवान का ॥ लेंगे समझ वही जो दाना, कह कर खास बाल बतलाना । ऐसा उलटा क़लम चलाना, नहिं है काम किसी इनसान का ॥

ज़रा करके देखो सैर, सब में भरा बैर, थे कोई गैर । लिखा निज २ अभिमान में । औरों को तुच्छ बताये ॥ नहिं० २ ॥

दोहा–पढ़ पुराण सब लीजिये, करके खूब बिचार ।
बिरचे होते व्यास के, क्यों होता तक़रार ॥
सब में सबही के लिये, गाली भरीं अपार ।
अपने को अच्छा कहें औरों को बदकार ॥
पद्मपुराण के उत्तर खण्ड का अध्याय अठत्तर ।
तज पक्षपात को मित्र बिचारो पढ़कर ॥
लिखा बिष्णु को जो तजे मोह बस होकर ।
करे पूजा और की पाखंडी है वह नर ॥

जो और देवों पर जावे । चढ़ा उसका, पदारथ खावे ॥ वह चाण्डाल हो जावे । रहा पद्म पुराण यों गायके ।

झूलना ।

ऐसे पद्म पुराण कहता है, करोड़ों वर्ष नर्क रहता है। नर्क की अग्नी में दहता है, वहां पर होता दुःख अपार है॥ शिवके अतिरिक्त और देवों को, गाली लिखी उनके भक्तों को। सुनाया सूक्ष्म हाल सभी को, वहां पर बहुत हुआ विस्तार है॥

यों कहता पद्म पुरान, विष्णु भगवान, करो यह ध्यान। और को मत पूजो अज्ञान से। यह वैष्णवी मत समझाये॥ नहिं व्यास० ३॥

दोहा-खंडन पद्म पुराण का शिव पुराण के बीच।
कहे विष्णु के भक्त को, चाण्डाल और नीच॥
जो एक शिव छोड़कर, अन्य देव को ध्याय।
वह और उसका पिता भी, महा नरक में जाय॥
अब इन पुराणों को देख यह निश्चय आया।
आधुनिक सम्प्रदायों ने यह झगड़ा ठाया॥
कहे अन्य देव लघु अपना बड़ा बताया।
इसी कारण सबने जुदा २ कथ गाया॥

करूं अर्ज़ ध्यान टुक दीजै। रचे व्यास के साबित कीजै। धर न्याय तुला पर लीजै। हठ धर्मी से चित्त हटायके॥

झूलना ।

हठ धर्मी से चित्त हटाओ, क्यों ऋषि व्यास के बने बताओ

मत यह ज़िक्र ज़ुबां पर लाओ, इनसे बहुत हुआ नुक़सान है। भाइयो करो वेद परचार, होगा मित्र तभी उद्धार तेजसिंह कहे यह बारम्बार, खड़े इस जलसे के दरम्यान में॥

अन्तिम बिनती है यही, जो मैं कही, ग़लत या सही, देखलो पुराणों के दर्मियान से। फिर क्यों नहीं निश्चय आये॥ नहिं व्यास ने पुराण० ४॥

भजन ५६८

(लावनी)

ऋषियों पर इलज़ाम लगाते पोप नहीं शरमाते हैं।
महादेव को कामी लिख दिया, कृष्ण को चोर बताते हैं॥
स्वांग बनाकर कहें कृष्ण जी माखन दही चुराते हैं।
वस्त्र उठा न्हात गोपिन के, वृक्ष पै वह चढ़जाते हैं॥
जल में से नंगी आने को कृष्ण जी फ़र्माते हैं।
जो नंगी नहीं आओगी तो कपड़े भी नहीं पाते हैं॥

टेक-अति भ्रष्ट पुराण बनायके, श्रेष्ठों को दोष लगाया।
विष्णु जालन्धर घर आया वृन्दा का पतिव्रत डिगाया॥
व्यभिचारी विष्णु ठहराया, शाप उसका पायके।
वह शालिग्राम कहाया॥ श्रेष्ठों० १

ब्रह्मा को कामी बतलाया, पुत्री गमनका दोष लगाया।
सूरज जब पृथ्वी पर आया, कुन्ती के घर जाय के।
क्वारी के गर्भ ठहराया॥ श्रेष्ठों० २॥

इन्द्रदेव की लिखी बुराई, गौतम नारी भोगी जाई।
चन्द्र नें गुरुपत्नी लिवगाई, [बर] द्रौपदी पांच कराय के।
बामन से छल करवाया ॥ श्रेष्ठों० ३ ॥

शिवजी की यह कथा बनाई, ऋषि पत्नी लौं घेरी जाई।
उनको लिखते शर्म न आई, कहैं शंकर भरमाय के।
गुप्तेन्द्रिय को पुजवाया ॥ श्रेष्ठों० ४ ॥

भजन ५९९

क्यों पड़े भरम में भाई, सिख मानो मीत हमारी।
निराकार का ध्यान भुलाया, जड़ बस्तू से नेह लगाया।
कैसा दिल पर परदा छाया, अक्ल गई बौराई।
वेदों की रीति बिसारी ॥ १ ॥

एक ईश्वर से नेहा जोड़ो, बैर भाव को दिल से छोड़ो।
वैदिक धर्म से मुँह मत मोड़ो, यही एक सुखदाई।
ज़रा दिल में लेहु बिचारी ॥ २ ॥

रचा उसी ने जगत यह सारा, जो है सबमें सबसे न्यारा।
कोई न उसका है सुत दारा, लो शरण उसी की जाई।
नहीं होय अन्त को ख्वारी ॥ ३ ॥

मित्रो ईश्वर के गुण गाओ, मत अब भ्रम के बीच भ्रमाओ।
सोहनलाल तभी सुख पाओ, ईश्वर होय सहाई।
क्यों दर दर फिरो अनारी ॥ सिख० ४ ॥

भजन ६००

तुम करो विचार हिन्दू, आर्य दोऊ मत का।
यहां ईश्वर है जग कर्त्ता वहां मनुष्य हाथ से गढ़ता।
किया अंधेर प्रचार ॥ हिन्दू० १ ॥

यहां सब के बीच समाया, वहां मन्दिर बीच बिठाया।
बजे घंटे घड़ियाल ॥ हिन्दू० २ ॥

यहां बिना ज्ञान नहीं मुक्ती, वहां खूब निकाली युक्ती।
कहीं गंगा के द्वार ॥ हिन्दू० ३ ॥

यहां क्लेश रहित अविनाशी, वहां हुआ कहीं वनवासी।
कहीं चोरी कहीं जार ॥ हिन्दू० ४ ॥

यहां ब्रह्मचर्य मन भाया, वहां बाल विवाह रचाया।
होय फिर कैसे सुधार ॥ हिन्दू० ५ ॥

यहां सन्ध्या दो कालों की, वहां रहे पोल गालों की।
दई गप्पें भरमार ॥ हिन्दू० ६ ॥

यहां काम रहित है स्वामी, वहां कीन्हा होकर कामी।
मास छः का अँधियार ॥ हिन्दा० ७ ॥

यहां भारी होम रचाया, वहां है बलिदान कराया।
जाय देवी के द्वार ॥ हिन्दू० ८ ॥

यह ईश को दोष लगाया, कयों कच्छ मच्छ बताया।
कहीं शूकर अवतार ॥ हिन्दू० ९ ॥

बस सत्य मार्ग में आओ, क्यों नाहक मन भटकाओ।
जगन कहे बारम्बार ॥ हिन्दू० १० ॥

भजन ६०१

टेक—भूले जाते हो क्यों यार हिंदू धर्म सनातन वाले।
सच्चे मारग को बिसराय, खोटे कर्मों में चित लाय।
दुनिया दीनी है बहकाय, मूरत को प्रभु मानन वाले ॥१॥
बाली आयू में कर ब्याह, विधवा करके देत बिठाय।
फिर कर्मों का दोष बताय, दुःखका भार बढ़ावनवाले ॥२॥
देवी चंडी मिल बतलाय, बकरी भैंसों को कटकाय।
दिल में ज़रा तरस नहिं खाय, हिंसा पशु फैलावनवाले ॥३॥
कहिं २ बतला भूत मसान, करवाते हैं बहुतक दान।
अपनी करते खूब दुकान, दुनिया को बहकावन वाले ॥४॥
कहिं २ गाली खूब सुनाय, हम पै रहे उपल बरसाय।
झूठे को सच्चा बतलाय, अपनी कीर्ति बढ़ावन वाले ॥५॥
अब यह कहता जगन पुकार, सुनलो मित्रों बात हमार।
करो तुम वैदिक धर्म प्रचार, तुमहो हाथ कटावनवाले ॥६॥

भजन ६०२

भूला संसार, पोंप जाल में पड़के।
कोई वस्तु न छोड़ी भाई, जिन में नहिं बुद्धि लगाई।
गिनो देखो हैं हज़ार ॥ पोप० १ ॥

दण्डक छन्द।

बेरी आक झाड़ी, झूंड कीकर औ पीपरादि, साल वट पाकर औ तुलसी को रूचे हैं। नदी और ताल कूप, माठी औ प्रेत भूत, चाकी औ चाकभीत, आंवा बांबी पूजे हैं॥ काली ज्वाला पत्थर पै, भैरों शुक्र कूकर पै क़ब्र और ताज़ियों पै, जाय जाय जूझे हैं। धीवर कुम्हार काछी, खटिक चमार मांझी भाट भंगी पीर माली शीश इन्हें झुके हैं।

जगदीश ध्यान नहिं कीन्हा, शुभ कर्मों में चित नहिं दीन्हा।
किया क्यों अत्याचार ॥ पोप० २ ॥
तुम ईश्वर में मन लाओ, मत तबियत को भटकाओ।
करेगा वहही पार ॥ पोप० ३ ॥
मत वृथा माल लुटाओ, शुभ कर्म में समय बिताओ।
करो श्रुति धर्म प्रचार ॥ पोप० ४ ॥
कहे तुम से जगन पुकारी, तुम सुनियों सब नरनारी।
भजो नित श्री ओंकार ॥ पोप० ५ ॥

भजन ६०३

ओ करिये कृपाजी करतार मैंने तेरी आशा लई।
मथुरा भी धाई, अयोध्या सिधाई धाई मैं काशी के द्वार ॥१॥
मन्दिर भी पूजे, शिवाले भी पूजे, पूजे मैं दशों अवतार ॥१॥
यमुना भी नहाई, मैं सागर भी धाई, गंगा की न्हाई मझधार ॥२॥

जैनी भी जाँचे,कुरानी भी जाँचे,पुरानी का जाँचा विचार ॥४॥
जंगल भी छाने, मैं पर्वत घुमाने, छाना तीरथ हरिद्वार ॥५॥
क़िस्सों को लेखा, पुराणों को देखा, देखी मैं गप्पों की मार ॥६॥
सब कुछ अजमाया, स्वारथ को पाया है धिक बिना ओंकार॥७॥
भ्रमण कर हारी, मैं नाहक शिरमारी, कीजै जगन को पार ॥८॥

भजन ६०४

श्यामने माखन नहीं खाया,
इन ठगियों ने चोरी करना उनको बतलाया।

भले घरों का लाड़ला, अच्छे घरों का पूत। गीता उसकी देखलो कैसी है करतूत, नाहक क्यों चोर ठहराया। श्याम०२

बैठे सिंहासन पोपजी कथा में रहे सुनाय। श्रीकृष्ण महराज को चोर जार बतलाया। जिन्हेंने धन लूट २ खाया। श्या०२

यमुनाजी के घाटपर कृष्ण रहे समझाया। नंगी इसमें मत नहाइयोतुम्हारापतिव्रतधर्मघटजाय। लिखासुखसागरमेंपाया३

सोचे थे हम रातदिन नहीं मिला था पात। थे हम उसकी तलाश में नहीं लगा था हाथ। आन स्वामीने बतलाया। ४

भजन ६०५

टेक—मत पढ़ो पुराण झूठी गप्प हैं।

जब से पुराण हुए जारी, वेदों की रीति बिसारी।
जो थे विद्या की खानि ॥ झू० १ ॥

भागवत को हाथ में उठाओ, एक बार उसे पढ़जाओ।
दशम में लिखा बयान ॥ झू० २ ॥

श्रीकृष्ण को चोर बताया, सखियों का चीर चुराया।
ले कदम्ब पर चढ़गए आन ॥ ३ झू० ॥

शिव पुराण पढ़ो तुम भाई, दिया बेहद लिङ्ग बढ़ाई।
नहीं जिसका परमान ॥ झू० ४ ॥

सुनो गणेशकी उत्पत्ती, तब शिवपर पड़ी बिपत्ती।
युद्ध यहां हुआ महान ॥ झू० ५ ॥

जब शिव की शादी कराई, वहां गणपति दिए पुजाई।
ये है कैसा अज्ञान ॥ झू० ६ ॥

ब्रह्मा को दोष लगाया, पुत्री सँग विषय कराया।
जो थे पूर्ण विद्वान ॥ झू० ७ ॥

बिष्णु वृन्दा घर आये, कर विषय बहुत शर्माये।
कहैं जिन को भगवन् ० ८ ॥

मैं कहां तक तुम्हें बताऊँ, पुराणों की पोल दिखाऊँ।
मुफ्त में हूँ हैरान ॥ झू० ९ ॥

आए इन्द्र आहल्या द्वार, मुर्गा बन चन्द्र पुकारे।
हुए छलिया तजं ज्ञान ॥ झू० १० ॥

इसी भांति पुराण अठारह रचडाले पूर्ण विषावह।
जिन्हें बैठे सच मान ॥ झू० ११ ॥

कहे वासुदेव सुनो भाई, वेदों का पढ़ो चित लाई।
तभी होगा कल्यान । झू० १२ ॥

भजन ६०६

टेक-पुराणों की गप्पें सुनाऊँ, तुम सुनियो भारतवासी ॥

पहिले तो तुम्हें भागवत का हाल सुनाऊँ।
जो दोष लगाया कृष्णको वह बतलाऊँ॥
एक रोज गोपियां नहाती थीं जलके अन्दर।
वह चीर उठाके चढ़े कदमके ऊपर॥

वह नङ्गी जलमें नहावें, बाहर आती शर्मावें।
कर जोड़ के यों चिल्लावें, हम कपड़े अपने पावें॥
तब बोले कृष्ण महराज, करो यह काज, तजो सब लाज।
तुम बाहर नङ्गी आओ। यह कैसी उड़ाई हांसी ॥ तुम० १॥

एक रोज गेंद खेले थे कृष्ण सुखदाई।
एक सखी ने झटपट उनकी गेंद उठाई॥
और लेके गेंद अँगिया में लीनी छुपाई।
दो कुचा पकड़,के बोले कृष्ण मुसकाई॥

तुम ने एकली गेंद चुराई, मैंने बदले में दो पाई।
कैसी दिल्लगी उड़ाई, तुम सुनियो कान दे भाई।
हों जिन के ऐसे कार, क्यों न हों ख्वार, नहीं वह पार।
समझो उन्हें व्यभिचारी। उन्हें देनी चहिए फांसी ॥ तुम० २॥

पोपोंने स्वांग बनाकर लीला दिखाई।
और ग्राम २ में फिर कर करी कमाई॥
लीला में लड़कों ने आँख नाक मटकाई।
और बस्ती के लोगों से दिन भर करी कमाई॥

उन्हें कैसे दोष लगाए, नहीं दिल में ज़रा शर्माए।
उन्हें राधा सहित नचाए, महामण्डल पाप कराए॥
मथुरा में कराए रास, पोपों ने खास, किए सत्यानास।
महा दुराचार फैलाए, और कहलाए ब्रजबासी ॥तुम०३॥

बट मार चोर कुकर्मी उन्हें बतलाया।
ग्वालिनी पकड़ने का इलज़ाम लगाया।
पी लोटा भंगका नशा जब उनको आया॥
झट बना गपोड़ा व्यास रचा बतलाया।

न थी कृष्ण में कोई बुराई, पढ़ देखो गीता भाई।
पोप जीने यह कथा बनाई, उसे व्यास रची बतलाई।
सुनो "शंकरलाल" की अर्ज़ी, छोड़ो खुदगर्ज़ी, कथा यह
फ़र्ज़ी। अब वेदों का सुप्रकाश है, किया दयानन्द ऋषिराई ।तु०४

भजन ६०७

कवित्त।

एक बात बाक़ी रही यापै मित्र ध्यान धरो, तीरथों के जाल में स्वदेश टकरा रहा। काशी आदि धाम और नदियों के संगम

को तारक सदा से शुभ तीरथ बता रहा ॥ धन को ख़राब करे अंग सो बेताब करे, और भी अनेक भांति महा कष्ट पा रहा। त्याग के हठीलापन सीख यह कान धरो, तेजसिंह तीरथों का भाव जतला रहा ॥

टेक-जो दुखसागर से तार दें, वही हैं तीर्थ मेरे भाई।

है तीर्थ अतिथि जो अकस्मात घर आवे।
मा बाप की सेवा सदा तीर्थ कहलावे ॥
है तीर्थ बड़ा सतसंग जो पार लगावे।
है तीर्थ वेद सत शास्त्र अमल में आवे ॥

सदा वेद और शास्त्र विचारे। नहीं पापों में पग धारे।
सदा न्यायकी ओर निहारे। यही है तीर्थ सुनो चितलायके
वही तीर्थ जिस से तरजाय, सदा सुख पाय, सुनो चितलाय,
तुम्हें इसपार से कर उसपार, दे, दे पूरण सुख पहुँचाई ॥वही०॥

है तीर्थ घर योगाभ्यास का नित्य बढ़ाना।
है तीर्थ नित्य ईश्वर से ध्यान लगाना ॥
कर उपकार संसार को सुख पहुँचाना।
है तीर्थ झूठ को छोड़ सत्य पर आना ॥

निष्कपटी निर अभिमानी। नहीं करे पराई हानी।
तज बैर बने लासानी। क्रोध को देवे दूर हटायके ॥
कर ब्रह्मचर्य से प्रीति, हो इन्द्रीजीत, समझ यहरीति।
दुष्ट इस काम बली को मार दे, ये तीर्थ बड़ा सुखदाई ॥वही०॥

है मन को मारना तीर्थ जगत में प्यारे।
है तीर्थ शान्ति नहीं अशान्ति मनमें धारे ॥
है ज्ञान और विज्ञान यह तीर्थ तुम्हारे।
आलसको तजे तो लग जावे नाव किनारे ॥

बस असल बात ये जानो। शुभ कर्मों को तीर्थ मानो।
मत झूठा झगड़ा ठानो। तुम्हें सत तीर्थ दिये बतलायके ॥
ज़रा अबभी समझ गँवार, तीर्थ का सार, होके हुशियार।
खेल मत जीत के बाजी हारदे, फिर है जीत अति कठिनाई ॥

है असल बात यही तीर्थ जिस से तरना हो।
भला वह क्या तीर्थ जिसमें उल्टा मरना हो ॥
धन और धरती संकल्प में जहां धरना हो।
सुख दरकिनार उल्टा दुखड़ा भरना हो ॥

ये शहर नदी और नाले। इन सब से चित्त हटाले।
इन्हें जो तीर्थ कहाने वाले। सन्मुख कहो हमारे आयके ॥
तू अबभी हठको छोड़, इनसे मुख मोड़, कहूँ कर जोड़के।
मिश्र ये जल थल तीर्थ विसारद, करी तेजसिंह कविताई ॥

भजन ६०८

दोहा-जो कुछ असली तीर्थ हैं, उनका किया बयान।
अब नक़ली बतलाऊंगा, सुनिये धरके ध्यान ॥

टेक-अब तो मतिमन्द अनारी, तीर्थ जल थल को बतलावें ॥

यमुना गंगा नदी न्हाने को। आप द्वारिका की खाने को।
शरीर जीता जलवाने को बद्रीनाथ जावे। कहें यही
तीर्थ है भारी ॥ अब० ॥

कोई प्रयागराज को धावे। और तीर्थ जान त्रिवेणी न्हावे।
और कोई काशी में प्राण गमावें। ऐसे फर्मावें। कहें मुक्ति
होय हमारी ॥ अब० ॥

तीर्थ तलावों को फर्माकर। तीर्थ पहाड़ों को नित जाकर।
जगन्नाथ को तीर्थ बताकर। जूंठे भात खावें। नहीं पड़ती
है पत्तल न्यारी ॥ अब० ॥

तीर्थ वही जिससे तर जावे। इनमें तो उल्टे गोते खावे।
फिर क्यों इनको तीर्थ बतावे। तेजसिंह गावे। क्यों अक्ल
गई है मारी ॥ अब० ॥

भजन ६०९

ख्याल–ऐ मित्रो एक बात तुम्हें हम ऐसी आज बतावेंगे।
हैं जितने पौराणिक भाई सभी नरक में जावेंगे ॥
अपनी तरफ से निमक मिर्च हम बिल्कुल नहीं मिलावेंगे।
और किसी में नहीं उन्हें हम पुराणों में दिखलावेंगे ॥

दोहा–बीच पुराणों के लिखा, बिरतों का विस्तार।
बिन व्रत छोड़ा है नहीं, कोई तिथि और बार।

टेक– पाओगे नरक ज़रूर तुम, जितने हो पौराणिक भाई।

ज़रा गौर करो पुराणों पर जनाब आली।
नहीं कोई तिथि और बार बिना व्रत खाली ॥
जब था पुराणों पर अमल क्यों आज्ञा टाली।
क्यों किया अन्न का भोजन भर भर थाली ॥

आदित्य पुराण में पाया। इतवार का व्रत बतलाया।
शिवपुराण ने समझाया। सोमवार का बर्त सुनाया ॥

शेर–चन्द्र खण्ड अब देख लिखे हैं सोम ग्रह वाले वहां।
मंगल और बुध बृहस्पति, शुक्र शनिश्चर हैं जहां ॥
बारों का किया बयान, तिथों पर ध्यान, धरिये गुणवान।
ज़रा रहिये खामोश हजूर तुम, व्रतों से करूं आगाही ॥जि०॥

है बिष्णु की एकादशी व्रत निराहारी।
बामन की द्वादशी ये व्रत है भारी ॥

है शिवकी त्रयोदशी व्रत जानें नर नारी।
व्रत अनन्त वा नरसिंह चतुर्दशि जारी ॥

जब पूरणमासी आवे। वह चन्द्रमा व्रत कहलावे।
अब दशमी को दर्शावे। दिगपालों का व्रत बतलावे ॥

शेर–दिगपालों का है व्रत दशमी सब को रहना चाहिये
नौमी को दुर्गा के व्रतें पर ध्यान देना चाहिये ॥

ये है पुराणों का लेख, समझ कर देख, झूठ नहीं एक।
इस लिये करो मंजूर तुम, पढ़ने से पता लगजाई ॥ जि० ॥

है व्रत अष्टमी बसुओं का मेरे भाई।
मुनियों का सप्तमी व्रत दिया बतलाई॥

है छठ स्वामिकार्तिक का व्रत सुखदाई।
और नाग की पांचें पुराणों में फ़र्माई॥

गणपति की चतुर्थी आनो। गौरी की तृतीया मानो।
इन बातों को पहचानो। मत झूठा झगड़ा ठानो॥

शेर-द्वितीया का जो व्रत है वह देवता अश्विनी कुमार।
आद्या देवी की प्रतिपदा लिखा पित्रों की मावस पुकार॥

जब है पुराणों में खास उपवास, फिर क्यों विश्वास।
छोड़कर करतेहो मित्र क़सूर तुम, क्यों रुची अन्न में आई॥जि०

सब पुराणों पर पे पौराणिको दृष्टि लाओ।
सब व्रतों में सर्वत्र लेख यही पाओ॥

रहो भूखे मर कर व्रत अन्न मत खाओ।
करो अन्न पान का ग्रहण नरक में जाओ॥

जो चाहो स्वर्ग में जाना, मत हर्गिज खाओ खाना।
हो मित्र अगर तुम दाना, तुम्हें लाज़िम है मर जाना॥

शेर-क्या खूब अटकी पुराणियों से सुलझनी दुश्वार है।
अन्न छोड़ें प्राण जायें नहीं नरक के मझधार है॥

जिनका पुराणोंपर अमल, देते हैं दख़ल, सन्मुख आओ सम्हल
अगर रखतेहो मित्रो शहूर तुम, कहे तेजसिंह समझाई॥जि०॥

भजन ६१०

दोहा-आज कल के ज्योतिषी, इनका करूं बयान।
इनसे भी इस जगत में, पहुंची पूरी हान।

ठेक-ठग बहुत फिरें संसार में ज्योतिष का लिये बहाना।
जब कोई उन्हें पूछने जावें। जाली पत्रा खोल बिछावें।
सूर्य आदि ग्रह क्रूर बतावें। इस छल के व्यवहार में।
धोखे से उन्हें फँसाना॥ ज्यों०॥

जो हम कहें उसे सुन जाओ। शान्ति पाठ अहदान कराओ।
इसमें मत अब देर लगाओ। नहीं तो इस आज़ार में॥
क्या अचरज है मरजाना॥ ज्यों०॥

अरे मित्र पृथ्वी जड़ जैसे। सूर्य आदि लोक जड़ वैसे।
फिर सुख दुख पहुंचावें कैसे। लाओ बात बिचार में॥
क्या है यह चेतन दाना॥ ज्यों०॥

क्यों बहँके हो बहँकाने से। अब भी समझो समझाने से।
लाभ उठाओ इस गाने से। तेजसिंह संसार में।
जो नहीं माने दीवाना॥ ज्यों०॥

भजन ६११

शेर-क्या जो इस संसार में हैं राजा प्रजा जहां कहीं।
पा रहे दुख सुख सभी क्या यह ग्रहों का फल नहीं॥
प्रश्न तुमने जो किया है उसका उत्तर दें अभी।

कर्मों के अनुसार सुख दुख, ग्रह नहीं देते कभी ॥
क्या ये ज्योतिष शास्त्र भी झूठा है समझाओ हमें ।
क्या जन्मपत्र आदि भी निष्फल हैं बताओ हमें ॥
जितनी है कुछ गणित विद्या वो तो हैं सब कुछ सही ।
फलित लीला जन्मपत्र आदि यह निष्फल है सभी ॥

टेक-सुनो जन्म पत्र की लीला, जिस में अद्भुत चतुराई ।

ख्याल-जन्मपत्र मत कहो मित्र ये शोकपत्र कहना चाहिये ।
जन्मपत्र का हाल कहूं अब इधर ध्यान रहना चाहिये ॥
जिसके घर में पुत्र जन्मता अति आनन्दित होते हैं ।
जन्मपत्र के ग्रहों का फल सुन मात पिता सब रोते हैं ॥
कहा पुरोहित जी ने जन्मपत्र बनवाओ ।
इस काम नेक में मत अब देर लगाओ ॥
कहैं मात पिता पुरोहित से जल्द बनाओ ।
सब घड़ी महूर्त ठीक २ लिख लाओ ॥
ले क़लम व कागज़ स्याही, लिये और भी रंग मँगवाई ।
रचने की सुरत लगाई, लिया जाली पत्रा मँगवाय के ॥
जल्दी से गढ़ लिया लेके चल दिया, रंग में भर लिया,
मित्र कुछ कही नहीं जाई, किया बहुत लाल और पीला ॥सु०

ख्याल-जन्मपत्र को बना ज्योतिषी वहां सुनाने जाते हैं ।
ज्योतिषी जी के पास मात और पिता पुत्र के आते हैं ॥
माता पिता ज्योतिषी को कर जोड़ के शीश झुकाते हैं ।

लगे पूछने बना है कैसा ज्योतिषी जी फ़र्माते हैं ॥
जन्म ग्रह बहुत अच्छे पड़े हैं इसके ।
और मित्र ग्रह भी बहुतही अच्छे हैं इसके ॥
धनवान और प्रतिष्ठा में खूब बढ़ेगा ।
हर सभा में इसका सब पर तेज पड़ेगा ॥
जब ऐसे वचन सुनाये, पितु मात बहुत हर्षाये ।
सबने आनन्द मनाये, नहीं कुछ दई दक्षिणा लायके ॥
तब गये ज्योतिषी जान, ये हैं अज्ञान, न देंगे दान ऐसी
बातों से एक पाई कोई करो मक्र और हीला ॥ सु० ॥

ख्याल-कहने लगे ज्योतिषी ऐसे यह ग्रह तो सब सुखदाई ।
परन्तु यह ग्रह क्रूर हैं होकर आठ वर्ष का मरजाई ॥
इतना सुन मा बाप रोपड़े हाय ज्योतिषी जी महाराज ।
ये क्या वाणी कही आपने अब क्या करना चहिये काज ॥
कहें ज्योतिषी जी ग्रह मन्त्र का जप करवाओ ।
दो दान और विप्रों को नित्य जिमाओ ॥
इन नवग्रहों का बिघ्न सब हट जावेगा ।
ईश्वर अच्छा होगी तो बच जावेगा ॥
धन माल लीजिए सारा । बच जावे पुत्र हमारा ।
हम दें सुत बचा तुम्हारा । दक्षिणा इतनी दीजे लाय के ।
अब देखो इनके हाल, वृद्ध और बाल, करके कुछ ख्याल,
दिया सुख में दुख पहुँचाई, पितु मातु पड़ा मुख नीला ॥सु०

ख्याल-अब आतुरता लखो इनकी, जो कभी मर जी जावे।
मर जाने के बाद ज्योतिषी इस रीति से फ़र्मावे ॥
हमने तुम से जभी कहा था, हाय आज हो गई सोई।
ईश्वर की इच्छा में मित्रो ! कुछ नहीं कर सक्ता कोई॥
और जो पीड़ित होकर बच जावे।
फिर देखो, ज्योतिषी कैसे शब्द सुनावे॥
देखो, विप्रों में कैसी शक्ति है भाई।
जप मंत्र तुम्हारे सुत को दिया बचाई॥
इनका इलाज यह कीजे। नहीं इन्हें दक्षिणा दीजे।
दीजे तो उलटी लीजे। दुगने तिगने मँगवाय के॥
जब ईश्वर-इच्छा रही, इन्हों ने कही, सबने सुन लई,
दक्षिणा फिर क्यों दीजाई, बम्मी का राग रंगीला॥सुनो०॥

भजन ६१२

टेक-ज्योतिषी का जाल फैलाया लोगों ने।
ज्योतिष थी गणित की विद्या, उसे करके कल्पित अविद्या।
भ्रम में दीना डाल॥ फै०॥
भूगोल खगोल न जाने, नहीं आर्य्य ग्रन्थ पहिचाने।
लिखा है क्या क्या हाल॥ फै०॥
एक जन्मपत्र लिख लाए, नवग्रहों के हाल सुनाये।
जन्मकुण्डली निकाल॥ फै०॥

कहीं शनिश्री ढैया आई, कहीं साढ़सती बतलाई।
कहा अब पड़ा बावल॥ फै०॥
दशा मारकेश की आई, हैं राहुकेतु दुखदाई।
शायद हो जावे काल॥ फै०॥
जो मृत्युसे प्राण बचाओ, मृत्युञ्जय जाप कराओ।
ग्रह देवेंगे टाल॥ फै०॥
मंगल बुध दान बताके, चावल घृत गेहूँ मँगा के।
और लो कपड़ा लाल॥ फै०॥
चांदीका चन्द्र बनवाओ सोने का सूर्य लेआओ।
दान करो पीली दाल॥ फै०॥
नहीं सूर्य सिद्धान्त पढ़े हैं, सब अपनी २ गढ़े हैं।
न जानें ग्रहों की चाल॥ फै०॥
कहे वासुदेव यह झूठे, ज्योतिष का नाम ले लूटे।
ठगा धोखा दे माल॥ फै०॥

भजन ६१३

दोहा-उत्तम कर्म विसार के, छोड़ा विद्या दान।
वृक्षों की शादी करें, हुए मूर्ख अज्ञान॥
टेक-कैसा छाया अज्ञान है, वृक्षों के विवाह कराए।
तुलसा को स्त्री बतलाया, शालग्राम पती ठहराया।

जड़ से जड़का मेल कराया, कैसा हुआ नादान है।
क्या झूठे खेल खिलाए ॥ वृक्षों० १ ॥
किसके पुत्र यह शालग्राम है? कौन पिता माता क्या नामहै?
किसकी तुलसी? कौन धाम है?, कहां इनका सुस्थान है?
कोई सम्मुख आ बतलाए ॥ वृक्षों० २ ॥
तुलसी को जगमाता बतावें, शालग्राम पिता कहलावें।
मात पिता का ब्याह करावें, यह कैसी संतान है?
जो बड़ों के फेरे वाले ॥ वृक्षों० ३ ॥
तुलसी माता पुत्री बनाई, शालग्राम पुत्र हुए भाई।
यह कैसी अनरीति चलाई, ले लिए कन्यादान है।
यह ज़रा नहीं शर्माए ॥ वृक्षों० ४ ॥
तुलसी वृक्ष ब्याह कराया, मूर्खोंने यह जाल फैलाया।
ढोंग बनाकर लूटा खाया, करी धर्म्म की हानि है।
नरनारि सभी बँहकाए ॥ वृक्षों० ५ ॥
जिस धनको तुम यहां लुटाओ, संड मुसंडे को खिलवाओ।
उस से विद्यालय बनवाओ, जो सब से उत्तम दान है।
कर वासुदेव सुख पाए ॥ वृक्षों० ६ ॥

भजन ६१४

श्लो०—गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरेत।
प्रेतहारैः समंतत्र दशरात्रेण शुध्यति ॥
मनु० अ० ५। ६५

शेर-प्रेत कहते हैं उसे जब गुरु का छूट शरीर।
और प्रेतहारे हैं वही करें दाह जो मरघटके तीर।
भूत कहते हैं उसे जल बुझके हो जिसका अखीर।
इसमें शंका नहीं ज़रा भी है मनुजी की नज़ीर॥
दो०-ब्रह्मा से ले आज तक बड़े बड़े विद्वान।
ऐसाही सब मानते, माने नहीं अज्ञान ॥

भजन ६१५

दोहा-अय मित्रों! इस बातको निश्चय लीजे मान।
जो शंका करे भूतकी, वह पूरा अज्ञान ॥
टेक-यह शंका भूतकी रे, बिल्कुल झूठी है क्यों डरते हो।
आप डरा तो डरा किन्तु बच्चों को क्यों डरपाओ।
लूलू हव्वा कहके उनको मत डरपोक बनाओ ॥ यह० ॥
भले बुरे जो संस्कार बचपन में पड़जाते हैं।
नहीं मरण पर्य्यन्त छुटें सदा सुख दुख पहुंचाते हैं॥ यह० ॥
झूठ बोलना ही बच्चों को तुमने ही सिखलाया।
कोका ले गई ऐसा कहकर बच्चों को बहकाया ॥ यह० ॥
झूठे और डरपोक बनाकर नाम पै सिंह लगावें।
गीदड़ तो वह पहलेही कर दिए कैसे सिंह होजावें॥ यह० ॥
बलदेव कहे घबड़ाय, तेरे गुण गाय, शीश पुनि नाय।
धाय प्रभु अब तो करो सहाय ॥ क्रिया० ४ ॥

ग़ज़ल ६१६

अरे पोपो हमही को तुम, सतालो जितना जी चाहे ॥
बना ईश्वर की जड़ मूरत पुजा लो जितना जी चाहे।
ज़रा नहीं शर्म है तुम को हुए बेशर्म क्यों इतने ॥
बनाकर स्वांग ईश्वर का नचालो जितना जी चाहे ॥
करो बदनाम मुर्दों को कराकर श्राद्ध तुम उनका।
कचौरी खार और हलुआ उड़ालो जितना जी चाहे॥
सिखा कर काम खोटे तुम बुरा हमसे कराते हो।
एवज़ सत् के असत् हमको सुनालो जितना जी चाहे॥
करो कुछ खौफ़ ईश्वर का जगह दो रहम को दिल में।
सुफल नेकी का है नेकी कमालो जितना जी चाहे ॥
ईसाई हो रहे हैं जो फ़क़त है आप की करनी।
ऐसे उपदेश को पोपो, सुनालो जितना जी चाहे ॥
न मानेंगे कभी हम तो परख तुमको लिया दिल से।
कपट के जाल बेशक तुम बिछालो जितना जी चाहे ॥
अब आंखें खोल देखो और से बेकस कहूं तुम से।
खुश होकर सत्य विद्या को फैलालो जितना जी चाहे ॥

भजन ७१६

टेक—क्यों अपना पेट भरा है, मुर्दों का बहाना करके।
जो माल तुम्हें मुर्दों के निमित्त खिलाया।
वह तुमने माल तुमने क्यों नहीं पहुंचाया ॥
गर रसीद लाने में कुछ उज्र बताया।

तो जुर्म खयानत ज़िम्मे तुम्हारे आया ॥
जो माल पेट भर खाओ। उसे मुर्दों तक पहुँचाओ।
आकर सब हाल सुनाओ। किस योनी में हैं बतलाओ ॥
सब कहो मुफस्सिल हाल, चलो मत चाल, खुल गया जाल। बाद मुद्दत के, जो कुछ कि तुमने गढ़ा है ॥ क्यों० १ ॥

एक मकां के अन्दर तुम को बन्द करवाये।
अरु खाना पीना बिल्कुल दिया नहीं जाये ॥
फिर तुम्हारे निमित्त एक ब्राह्मण देय जिमाये।
जो उस के खाने से तुम्हारी तृप्ति होजाये ॥
जो भोजन ब्राह्मण खावे। वह तुम्हरे पेट में जावे।
सब को यक़ीन हो जावे। और भ्रम भी सब मिट जावे ॥
नहीं तजो श्राद्ध की चाल, करो मतटाल, आप प्रतिपाल। सारी सृष्टि के, नाहक सर बोझ धरा है ॥ क्यों० २ ॥

अध्याय दोम गीता में साफ लिखा है।
जिस समय देह से होता जीव जुदा है ॥
कर्मानुसारा तन और नया मिलता है।
कहो गीता है ग़लत या कि श्राद्ध बेजा है ॥
अब सच २ हाल सुनाओ, मत माल मुफ्त के खाओ।
क्यों जग में हँसी कराओ, मुर्दों के कुली कहाओ ॥
नहीं आती तुमको शर्म छोड़ षट कर्म, व कुल के धर्म। भी त्यागन करके, त्यौते पर चित्त धरा है ॥ क्यों० ३ ॥

जब लख चौरासी योनि शास्त्र बतलावे।
तो क्या है पता मर कौन योनि में जावे ॥
कर्मानुसार गर सूकर की योनी पावे।
तो खीर कचौरी कैसे सूकर फिर खावे ॥

पहिले योनि का पता बताओ, फिर उसके मुआफ़िक़ खाओ।
क्यों नाहक शोर मचाओ, साबित करके दिखलाओ ॥
कहे शंकरलाल अब जागो, नींद को त्यागो, सुकर्मों में लागो।
वेद पढ़ २ के, जो स्वामी ने भाष्य करा है ॥ क्यों० ४ ॥

भजन ६१८

टेक-मुर्दों का सराद्द, लिखा हमें दिखलाओ ॥
जिस वेद मन्त्र में पाओ, वह मन्त्र हमें दिखलाओ।
मत यों करो विवाद ॥ लिखा० १ ॥
जीतों पर तीर चलाओ, फिर मरों के पिण्ड भराओ।
बने कैसे औलाद ॥ लिखा० २ ॥
किस लिये तुम्हें पाला था, लाखों का घर घाला था।
करो उस दिन को याद ॥ लिखा० ३ ॥
जीवत ही श्राद्ध रचाओ, जो तीन पुश्त बतलाओ।
वेद की है मरियाद ॥ लिखा० ४ ॥

दादरा ६१६

टेक-पोपलीला कहां ना जावे ॥ पो०प० ॥
मरते वैतरनी सिसकति गइया। रोगी पर दानों का चन्दा

लगाव ॥ पो० ॥ पिण्डा की खातिर जौ का अद्देवा। पण्डों को पुरी कचौरी खिलाते ॥ पो० ॥ कुश पर लपेटे बालों के धागे। प्रेतों की देही का ढांचा बतावे ॥ पो० ॥ दशगात्र षाडशी एकादशी में। जीतों को बहुत सा नाच नचावे ॥पो०॥ घर में तो खाने को दाने भी नाहीं। क्रिया करमको वह क़र्जा कढ़ावे ॥ पो० ॥ घर में तो सोवें खरेरी खटुलिया। पोपों को खिजिया पलँगिया बिछावे ॥ पो० ॥ घर में तो रहने को छप्पर भी नाहीं। पोपों को छाता चँदनियां तनावे ॥ पो० ॥ शीतल प्रसाद लखि भारत की दुर्गति। रोवे हियरवा जिया अकुलावे ॥ पो० ॥

भजन ६२०

टेक-रहना हुशियार पोपों के फंदे से।
यह ऐसा जाल बिछावें। धोखा दे तुम्हें फंसावे।
करें अपने इखत्यार ॥ पो० ॥
महराज ज्योतिषी आये। अँगुली गिन ग्रह बतलाये।
चढ़ा देया का भार ॥ पो० ॥
कहीं दिशाशूल बतलावें। कहीं योगिनीचक्र सुनावें।
बन्द करके दें व्यवहार ॥ पो० ॥
कोई खुद को ब्रह्म जताव। सब कर्म धर्म छुड़वावे।
कहै झूठा संसार ॥ पो० ॥
कोई बने गुरू मठधारी। पूजें हैं जिन्हें नर नारी।
मंदिर में हों व्यभिचार ॥पो०॥

जब लख चौरासी योनि शास्त्र बतलावे।
तो क्या है पता मर कौन योनि में जावे॥
कर्मानुसार गर सूकर की योनी पावे।
तो खीर कचौरी कैसे सूकर फिर खावे॥

पहिले योनि का पता बताओ, फिर उसके मुआफ़िक़ खाओ।
क्यों नाहक शोर मचाओ, साबित करके दिखलाओ॥
कहे शंकरलाल अब जागो, नींद को त्यागो, सुकर्मों में लागो।
वेद पढ़ २ के, जो स्वामी ने भाष्य करा है॥ क्यों० ४॥

भजन ६१८

टेक-मुर्दों का सराद, लिखा हमें दिखलाओ॥
जिस वेद मन्त्र में पाओ, वह मन्त्र हमें दिखलाओ।
मत यों करो विवाद॥ लिखा० १॥
जीतों पर तीर चलाओ, फिर मरों के पिण्ड भराओ।
बने कैसे औलाद॥ लिखा० २॥
किस लिये तुम्हें पाला था, लाखों का घर घाला था।
करो उस दिन को याद॥ लिखा० ३॥
जीवत ही श्राद्ध रचाओ, जो तीन पुश्त बतलाओ।
वेद की है मरियाद॥ लिखा० ४॥

दादरा ६१९

टेक-पोपलीला कही ना जावे॥ पोप०॥
मरते वैतरनी सिसकति गइया। रोगी पर दानों का चन्दा

लगावे॥ पो०॥ पिण्डा की खातिर जौ का अदैवा। पण्डों को पूरी कचौरी खिलाते॥ पो०॥ कुश पर लपेटे बालों के धागे। प्रेतों की देही का ढांचा बतावे॥ पो०॥ दशगात्र षोडशी एकादशी में। जीतों को बहुत सा नाच नचावे॥पो०॥ घर में तो खाने को दाने भी नाहीं। क्रिया करमको वह क़र्जा कढ़ावे॥ पो०॥ घर में तो सोवें खरेरी खटुलिया। पोपों को खिजिया पलँगिया बिछावे॥ पो०॥ घर में तो रहने को छप्पर भी नाहीं। पोपों को छाता चँदनियां तनावे॥ पो०॥ शीतल प्रसाद लखि भारत की दुर्गति। रोवे हियरवा जिया अकुलावे॥ पो०॥

भजन ६२०

टेक-रहना हुशियार पोपों के फंदे से।
यह ऐसा जाल बिछावें। धोखा दे तुम्हें फँसावे।
करें अपने इख्त्यार॥ पो०॥
महराज ज्योतिषी आये। अँगुली गिन ग्रह बतलाये।
चढ़ा देया का भार॥ पो०॥
कहीं दिशाशूल बतलावें। कहीं योगिनीचक्र सुनावें।
बन्द करके दें व्यवहार॥ पो०॥
कोई खुद को ब्रह्म जतावे। सब कर्म धर्म छुड़वावे।
कहे झूठा संसार॥ पो०॥
कोई बने गुरू मठधारी। पूजें हैं जिन्हें नर नारी।
मंदिर में हो व्यभिचार॥पो०॥

कपड़े रंग मूंड मुड़ावें। और टुकड़े मांगकर खावें॥
निकाला है रुज़गार॥ पो०॥
कहे वासुदेव समझाई। स्वामी, ने दिया जगाई॥
अब उठ बैठो यार॥ पो०॥

गजल ६२१

ऐसी क्या देखी खता तुमने हमारी पोप जी।
हमको कर रक्खा जो तुमने जां से आरी पोपजी॥
कर रक्खा है तुमने क्यों पाखाना और पेशाब बन्द।
जो लगादी सायतों की क़ैद भारी पोपजी॥
सप्तवर्षा रोहिणी की छल के सानों में लगा।
पेट में औलाद के मारी कटारी पोपजी॥
वेदविद्या के हुए तुम ऐसे दुश्मन हाय! हाय!!।
करदिये रचकर अठारह पुराण जारी पोपजी॥
हरते २ दूसरों का धन कपट की राह से।
आपही तुम होगए आखिर भिखारी पोपजी॥
क्या नशा तुमको चढ़ा था जाति के अभिमानका।
यह बुरी हालत उसी की है खुमारी पोपजी॥
मुर्दे भंगी राक्षस धानुक अहीरों के तमाम।
तुमने पुजवाई हमें होना चमारी पोपजी॥
रात को तुमने दिवाली में खिला करके जुआ।
तुमने ही हमको बनाया है जुवारी पोप जी॥

देवी और भूतों पै चढ़वा करके बकरे सूरियां।
तुमने ही सिखलाई हमको गोश्तखवारी पोपजी॥
भैरवी चक्कर में ले जाकर किया हमको भ्रष्ट।
आर्या ले कर दिया हमको अनारी पोपजी॥
ईश पूजा छोड़ कर सब मूरती पूजक हुए।
छोड़ कर हाथी करी खर की सवारी पोपजी॥
नाक मूंदे गुदड़ी ओढ़े बैठे हो क्या सोच में।
अब तो फिर चलने लगी वाद्यदारी पोप जी॥
मातृभाषा की अब तो क़दर फिर होने लगी।
पाठशाला जाबजा होते हैं जारी पोप. जी॥
देश में अब हर तरफ़ उपदेश की भरमार है।
खुल रही है सब कपट की होशियारी पोपजी॥
देते हैं स्वामी दयानन्द को बड़ाही धन्यवाद।
जिसने कलई खल दी सारी तुम्हारी पोपजी॥
क्याबताऊं तुमको गति पोपों की अबशीतलप्रसाद।
है पुलिस आर्यासमाज और इश्तिहारी पोपजी॥

दादरा ६२२

टेक-मानो प्यारे पोपो! हमारी कही॥ अब तुम्हारो कुछ बाक़ी नहीं। ठगई की देख लई बाता वही मानो० १॥ सूरज को मोती मंगल को मूंगा। चन्दा चुराय दियो चावल दही॥ मानो० २॥ दुर्गा का बकरा काली का भैंसा। लिंगों की पूजा

से लज्जा रही ॥ मानों० ३ ॥ मुर्दे न खैहैं पूरा कचौरी। कैसे लगैहो दोहरी तही। मानो० ४ ॥ शीतलप्रसाद जड़ पूजा मिटाय दई। एकौ न राखी तुम्हारी सही ॥ मानो० ५ ॥

दादरा ६२३

टेक-चाहे पोपों को सब घर देहिं, तो भी थोड़ा दिया ॥
मड़हा भी देवैं उसारा भी देवैं, छानी को छप्पर देहिं ॥तो०१॥ जन्मे पै देवैं, विवाहे पै देवैं, मांदे मरे पर देहिं ॥ तो० २ ॥ मीरा पै देवैं, मदारों पै देवैं। क़बरों पै चादर देहिं ॥ तो० ३ ॥ स्त्री दान कर पोपों का देवैं, अरु सब ज़ेवर देहिं ॥ तो० ४ ॥ पोपों को देवैं उनकी स्त्री को देवैं, लड़कों को दुइभर देहिं ॥ तो० ५ ॥ शीतलप्रसाद राज सब देके, क़र्ज़ा काढ़ फिर देहिं ॥ ६ ॥

दादरा ६२४

टेक-प्यारे पोपों ! काहे उदास अब क्या बाकी रहा ?
चेले भी कर लिए, चेली भी करलीं, कर लिया भोग विलास अब० १ ॥ वेदों को छोड़ा पुराणों पै रीझे, भारत का कर दिया नाश ॥ अब० २ ॥ पत्थर पुजाए, मुर्दे जिमाए, बल का खिलाया मांस ॥ अब० ३ ॥ शीतलप्रसाद पर कृपा करो अब बाकी रहीं कोइ सांस ॥ अब० ४ ॥

भजन ६२५

टेक-तुमने जो कुछ भी किया हमने सभी देख लिया।

जो निराकार प्रभु उसकी बनाकर प्रतिमा।
एक मन्दिर में धरा हमने सभी देख लिया ॥ १ ॥
भोग तुम रोज लगाते हो न खाते हैं वोह।
मिष्ट जल पुष्प चढ़ा हमने सभी देख लिया ॥ २ ॥
एक ईश्वर की जगह देव हज़ारों माने।
फल मगर कुछ न मिला हमने सभी देख लिया ॥ ३ ॥
श्राद्ध मुर्दों के लिये करके चलाकी ऐसी।
पेट अपनाही भरा हमने सभी देख लिया ॥ ४ ॥
मद्य और मांस उड़ाते हैं बनाकर धोखा।
भेंट देवी की बता हमने सभी देख लिया ॥ ५ ॥
ब्याह बच्चों के किये वेद की आज्ञा छोड़ी।
बुद्धि बल वीर्य घटा हमने सभी देख लिया ॥ ६ ॥
छोड़कर वेद पुराणों की उड़ाई गप्पें।
दोष वेदों को लगा हमने सभी देख लिया ॥ ७ ॥
छोड़ ब्राह्मण व गऊ मात पिता की सेवा।
दान शूद्रों को दिया हमने सभी देख लिया ॥ ८ ॥
राहु और केतु शनिश्चर की बता कर हैया।
नाम ज्योतिष का धरा हमने सभी देख लिया ॥ ९ ॥
धन्य है स्वामी तुम्हें तोड़े यह बन्धन झूठे।
बासुदेव आर्य बना जबसे सभी देख लिया ॥ १० ॥

भजन ६२६

हम मित्र दृष्टि से देखें सब को बार बार बार।

ऐसी हो कृपा सर्वेश्वर, चलें न्याय धर्म के पथपर।
तुम तो हो प्रभु करुणाकर, सर्वाधार धार धार ॥हम०॥
क्या मुहम्मदी ईसाई है, जितने मत अनुयाई।
सब ही हैं हमारे भाई, करें हम प्यार प्यार प्यार ॥हम०॥
फिर जितने जन्तु सारे, सब हमरे हो प्राण अधारे।
आज्ञा तेरी वेद मँझारे, सब का सार सार सार ॥हम०॥
हम बार बार तुझे ध्यावें अरुमन इच्छा फल पावें।
पाठक शुभ मारग जावें, ऐ करतार तार तार ॥ हम० ॥

❋ २७ धर्म-वीर ❋

ग़ज़ल ६२७

मर्दों को धर्म काम में डरना नहीं अच्छा।
नामर्द से उम्मेद का करना नहीं अच्छा॥
क्या धन अवार धर्म में सर जान भी जाये।
बद-रस्म और बदकाम में मरना नहीं अच्छा॥
बढ़ना उसी का ठीक है जिस से हो फ़ैज़ आम।
ज़ालिम व मक्खीचूस का बढ़ना नहीं अच्छा॥
वादा न निबाहना है यह शैतान की हरकत।
इन्सां को ज़ुबां दे के मुकरना नहीं अच्छा॥
करने से पहले सोच लो हर काम का अंजाम।
आगे को क़दम धर के हटाना नहीं अच्छा॥
लड़ना किसी से ठीक नहीं इस जहान में।

पर ख़ास कर मा बाप से लड़ना नहीं अच्छा।
महाराज रामचन्द्र ने कर के दिखा दिया।
भाई को भाइयों से झगड़ा नहीं अच्छा॥

राजगीत ६२८

मरते २ मर गये लेकिन न छोड़ा आन को।
आके देखो दोस्तो! इस राजपूती शान को॥
सैकड़ों झेलीं मुसीबत रंजोग़म लाखों सहे।
जान तक दे दी बचाया लेकिन दीन ईमान को॥
ख़ाक से पैदा हुये और ख़ाक ही में मिल गये।
धर्म पर क़ायम रहे समझा नहीं कुछ जानको॥
राम गौतम कृष्ण का क्यों नाम है विरदेज़बां।
धर्म की ख़ातिर था छोड़ा राज के सामान को॥
याद रक्खो दोस्तो! हर्गिज़ भुलाना मत कभी।
दर्द दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को॥
लेक्चरों से मजलिसों से लम्बी चौड़ी बातसे।
दिलको नफ़रत होगई नफ़रतहै इनसे कानको॥
कर दिखाओ कुछ अगर है हिम्मतो मर्दानगी।
जंगजू कब छोड़ते हैं जंग के मैदान को॥
है अबस इस-चन्दरोज़ा ज़िन्दगानी का ग़रूर।
मरते दम तक खूबही क़ायम रखो ईमान को॥

भजन ६२६

सीस जिनके धरम पै चढ़े हैं

ऐसी हो कृपा सर्वेश्वर, चलें न्याय धर्म के पथपर।
तुम तो हो प्रभु करुणाकर, सर्वाधार धार धार ॥हम०॥
क्या मुहम्मदी ईसाई है, जितने मत अनुयाई।
सब ही हैं हमारे भाई, करें हम प्यार प्यार प्यार ॥हम०॥
फिर जितने जन्तु सारे, सब हमरे हो प्राण अधारे।
आज्ञा तेरी वेद मँझारे, सब का सार सार सार ॥हम०॥
हम बार बार तुझे ध्यावें अरुमन इच्छा फल पावें।
पाठक शुभ मारग जावें, ऐ करतार तार तार ॥ हम० ॥

❁ २७ धर्म-वीर ❁

ग़ज़ल ६२७

मर्दों को धर्म काम में डरना नहीं अच्छा।
नामर्द से उम्मेद का करना नहीं अच्छा॥
क्या पक प्रचार धर्म में गर जान भी जावे।
बद-रस्म और बदकाम में मरना नहीं अच्छा॥
बढ़ना उसी का ठीक है जिस से हो फ़ैज़ आम।
ज़ालिम व मक्खीचूस का बढ़ना नहीं अच्छा॥
वादा न निबाहना है यह शैतान की हरकत।
इन्सां को ज़बां दे के मुकरना नहीं अच्छा॥
करने से पहले सोच लो हर काम का अंजाम।
आगे को क़दम धर के हटाना नहीं अच्छा॥
लड़ना किसी से ठीक नहीं इस जहान में।

पर ख़ास कर मा बाप से लड़ना नहीं अच्छा।
महाराज रामचन्द्र ने कर के दिखा दिया।
भाई को भाइयों से झगड़ा नहीं अच्छा॥

राजगीत ६२८

मरते २ मर गये लेकिन न छोड़ा आन को।
आफ देखा दोस्तो! इस राजपूती शान को॥
सैकड़ों झेलीं मुसीबत रंजोग़म लाखों सहे।
जान तक देदी बचाया लेकिन दीन ईमान को॥
ख़ाक से पैदा हुये और ख़ाक ही में मिल गये।
धर्म पर क़ायम रहे समझा नहीं कुछ जानको॥
राम गौतम कृष्ण का क्यों नाम है विरदेज़बां।
धर्म की ख़ातिर था छोड़ा राज के सामान को॥
याद रखना दोस्तो! हर्गिज़ भुलाना मत कभी।
दर्द दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को॥
लेक्चरों से मजलिसों से लम्बी चौड़ी बातसे।
दिलको नफ़रत होगई नफ़रतहै इनसे कानको॥
कर दिखाओ कुछ अगर है हिम्मतो मर्दानगी।
जंगजू कब छोड़ते हैं जंग के मैदान को॥
है अबस इस-चन्दरोज़ा ज़िन्दगानी का ग़रूर।
मरते दम तक ख़ूबही क़ायम रखो ईमान को॥

भजन ६२९

शीस जिनके धरम पै चढ़ हैं, झण्डे दुनियां में उनके गड़े हैं।

एक लड़का हक़ीक़त नामी, सार जिसने धरम की थी जानी।
जगमें अबतक है जिसकी निसानी, सीस कटवाने को खुशखड़े हैं
बादशाह ने कहा सब तुम्हार, राज दौलत खज़ाने हमारे।
सुन हक़ीक़त यों बोले विचारे, हम तो इनसे किनारे खड़े हैं॥
यह हक़ीकत की दौलत न भाई, बल्कि आखीर को दुःख दाई।
क़ारूं जैसे न परबत बढ़ाई, आ नरक में वो आखिर पड़े हैं॥
सब को दुनियां से है कूंच करना, बाल बुड्ढा जुवां सबको मरना
मरना जब है तो क्या इससे डरना, हमतो गर्दन झुकाये खड़े हैं॥
पूरण भक्त ने कष्ट उठाये, कारण धर्म के अंग कटाये।
रहे सत् पै नहीं घबड़ाये, हाथ कटवाये कुयें में पड़े हैं॥
गुरू तेग बहादुर प्यारा, सीस जिसने धर्म पै दे डारा।
सीस कटवाया धर्म न हारा, नहीं मरने से कुछ भी डरे हैं॥
गुरु गोविन्द के थे दो प्यारे, गये रणभूमि में वो भी मारे।
और छोटे वह थे जो दो प्यारे, ज़िन्दा दीवार में वह गड़े हैं॥
महर्षी दयानन्द प्यारे, धर्म कारण ज़हर खा सिधारे।
सुन हिल जाते थे दिल हमारे, ओ३म् जपते वो आगे बढ़े हैं॥
लेखराम धर्म का प्यारा, जिसने धर्म पै तन मन वारा।
खाया जिस्म पै तेग कटारा, उठ 'धर्म' तू यहां क्या करे हैं॥

भजन ६३०

हुये यह कैसे उपकारी।

मोरध्वज का शिर चिरवाना, दाहिन अंग सिंह को खिलवाना, आंसू उनका एक न आना। कैसा दृढ़ धारी॥

शिवि का कपोत पै दया दिखलाना, तन अपने का मांस कटाना, काट काठ कर तुला पै चढ़ाना। कैसा दयाकारी॥

ऋषि दधीचि का तन चटवाना, जांघ की अपनी हड्डी दिखाना, उसही के कारण देह छुड़ाना। देशिहत भारी॥

स्वामी दयानन्द का विष खाना, लेखराम का पेट फड़ाना। सच्चा धर्म उपकार जताना। पाठक है भारी॥ हुये०॥

भजन ६३१

(लावनी)

सतयुग में सतव्रती हरिश्चन्द्र हो गये हैं ऐसे दानी।
चन्द्र सूर्य चाहे टरें अटल व्रत रहे सभी जानें प्रानी॥
विश्वामित्र मुनि आये मांगने उनकी प्रतिज्ञा दृढ़ जानी।
राज पाट सारा ले मांगा सोना सौ मन दो, मानी॥
आप बिके भंगी के घर पण्डित के बिकी उनकी रानी।
संग बिका छोटा बालक, रोहिताश्व नाम का अज्ञानी॥
एक रोज़ गया फूल तोड़ने, डसा सांप विष का खानी।
पाठक मुर्दा लिये चलीं्वह मरघट को शैव्या रानी॥
टेक–रोहिताश्व लाश गोदी में, रानी रोरही ज़ार बेज़ार॥

मैदान घोर सुनसान, जहां श्मशान, शब्द सुने कान, अनेक भयंकर। पीपल के पेड़ के नीचे बैठी कातर॥

कोई लाश पड़ी अधजली, कहीं सरगली, कोई सड़ीगली, देह दह दहके। कहीं चरबी चट २ चटक पटक मन टहके॥

चौपाई ।

बहुत रंग की उठ रही ज्वाला। गिद्ध कहीं कहिं फिरें शृगाला।
जहां तहां हाड़ श्वेत रतनारे। मास रुधिर पड़ नदी किनारे॥
शेर-रात का था वह समय वर्षा ऋतू थी घोर तर।
धड़ धड़ाते किनारे ढहते शब्द से फटे जिगर॥
छोटे से आकार में राना वह मुर्दा ले रही।
हा! विधाता लाल लूटा रो २ ऐसे कह रही॥

बारहमासा ।

हे पुत्र मैया की सुध लेओ क्यों तुमने अँखियां फेरली।
जीवे किस का देख मुखड़ा भैया मुख देखा बली॥
छूटे पती पर प्राण मेरे थे सहारे हा तेरे।
हा बिपति में छोड़ के तुम भी चले प्यारे मेरे॥
दोहा-इतनी कह कर रानि वह, तुरतै भई अचेत।
बूंद वृक्ष से गिरी तन, जिससे कछुक सचेत॥
अबहीं तो सांझ को खेल, कहा मा यह खिलाना खेले।
फूलों को गये आज्ञा ले, औचक आ हाथ मुख मेले॥
फिर इतना ही हा! कहा, नाग वहां रहा, अम्मा मुझदहा।
कहां वह सांप मुझे उस भार॥ रोहिताश्व० १॥
जो कभी मिले मेरे पती, वही सतव्रती तेरी सुतगती, कैसे बतलाऊं। हा! अपना मुख किस भांति उन्हें दिखलाऊं॥
उन सौंपू तू अज्ञा, बिछुड़ जिस आन, हे जीवन प्रान, दशा मैं ये की हीं। हा! फूल चुनन का क्यों मैं आज्ञा दीन्हीं॥

चौपाई ।

आओ प्राणपति इधर कृपाकर। देख लेओ मुख तनिक नैनभर।
इमें फांसि दे कष्ट निवारो। सुनत क्यों नहीं न्याय सँभारो॥
शेर-हाय! बेटे! माय रोती सुन पुकार न जागते।
अरे तुम तो इस दशा में भी हाय! सुन्दर लागते॥
इस प्रकार विलाप कर छाती लगाया उठायकर।
मुख निहारे मिट्टी लेती गोद बाव लिटाय कर॥

बारहमासा ।

उस मरघट में टहलते देखें हरिश्चन्द्र दुःख सुने।
मन में कहते दुःख हमारा न्यून इस के है सामने॥
हे बिधाता दुःख दिया क्यों ऐसी नारी को बड़ा।
शोक है हा! हमको अब इससे भी कर मांगन पड़ा॥
दोहा-सतव्रती रोवें खड़, देख देख उस बार।
विश्वामित्र हा यह सुना, समझ कहा करतार॥
हा! कैसे कहुँ कर देना, जो मुझको पड़े है लेना।
इसके तो पास कुछ है ना, सुत रुदन को आंसू रुकेना॥
कह बेटा मुख बोल, आंख तो खोल, लुटा अनमोल, लाल गया छोड़ मुझ मँझधार॥ रोहिताश्व० २॥
तुम्हें देख कर मुनिराज, सभी सुख साज, होय महाराज, उमर बड़ी पाये। हा! उनके वाक्य सारे ही उलटे लखाये॥

है तेरे पिता सतव्रती, जो हैं शुचि मती, प्रभु तेरी गती लखी नहीं जाये। हा! उनके शुद्ध संकल्प काम नहीं आये ॥

चौपाई।

बालपन में कफ़न न पायो। हाय! न कुछ खेल्यो नहीं खायो ॥
विकत समय तुम भूख सहारी। व्याल सही भोगे दुख भारी ॥
शैर-हाय हा! यह क्या गई हो दशा तेरी पुत्रवर।
शोक से व्याकुल दुखारी माय को तुम छोड़कर ॥
गये कहां हो आओ सचमुच मैं ही हूँ अपराधिनी।
हाय! दुखिया मायको दिखला दो मुख मेरे धनी ॥

बारहमासा।

यों रानी करती विलाप सुन २ काठ चिता को बनावती।
दाढ़ मार के रोवती फिर लाश तेहि ढिग लावती ॥
तबहिं वह राजा हरिश्चन्द्र आंसू रोक बढ़कर आवते।
थाम कर अपना कलेजा ऐसे वचन सुनावते ॥
दोहा-बड़ा धीर ही दृढ़ रहे, रोये न सुन यह बात।
हरिश्चन्द्र जी जो कही, लगे करेजे घात ॥
यहां जो कोई मुर्दा आवे, दे आधा कफ़फ़न तो जलावे।
जबलों नहीं कर चुक जावे, तबलों नहीं फूँकने पावे ॥
हे देवी यह सुन लेहु, शीघ्र कर देहु, न जाओ गेह। यह आज्ञा स्वामी कहूँ पुकार ॥ रोहिताश्व० ३ ॥

तब रानी होय अधीर, कहे निज भीर, सही जे पीर, नाथ बिसराओ। लखि अपने सुत की दशा यह दुःख बढ़ाओ ॥
हम लीन विधाता लूट, कर्म गया फूट, पुत्र गयो छूट, तभी समझाओ। हे प्रिय! न छोड़ो धर्म कर्म फल पायो ॥

चौपाई।

देर करो मति अधिक न रोओ। भोर भयो और मत खोओ।
हमें कफ़न दे भौन सिधारो। हे प्यारी मत धैर्य्य बिसारो ॥
शैर-सुन कहा रानी ने यों रो २ पती के सामने।
नाथ मेरे पास नहीं कोई वस्त्र जो मुझ से बने ॥
फाड़ अंचल देखो उसमें लपट फूंकने लाई हूँ।
हा! हा! इतनी दूर स्वामी बिना चादर आई हूँ ॥

बारहमासा।

जो दूं मैं कफ़फ़न फाड़ तो सब अंग देखो खुलत है।
हाय चक्रवर्तीका सुत क्या बिनाही कफ़फ़न फुकत है ॥
राजा तब कहें क्या करें जब दास हैं हम गैर के।
फुंकने देंगे नहीं बिना कर कफ़न पाये हे प्रिये ॥
दोहा-धर्म रख्यो मैं राज्य दे, यों नृप दिया उचार।
एक टूक के कारने, क्यों खोव प्रिय नार ॥
राजा की सुन कर बानी। लगी कफ़न फाड़ने रानी।
तब विश्वामित्र मुनि ज्ञानी।आ ओषधि दी लासानी॥

यों उठ बैठे रोहिताश्व, मिटा सब त्रास, बिठाये पास, मिले यों पाठक परिवार। रोहिताश्व लिये गोदी में रानी हरष चली इस बार ॥ ४ ॥

भजन ६३२

चले खांड़े की धार, धर्मवीर बलधारी।

जिन धर्म की टेर सुनाई, उन प्यारी जान गँवाई।
डरे नहीं हुए बलिहार ॥ धर्म० १ ॥

घनाक्षरी।

हरिश्चन्द्र राजा भये भंगी के दास मरा पुत्र फूँका तब ही जब कर चुकाया सारा है। शिवि ने कपोत हेत मांस तन से काट दिया, मोरध्वज ने देह पर आप खींचा आरा है॥ देखो दधीचिजी ने गाय से चटाकर तन जांत अस्थि दी औ खुद स्वर्ग को सिधारा है। शिवा जी अमीर गुरु गोविन्द अनेक भये प्राण प्यारे छोड़े पर धर्म ना बिसारा है॥२॥

कोलम्बस सुकरात अन्यदेशी भये देखो इतिहास कैसे २ झुलड़ा उठाये हैं। शंकर मुनीश ने अपने विष पान किया जैन बौद्ध सारे परदेश को भगाये हैं। फांसी चढ़! भीतों चिन! गारे सने! बूनों के हैं बिन्दा हकीकत जैसे धर्मवीर आये हैं। स्वामी दयानन्द बस लेखराम जी ने भी तो धर्म ही के ऊपर शरीर विनसाये हैं॥ ३ ॥

जिन धर्म का पंथ सुधारा, गया इसी मार्ग में मारा।
गड़े झंडे संसार ॥ धर्म० ४ ॥

भाइयो न शोक का स्थल, तुम भी रखते हो यह बल।
बेद लो पैना कटार ॥ धर्म० ५ ॥

सुन मात पिता नहीं दारा, जग समझो धुंध पसारा।
धर्मध्वज देहु पसार ॥ धर्म० ६ ॥

मरू भी धर्म बचाओ, रिपु झूठ को मार भगाओ।
होय यश जग विस्तार ॥ धर्म० ७॥

है धन्यवाद उन जन को, जिन दिया धर्म में तन को।
कहै पाठक निरधार ॥ धर्म० ८ ॥

दादरा ६३३

धर्मपथ वीरों को प्यारा।

अग्नी चाहे हो जाय शीतल, पर्वत भी चाहे जांवे चल।
बालू में चाहे तेल जाय मिल, हो प्रलय अंधियारा ॥ १ ॥
धीर वीर हरिश्चन्द्र नृपतिवर, कैसे दृढ़ रहे अपन वचन पर।
मोरध्वज से धर्म वीर नर, चला गया है आरा ॥ २ ॥
पूर्व काल को छोड़ो प्यारो, इसी समय का दृश्य निहारो।
महर्षि दयानन्द भयो न्यारो, तन मन सब वारा ॥ ३ ॥
पंडित गुरुदत्त हुये उपकारी, लेखराम ने छुरी सहारी।
धीर वीर भये पन्थ सुधारी चलने को न्यारा ॥ ४ ॥
मित्रो! ज्ञान तराजू मंगाओ, जीवन धर्म तौल दिखलाओ।
धर्म का पलला भारी पाओ, पाठक हरबारा ॥ ५ ॥

भजन ६३४

जिनकी धर्मपै हो कुर्बानी, समझो उनकी सफल ज़िन्दगानी।
वही बीर सपूत कहाते, मरने से न कभी घबराते जी।
शिक्षा जीवन से दें सुख खानी ॥ स० १ ॥
क्या वेडर कभी डरपायं, खड्गों से नहिं दहलाय जी।
वहँ हेच हैं जुल्म सितानी ॥ स० २ ॥
कितनों ने पिये विषप्याले, कितने झेले हैं तग व भालेजी।
लाखों हैं मशहूर कहानी ॥ स० ३ ॥
मुर्दादिल से श्रेय न जीना, इससे ज़िन्दादिली सहा जीनाजी।
पाठक ठहरें न सन्मुख मानी ॥ स० ४ ॥

भजन ६३५

नहीं हटते वेद प्रचार से, जो धर्म धीर होते हैं।
चाहे दुनिया फिर जाय सारी, चाहे पड़े मुसीबत भारी।
नहीं धर्म से हटें पिछारी, तोप तीर तलवार से।
डर कर कायर रोते हैं ॥ जो० १ ॥
धर्म रूप बीड़ा जो उठाय, तन मन धन धर्मार्थ लगावें।
हर्गिज़ नहिं दबने में आवें, लोक लाज परिवार से।
नित धर्म बीज बोते हैं ॥ जो० २ ॥
दयानन्द गये देश जगा के, लेखराम गये प्रान गँवा के।
गुरुगोविन्द गये तेग चला के, बेडर हो संसार से।
वह सुख की नींद सोते हैं ॥ जो० ३ ॥

दुष्कर्मों से चित्त हटाया, वेदों का मारग मन भाया।
हीरासिंह ने गीत बनाया, नेह लगा निराकार से।
सब दिलों दाग धोते हैं ॥ जो० ४ ॥

ग़ज़ल ६३६

इस धर्म पर पुरु ने मुसीबत सही बड़ी ॥
बच्चे थे बन में जाके रियाज़त की जिस घड़ी ॥ १ ॥
इस धर्म ही पै राजा हरिश्चन्द्र थे डटे।
दानी थे इन्तहा के सखावत में मर मिटे ॥
दिन उनके गो तमाम ग़मोरंज में कटे।
पर करीलया जो अहिद न उससे ज़रा हटे ॥
कितने ही उनके धर्म का अहवाल लिख गये।
रानी बिकी कुँवर भी बिका आप बिक गये ॥ २ ॥
दशरथ अवध के राजा आली जनाब थे।
धर्मात्मा थे धर्म के वह आफ़ताब थे ॥
जुर्रत में शूर, वीरता में ला जवाब थे।
राजों में सूर्य वंश के वह इन्तखाब थे ॥
जान कशमकश में आन पड़ी दम गया निकल।
आने दिया पै अहिद ना इकरार में खलल ॥ ३ ॥
श्रीराम ने भी धर्म पै क्या न कुछ किया।
तख्तेशाही को छोड़ के बनवास लेलिया ॥
चौदा बरस का बन में ज़माना बसर किया।
कुछ दोष अपने मात न मा बाप को दिया ॥

रानी भी उनकी धर्म पतिव्रत धार कर।
सम्पत पै सुख पै साथ चली लात मार कर ॥ ४ ॥

कशमीर से जब आये भरतजी सुये वतन।
धर्मात्मा थे दिलमें किया अपने यह परन ॥
हक़दार ताजोतख़्त के जो थे गये वह बन।
हरगिज़ न राजगद्दी पै रक्खूंगा मैं चरन ॥

चौदा बरस ज़मीन पर आसन जम दिया।
तख़्त शाही खड़ाऊं से उनकी सजा दिया ॥ ५ ॥

मा गोपीचन्द राव की मुँह उनका देखकर।
बोली यूं अपने बेटे से हो करके चश्मतर ॥
दुनिया है बेसबात है दो दिन का क्यों फर।
दे छोड़ राज योग ले होजावे तू अमर ॥

कुछ भी न मा के हुक्म में चूं वे चरा किया।
जाहो हशम को छोड़ दिया योग ले लिया ॥ ६ ॥

करते थे तप इसी के लिये पाणिनी ऋषी।
राजा बिके कि इसके लिये जिस्म जान पी ॥
राजा जनक इसी के सबब होगये यती।
थी मोरध्वजने आराकशी इससे सरैं की ॥

शुकदेव जी का नाम इसी से अमर हुआ।
बैकुण्ठ में इसी से मनुजी का घर हुआ ॥ ७ ॥

पदवी इसीसे राजा युधिष्ठिर को थी मिली।
बरतर लुजुर्ग इस से हुये राजा भीष्म जी ॥

इसके तू फल से बने औतार कृष्ण जी।
योगी भी हुये इसके लिये राव भर्थरी ॥
ज़र्रा थे, आफताब इन्हें धर्म ने किया।
क़तरे थे, दुर्रेनाब इन्हें धर्म ने किया ॥ ८ ॥

२८ महर्षि स्वामीदयानन्दस० की दया

गजल ६३७

दुखों से ग्रस्त था भारत ज़रूरत थी ऋषी आये।
ऋषी आये मुनी आये कोई धर्म्मात्मा आये ॥ १ ॥
महाभारत के होने से अविद्या देश में छाई।
छिपा था वेद का मानू महा अन्धकार थे छाये ॥ २ ॥
तजा ईश्वर की आज्ञा को जो था उपदेश वेदों में।
इसी कारण हज़ारों मत यहां पर ज़ोर हैं पाये ॥ ३ ॥
करोड़ों होगये मित्रो! मुसलमां और ईसाई।
नहीं था दम किसी में भी जो इनको नीचा दिखलाये ॥४॥
एक तरफ़ पड़ रहा दुर्भिक्ष हाहाकार भारतमें।
दूध पीते हुए बच्चों को माता बेच कर खाये ॥ ५ ॥
करोड़ों बिक गए बच्चे मुसलमां और ईसाइयों के।
नहीं था कोई भी हमदर्द अनाथालय जो खुलवाये ॥६॥
एक तरफ़ रो रहीं विधवा गौ एक ओर चिल्लातीं।
इन्हीं की आह का नारा सुनो हम से नहीं जाये ॥ ७ ॥

तजी ब्रह्मचर्य की शिक्षा विवाह बच्चों के थे जारी।
इसी से वर्ण और आश्रम सभी बिगड़े नज़र आये ॥८॥

जिधर देखो उधर संसार हाहाकार से पूरित।
त्रिविध तापों की अग्नी का धुवां आकाश को जाये ॥९॥

प्रभू भारत हुआ गारत सुनो तुम टेर भारत की।
पुकारा एक स्वर होकर पिता तुम बिन कहां जाये ॥१०॥

सुनी जब टेर ईश्वर ने दयामय ने दया कर के।
ऋषी को प्रेरणा कीन्ही दयानन्द सरस्वती आये ॥११॥

ऋषी ने बीड़ा जब उठाया दुखों के दूर करने का।
किया तन मन व धन अर्पण इसी में आहुती पाय ॥१२॥
प्रथम काशी विजय कीन्हीं वहां कई बार जाकरके।
यतन फिर तुम हटाने के लिये उपदेश बतलाये ॥१३॥

यही है प्रार्थना मेरी सभी भारत के भाइयों से।
ऋषी ऋण को उतारें जो ऋषी सन्तान कहलाये ॥१४॥

अगर है खून ऋषियों का तुम्हारे जिस्म में बाकी।
उठो बांधो कमर जल्दी नहीं दिन आखिरी आये ॥१५॥

करो कुछ यत्न ऐ मित्रो! तुम भारत के सुधरने का।
नहीं तो हम बांधव प्यारे अधोगति होती ही जाये ॥१६॥

न समझो मित्र यह गाना बल्कि यह एक रोना है।
विनय करे वासुदेव शर्मा सभा में जो खड़ा गाये ॥१७॥

ग़ज़ल ६३८

अग्नी मतान्तरों की जो यहां पे जल रही थी।
वैदिक धर्म से उनकी, कुदरत बदल रही थी ॥ १ ॥
ज़ालिम हकूमतों की, ताकत के मदले को।
एक कल्पना सी बने, मशरिक को खल रही थी ॥ २ ॥
भारत में हर तरफ़ था, छाया हुआ अन्धेरा।
धीमी सी एक बत्ती, मथुरा में जल रही थी ॥ ३ ॥
माता कौशल्या जी, गुजरात में थी जन्मी।
शुद्धात्मा एक उनकी, गोदी में पल रही थी ॥ ४ ॥
जिस विधि से यहां गौतम, पालक बनी पले थे।
वह आत्मा भी उनकी, सांचे में ढल रही थी ॥ ५ ॥
हिमालय की गुफ़ा वह, और नर्मदा के तटपर।
कर योग उसके चित की, वृत्ती बहल रही थी ॥ ६ ॥
दुनियां के मोह मद की, जो थी चटाने भारी।
क़दमों के उसके नीचे, वह सब फ़िसल रही थी ॥ ७ ॥
वैराग्य देख उसका, हसरत से आह भर भर।
दुनियां की कामचेष्टा, कर अपने मल रही थी ॥ ८ ॥
शिक्षा से उस ऋषी की, जागी हुई नसल है।
सादगी से जो यहां पर, घुटनों से चल रही थी ॥ ९ ॥
विद्या के बल से उसने ढाली करी वह ताक़त।
जो हिन्दुओं को चुन २ नावत निगल रही थी ॥ १० ॥

गो ज़ोर पर यहां थे, अद्वैत वाम मार्गी।
इनकि प्रताप द्वारा, जड़ उनकी गल रही थी ॥ ११ ॥
विद्या के बल से उसने, शंका समस्त खोई।
जो तालियाने हक़के, मन में उगल रही थी ॥ १२ ॥
पुरुषार्थ से इसी के, सुख मूल वायु फिर बह।
चलने लगीं यहां जो, सतयुग में चल रही थी ॥ १३ ॥
दुर्गाप्रसाद तू भी था खुश नसीब इन्सां।
आर्यसभा की सेवा, जो तुझ को मिल रही थी ॥ १४ ॥

भजन ६३६

आ हा स्वामी दयानन्द आये, भागे धूर्त पाखंडी भररररर।
भारत पर अनुकम्पा कीनी, ज्ञान रूप जिन वर्षा कीनी।
ठगिया मन में सोचन लागे, छलिया कांपे थरररररर ॥ १
विद्यालय और यतीमखाने खोल दिये जिन धर्म खजाने।
समय पाप भी उदय विकार, तिमर गया जैसे सररररर ॥ २
नारिन को जो शूद्रा कहें थे, खुदगर्ज़ी से पेट भरें थे।
कन्या शाला हो गई जारी, उड़ा खयाल यह फररररर ॥ ३
वेद रूप जिन बाण चलाये, भारतवासी आन जगाये।
गाये बटोही कहां तक महिमा, पोपजाल फटो चररररर ॥ ४

गज़ल ६४०

धन्य है स्वामी दयानन्द जगाया तुमने।
घोर निद्रा से हम आन उठाया तुमने ॥

महाभारत से आवद्या का अंधेरा छाया।
वेद प्रकाश से तम सारा हटाया तुमने ॥
नाना पन्थों में भटकते थे पटकते सर को।
नान्यः पन्था यह सत् उपदेश सुनाया तुमने ॥
प्रभु को छोड़कर पूजीं थीं क़बर तक हमने।
फिर से दो काल की सन्ध्या में लगाया तुमने ॥
झांझ घड़ियाल बजा करके करें थे भक्ती।
योग कर मन को ठहराओ यह बताया तुमने ॥
दीर्घ आयु के बिवाह से जो डरें थे हम सब।
बन के ब्रह्मचारी ये आदर्श दिखाया तुमने ॥
अन्य पन्थों ने दबाया था बनाकर झूठा।
"सत्यमेव जयते" विजय नाद बजाया तुमने ॥
बेवा और दीन मुसलमान ईसाई होते।
इनके फन्दे से छुड़ा धर्म बचाया तुमने ॥
"स्त्री शूद्रौनाधीयाताम" कहे थे सारे।
"इमं मन्त्रं पत्नी पठत्" वाक्य सुझाया तुमने ॥
वेदों का नाम भी भूले थे कहे हैं किनको।
वेदों की कुंजी ये सत्यार्थ बनाया तुमने ॥
करूं बर्णन मैं कहां तक लों तुम्हारा स्वामी।
वासुदेव हिन्दु से दृढ़ आर्य बनाया तुमने ॥

गजल ६४१ .

तुम्हीं पर मुन्सफ़ी ठहरी, श्री स्वामी को क्या कहिये।

ऋषी योगी गुणी ज्ञानी मुनीश्वर देवता कहिये ॥ १ ॥
बचाया झूंठ रस्ते से, दिखा कर सत्य का मारग ।
पिता कहिये गुरू कहिये, जो कुछ कहिये बजा कहिये ॥ २ ॥
किया वह काम है उसने, कि जिसकी अब ज़रूरत थी।
किया वेदों को भाषा में, उन्हीं का हौसिला कहिये ॥ ३ ॥
लगादी जान, भेजीं सख्तियां संसार की खातिर।
हितैषी आनमारी उसको हर एक इन्साजां कहिये ॥ ४ ॥
हुई थी कमसिनी की उम्र में कन्या जो विधवायें।
विवाह उनका न फिर होना, जुल्म कहिये न क्या कहिये॥५॥
हमें अपनी ही ग़फ़लत ने, डुबाया और डुबायेगी।
खता अग्यार की क्या है, ये अपनाही खता कहिये ॥ ६ ॥

गजल ६४२

शुकर स्वामी दयानन्द का बजा कर न लावें हम ।
किये उपकार जो हम पै भला गुण क्यों न गावें हम ॥
फँसे थे जाल पापों में करा दाया छुड़ाया है।
नसीहत एसे पुरुषों की भला क्यों कर भुलायें हम॥
बना चेतन की जड़ मूरत कहा पोपों ने ईश्वर है।
निराकार और चेतन को भला क्यों जड़ बनायें हम॥
छिपाकर वेद चारों को महाभारत बनाया है।
भारत को किया गारत यह सदा दुर्गत हटायें हम ॥
किया परचार पुराणों का बजाय सत्य वेदों के।

भला क्यों छोड़ अमृत को जी कैसे ज़हर खायें हम ॥
तअस्सुब क्यों छोड़ समाया है मिलें जब आर्य पापोंसे।
खुदही खुद दिल में चलते हैं नमस्ते जब बुलायें हम ॥
सुनी फ़र्याद विधवों की करी है मदद दिलोजां से।
किया उपदेश हम सबको नियोग उनका ठहरायें हम॥
दिया परमाण वेदों का जो है फर्मान ईश्वर का।
मनुजी ने भी दी आज्ञा रसम को क्यों गँवायें हम॥
अब उनकी यादगारी में बनावें वेदशाला को।
पढ़ें बेकस हों खुशजावें यह सत् विद्या फैलायें हम ॥

भजन ६४३

यह किसे खबर थी कोई बाल ब्रह्मचार आवेगा।
यह करके वेद प्रचार हमें उपदेश सुनावेगा ॥
मत भूल गये थे किरानी, अभिमानी हुये थे कुरानी।
यह क्या जाने थे पुरानी, भाष्य श्रुति का हो जावेगा॥यह०१॥
विद्या को छोड़ बैठे थे, यम नियम तोड़ बैठे थे।
मुंह सत से मोड़ बैठे थे जैसे कोई नहिं समझावेगा ॥यह०२॥
मत फैल गये भारत में, ताक़त न रही उस तन में।
हा फँस गये हैं स्वारथ में कौन अब वेद पढ़ावेगा ॥यह०३॥
पढ़ विद्या दयानन्द आये, वेदों के डंके बजाये।
खुश उदय भानु हो आये, लोक सब जगता जावेगा। यह०४॥

भजन ६४४

यह किसे विदित था स्वामी दयानन्द आन जगावेगा ।
वह करके फिर उद्धार हमें उपदेश सुनावेगा ॥
सत धर्म छोड़ बैठे थे, मुँह सत से मोड़ बैठे थे ।
विद्या निचोड़ बैठे थे, कौन अब पढ़ पढ़ावेगा ॥ यह० १ ॥
आपस में बैर था जारी, खो सुमति चुके थे सारी ।
यह जाने था ब्रह्मचारी, सामाजिक बेल बढ़ावेगा । यह०२॥
बचपन का बिवाह मिटाया, ब्रह्मचर्य का अर्थ सुझाया ।
श्रुति विद्या के पठनार्थ, गुरुकुल आन बनावेगा ॥ यह० ३ ॥
गौतम कणादि से मुनिवर, श्रीकृष्ण से योगी भूपर ।
श्रीराम भरत से बन्धु, फेर आके दिखलावेगा ॥ यह० ४ ॥
सहदेव भीम बलधारी, अर्जुन से शस्त्र खिलारी ।
हद भीष्म पितामह जैसे, महा योधा प्रकटावेगा ॥यह० ५॥
कन्या विद्यालय बनाये, गृह आश्रम कर्म सिखाये ।
सब भ्रामक जाल मिटाय, सतपथ आन बतावेगा ॥यह०६॥
पापों से समाज बचाया, आमिष मद्यादि छुड़ाया ।
दुष्कृति से दूर हटाया, बन्ध सारा छुट जावेगा ॥यह०७॥
जो धींग पने से भाई, हुये मुसल्मान ईसाई ।
अब उन्हें प्रेम से विवश कुटुँब लीन से लगावेगा ॥यह०८॥
वर्णाश्रम सुधर रहे हैं, सब ने सत्कर्म गहे हैं ।
यज्ञों के स्रोत बहे हैं, धर्म अब उन्नति पावेगा ॥यह०९॥
धनिभाग दयानन्द आये, भारत के कष्ट मिटाये ।

भूल भटके समझाये, फेर अब सतयुग आवेगा ॥यह० १०॥

भजन ६४५

धन्य बालब्रह्मचारी, हुआ जग उपकारी, तैं ने कहा पुकारी, शुभ ओ३म् ओ३म् ओ३म् । तू था बड़ा बलकारी, और भारत हितकारी, तू ने अच्छा विचारी । कहा ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ भ्रमण देश भारत में करके । हरदम पुकारे था ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥धन्य० १॥ करी विद्या प्रकाश किये वेदों के भाष्य, जिससे हुआ विश्वास । हमें ओ३म् ओ३म् ओ३म् । तेरी भाषा थी प्यारी, तेरी युक्ती थी न्यारी, तैंने सब से कहा दिया ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ किये कारज थे भारी, दुनिया जाती थी सारी, तैंने सब को बता दिया ओ३म् ओ३म् ओ३म् देवयज्ञ सब को बतलाये, और पुज्य बताया कहीं ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥धन्य० २॥ सत्य धर्म बताया, जो था हमने गँवाया फिर आन कह या है ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ धन्य स्वामी महाराज, किये क़ायम समाज, मिल गाते हैं हम सब ओ३म् ओ३म् ओ३म् धन पना हो राज, जिसमें आनन्द है आज, हुई कृपा है भारी, कहो ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ ये परदेशा उनके गुण गाओ, जिस ने हमको सिखाया है ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ अय आर्य दुलारो, ज़रा दिल में विचारो, और मिल के पुकारो, कहो ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥

गजल ६४६

ऋषी ही हमारा बना गया है, कि देश भक्ती सिखा गया है ।

अधर्म से दिल हटा गया है, वह वेद विद्या पढ़ा गया है ॥
रियाज़भारतमेंगुलखिलाथा वहतोहफाकुदरतसेएकमिलाथा।
खिज़ा के झोंके बुरा हो तेरा तू आके उसको सुखा गया है ॥
ऋषी के प्रचार सोलहू आला, ने हमको कैसा कहां संभाला।
तिमिर के अन्दर किया उजाला, विद्याका दीपक जला गया है ॥
श्राद्ध के मानी हम थे भूले, जो यज्ञ का अर्थ हम थे चुके।
जो भाष्य करने के थे तरीके वह स्वामी हमको बता गया है ॥
ऋषी था उन्नीसवीं सदी का, बजाया हर सिम्त जिसने डंका।
बताओ है और कौन पैदा, जो ऐसी हलचल मचा गया है ॥
वह जैमिनी जी पै मरनेवाला, कपिलका सत्कार करनेवाला।
वह धर्मयुध में न डरनेवाला, फ़िदा करश्मा दिखागया है ॥

भजन ६४७

उस योगी ने संसार का, कैसा उपकार किया है ॥ टेक ॥
गेह बिसार गही गुरु शिक्षा, धार महाव्रत मांगी भिक्षा।
जीवन भर त्यागी न तितक्षा, दुर्लभ ब्रह्म विचार का ॥
पीयूष पवित्र पिया है ॥ कैसा० १ ॥

कभी किसी का नहीं सताया, सब को सीधा पन्थ बताया।
धर्म कर्म का मर्म जताया, विद्या के परिवार का ,,
दरबार दिखाय दिया है ॥ कैसा० २ ॥

वैदिक मतका मान बढ़ाया, मिटगई महामोहकी माया।
पकड़ दई भारत की काया, ऐसे परम उदार का ॥
बल पाय सुधार ज़िया है ॥ कैसा० ३ ॥

अब हम लोग न पाप करेंगे, प्रभु शंकर का ध्यान धरेंगे।
भवसागर से क्यों न तरेंगे, संकट के संहार का ॥
शुभसाधन जान लिया है ॥ कैसा० ४ ॥

भजन ६४८

टेक-होना दुश्वार दयानन्द स्वामी सा।
जिन धर्म के कारण भाई, जीवन धन दिया लगाई।
वेद धर्म किया प्रचार ॥ दया० १ ॥
विद्या बल दिखलाया, काशी को जाय हिलाया।
सभी ने मानी हार ॥ दया० २ ॥
जितने भी थे मतवादी, सबकी ही पोल दिखा दी।
उखाड़ी जड़ से दीवार ॥ दया० ३ ॥
मंझधार पड़ी थी, नहीं था कोई और खिवैया।
महर्षि ही कर गए पार ॥ दया० ४ ॥
शर्मा कहै धर्म संभालो, स्वामी की आज्ञा पालो।
ऋषी ऋण दबो उतार ॥ दया० ५ ॥

गजल ६४९

मचा दी धूम दुनियां में शेर नर हो तो ऐसा हो।
दिखाया सत्य मारग का जो रहबर हो तो ऐसा हो ॥१॥
थी स्वामी दयानन्द ने जो सब पाखण्ड को तज्ञा।
विचारो गौर कर भाई तपेश्वर हो तो ऐसा हो ॥ २ ॥
पुरानी और कुरानी क्या, किरानी जो कोई आया।

घटाया बहिस्से सबको सखुनवर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
नहीं मरने से घबराया धर्म सत् जग में फैलाया।
पोल सब खोल दिखलाया सनावर हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥
किया ब्रह्मचर्य का पालन जगत का स्वाद सब त्यागन।
यह फल है वीर्य रक्षा का जो जौहर हो तो ऐसा हो ॥ ५ ॥
जगाया देश भारत को पड़ा सोता था ग़फ़लत में।
गया हुआ धर्म फिर पाया मुकद्दर हो तो ऐसा हो ॥ ६ ॥
पड़ी सब देश में हलचल नहीं चलता किसी का छल।
गई शेखी सभी की ढल तंगयुर हो तो ऐसा हो ॥ ७ ॥
जो झूठी मज़हबी बातें दलीलों अक़्ल से बाहर।
दिखाया खींचकर नक़्शा मुसाव्वर हो तो ऐसा हो ॥ ८ ॥
मिटाया सर्व अँधियारा दिवाकर बेद का लाकर।
बिहारीलाल जो माहे मुनव्वर हो तो ऐसा हो ॥ ९ ॥

भजन ६५०

कीन्हा उपकार दयानन्द स्वामी ने।
बेदों का भाष्य बनाया, सीधा मारग बतलाया।
जहां मत खड़े हज़ार ॥ दया० १ ॥
कई विद्यालय बनवाये, कई दीनालय खुलवाये।
किया विद्या का प्रचार ॥ दया० २ ॥
जाती अभिमान मिटाया, वर्णाश्रम ध्यान दिलाया।
उठे सोते नर नार ॥ दया० ३ ॥

ऋषियों ने यह बताये, हम को करने सिखलाये।
दूर हुआ वायु बिकार ॥ दया० ४ ॥
रिपु भी उपमा करते हैं, अब अर्थ लौट धरते हैं।
खूब कर रहे विचार ॥ दया० ५ ॥
गोपी इन्द्रिय बतलावें, चीरों का हरन छिपावें।
कृष्ण तो चोर न जार ॥ दया० ६ ॥
है धन्यवाद ऋषि तुम को गये प्राणदान दे हमको।
मोक्ष के पहुँचे द्वार ॥ दया० ७ ॥

ग़ज़ल ६५१

धन धन दयानन्द महाराज, हमें ग़फ़लत से जगाने वाले।
करके निद्रा से हुशियार, कीन्हा वेदों का विस्तार।
कीन्हीं बिगड़ी दशा सुधार, ये सत्यार्थ बनाने वाले ॥ धन० १ ॥
करके सत्यासत्य की छान, मारा पाखंडिन का मान!
किये बेदों से अलग पुरान, ये अज्ञान मिटाने वाले ॥ धन० २ ॥
होकर वेदों पर आरूढ़, खोले शब्द अर्थ सब गूढ़।
खाली फिरन लगे बहु मूढ़, मुफ्ती माल उड़ाने वाले ॥ धन० ३ ॥
भारत नैया थी मँझधार' तुमने आन लगाई पार।
ऐसी कीन्हीं दया अपार, खेवा पार लगाने वाले ॥ धन० ४ ॥

भजन ६५२

देखो उपकार स्वामी जी का भाई।

यह हवन हुआज्ञा भारी। है उन की सुफावन सारी।
हृदय में करो विचार ॥ स्वा० १ ॥
मन्त्रों का हुआ उच्चारण। पढ़ौ औषधा रोग निवारण।
ओ३म् की रहे पुकार ॥ स्वा० २ ॥
जल वायु शुद्ध होते हैं। सब रोगों को खोते हैं।
देश का करें सुधार ॥ स्वा० ३ ॥
नित पंचयज्ञ का करना। श्री स्वामी जी ने वरना।
यही जीवन का सार ॥ स्वा० ४ ॥
हवनों का करना छूटा। भारत का नसीबा फूटा।
होते हैं दुःख अपार ॥ स्वा० ५ ॥
नहीं नित्य कर्म जाने थे। पत्थरों से मुक्ति माने थे।
भ्रम में था संसार ॥ स्वा० ६ ॥
करो यज्ञ हवन चित लाई, सब ऋषि मुनि रहे बताई।
मुक्ति का है यह द्वार ॥ स्वा० ७ ॥

भजन ६५३

हुये उदय भाग भारत के दया की आने लगी बारी।
चहुँ ओर हुआ आनन्द दयानन्द आये ब्रह्मचारी॥
अहो भाग ऋषी एक आया, जिन विद्या धन बरसाया।
हम सब ने लाभ उठाया, वेद के हो गये अधिकारी॥
धन जगदीश्वर की माया, दी पलट देश की काया।
भारत का दुःख मिटाया, भेजकर आत्म बलधारी॥

दुखिया थे अनाथ बिचारे, फिरते थे भूख के मारे।
अब उन के दुःख हटे सारे, हुये दीनालय हैं जारी॥
थे विद्याहीन नर नारी, यों भारत हुआ दुखारी।
अब गुरुकुल होगये जारी, पढ़ें जहां विद्या ब्रह्मचारी॥
हुये धर्म के रक्षक ऐसे, थे आर्य मुसाफ़िर जैसे।
नहीं डरे मौत भय से, प्राण तक दे गये शुभचारी॥
इस आर्यावर्त के कारण, स्वामी ने योग किया धारण।
किये सब के शोक निवारण, बने भारत के हितकारी॥
अब भारत के नर नारी, बनो सच्चे वेद प्रचारी।
कन्या गुरुकुल करो जारी, करे परदेशी विनय भारी॥

गजल ६५४

किया तुमने स्वामी जी खूबही, जो ये वेद मत का प्रचार है।
वह जो सत्यधर्म था डूबता, लिया उसको तुमने उबार है॥
यह तो हौसला था हुजूर का, दिया वेदमत को जो यूँ चला।
लिया धोखेबाजों से बल बचा, तुम्हें धन्यवाद हजार है॥
वह जो स्वार्थियों ने जानकर, थी उड़ाई गप्पें बेधालों पर।
किये उनके आपने नीचे सर, क्या नहीं यह कुछ उपकार है॥
जो हमारे माल उड़ाते थे, और हमें ही गप्पें सुनाते थे।
कहीं भूत प्रेत पुजाते थे, अब ख़लील उनका शुमार है॥
कहीं रामकृष्ण को बरमला, था बताया छिनला व चोरटा।
दिया तुमने दोष वह सब मिटा, तुम्हें धन्यवाद हजार है॥
वह जो मूरखता का अन्धेरा सा, था जो भारतवर्ष पै छा रहा।

किया नष्ट आपने सर्वथा, नहीं बाक़ी उसका शुमार है ॥
गौ सामने थी पुकारती, नहीं देता साथ था कोई ज़री।
जो विपति हरी तो तुम्हीं हरी, दिया उनका दुःख निवार है॥
जो हैं आये उन से यह अर्ज़ है, हो सहाय दीनों पै फ़र्ज़ है।
तजें द्वेष यह बुरा मर्ज़ है, यही नेकमरदों का कार है ॥
ज़रा सोचिये तो यह बरमला, थी कमी उसीह के घरमें क्या।
न दुखी न मूर्ख दरिद्री था, हुआ हम पर ले जो निसार है॥
उसें जाहिलों ने तो तंग किया, किवह छोड़ देवे यह रास्ता।
पर धरा न पीछे को उसने पा, किया दुश्मनों का शिकार है॥
दयानन्द स्वामी न होता जो, तो था सुनता कौन पुकार को।
छुली लूट खाते दयार का, नहीं जिनका अब पतवार है ॥
यह स्वदेश दशा विचारकर, हो तैयार बांधकर अब कमर।
नहीं वक़्त सोने का नामवर, हुआ मुल्क आप का ख्वार है ॥
जो बुरा हो दास ने कुछ कहा, उसे मूर्ख जान के कर क्षमा।
नहीं शायरी है वह जानता, निरा वह तो एक गंवार है ॥

दादरा ६५५

क्या २ कर दिखलाया ऋषी ने-टेक।

कैसे उत्तम समाज बनाये, वेदों का भाष्य रचाया। ऋ० ॥ १ ॥
जन्म से वर्ण जो हम माने थे, ये अभिमान मिटाया। ऋ० ॥ २ ॥
संस्कार जो उलट पुलट थे, उनको ठीक कराया। ऋ० ॥ ३ ॥
चारों आश्रम जो भूले थे, उनका ध्यान दिलाया। ऋ० ॥ ४ ॥

एक और थे विद्धुं भाई, उनको शुद्ध कराया। ऋ० ॥ ५ ॥
माता बहिनें जहां मूर्खा थीं, उनको पठन बताया। ऋ० ॥६॥
एक ओर खड़े रोते अनाथा उनको छाती लगाया। ऋ० ॥७॥
नन्हें का जो ब्याह करें थे, बुरा था बन्द कराया। ऋ० ॥ ८॥
काशी जा हम कुछ न पढ़े थे, अब गुरुकुल खुलवाया। ऋ०९
पाठक जहँ महा छाई अविद्या, विद्याप्रकाश दिखाया। ऋ०१०

भजन ६५६

दोहा-मुर्दे भारत वर्ष को, महा दया उर लाय।
देखो कैसे भाव सों, ऋषिवर दियो जिलाय ॥

टेक-फेर जिन्दा कियारे, मित्रो इस मुर्दे भारत को।

आज हाज़मा और हिफ़ाज़त, यह दोनों दें दिखलाई।
अभी तो इनसे बचकर निकले मुसलमान इसाई ॥ फेर० ॥
जिन वेदों को कहते थे सब किस्से और कहानी।
आज उन्हीं वेदों की इज़्ज़त सब के मन में मानी ॥ फेर० ॥
जिस आपस के बैर भाव से, मिट गया तख़्त और ताज।
उसके अंकुर तोड़ सर्वथा क़ायम किये समाज ॥ फेर० ॥
सबने सबका छोड़ दिया था, करना पर उपकार।
आज उसी के एवज़ में मित्रो! खुदगर्ज़ी पै छार ॥ फेर० ॥
धन्य २ श्री स्वामीजी को, मुर्दों को बख़्शी जान।
प्राण नहीं थे इस लिये दे गये हमको अपने प्रान ॥ फेर० ॥
उनके पीछे रुकनी ज़िन्दगी, का सबूत यह भाई।

क़दम न पीछे हटे मित्र ! चाहे छुरी पेट में आई ॥ फेर० ॥
ईसा मसीह ने मुर्दे जिलाये, ख्याल है झूठा भाई ।
ऋषि दयानन्द के जिन्दा किये तुम्हें दें प्रत्यक्ष दिखाई ॥फेर०॥
अब कोई नहीं रहा दुश्मन है, देखो आंख उठाई ।
यह तो सफ़रमैना की पलटन करती चले सफ़ाई ॥ फेर० ॥
तेजसिंह किसका ये काम था, सोचो मित्र अख़ीर ।
आठ अरब के मुक़ाबले में अड़ा अकेला बीर ॥ फेर० ॥

भजन ६५७

ख्याल ।

अय मित्रो कुछ सोच समझ कर खुदही ज़रा विचार करो !
झूठी को हर्गिज़ मत मानो सच्ची को स्वीकार करो ॥
सच कहो अपने आपे को क्या अबभी तुम ज़िन्दा जानो ।
लक्षण तो सब मुर्दों के मिलतं फिर ज़िन्दा कैसे मानो ॥
बर खाने पीने व बोलने के ऊपर झगड़ा ठानो ।
खाता पीता और बोलता है अंजन इस को पहचानो ।
क्या अंजनको जीता कहोगे इसका आप इज़हार करो॥अय०॥
इस लिये ज़िन्दे और मुर्दे का फ़र्क़ तुम्हें दिखलाऊंगा ।
ज़िन्दा कौन और मुर्दा कौन है इसका शंका मिटाऊंगा ॥
ज़िन्दे से कैसे मुर्दे हुये यह सब तुमको दर्शाऊंगा ।
मुर्दों से ज़िन्दे बनो यही एक बात छन्द में गाऊंगा ॥
तेजसिंह कहे प्रेम से सुन लो मत कोई तकरार करो ॥अय०॥

टेक-यही पहिचान है रे, ज़िन्दे मुर्दे की मेरे प्यारो ।
अपने अंग से दे न किसी को खा लो हज़म हो जावे ।
जिस्में यह दो बात हों ज़ाहिर, ज़िन्दा वही कहावे ॥ य० ॥
अंग काट कोई लेवे जिसका, हिलती नहीं ज़ुबान ।
नहीं हाज़मे की ताक़त है, तो मुर्दा लो जान ॥ य० ॥
अंग बहुत कट चुका तुम्हारा, ख़याल करिये भाई ।
छः करोड़ हुये यवन तुम्हीं से ! आठ लाख ईसाई ॥ य० ॥
होय किसी को उधर से आना इसी ओर मंजूर ।
तुम नहीं सक्के मिला यही बदहज़मी है भरपूर ॥ य० ॥
इस लिये मत जाने दो उनमें, उधर से इधर मिलाओ ।
तभी आप मुर्दे होने से फिर ज़िन्दे हो जाओ ॥ य० ॥
वर्ना एक दिन ऐसा होगा निश्चय लीजै जान ।
बस हिन्दू के लिखा सूत्र का मिटजाय सर्व निसान ॥ य० ॥
इस लिये वैदिक रीति से, मित्रो, प्रायश्चित्त करवाओ ।
तेजसिंह मौका है आज बिछुड़ों को गले लगालो ॥ य० ॥

क़व्वाली ६५८

देखो तो स्वामी कैसा उपकार कर गया है ।
भारत निवासियों को बेदार कर गया है ॥ १ ॥
बेहोश बेख़बर हम सोये हुये पड़े थे ।
सबको जगा जगा कर हुशियार कर गया है ॥ २ ॥
भारत की दुर्दशा में, कोई कसर नहीं थी ।
करके समाजें कायम शुभ कार कर गया है ॥ ३ ॥

वेदों का नाम तक भी जाने नहीं था कोई।
वह हर जगह पै उनका विस्तार कर गया है ॥ ४ ॥
वेदों का भाष्य करके विद्या व योग बल से।
सबने धरम के ज़ाहिर असरार कर गया है ॥ ५ ॥
प्राचीन देव बाणी, जो हो चुकी थी मुर्दा।
उसको पुनः जिलाकर उद्धार कर गया है ॥ ६ ॥
हिन्दू गुलाम काफ़िर जो होगये थे आरज।
आरज बना उन्हें फिर सरदार कर गया है ॥ ७ ॥
मत और मतान्तरों की दीवार थी क़िलों की।
युक्ती के फावड़े से मिसमार कर गया है ॥ ८ ॥
गुरुकुल का यह तरीक़ा बनवा के आर्यों के।
ब्रह्मचर्य आश्रम का उद्धार कर गया है ॥ ९ ॥
होने न पावे कोई ईसाई और मुसल्मां।
यूं आर्यों की सेना तैयार कर गया है ॥ १० ॥
बेकस यतीम बच्चे लावारसी जो यां हैं।
सब आर्यों को उनका मुख्तार कर गया है ॥ ११ ॥
क्योंकर भला समावें कूज़े में बहरे आज़म।
क्योंकर बयां हों सारे जो कार कर गया है ॥ १२ ॥
माने न माने कोई पर हक़ तो यह है सालिग।
बाग़े धरम को स्वामी गुलज़ार कर गया है ॥ १३ ॥

भजन ६५९

दयानन्द दे गये ज्ञानगुदड़िया।

रच सत्य ग्रंथ कर शास्त्रार्थ पोप पाखण्ड सब जग से हटा गये ॥ दया० ॥ १ ॥ नियम दिये दश जगहितकारी देश देश में समाज बना गये ॥ दया० ॥ २ ॥ सोवत थे सब नींद में वेद नाद कर सब को जगा गये ॥ दया० ॥ ३ ॥ प्रागदत्त धन स्वामी जी को भूले हुओं को सतमार्ग बता गये ॥ दया० ॥ ४ ॥

गजल ६६०

दयानन्द देशहितकारी, तेरी हिम्मत की बलिहारी ॥ टेक ॥
अविद्या जग में छाई थी, नींद की ग़फ़लत आई थी।
तेरा आना था गुणकारी, तेरी हिम्मत० ॥ १ ॥
पतंजाल व्यास हो गुज़रे, भारत के दाग़ धो गुज़रे।
तेरे आने की थी बारी, तेरी हिम्मत० ॥ २ ॥
तू वेदों का प्यारा था, तू भारत का सितारा था।
तेरे दर्शन की बलिहारी, तेरी हिम्मत० ॥ ३ ॥
तेरे जो पास आते थे दिलों संशय मिटाते थे।
सभी भारत के नर नारी, तेरी हिम्मत० ॥ ४ ॥
तेरे तेजस्वी चेहरे से, तेरी ब्रह्मचर्य विद्या से।
डरे थी दुनिया तो सारी, तेरी हिम्मत० ॥ ५ ॥
चलाई ब्रह्म की पूजा, समाजें बन गईं हर जा।
तेरा उपकार है भारी तेरी हिम्मत० ॥ ६ ॥
भारत के भाग खोटे थे, हुआ स्वामी जुदा हम से।
हुआ ग़म सब को है भारी, तेरी हिम्मत० ॥ ७ ॥

दादरा ६६१

लहराती है खेती दयानन्द की।
वैदिक धर्म का बीज नमूदार होगया।
गुरुकुल से बियावान भी गुलज़ार होगया ॥लह०॥
प्रचार करते आर्य्य कर के गदागरी।
करते हैं अहिले क़ौम की यह मुफ़्त चाकरी ॥लह०॥
लुप २ के गुल चुनते ईसाई मुसल्मान।
अब आर्यों की फ़ौज बनी उनकी पासबान ॥लह०॥
जो चीख २ करते थे वेदों की बुराई।
देखो उन्हों ने दाढ़ी मुंडा चोटी रखाई ॥लह०॥
चन्द्र जो गुरुकुल से ब्रह्मचारी आयेंगे।
योरुप में जाकर आर्य्य मन्दिर बनायेंगे ॥लह०॥

गजल ६६२

कहां है वह गुल जो देश भारत को अज़सरेनौ खिला गया है।
खिज़ां का मौसम मिटा के यारो, बहार हरसू खिला गया है॥
ख़ज़ाना अपना जो लुटगया था, जो अपना विसरा हि गुमगया था।
जो अपनी पूंजी भी छिनचुकी थी, हमारी हमको दिला गया है॥
वह वेदविद्या जो गुम गई थी, वह लुटचुकी थी जो मातृभाषा।
वह गढ़गये थे जो वर्ण आश्रम, दोबारा उनको बिठागया है॥
वह बुतपरस्ती की गुदड़ी जिसमें, हज़ारों मत के लगे थे पैवन्द।
उतार कर तन से बदहियत का, वह जामा हमको सिला गया है॥

मिसाल मेंढक कमाल खुश थे, शरीर कीचड़ में सन रहा था।
बदन से आने लगी है खुशबू, इतर से हमको न्हिला गया है॥
जो सम्प्रदायों में मुन्क़सिम थे, था एक का एक जानी दुश्मन।
वह एक रस्ता बता के बिछुड़, हुओं को बाहम मिला गया है॥
कोई था बदमस्त मै को पीकर, कोई था ऐयाश धनको पाकर।
उतर गया सब नशा वह यारो! कि जाने अमृत पिला गया है॥
कमाल से अपनी हलिमियत के, जलाल से अपनी मार्फ़त के।
मुखालिफ़ों के भी दिलको एकदम वह मर्दमैदां हिला गया है॥
दया थी औव्वलमें जब कि उसके, तो पीछे आनन्द क्यों न होता।
दया से आनन्द कर के शर्मा, वह मोक्ष पद में बिला गया है॥

❀ २९ होली बसन्त आदि ❀

भजन ६६३

छवि ऋतुराज कीरे अपनी ओर निहार निहारो।
पल पल अंश घटे रजनी के बढ़े दिवस का मान।
यथा अविद्या सकुचे ज्यों २ त्यों २ विकसे ज्ञान ॥छवि०१॥
द्रुम दल हीन हुये पुनि पाई, हरियाली भर पूर।
देखो यों अवनति को उन्नति कर देती है दूर ॥छवि०२॥
वन २ कुदन छबीले छाये, फोरे रहे करील।
कोई काल मन्द भागी को, करे न सम्पति शील ॥छवि०३॥
सरसों ने कर दिये बसन्ती जौ गेहूं के खेत।

मानों सुमति मिली सम्पति स धर्म सुकर्म समेत ॥छवि०४॥
सुख फुलवुन्द कदम्ब के, कलियानी कचनार ।
ज्यों बैठे धन हीन धनी यों, निर्धन साहूकार ॥छवि०५॥
उलहे गुल्मलता तृण औषधि, अंकुर कोमल काय ।
जैसे न्यायशील राजा की प्रजा बढ़ै सुख पाय ।छवि०६॥
मीठे फल देने को बौरे, मंगल मूल रसाल ।
जैसे सकल सुलक्षण धारे, होनहार कुल पाल ॥छवि०७॥
धीरे २ फूल फबीले, धरैं लक्ष्मी सेव ।
जैसे शुद्ध सत्व गुण धारी, दरसैं देवी देव ।छवि०८॥
फूल फुलवाड़ी में बेंदा, और गुलाब अनूप ।
राज सभा में आय विराजे, मानों अंग भूप ।छवि० ९॥
लाख-फूल फूले सेमर के, काढ़ कोश गँभीर ।
मानों ले प्रवाल के प्याले मदिरा मांगे बीर ॥छवि० १०॥
रस बांटे विकच तड़ाग में, उपकारी अरविन्द ।
दानपाय गुणगान डोलें, चातक बृन्द मलिन्द छवि०११॥
फूले पाय लाल सी, टेसू गन्ध विहीन ।
जैसे सजे रँगीले बाबा, बिन बिवेक तन पीन ॥छवि० १२॥
देखो सत्यानाशी फूली तीखे कंटक धार ।
जैसे साधु वेष कटुवादी वंचक करें विहार ॥छवि० १३॥
फूले फबीले बरसाते हैं बन बीहड़ आराम ।
किंवा शर युवती युवकों, पर छोड़ रहा है काम ॥छ० १४॥
चारों ओर सुगन्ध उड़ावे, शीतल मन्द समीर ।

जैसे सज्जनकी महिमाको, प्रकट करें कविधीर ॥छवि० १५॥
कुंज २ में कोकिल कूजें, बोलें विविध विहंग ।
सामगान के संग बजें ज्यों, वीणा वेणु मृदङ्ग ॥ छवि० १६॥
त्याग विरोध मिले आपसमें सरदी और निदाघ ।
वैर बिसार तपोवन में ज्यों, साथ रहैं मृगबाघ ॥ छवि० १७॥
दूर न देखे ऋतुनायक से, रतिपति और अनंग ।
जैसे माया जीव ब्रह्म को छूटे न आजन्म संग ॥ छवि०१८॥
मूढ़ दुराचारी बसन्त का करते हैं अपमान ।
ज्यों रसभाव भरी कविताका भद्दे करें बखान ॥छवि० १९॥
सब दशों में भर देता है, मधु उमंग रसरंग ।
शंकर भूखे भारत को भी, चढ़ जाती है भंग ॥ छवि०२० ॥

गजल ६६४

होली में खाक धूल उड़ाओगे कबतलक ।
इज्जत की अपनी दाग लगाओगे कबतलक ॥
औरत का भेष मर्द को करना भी पाप है ।
लौंडों को स्वांग भर के नचाओगे कबतलक ॥
पी करके भंग दूषित बोतल शराब की ।
ऋषियों का ... नाम डुबाओगे कब... ॥
जूतों ... हार डाल गधे ... सवार हो ।
मुख काला करके ... ओगे कबतलक ॥
चंडाल चौकड़ीं ... नंगा करके रांडियां ।

धन माल अपना मुफ्त लुटाओगे कबतलक ॥
ढोलक गले में डाल के फिरते हो कूबकू ।
इस तौर फॉहशराग सुनाओगे कबतलक ॥
छप्पर पलंग वगैरा की कर करके चोरियां ।
शर्मा हवन को त्याग जलाओगे कबतलक ॥

होली ६६५

स्वामी दयानन्द भाई, हमें अच्छी होली बताई ।
चन्दन धूप कपूर सुगन्धित, सकल आर्यगण लाई ।
कुण्ड खोद मण्डप सजधाकर, सुन्दर चौक पुराई ।
होम ठानी सुखदाई ॥ स्वामी० १ ॥

वेद के मन्त्र पढ़ कर स्वाहा, केसर माथे लगाई ।
होता गण घृत आहुति देवे, धूप सुगन्धित छाई ।
चहुँदिशि पूरहि जाई ॥ स्वामी० २ ॥

शुद्ध होय जल यही धूम से, जो बरसे क्षिति आई ।
ताहि पान कर होत निरोगी, जीव जगत समुदाई ।
सुफल जीवन को मनाई ॥ स्वामी० ३ ॥

कूड़ा करकट छप्पर लागी, नहीं डारो तुम लाई ।
रस से बदबू जगत में फैल, वायु देत नशाई ।
महारोगन फैलाई ॥ स्वामी० ४ ॥

पूर्व काल में मुनियों ने, इस को होम बताई ।
इनको नित कर मोद मनाये, इतिहासन बहु गाई ।
चाहे पढ़ देखो भाई ॥ स्वामी० ५ ॥

अयोध्याप्रसाद विनये करते, सुनियो ध्यान लगाई ।
प्रचलित वाम मार्ग कृत होली शीघ्र ही देहु बहाई ॥
सभी उलटी दिखलाई ॥ स्वामी० ६ ॥

होली ६६६

आर्यों ने ऐसी होली मचाई ॥

चहुँ दिशि से सज्जन सब आये, बैठे समाज बनाई ।
गावत वेद तान अति नीकी, ध्यावत यश जगराई ।
अगम गति जाकी है भाई ॥ आर्यों० १ ॥

खेलत फाग सुलभ शुचि संयम, सत पिचकारी बनाई ।
प्रेम का रंग है भरि २ मारत, ज्ञान गुलाल सुहाई ।
रँगे सब सज्जन भाई, ॥ आर्यों० २ ॥

जप तप दान गान वेदन को, हिय उत्साह बढ़ाई ।
मिलत परस्पर प्रेम से सज्जन, द्रोह कपट बिसराई ।
करत हैं जगत भलाई ॥ आर्यों० ३ ॥

विधवा अनाथ बिपति गौवों की, तापर दृष्टि चलाई ।
करत प्रबन्ध अहर्निश विधिसों, तन मन धनसे सदाई ।
दुःख निज पर आधकाई ॥ आर्यों० ४ ॥

सत्य प्रचार सुधार जगत को, ऐसो फाग सुखदाई ।
खेलहु खेलहु परहित कारक, देहु अविद्या नशाई ।
गयशी बलि २ जाई ॥ आर्यों० ५ ॥

होली ६६७

होली खेलहु समझ के रे भाई, वृथा क्यों धूरि उड़ाई।
पर सन्ताप ताप अरु तामस, देह होलिका लगाई।
चाहि जलाय भस्म कर दीजै, शुद्ध चित्त है जाई।
करो कुछ देश भलाई ॥ होली० १ ॥

काम क्रोध मद लोभ मोह जे, करत सदा कुटिलाई।
कारो मुख कर इनहिं निकालो, फेलो स्वांग सुखदाई।
शोभा छण २ अधिकाई ॥ होली० २ ॥

धीर क्षमा ममता आराधन, अगम ईश श्रुति गाई।
ताके ध्यान में मतवाले हुये, तन की सुधि बिसराई।
मद्य पेलो फलदाई ॥ होली० ३ ॥

ज्ञान ध्यान सनमान सुजन को रंग सुरंग बनाई।
प्रेम प्रतीति प्रीति पिचकारी मारो जिया हुलसाई।
धूम चहुँ दिशि में छाई ॥ होली० ४ ॥

हे जगदीश अनादि अनूपम, निराधार जगराई।
होय कृपा अब तेरी गणेशी, भारत विपति नशाई।
फाग तब होय सदाई ॥ होली० ५ ॥

होली ६६८

जागो २ भाई विपति चहुँ दिशि घिर आई।

सोवत भारत दीन दशा में, तन की सुधि बिसराई।
भारत भानु ने आनि जगायो, उठ; आर्यगण आई।
अविद्या जगत में छाई ॥ जागो० १ ॥

चौंक पड़े सब इत उत देखत, कपट जाल बहुताई।
विनय करत कर जोड़ २ पुनि, शरण शरण जगराई।
करो अब आनि सहाई ॥ जागो० २ ॥

देशहितैषी धीरज दीन्हो, वेदभाष्य दिखलाई।
अब मिलि साज समाज को कीजो, पढ़ो वेद हरसाई।
दशा बिगड़ी बनि जाई ॥ जागो० ३ ॥

पुनि उपदेश सत्य को कीन्हो, सन्ध्यादिक बतलाई।
नियम दिये दश जग उपकारी, जासे देश भलाई।
कुमति अब धोय बहाई ॥ जागो० ४ ॥

देश विनाशक निजहित साधक, बहुतक गाल फुलाई।
अष्टादश पुराण लै दौड़े, ऋषि ने धोय बहाई।
छिपे सब इत उत जाई ॥ जागो० ५ ॥

कर देशाटन देश देश में, विजय डाइंकीन्ह सब।
मतवादी जे धर्मविदूषक, पोल खोल दिखलाई।
जगत जिन लूट के खाई ॥ जागो० ६ ॥

कर सुधार संसार भरे को, चलि दिये डंका बजाई।
शोक अधिक भारत पै गणेशी, को इमें सत्य सिखाई।
बिना पेले ऋषिराई ॥ जागो० ७ ॥

होली ६६९

होली खेलत आर्य भाई ॥
सत्य को रंग धर्म पिचकारी, उन्नति अँबिर बनाई ।
खेलत हिल मिल वेदप्रचारक, धर्म ध्वजा फहराई ।
तिमिर सब जात नशाई ॥ होली० १ ॥
वेद मन्त्र से हवन करत हैं, सुगंधि रही जग छाई ।
करि ललाट लेपन केसर का शोभा बरणि न जाई ।
जय ध्वनि बजत बधाई ॥ होली० २ ॥
अतुल प्रीति सब आर्य भ्रात की मिलत हिया लपटाई ।
कोटि २ धन्यवाद है तुमको, जो यह खगाई वृच्छ
जगत को है फलदाई ॥ होली० ३ ॥
खेलत फाग राग वेद ध्वनि, कहत गणेशी बुझाई ।
पुलकि गात हरषात आर्य मिलि, ऐसा फाग सुखदाई ।
रचो यह फाग सदाई ॥ होली० ४ ॥

भजन ६७०

ऐसी होरी का छोड़ो रचाना ॥ टेक ॥
लकड़ी व कण्डे खाली ढेर लगाओ, किसी का चर्खा,
किसी का पीढा, किसी का चौखट किवाड़ तख्ता-हा !
मुँह काला कर गधे चढ़ाना, जूते चुराना,
हार बनाना, गले डालकर खुशी मनाना-हा !
मद पीके बकना, बेशर्म होना, धूल उड़ाना,

जूता चलाना, हारी का भड़वा बतलाना-हा !
अच्छे बुरे की पहचान छोड़ी, रंडी नचाना,
स्वांग कराना, बुरे काम में धन को लगाना-हा !
पाठक कहे देखो होरी हमारी, यज्ञ रचावें,
सब को बुलावें, मनुष्य मात्र को सुख पहुंचावें-हा !

होली ६७१

अब तक होली सो होली, समुझ अब खेलिये होली ।
आयो बसंत सुखद यह सजनी, देखो नैन ज़रा खोली ।
सुखद सुहाग फाग होय तबही, भरो सुमति हिय झोली ॥
मलो हाथ से रस रोली ॥ अब तक० १ ॥

बशीकरण यही मन्त्र जगत में, सीखो सरल मृदु बोली ।
मलि गुलाल सदाचार सुरंग शुचि प्रेम प्रीति रंगघोली ॥
रंगो पिय को हिय खोली ॥ अब तक० २ ॥

सावित्री द्रौपदी दमयन्ती, खेल गईं जैसी होली ।
सीता ने खेली राम रघुवर से, बड़ २ विपति बिलोली ॥
धर्म से तनक न डोली ॥ अब तक० ३ ॥

हो बासुदेव बसन्त मुबारक, पाई जो पचरंग चोली ।
सो मत पाप पंक में सारो, मानो यह सिखवन मोली ॥
बनो वनिता मत भोली ॥ अब तक० ॥

❁ ३० अभक्ष्यपदार्थ निषेध ❁

दादरा ६७२

भारतवासी तुम कैसे उठोगे।

बजरी की खांड ने भारत विनाश किया, प्लेग फैलाया हैज़ा आया। लाखों का गुल दिया कराया ॥हा! भारत० १॥

लावनी।

गेहूँ मक्का ज्वार चुकन्दर शलजम गाजर ताड़ खजूर।
मेपिल साबूदाना आलू नारजील छुहारा मशहूर॥
तारकोल अरु दूध वगैरह से ये चीनी हो तैयार।
पर गन्ने की शकर के सन्मुख इसका कुछ भी नहीं शुमार॥
हड्डी लोहू आदि * सफ़ाई के हित इसमें पड़ते हैं।
यही सबब है बने पदारथ इस के शीघ्रही सड़ते हैं॥
है कितना अन्धेर जो अब भी शुगर बन्द नहीं करते हैं॥
जब कि इस से लाखों प्रानी रोज़ प्लेग में मरते हैं॥
मिट्टी के तेल ने उमरें घटाई, अन्धा कीना, चुन्धा कीना।
दिमाग का हा! बल हरलीना॥ हा! भारत०॥

भारत में हा! काल की जड़ जमी है। पीते डट डट, बत्ती सिगरट, बचे खुचे को करते चौपट॥ हा! भारत० ३॥

* डाक्टर यू. का की डिक्शनरी पेज १२०५ में लिखा है कि १ टन खांड में टन राख-हड्डी पड़ती है।

पाठक ये कब का जगाता है तुमको। पीओ खाओ, काम में लाओ, जीवमात्र का हित सब चाहो॥ हा! भारत० ४॥

भजन ६७३

करो देशी का मान, खांड़ विदेशी त्यागो॥
यह देखत में भड़कीली, उज्वल सफ़ेद चमकीली॥
धर्म की करती हान॥ खांड़०॥
रोगों को उपजाती है, बल बीरज को घटाती है।
डाक्टर करें बयान॥ खांड़०॥
हड्डी और रक्त जब डारें, तब गुड़ का मैल उतारें।
यह अखबारों मे बयान॥ खांड़०॥
खाने से बुद्धि नस जावे, जग में जो प्रकट दिखावे।
फूड है याको प्रमान॥ खांड़०॥
जो है सवाद देशी में वह नहीं है परदेशी में।
देखलो जग में छान॥ खांड़०॥
सज्जनत तजते जाते हैं, जब दुर्गुण सुन पाते हैं।
सभी नर करें ग्लान॥ खांड़०॥
अब तक खाई सोखाई, अब खाओ राम दुहाई।
शब्द सुनलो धर ध्यान॥ खांड़०॥
देशी का प्रचार कराओ, परदेशी वस्तु घटाओ।
तभी होगा कल्यान॥ खांड़०॥
शंकर कहे सभा मँझारी, सुनरहे सभी नर नारी।
वृद्ध बालक और जवान॥ खांड़०॥

भजन ६७४

ख्याल।

अरे मित्र तुम बुरा न मानो, तुमने कहा विचारा है।
कितने दिन से तुमने अपना, हिन्दू धर्म बिसारा है।
पशुओं की हड्डी का कोयला, गऊ रक्त की धारा है।
पड़े विदेशी खांड़ में रहगया, फिर कहां धर्म तुम्हारा है॥

टेक–क्यों नहीं करते मित्र विचार, विदेशी खांड़ के खाने वालो॥

इसमें झूंठी न जानो यार, देखो पढ़ सारे अखबार।
पड़ती गऊ रक्त की धार, जिसको नित्य जबांपर डालो॥क्यों०॥
तुम हुये पेट के ताबेदार, दीन्हा अपना धर्म बिसार।
और बने गौवों के खूंख्वार, ऋषि सन्तान कहानेवाले।क्यों०॥

तुम हो उनके राजदुलार, एवज़ धर्म के सर दियादर।
अब तुम उनके हो अवतार, दोरोटी पै धर्म बिकालो॥क्यों०॥

कहते लेऊसिंह यही सार, मत अब इसे करो स्वीकार।
सबमाहीकूंछ शहरबज़ार, मिलकर एकदम कसमउठालो॥क्यों०।

भजन ६७५

शेर—अय साहिबान वक्त ये है ग़ौर का मुकाम।
हिन्दोस्तान से दोनों धरम मिट गया तमाम॥
मीठा न बात होगी मेरी तलख है कलाम।
और सच्ची बात कड़वी हुआ करती है मुदाम॥

पर दिल्लगी यह है कि शक्कर का बयान है।
कडुवा न मैं बनूं यही फिर भी गुमान है॥
जब हड्डियों की खाक बिके यों तमाम तर।
और खाय ऐसे देते न शर्मायें सस्मा भर॥
मंदिर में मसजिदों में पड़ रायजहां सरबसर।
फिर क्यों रहेगा क़ाइम बोलो न अपना घर॥

सब जानते फ़रेब नहीं बात साफ है।
हठ धर्मियों को इस से मगर अनइराफ़ है॥

टेक–देशी शक्कर बिचारी, फिरती दर दर है मारी।
कैसी ख़्वारी है इसकी, ये राम राम राम॥

रक्त हड्डी मिलाई, तुम्हें देते खिलाई, मेरे भाई
न लो अब नाम नाम नाम॥ देशी०॥

खता कीजे मुआफ, होवें गुस्सा न आप जिसले करते हैं साफ
वही कहता हूँ बात। ज़रा सुनिये जनाब, इस में पड़ता पेशाब,
मरे मुर्दों का मांस। और चाम चाम चाम। देशी०॥

खून बैल का हड्डी सुअर की। हिन्दू मुसलमान को जो है
हराम। पड़ती इस में मुदाम। करत ऐसा कुकर्म, तुम्हें आवे न
शर्म, मोल लेते अधर्म, देक दाम दाम दाम॥ देशी०॥

अब तो कीजे किनारा कहा मानो हमारा, नहीं होगा
तुम्हारा बड़ा नुकसान। खेती ऊंखों की सारी, बन्द होगी
तुम्हारी, देश होगा भिखारी, तज काम काम काम॥ देशी०।

अब तो ऐसी खोराक, पर डालो तुम खाक, जो है ऐसी नापाक, अजी छी छी छी। मित्र कहता पुकार, मतछूना जिन्हार देशी शक्कर प्रचार करो धाम २ ॥ देशी० ॥

❀ ३१ धन्यवाद ❀

भजन ६७६

धन्य वीर वर एतद्देशी, मिलकर दशा सुधार रहे हैं। टेक
सामाजिक बल बढ़ा रहे हैं, सन्तानों को पढ़ा रहे हैं।
वृद्धोपासना में नित देकर, सबका भला विचार रहे हैं ॥
धन्य वीर वर एतद्देशी० ॥ १ ॥
कला कुशलता दिखा रहे हैं, नीति-निपुणता लिखा रहे हैं।
मानो मातृ-भूमि के ऊपर, अपना सर्वसु वार रहे हैं ॥
धन्य वीर वर एतद्देशी० ॥ २ ॥
"कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस करै सो तस फल चाखा"
रामायण में इसको पढ़कर, अघ समूह को जार रहे हैं ॥
धन्य वीर वर एतद्देशी० ॥ ३ ॥
"जासु प्राण प्रिय प्रजा दुखारी, सो नृप अवशि नर्क अधिकारी"
यों कह कर कवि कर्ण सुवक्ता, शिर का भार उतार रहे हैं ॥
धन्य वीर वर एतद्देशी० ॥ ४ ॥

भजन ६७७

अनुग्रह करो सभी नर नार, कल को आर्य भवन में आकर।

आये बड़े २ विद्वान, जिनका यश विख्यात महान।
उनके होवेंगे व्याख्यान, कैसे कहते हैं समझाकर ॥
सुन २ वेदों के उपदेश, तुम्हरे दूर होवैं सब कलेश।
यही था स्वामी का उपदेश, जो थे वैदिक धर्म दिवकर ॥
मेरी विनय करो मंजूर, कल को आइयो मित्र ज़रूर।
करदो पक्षपात को दूर, मिलजाओ हाथ से हाथ मिलाकर
जो इस अवसर पर नहीं आवे, निश्चय भाग्य हीन कहलावे
पीछे कर मल २ पछतावे, कहता वासदेव समझाकर ॥

भजन ६७८

सब मिल गाओ मंगलाचार, इस उत्सव में आने वाले।
धन धन ईश्वर सर्वाधार, तुम हो सुखों के भण्डार।
तेरी महिमा बड़ी अपार, सबको सुगति दिलाने वाले ॥स०॥
जिनके जन्मा है सुकुमार, वैदिक रीति से हो संस्कार।
कराया वैदिक धर्म प्रचार, धर्म की धूम मचाने वाले ॥स०॥
आये भाइ बन्धु मेहमान, पण्डित उपदेशक विद्वान।
करती भजन मण्डली गान, प्रिय उपदेश सुनाने वाले ॥स०॥
गाओ ईश्वर का धन्यवाद, सुन के मुद्दत की फ़र्याद।
उस ने पूरी करी मुराद, प्रभु हैं दुःख मिटाने वाले ॥स०॥
कृपा कीजै दीनदयाल, होवे चिरंजीव यह लाल।
रक्खे सदा धर्म का ख्याल, वर वेदों की आज्ञा पाले ॥स०॥

होवे तेजस्वी तपधारी, ईश्वर करे बन उपकारी।
गुरुकुल पढ़े रहे ब्रह्मचारी उत्तम शिक्षा पाने वाले ॥स०॥
रक्खो वासुदेव बिश्वास, पूरी करें प्रभू ने आस।
बुझगई पुत्र दर्श की प्यास, अबतो खुलकर दान दिलाले ॥स०

भजन ६७९

यह उत्सव तुमको सालाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो।
महा सुजनों का बुलवाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
हुई ध्रुव धर्म की रक्षा तुम्हारे सत्य कथनों से।
फिसल कर पांव जमजाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
हज़ारों को थे बहकाते मुसल्मां और ईसाई।
उन्हीं को पीछा दिखलाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
छुड़ा कर बाल विधवों का जो रोती या सिसकी थीं।
बधिक से गौ का छुड़वाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
जो सन्तानों का रोका है लड़कपन में विवाह करना।
विद्या बल बुद्धि बढ़ जाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
अनाथों को जो देते हो अनाथालय के चन्दे में।
पढ़ाना खाना खिलवाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
खुला गुरुकुल जो है प्यारे है फल तुमरे परिश्रम का।
पुनः विद्या का फैलाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
जो मालिक चन्दा में देते कमाई चौथे हिस्से की।
उन्हीं को आर्य कहलाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥

कमर कस वेग जुटजाओ दिखाओ अपने कर्तव को।
महा विद्यालय खुलवाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
बहादुर देश देशों में जिसे आर्यावर्त कहते हैं।
वो हिम्मत तुमको मर्दाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
प्रथम हुआ होम मन्त्रों से हुई फिर धर्म की चर्चा।
पुनः ईश्वर का गुण गाना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥
अमीचन्द वृष्टि अमृत की हुई है आज उत्सव में।
खुशी के फूल बर्साना सदा शुभ हो सदा शुभ हो॥

भजन ६८०

देखो आर्य समाज, क्या २ कीन्हा है काज, सजे उत्तम है साज कहो ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ १ ॥

कन्याशाला कहीं जारी, कहीं गुरुकुल है भारी, कहीं कालिज की त्यारी। कहो ओ३म् ३ ॥ २ ॥ सुत के दानों की टेर, कीन्हीं इस ने ना देर, खोला दीनालय अजमेर, कहो ओ३म् ३ ॥३॥ संध्या करना बताया, वाले वैश्य भी सिखलाया पंचयज्ञों में लगाया, कहो ओ३म् ॥ ४ ॥ श्री स्वामी दयानन्द काटे दुःखों के फन्द, दीन्हा सबको आनन्द, कहो ओ३म् ३॥५ धन लाला मुंशीराम, दीन्हा अपना धन धाम, कीन्हा आर्यों का सत काम, कहो ओ३म् ३ ॥ ६ ॥ तन मन दीजै लगाय, कीजै इसकी सहाय, जासों कार्य बन जाय, कहो ओ३म् ३॥७ बैर भाव दीजै छोड़, सत्य धर्म लीजै ओढ़, कहै तुलसी कर जोड़, कहो ओ३म् ओ३म् ओ३म् ॥ देखो० ८ ॥

भजन ६८१

जलसा सबको मुबारिक सालाना आहा समा है कैसा बना जलसा सबको मुबारिक सालाना।

सुन्दर सुहाना वेदों का गाना, हर नर को होवे सफल यहां आर्य भ्रातृगण का आना ॥ ज० १ ॥

स्वामी दयानन्द जी ने दयाकर, हरी गुणका, विद्या धन का, आन खोला भारत में ख़ज़ाना ॥ ज० २ ॥

ऐसे ऋषी का धन्यवाद गावें, जिसने दिया हमको जगा, वरना ग़फ़लत में था सब ज़माना ॥ ज० ३ ॥

धन्य प्रधान और मन्त्री सभासद, हिलमिल के, सच्चे दिल से, जलसे का उत्साह बढ़ाना ॥ ज० ४ ॥

धन्य २ पंडित उपदेशक, सबका किया भ्रम मिटा, दे दे करके उत्तम व्याख्याना ॥ ज० ५ ॥

धन्य २ सारे दर्शक जन, कष्ट उठा, आये यहां, यहां सत्य झूठ को छाना ॥ ज० ६ ॥

भजन ६८२

प्यारे प्यारे सजन मिल गावो प्रभू के धन्यवाद।
अजी धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद, हो।
कैसी कैसी यह उत्तम मानुष की देह दीना ॥
प्यारे मानुष की देह दीनी, दया अपार कीनी ॥ गावो० ॥

कैसे २ समय में जन्म हमें है दीना। प्यारे जन्म हमें दीना। न्यायकारी का राज कीना ॥ गावो० ॥

ऐसे २ अवसर पर दयानन्द स्वामी आये। प्यारे दयानन्द स्वामी आये। वेदों के हामी आये ॥ गावो० ॥

बहु कष्ट उठाकर धर्म प्रचार है कीना। प्यारे धर्म प्रचार है कीना। जगत उपकार कीना ॥ गावो० ॥

सत्य धर्म न छोड़ा विष गर्चे है खाया। प्यारे विष खाया प्राण दीने। लाखों का उद्धार कीना ॥ गावो० ॥

कैसे २ यह उत्तम आर्यसमाज बनाये। प्यारे आर्यसमाज बनाये। धर्म के जहाज़ बनाये ॥ गावो० ॥

अब नगर नगर और ग्राम ग्राम में जावो प्यारे जावो प्रचार करो, जगत उपकार करो ॥ गावो० ॥

सारे २ सुजन तव सुखी बसो आनन्दित। प्यारे सुखी रहो आबाद रहो। तुम वेदों का प्रचार करो ॥ गावो० ॥

भजन ६८३

श्रीपञ्चम जार्ज नरेश, रक्षा हम सब की करते हैं।
श्रीबल बोध अखंड प्रताप, साहज धर्म सुकर्म कलाप।
ऐसे सद्गुण धारी आप, मन में भूल नहीं करते हैं। श्रीपं०१॥
अपने पितुवर के अनुसार, पूरा करें प्रजा पर प्यार।
किसके ऊपर परम उदार, हित का हाथ नहीं धरते हैं। श्रीपं०२॥
भिक्षुक भीरु वीर भूपाल, पंडित, मूढ़, धनी, कंगाल।
हिलमिल काटें सुख से काल, पापी मार खाय मरते हैं। श्रीपं०३॥

चारों राजनीति के अंग, चलते रहैं न्याय के संग ।
"शंकर" शासन के रस रंग, डाकू देख २ डरते हैं । धर्म०पं० ४॥

❁ ३२ आर्ती तथा शान्ति पाठ ❁

भजन ६८४

शरण प्रभु की आवोरे, शुभ समय मिला है ॥
भ्रातृभाव से मिलो परस्पर, मत विरोध फैलावोरे ॥ शुभ० ॥
ईर्षा द्वेष कपट को त्यागो सबका भला मनावोरे ॥ शुभ० ॥
काम क्रोध झूठ को त्यागो, राम से चित्त लगावोरे ॥ शुभ० ॥
अवसर हुआ है ओ३म् का भाई आवो दर्शन पावोरे ॥ शुभ० ॥
पान करो इस अमृत रसको, उत्तम पदवी पावोरे ॥ शुभ० ॥
हरि की भक्ति बिना नहिं मुक्ती दृढ़ विश्वास जमावोरे ॥ शुभ० ॥
मानुष जन्म अमूल्य पायकर, वृथा न इसे गँवावोरे ॥ शुभ० ॥
करलो भजन हरी का सुमिरण, अन्तको नहिं पछतावोरे ॥ शुभ० ॥
धन्य दयानन्द जी सबको पाले मत उनको बिसरावोरे ॥ शुभ० ॥
छोटे बड़े सब मिलकर के खुशी से प्रेमभाव दर्शावोरे ॥ शुभ० ॥

आरती ६८५

जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट, क्षण में दूर करे ॥ १ ॥
जो ध्यावे फलपावे, दुख विनशे मनका ।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका ॥ २ ॥

संख्या	टेक	भजन
६०५	मत पढ़ो पुरान झूठी।	
६१८	मुर्दों का सराद लिखा।	
६२२	मानो प्यारे पोपों हमारी	
६२७	मर्दों का काम धर्म में।	
६२८	मरते २ मर गये लेकिन।	
६४६	मचा दई धूम दुनिया।	
	य	
१८८	यह काया की रेल।	
२१३	यह दुनियां चन्दरोजा।	
२१७	यह है असार संसार।	
२६८	यह धर्म हमारा प्यारा।	
३३०	यह वही आर्य सन्तान।	
३४५	यही दस दोष बतावे।	
४१४	यदि चाहो कल्याण।	
४७४	यह वीर्य्य रत्न अनमोल।	
५४१	यही ख्वारी की जड़ है।	
५४७	यह सुलफे बाजी छो।	
६१५	यह शंका भूत कीरे मि।	
६४३	यह किसे खबर थी।	
६४४	यह किसे विदित था।	
६५०	यही पहिचान हेरे।	
६५६	यह उत्सव तुमको।	

संख्या	टेक	भजन
	र	
३५	रचने का वेद निराकार।	
७८	राखो २ प्रभु जन की।	
८५	रहा मैं डूब भवनिधि।	
१६०	रहना धर्म के आधार।	
२८६	रहेगी सुखपर यह आ।	
३१२	रंज क्या २ न सहे धर्म।	
३२४	रोवे भारत जननी तु।	
४०६	रोरो कर अनाथ पुकार।	
४१८	रोरो के कहती हैं गौवें।	
६२०	रहना हुशियार पोपों।	
६३१	रोहिताश लाश गोदी में।	
	ल	
३७५	लगा के ईश्वर से ध्यान।	
४४४	लो पतिव्रत धार है।	
४८२	लानत है रंडीबाज़ी।	
६६१	लहराती है खेती दया।	
	व	
३३	वह प्रत्यक्षादि प्रमाण।	
३४	वेद फिर कैसे बनाये।	
१५८	वे नर पशु समान।	

संख्या	टेक भजन
२३६	वेदों की आज्ञा अब॰
२५३	विद्या पढ़ाओ जहांतक॰
३१४	वेदों का पढ़ना छोड़
३१८	वेद पढ़न क्यों छोड़॰
३४२	वेदोक्त विवाह किये से॰
३६५	वह पुरुष महा चंड़ा॰
४०८	विद्या का हम सभों॰
४१२	वाक़ई निसवां का॰
४६३	विचार करोरी प्यारी॰
४६७	वैदिक धर्म का बोध॰
४७८	व्यभिचारी नर अज्ञान॰
४८६	वेश्या तो दुख की मू॰
५५१	वेदों की रक्षा का बंधन॰
५५६	वैदिक धर्म का बोध॰
५६५	वेद सनातन त्यागे॰
५६३	वेदों में देव तैंतिस॰

श

संख्या	टेक भजन
४१	शरण हम प्रभु तेरी॰
४४	शरण अपनी में रख॰
८५	शरण में तेरी आया॰
१०७	शरणागतपाल कृपाल॰
२०१	शिर पै है मौत सवार॰
३४१	शुभ रचो स्वयंवर॰
६०४	श्याम ने माखन नहीं॰
६४२	शुक्र स्वामी दयानन्द॰
६८३	श्री पंचम जार्ज नरेश॰
६८४	शरण प्रभु की आओरे॰

स

संख्या	टेक भजन
२१	सब से उत्तम ओ३म्॰
३०	सब लक्षण कहां स॰
४०	स्वामिन दयालुता से॰
४८	सुनो जगदीश विनती॰
६६	सत्ता तुम्हारी बुद्धा॰
६०	सर्व नियन्ता स्वामीजन॰
११२	स्वामी लीजिगा अब तो॰
१२५	संग धर्म ही चलने॰
१३०	सब कहो महाशय॰
१३२	सब ही बन जायें सो॰
१३७	सुमिरन विन गोते खा॰
१४४	सुमिर हरदम तू भग॰
१५०	सब मिल के हरिगुण॰
१५६	साक्षात् धर्म के चार॰
१८६	स्टेशन जिस्म है तेरा॰
१६५	सीधे मारग पर॰
२११	सब स्वारथ का खेला॰
२३२	सुनो अय मित्रवर एक॰
२०४	सब देशों में मशहूर॰
३४८	सुन सज्जन हुये आनंद॰
३८०	सरताज मेरे वाली॰
३८३	सदमों की चोट सीने॰
३६६	सात सखी मिल रुदन॰
४२०	सुख नहीं मिलता यार॰
४२२	सुघड़ नार का सुनो ह॰
४३२	सीता की ओर निहार॰
४३४	सखी सोई सुन्दरी॰
४३५	सखी में धन्य सुहा॰
४३७	सोचना बहनो कि प॰
४५६	सुनोरी बहना बहना॰
४७५	सुख मूल ब्रह्मचारी आ॰
४८६	सारी इज्जत मिल गई॰
४६१	सुनियो ज़रा गौर से॰
४६२	सुकृत नहीं निपट आ॰
४६८	सैयां न ऐसी नचावो॰
५११	सुनिये साहिब जरी॰
५६७	सनातन धर्म और आर्य॰
५७६	साधो को जग को स॰
५७७	साधो मोहि कोई स॰
६११	सुनो जन्म पत्री की ली॰
६२६	सीस जिनके धरम पर॰
६६५	स्वामी दयानन्द भाई॰
६७८	सब मिल गाओ मंगल॰
६८७	सकल सत्य विद्या वि॰

ह

संख्या	टेक भजन
२	हे सकल उत्पादके॰
८	हे अपरम्पार प्रभु॰
४५	हे न्यायकारी हे निर्वि॰
४६	हमारी एक बिनय तुम॰
५५	हुई है हालत बुरी ह॰
५६	हुये हैं अपराध हम॰
८१	हमें आशा पिता है॰
८२	है विनती तुम से हमा॰
१०६	हे दीनबन्धु जगदीश॰
१४२	हम तालिब हैं उसनूर॰
१४३	है जिसने सारे विश्व॰
१५७	है धर्म चीज़ वह प्या॰
१७४	हिन्दूपन से धोय हाथ॰

संख्या	टेक भजन	संख्या	टेक भजन
१६६	हुआ लोभी संसार का०	४६५	हैं रंडी मांसाहारी०
२१५	है थोड़ेदिन जग रह०	५१४	हाहा गंवावे प्यारे स०
२४१	हमतो वेदों की शिक्षा०	५३०	हिंसा देहु विसार नाश०
२४४	हमतो घर वेद प्रचार०	५३२	हत्यारे आठ कसाई०
२४५	हम तो वेदों के बाजे०	५४६	हुक्के से ध्यान लगा०
२६०	है जाना देश देशांतर०	५५३	है अग्निहोत्र सुखदाई०
३०१	हितैषी बनो सभी प्यारे०	४६९	हमसे धरम का बाज़ हु०
३२१	हा देश तेरी हालत पै०	५७०	हरएक ने फ़िक्र बना०
३४०	है वेकस अबतो यह०	५८२	हमने नज़रों से तुलों०
३४७	हुआ वैदिक विवाह०	५८७	हँसी अपने बुजुर्गों की०
३६३	हा क्यों कराओ बाल०	५८६	हमतो सोते भारत० को०
३६७	हुये कैसे मा बाप०	५६७	हुआ साबित साफ़०
३६८	हो लिखी कहीं दिखला०	६२६	हम मित्र दृष्टि से देखें०
४०६	हम से शौहर की जु०	६३०	हुये यह कैसे उपकारी०
४४५	हाय कैसा यह काम०	६४८	होना दुशवार दयानन्द०
४७६	होश में आकर हुसन०	६५३	हुये उदय भाग भारत०
४८५	होता बर्बाद घररंडी०	६६४	होली में खाक धूल०
४८८	हुया और शर्म तज०	६६७	होली खेलो समझ के०
		६६९	होली खेलत आर्य०

॥ इत ॥

ओ३म्

संगीत-रत्न-प्रकाश पूर्वार्द्ध

॥ पांचों भाग ॥

❀ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना ❀

दादरा १

टेक—अब मैं हूँ प्रभु शरण तिहारे।

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति ।
स्वर्यस्यचकेवलं तस्मै ज्येष्ठायब्रह्मणेनमः ॥

यह तीन काल के व्यवहारों का है तू ज्ञाता।
तूही है सर्व पदारथ का करता औ हरता॥
तू सुखस्वरूप न दुख लेशमात्र भी सहता।
तुझ ही को मेरा नमस्कार प्रेम से होता॥
तू दीनबन्धु है दीनों की नित पुकार सुनेरे। अब० १॥

यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम् ।
दिवंयश्चक्रे मूर्द्धानं तस्मैज्येष्ठायब्रह्मणेनमः ॥

तू सर्व लोक और लोकान्तर को रचता है।
और उनके अवयवों में व्यापक हो, पूर्ण रहता है॥
तेरीहि बुद्धि का इन से प्रचार होता है।
तुझी को मेरा नमस्कार नित्य होता है॥
तू करुणासिन्धु है अधमन का भी उद्धार करेरे। अ० २॥

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः।
अग्निंयश्चक्रे आस्यं १ तस्मै ज्येष्ठायब्रह्मणेनमः॥

यह सूर्य चन्द्र दिये हम को नेत्र हैं तुमने।
जिन्हें यह सृष्टि के आदि में रवि दिया तुमने॥
यह सुखस्वरूप अग्नि को प्रकट किया तुमने।
सदा तुम्हीं को नमस्कार भी किया हमने॥
तू सर्व स्वामी है, सब काढ़ि बेड़ा पार करेरे। अ० ३॥

यस्य वातःप्राणापानौ चक्षुरंगिरसोऽभवन्।
दिशोयश्चक्रेप्रज्ञानीतस्मैज्येष्ठायब्रह्मणेनमः॥

तुम्हीं ने कर दिया वायु को प्राण और अपान।
तुम्हीं से सब किरणें होती हैं सदा निर्मान॥
तुम्हीं से होता है इन दश दिशाओं का भी निधान।
तुम्हीं को मेरा नमस्कार होवे अब निर्वान॥
किशोर भी तेरा निज नाम ओंकार भजेरे॥ अब० ४॥

भजन २

तेरा ओ३म नाम मुझे प्यारा, तू है सखा पिता माता।
सूर्य चन्द्र जल, थल, आकाश में, पढ़ो करतार, अज अविकार।
तूही दीखे है अपरम्पारा॥ तेरा ओ३म्० १॥
जीव चराचर गुण तेरे गावें, अय दीनानाथ करके सनाथ।
मुझे कीजे दुखों से न्यारा॥ तेरा ओ३म्० २॥
मैं लवलीन तुझी में रहता, दर्शन दीजे, दुख हर लीजे।
इस दीन को तेरा सहारा॥ तेरा ओ३म्० ३॥
परदेशी बन जगत् हितैषी, तव गुण गाय, सब सुख पाय।
चाहे भव से सदा निस्तारा॥ तेरा ओ३म्० ४॥

राजगीत ३

हे सकल उत्पादकेश्वर, एक तूही सार है।
वेद सम्यक रीति से, यह कह रहा हरबार है॥
भूल जाता एक भी, जो प्राणियों में से इसे।
अन्त में वह दुःख की, सहता अनेकों मार है॥
पा न सकता वह कभी सुख दूसरे भी जन्म में।
मत सभी को है महेश्वर, ठीक यह स्वीकार है॥
रँग जमाना चाहिये, तेरा हमें हृद-भूमि में।
लाभदायक जीवनी को, और क्या व्यापार है॥
ध्यान से तुझमें समाहित, जो कि कर्णधार रहें।
तो उन्हें है सौख्यसागर, क्या दुखद संसार है॥

गजल ४

पितु मातु सहायक स्वामि सखा,
तुमहीं एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं,
तिनके तुमहीं रखवारे हो।
प्रतिपाल करो सगरे जग को,
अतिशय करुणा उर धारे हो।
भुलिहैं हमहीं तुमको तुमतो,
हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
उपकारन को कछु अन्त नहीं,
छिनही छिन जो बिसतारे हो।
महराज ! महा महिमा तुम्हरी,
समुझै बिरले बुधवारे हो।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेम-निधे,
मन-मन्दिर के उजियारे हो।
वहि जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय "प्रताप" हरी,
केहि के अब और सहारे हो।

क़व्वाली ५

जगदीश ! जो बशर हैं एक तेरी चाहवाले।
उनकी नज़र में क्या हैं यह अज्ज़ोजाहवाले ॥ १ ॥

भिक्षुक हैं तेरे दरके सब अज्ज़ोजाहवाले।
मुहताज हैं तेरे सब मुल्को सिपाहवाले ॥ २ ॥
जाहो जलाल तो क्या मिटजाय जिस्म भी गर।
करते नहीं हैं परवाह इस बारगाहवाले ॥ ३ ॥
दे साम्र उनको कोई गर राज चक्रवर्ती।
मंजूर कब हैं करते इस बारगाहवाले ॥ ४ ॥
मंज़िल का दे पता कुछ ऐ रहनुमाय कामिल।
रस्ता भटक रहे हैं हम सारे राहवाले ॥ ५ ॥
आकाश पृथ्वी को भी हैगा नियम में बांधा।
अद्भुत है तेरी रचना ओ मेहरमाहवाले ॥ ६ ॥
यह उच्चभाव हमको बरदान कीजियेगा।
खोटी नज़र न देखें हम बदनिगाहवाले ॥ ७ ॥

क़व्वाली ६

ईश्वर फ़क़त तुम्हीं हो दुख के मिटाने वाले।
आवागमन छुड़ाकर मुक्ती दिलाने वाले ॥
सूरज ज़िमीं सितारे सब आसरे तुम्हारे।
सारे निज़ाम शमशी तुम हो चलानेवाले ॥
हरजा तुम्हीं हो हाज़िर हर बात पर हो क़ादिर।
छोटे से ज़र्रे में भी तुम हो समानेवाले ॥
दरिया पहाड़ जंगल हरजा तुम्हारा जलवा।
मूरख हुये तुम्हारी मूरत बनानेवाले ॥

मसजिद में ना हरम में बुतखाने में न काब ।
तुम को कहां हैं पाते काशी के जानेवाले ॥
माला तो हाथ में है दिल दावों घात में है ।
क्या खाक तुमको पावें यह खाक उड़ानेवाले ॥
झूठे सुखों में फँसकर भूले तुम्हारी महिमा ।
तुम से अलग पड़े हैं तुम हो उठानेवाले ॥
माता बहिन व भ्राता इनका है झूठा नाता ।
सब दुख हैं देनेवाले गम में फँसानेवाले ॥
दर छोड़कर तुम्हारा किस दर पै जाके मांगूं ।
हैं शाह राजा तुम से रुतबों के पानेवाले ॥
सबसे अलग है सुजतर केवल तुम्हारे दर पर ।
आके खड़ा हुआ हूँ तुम हो बचानेवाले ॥

भजन ७

दो०-तुम बिन मेरा कौन है, हे अनाथ के नाथ ।
इस असार संसार में, पकड़ उबारो हाथ ॥
टेक—प्रभु दुख सागर से, हो पार लगानेवाले ।
धन यौवन और कुटुम्ब हमारा। संग में न कोई चलनेहारा ।
फिर हम किसका तकें सहारा । खाली जायँ घरबार से ॥
तुम ही धीर बँधानेवाले ॥ हो पार० १ ॥
मन चंचल वश में नहीं आवे । चमकदार चीज़ों में जावे ।
दुष्ट कर्म हम से करवावे । अपने वेग अपार से ॥
कष्ट पापों में ला डाले ॥ हो पार० २ ॥

इन्द्रिय वश में नहीं आती है। विषय भोग पे फँस जाती हैं ॥
निर्बल करके भटकाती है। इन के दुष्ट विचार से ॥
हो तुम्हीं बचानेवाले ॥ हो पार० ३ ॥
यह शरीर जो सब से प्यारे । वह भी तो नहीं होयँ हमारे ॥
जिस दिन होयँ जीव से न्यारे । आगे मरघट द्वार से ॥
हैं पीठ दिखानेवाले ॥ हो पार० ४ ॥
हो निराश सब ओर से आये । जगत दुखों ने बहुत सताये ॥
तुम बिन स्वामी कौन बचाये । तीनों तापों की मार से ॥
हो तुम्ही बचानेवाले ॥ हो पार० ५ ॥

भजन ८

है अपरम्पार, प्रभो ! तुम्हारी महिमा ।
अद्भुत है तुम्हारी माया, नहीं पार किसी ने पाया ।
गये सब ऋषि मुनि हार ॥ प्रभो० १ ॥
रवि चन्द्र और यह तारे, चर अचर जीव जड़ सारे ।
तुम्हीं को रहे पुकार ॥ प्रभो० २ ॥
तुम्हीं हिरण्यगर्भ कहलाये, निज से ब्रह्माण्ड रचाये।
कौन कर सके शुमार ॥ प्रभो० ३ ॥
हो जगत के आदी कारण, तुम्हीं किये हुये हो धारण ।
तुम्हीं करते हो संहार ॥ प्रभो० ४ ॥
सब बलों में तुमहीं बल हो, सब चल हैं तुम्हीं अचलहो ।
तुम्हीं सुख के भण्डार ॥ प्रभो० ५ ॥

यों वासुदेव गाता है, जो तुम्हें हृदय लाता है।
वही जन होवे पार ॥ प्रभो० ६ ॥

गजल ६

मद्दाह सब हैं तेरे, जो हैं ज़बान वाले।
सुनते हैं नग़मा तेरा, यहां जो हैं कान वाले ॥ १ ॥
बन्दे हैं खाक दर के, सिजदे में सर झुके हैं।
तौक़ीरो शान वाले, नामो निशान वाले ॥ २ ॥
चौखट पै तेरी करते, जो सल्तनत को कुरबां।
दिल के ग़नी हैं कैसे, ये आसितान वाले ॥ ३ ॥
मन्दिर ही मसजिदों में, वह खासकर नहीं है।
क्यों शोर गुल मचाते, टनटन अज़ान वाले ॥ ४ ॥
दिल में तेरे निहां है, क्यों ढूंढ़ता नहीं तू।
बाहर न वह मिलेगा, आहो फ़िग़ान वाले ॥ ५ ॥

गजल १०

किस परदे में निहां है, कौनो मकान वाले।
तेरा निशां कहां है, ऐ बे निशान वाले ॥ १ ॥
बुलबुल ने तुझ से सीखा, पुर सोज़ नग़मा ख्वानी।
गुल रंगो बू है तेरा, ऐ गुलसितान वाले ॥ २ ॥
ज़ुल्मत कदा में जाकर, तुझ को टटोलते हैं।
नादां वह कम समझ हैं, वहमो गुमान वाले ॥ ३ ॥
बिजली की खुश अदाई, तारों की जगमगाहट।

सब में है नूर तेरा, अय ऊंची शान वाले ॥ ४ ॥
इसरार मारफ़त को, क्या जाने शेख़ो पण्डित।
नाकूस वाले यह हैं वह हैं अज़ान वाले ॥ ५ ॥
गर वस्ल का है तालिब, हो जा फ़िदा तू उसपर।
यह सच्ची बन्दगी है, अय ज्ञान ध्यान वाले ॥ ६ ॥

गजल ११

तेरा निशां कहां है, अय बेनिशान वाले।
ढूंढ़ें तुझे कहां हम, ए लामकान वाले ॥ १ ॥
परदों में तू निहां है, आता नहीं नज़र में।
कैसे पहुंच हो तुझ तक, ऐ आसमान वाले ॥ २ ॥
हर गुल में बू है तेरी, हर शय में रंग है तेरा।
तू है मुहीत सब में, ऐ दो जहान वाले ॥ ३ ॥
पहिचाने कोई क्योंकर, अक़्लो ख़िरद है हैरां।
हसरत में सब पड़े हैं, यहां ज्ञान ध्यान वाले ॥ ४ ॥
साधू की यह सदा है, जग रैन का है सुपना।
हो तू फ़िदा न इस पर, ऐ आन बान वाले ॥ ५ ॥

राग विष्णुपद १२

दीनबन्धु जग विदित भामभव, वेग सुनो हरि मेरी टेर ॥टेक॥
हा ! मैं बड़ा दुराचारी हूं, धर्म न धारा अविचारी हूं।
लीजे लीजे मम दिशि हेरि ॥ १ ॥

छलबल मैंने खूब कमाये, अघ प्रवाह में सुकृत बहाये।
होगी होगी तब क्यों तेर ॥ २ ॥
कर्ण निरन्तर श्री यश गावें, भक्तिभाव उरमें उपजावें।
तारो तारो कैसी देर ॥ ३ ॥

ठुमरी ध्वनि काफी १३

पास खड़ा तेरे नज़र न आवे महबूब पियारावे।
घट २ व्यापक सबकी जाने रहे सबन से न्यारावे।
ढूँढ २ कोई खोज न पायो सब जग हारावे।
ध्यान धारणा योग समाधी नेम अचारावे।
जाके हेत करत सुर नर मुनि विविध प्रकारावे।
वेद वेदांग शास्त्र उपनिषदें बहुत विचारावे।
सभी अपार अगम्य अगोचर अलख पुकारावे।
छोड़िके निज अज्ञान कल्पना कुमति निवारावे।
मिला कबीर तिन्हें दिल अन्दर सिरजन हारावे।

भजन १४

किया जिसने पैदा जहान है, वह महान से भी महान है।
न वह बाल वृद्ध जवान है, वह प्राण का भी प्राण है ॥ १ ॥
न जन्म धरे न वह दुख भरे, न हो रोगी न वह कभी मरे।
उसे ढूंढो जहां वह वहीं मिले, न रहने का खास मकान है॥२॥
कोई उसका रंग न रूप है, वह सदा ही ज्ञान स्वरूप है।
वही एक सब से अनूप है, नहिं कोई उसके समान है ॥३॥

वह अजर अमर और है अभेद, वह पूर्ण ब्रह्म और है अछेद।
उस का न कहा जावे विभेद, वह हुआ न अब तक भान है ॥४॥
नहिं खाली उससे कोई ठौर, कर खूब देखा हम ने गौर।
वह है सभी के सिर का मौर, उसे तीनों काल का ज्ञान है ॥५॥
वह हर एक ऋतु में है रमा, मन को न तू उस से भ्रमा।
उसमें ही निज को ले जमा, वही सारे विश्व की जान है ॥६॥

भजन १५

तेरी अज अविकार, महिमा अपार, नहिं पाया पार, गये कितने हार, वर बुद्धिमान कर कर विचार।

तू है अजर अमर तुझे किसी का न डर सब से बरतर, तू है ईश्वर, सर्व विश्व का पूरण अधार ॥१॥

सर्व शक्तिमान करुणानिधान, सब का हर आन, तू ही देता दान, हर वक्त खुला तेरा भण्डार ॥ २ ॥

तू है शाहों का शाह, सब तेरे गदा, अदना आला तेरे दरपै खड़ा, बरणी न जाय लीला अपार ॥ ३ ॥

तू आनन्द घन, तू पतित पावन, ले तेरी शरण, सब तन मन धन, करे खन्नादास तुझ पर निसार ॥ ४ ॥

क़व्वाली १६

मशहूर हो रहा है खलक़त में नाम तेरा।
तू है सभी का अफसर, साहिब गरीब परवर ॥

मामूर हो रहा है, कुदरत क़लाम तेरा ॥ १ ॥
जल थल के जीव सारे, सूरज व चांद तारे।
मशकूर हो रहा है, आलम तमाम तेरा ॥ २ ॥
आलम में तूही तू है, गुल में व मिस्ल बू है।
भरपूर हो रहा है, सब में मुक़ाम तेरा ॥ ३ ॥
सुनले पुकार मेरी करता है अब क्यों देरी।
मजबूर हो रहा है, ग़म से गुलाम तेरा ॥ ४ ॥
करुणा निधान तेरा, बलदेव जैसा चेरा।
मख़मूर हो रहा है, पीकर के जाम तेरा ॥ ५ ॥

क़व्वाली १७

जलवा दिखा रहा है मुझको ज़हूर तेरा ॥
व्यापक है तू जहां में, हाज़िर हर एक जां में।
सब में समा रहा है निर्मल है नूर तेरा ॥ १ ॥
रचना है तेरी सुन्दर, बलिहारी जिसपे मुनिवर।
अमृत चखा रहा है, मुझ को सरूर तेरा ॥ २ ॥
तेरा ही नाम प्यारा, जपता जहान सारा।
गुण तेरे गा रहा है, ज़न है ज़रूर तेरा ॥ ३ ॥
बलदेव दुःख दल से, बचने को नर्क थल से।
खिदमत में आ रहा है, बन्दा हुज़ूर तेरा ॥ ४ ॥

ग़ज़ल १८

तेरा नूर सब में समाया हुआ है।
कुल आलम तेरा ही बनाया हुआ है ॥ १ ॥
रमा है तू हर गुल में मानिन्द बू के।
जगत् में तुही जगमगाया हुआ है ॥ २ ॥
चमकते हैं दुनिया में जो चांद सूरज।
उजियाला तुझ से ही पाया हुआ है ॥ ३ ॥
बदो नेक आमाल देखे तू सब के।
नहीं छिपता तुझ से छिपाया हुआ है ॥ ४ ॥
सज़ा वो जज़ा तूही देता है सब को।
भरेगा जो जिसने कमाया हुआ है ॥ ५ ॥
शिफ़ारिश न झूठी चलेगी किसी की।
यह वेदों में सब को बताया हुआ है ॥ ६ ॥
तू है सबका मालिक ग़रीबों का परवर।
जहां कुल तेरा ही बसाया हुआ है ॥ ७ ॥
तेरी सिफ्त कुदरत पे कुर्बान हूँ मैं।
दिलो जान तुझ से लड़ाया हुआ है ॥ ८ ॥
ख़बर लेलो बलदेव की अब तो साहब।
तुम्हारी ही खिदमत में आया हुआ है ॥ ९ ॥

भजन १९

परम पिता के प्रीति से यश गाओ सदा।

परम पिता के जग रचता के प्रीति से यश गाओ सदा। हम को इंसान किया, अशरफ़े जहान किया, पैदा जो समान किया सब हमको प्रदान किया। है हैरानी, पर यह प्रानी, कर नादानी कुछ नहिं मानी, रह हककनी छोड़। ऐसी मत कर ओ नादान प्रति दिन अति प्रीति से चित धर गाओ॥ सदा० १॥

दो०--वह दाता करतार है, सबका पालनहार।
पर हम कुछ नहिं जानते, हैं मतिहीन गँवार॥

दिल में विचार करो, पर उपकार करो, ईश्वर से प्यार करो, खन्ने दिल निसार करो॥ गाओ सदा० २॥

भजन २०

कया कोई गावे कथा सुनावे, प्रभु महिमा तेरी लखि किसी से न जावे।
ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर तपी तपीश्वर हज़ार।
लखि २ के हारे, व सारे विचारे, न पाया वह तेरा पार॥ क्या० १॥
तेरी वेद है वाणी, कहे ऋषी ज्ञानी, है प्राणी का जिससे उद्धार।
जो पढ़े पढ़ावे, अमल करावे, हो भवसागर से पार॥ क्या० २॥
तुही सृष्टि कर्ता, सकल दुःख हर्ता, तू संतन का प्रतिपाल।
मुझे कामक्रोध से, दुखी लोभ मोह से, बचाओ दारे तत्काल॥ क्या० ३॥
तुही है भंडारी, मैं तेरा भिखारी, मागूं यही बरदान।
मैं तुझको ही ध्याऊँ तेरी महिमा गाऊँ कहे दास खन्ना दान॥ क्या० ४॥

चौताल २१

तुही अज निर्विकार, तुही है जगदाधार।

ऋषि मुनि नहिं पावें पार, भव रचि रहे संसार॥
तेरो ही चन्द्र भान, पृथ्वी है विद्यमान।
वायु यह वेगवान, सूक्ष्म नाम निराकार॥
तूने रचे देश काल, ऋतु दिन क्या मास साल।
नद नदी सर गिरि विशाल, हमरे हित वेद चार॥
तुही प्रभु है अनन्त, निर्गुण महा शक्तिवन्त।
आश्रित सब जीव जन्तु पाठक, पितु लो उभार॥

भजन २२

ईश्वर तू मंगल मूल है-ऐसा वेदों ने गाया।
तू सर्वज्ञ महा सुखदाता, सर्व शक्ति सम्पन्न विधाता।
तेरा शुद्ध ज्ञान साधक के, साधन तरु का मूल है॥
जिस में फल मुक्ति समाया॥ ऐसा० १॥
तू अज अमित अनन्त कहावे, कभी न तुमको क्लेश सतावे।
तब तेरा अवतार बताना, मन्द मतों की भूल है॥
तू निर्गुण नित्य निकाया॥ ऐसा० २॥
जिसने तुझे योग कर जाना, तेरा दिव्य रूप पहँचाना।
समझ लिया उस बड़भागी ने, सांसारिक सुख धूल है॥
तूने उसको अपनाया॥ ऐसा० ३॥
भवसागर से तर जावेगा, फेर न कोई दुख पावेगा।
राम नरेश दास जो तेरी, आज्ञा के अनुकूल है॥
जिनके मन मोह न माया॥ ऐसा० ४॥

भजन २३

तेरो नाम ओंकार, पावे कोऊ नहिं पार।
महा मुनीश गये हार गाय गाय, धाय धाय १॥
सत चित आनँद स्वरूप, रहित सदा रंग रूप।
तू अनूप जगत भूप, निराकार निर्विकार २॥
अजर अमर नित्य अभय, सर्व शक्तिमान सदय।
शुद्ध बुद्ध मंगल मय, तू अपार तू अपार ३॥
तू अभेद तू अछेद, पावे नहीं तू है वेद।
नवलसिंह चारों वेद, कहत यही बार बार ४॥

भजन २४

पिता तुम पतित उद्धारन हार।
मोसे परम पातकी जन के संकट मोचन हार। पिता तुम०१॥
आया हूँ मैं शरण तुम्हारी अपना भला विचार।
जैसे बने कीजिये मेरा भवनिधि से उद्धार। पिता तुम० २॥
हित अनहित कुछ नहीं विचार मैं मतिमन्द गँवार।
अपनी अतुल दया के द्वारा मुझको दीजै तार। पिता तुम०३॥

भजन २५

तू परिपूरण नाथ जगत का, महिमा तेरी अपरम्पार।
जगत पिता तुम सब से महा हो, कहते चारों वेद पुकार॥

सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, नभ आदिक, हैं तेरे ही रचे सँभार।
निश दिन करता दान पदारथ तू सबको अति भले प्रकार॥
इस मन को थामदे, मत विषयोंमें जानदे।
पापों से ये छुटे, तेरे ध्यान में जुटे॥
असत को छोड़ दे, बन्धन तोड़दे।
खन्ना तुझ पै रहे सदा ही जाँ निसार॥

भजन २६

नहीं बुद्धि हमारी गावे महिमा तुम्हारी तुम साधु सुखकारी प्रभु ओ३म् ३।
दया भक्तन पै कीजे, सब दुख हर लीजे, निज भक्तों को दीजे प्रभु ओ३म् ३॥

(हरिपद छन्द)

ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर कभी न पावें पार।
तुमको किस विधि गा सक्ता हूँ मैं मतिमन्द गँवार॥
हारे योगी योगीश्वर, सारे ऋषी ऋषीश्वर, जाने महिमा मुनीश्वर न ओ३म् ३॥
थलचर जलचर नभचर आदिक हैं जितने जग माहिं।
तुम बिन इनकी सुन्दर रचना दिखा सके कोऊ नाहिं॥
तुम देखे अपार, कोऊ पावे न पार, सब बैठे हैं हार।
प्रभु ओ३म् ३॥

हे जगदीश्वर जग के स्वामी सदा सत्य सुख धाम ।
दीनदयालु कृपालु दयामय हे प्रभु पूरणकाम ॥
प्रभु तुम हो कर्तार, सारे जग के अधार, सभी कहते पुकार
प्रभु ओ३म् ३ ॥

शिवनारायण के तुम हो हो प्रभु पार लगावनहार ।
टूटी नैया बिन केवट के नाथ पड़ी मँझधार ॥
नहीं तुम बिन हमारा, कोई जग में सहारा, तुम्हीं जीवन
अधारा प्रभु ओ३म् ३ ॥

भजन २७

ख्याल

ईश्वर के निज ओ३म् नाम को अर्थ सहित गाना चहिये ।
सायं समय अरु प्रात काल नित ध्यान बीच लाना चहिये ॥
ध्यान धारणा का शुभ अवसर कभी न टल जाना चहिये ।
तेजसिंह नित शान्त चित्त रह सारा सुख पाना चहिये ॥

टेक-मय अर्थों के बोलो तुम ओ३म् ३ ।

तीन अक्षर का ओंकार, अकार उकार मकार, सज्जन करके विचार कहो ओ३म् ३ ।

सब में उत्तम है नाम, जपो सुबह और शाम, तज कर सब दुनियां के काम, गहो ओ३म् ३ ॥

जैसे अकार से विराट अग्नि और विश्व जानो तुम ओ३म् ३ ।

अर्थ है विराट का खास, करता जग को प्रकाश, करके पूर्ण विश्वास, कहो ओ३म् ३ ।

अग्नि है ज्ञान स्वरूप, जिसकी उपमा अनूप, व्यापक छाया वा धूप, है वह ओ३म् ३ ।

बसे जिसमें सब देश, रहे कर है प्रवेश, प्रविष्ट होकर भी शेष, रहा ओ३म् ३ ।

इतने आकार से जान, मत भूलरे नादान, नित्य धारना चहिये ध्यान, कहकर ओ३म् ३ ।

हिरण्यगर्भः तेजस वायु, मानो उकार से तुम ओ३म् ३

इस लिये हिरण्यगर्भ कहलाया, सबको गर्भ बीच ठहराया सब लोकों को आप बनाया, है वह ओ३म् ३ ।

करूं तेजस का अर्थ बयान, है प्रकाश स्वरूप जान, सब जग का प्रकाशक मान, है वह ओ३म् ३ ।

ये था अक्षर उकार, जिसका किया विस्तार, इस लिये नर और नारि, कहो ओ३म् ३ ।

मकार से ईश्वर और आदित्य है तीसरा प्राज्ञ कहो ओ३म् ३ ।

ईश्वर सब जग का उत्पादक, सर्व शक्तिमान सहायक, न्यायकारी सब फल दायक, है वह ओ३म् ३ ।

बस आदित्य का अर्थ यही है, जिसका हो कभी नाश नहीं है, यह वेदों से साफ़ सही है, वह ओ३म् रे।

यही अर्थ प्राज्ञ का जानो, इसको ज्ञान स्वरूप मानो, है वो ओ३म् रे।

इतने मकार से बतलाये, कथकर छन्दों के बिच गाये, फिर तुम क्यों ग़फ़लत में आये, कहो ओ३म् रे।

तेजसिंह जो मुक्ती चाहो, अर्थों सहित बोलो ओ३म्।

काटे स्वामी जी ने फन्द, पाके दया और आनन्द, अब तो बोलो मतिमन्द, मुख से ओ३म्।

लावनी २८

ओ३म् नाम को त्याग और के गुण गाना नहिं चहिये।
ओ३म् नाम ही सार मंत्र है इसे भुलाना नहिं चहिये॥
बना धर्म का ध्यान रहे, अघ ओघ कमाना नहिं चहिये।
साधु सन्त गुरु देव आदि का चित्त दुखाना नहिं चहिये॥
पास द्रव्य नहीं होय, वृथा दानी कहलाना नहिं चहिये।
द्रव्य होय तो फेर दान से हाथ हटाना नहिं चहिये॥
दुर्जन का सहवास पाय निज नाम लजाना नहिं चहिये।
बढ़ती रहे महा भुवता दुर्बोध बढ़ाना नहिं चहिये॥
धर्म समझ गंगा यमुना के जल में न्हाना नहिं चहिये।
मन मानी कर वैदिक मत का नाम मिटना नहिं चहिये॥

मन्दिर मठ बनवाय मूर्त्ति में ध्यान जमाना नहिं चहिये।
निराकार की तज उपासना दुःख उठाना नहिं चहिये॥

भजन २९

सबसे उत्तम ओ३म् पियारे।

अकार उकार मकार मिला है, व्यापक है प्रति लोम, पियारे
चाँद वो सूरज ज़िमीं सितारे, जिस ने बना बना कर धारे
महिमा उसकी अपने में यह, भर नहिं सकता व्योम पियारे।
धी बल सम्पति ओ जग प्यारी, है जिसके अधिकार विचारी
यदि इच्छुक हो पाने के तुम 'कृष्ण' भजो एक ओ३म् हियारे

भजन ३०

(प्रश्न) ख्याल।

ईश्वर के लक्षण बतलाओ ईश्वर किसे बताया है।
बिना बताये कैसे जानें हम को सम्भ्रम छाया है॥
किसी ने मन्दिर अथवा मसजिद, गिरजाघर बनवाया है।
किसी ने अपनेही को सच्चा ब्रह्म रूप बतलाया है॥
विधिवत् जाने बिना उसे जो भक्ती अर्थ सिखाया है।
तेजसिंह वह सब निष्फल है समझो प्रिय समझाया है॥

सब लक्षण कहो सुभाय के,
किस को ईश्वर माने हम। टेक-

किसको ईश्वर तुम जानो हो, बतलादो किसको मानो हो

किस लक्षण से पहचानो हो सच्चाई दरशाय के।
सब अलग अलग छानो तुम ॥ किसको० १ ॥

अब लक्षण दरशाना होगा, सारा भेद बताना होगा।
ऐसा गीत बनाना होगा, मधुर स्वरों से गाय के।
भेजो सब के कानों तुम ॥ किसको० २ ॥

बतलादो भारी सुख होगा, तुर्त पलायमान दुख होगा।
सुन सब हर्षित मुख होगा, इस उत्तर को पाय के।
मन में निश्चय मानो तुम ॥ किसको० ३ ॥

उत्तर हो तो देना चहिये, शीरीं ज़ुबां से कहना चाहिये।
नहिं हो तो चुप रहना चहिये, तेजसिंह ग़म खाय के।
फिर क्यों झगड़ा ठानो तुम ॥ किसको० ४ ॥

भजन ३१

(उत्तर) ख्याल

ईश्वर के लक्षण बतलाऊँ इधर ध्यान देना चहिये।
आसन मार बैठ चुपके ही तुमको सुन लेना चहिये ॥
जहां तुम्हें शंका हो प्यारे निश्चय ही कहना चहिये।
किसी भांति से भी संशय में तुमको नहिं रहना चहिये ॥
कहते हैं इधर ले कान कर जिसको ईश्वर मानें हम। टेक-
अति सर्व सुखदायक अजर अमरादि जिसके नाम हैं।

अद्भुत अतुल इह लोक में जिसके अनेकों काम हैं ॥
गुण कर्म जिस के सह प्रकृति माने गये परिशुद्ध हैं।
लक्षण कहीं लाक्षण्य से उसके न बुद्धि विरुद्ध हैं ॥

वह सुख स्वरूप कहलावे। नहीं जन्म मरण में आवे।
जीवों के दुःख मिटावे। यों बार बार श्रुति गावे ॥
है भारी अपरम्पार, न पावें पार, सभी गये हार यथाविधि ध्यान कर। इस प्रकार से जानें हम ॥ जिसको० ॥१॥

वह है महा अद्भुत, अलख, अभयादि लक्षण युक्त विभु।
जगदीश मंगल मूल सत चित्त ज्ञानमय सर्वेश प्रभु ॥
उसको न कोई प्राप्त हो सब भांति वह अविकार है।
मल युक्त वपु से रहित उसको श्रुति रही निरधार है ॥

वह सबको भोग भुगावे। कर्मों का फल पहुँचावे।
वह पुनि पुनि जगत रचावे। रचने में चतुर कहावे ॥
ये जीव हैं सब अल्पज्ञ, ब्रह्म सर्वज्ञ, महा मर्मज्ञ, उसी को जानकर। अनुभव से पहचानें हम ॥ जिसको० ॥२॥

वह सदाही नित्य शुद्ध और बुद्ध मुक्त सुभाव है।
बस एक उसके ही सहारे विश्व का ठहराव है ॥
जिस में भरी है शक्ति भारी कौन गा सकता उसे।
कर भेद अवगत न्यून मति से कौन पा सकता उसे ॥
वह है प्रभु अपरम्पारा। परिपूरण नाथ हमारा ॥
उसने ही यह जग सारा। करके उत्पादन धारा ॥

बस यही लक्षण हैं मूल, इनको मत भूल, चलें अनुकूल,
इन्हीं को जानकर। लगे क्यों धोखा खाने हम ॥ जिसको० ॥३॥

जितना बताया है गया, सब वेद के अनुकूल है।
कुछ भी नहीं इस में रही अस्पष्टता की भूल है ॥
जिस में घटें लक्षण सभी ये, ईश उसको मानिये।
विषयादि में फँस जानना, उसका कठिन ही जानिये ॥
अय मित्र अवर सुख पाओ। तो ईश्वर के गुण गाओ।
मत अवसर व्यर्थ गँवाओ। कुछ ध्यान भले का लाओ ॥

कहें तेजसिंह समझाय, ईश गुण गाय, सुनो चित लाय,
खूब आसान कर, लगे तुमको दर्शाने हम ॥ जिसको० ॥४॥

भजन ३२

(प्रश्न) ख्याल।

ईश्वर २ कहो सिद्ध कर उसको दिखलाना चाहिये।
ईश्वर सिद्धिविधायकही शुभ रचाख्यालगानाचाहिये ॥
समझाने में रहे कमी तो फिर भी समझाना चाहिये।
तेजसिंह वैसे वर्णन को ले समीप आना चाहिये ॥

ईश्वर के सिद्ध करने में,
कोई प्रमाण दिखलाओ ॥ टेक ॥

उसको ईश्वर कैसे जाने, है ईश्वर वो कैसे माने।
बिना प्रत्यक्ष नहींपहचाने, कर प्रत्यक्ष दरशाओ ॥को०१॥

ईश्वर अति महान कहलावे, जीव बापुरो पता न पावे।
कैसा वो समझा नहिं जावे, कर विस्पष्ट सुनाओ ॥को० २॥
हम मुद्दत से भ्रम पड़े हैं, पट महान्धता रूप अड़े हैं।
जोड़ हाथ सामने खड़े हैं, भेद भाव समझाओ ॥को० ३॥
मिटा दीजिये शंका मेरी, मिल जावे शुभ शान्ति घनेरी।
क्यों करते हो इस में देरी, तेजसिंह कथ गाओ ॥को० ४॥

भजन ३३

उत्तर।

दोहा—अय जिज्ञासू क्यों वृथा, संशय रहा बढ़ाय।
सिद्ध करूं जगदीश को, सुनले कान लगाय ॥

यह प्रत्यक्षादि प्रमाण ले,
ईश्वर के सिद्ध करने में ॥ टेक ॥

ज्यों पांच ज्ञान इन्द्री और मन है भाई।
हैं विषय भी इनके जुदे जुदे दिखलाई ॥
विषयों से मिलकर जो कि ज्ञान होजावे।
बस वही ज्ञान मित्रों प्रत्यक्ष कहलावे ॥
हो ज्ञान भी ऐसा भारी, मिटजावे शंका सारी।
अनुभव सच्चा होजावे, कुछ भेद न रहने पावे॥

लेकिन यह हर्षित बात, सुनो प्रिय भ्रात, मुख्य हालात,
अगाड़ी जानले। कही तीनों के जड़न में ॥ ईश्वर० १ ॥

बस यही लक्षण हैं मूल, इनको मत भूल, चलें अनुकूल,
इन्हीं को छानकर। लगे क्यों धोखा खाने हम॥ जिसको० ॥३॥

जितना बताया है गया, सब वेद के अनुकूल है।
कुछ भी नहीं इस में रही अस्पष्टता की भूल है॥
जिस में घटें लक्षण सभी ये, ईश उसको मानिये।
विषयादि में फँस जानना, उसका कठिन ही जानिये॥
अय मित्र अगर सुख पाओ। तो ईश्वर के गुण गाओ।
मत अवसर व्यर्थ गँवाओ। कुछ ध्यान भजन का लाओ॥

कहें तेजसिंह समझाय, ईश गुण गाय, सुनो चित लाय,
खूब आसान कर, लगे तुमको दर्शाने हम॥ जिसको० ॥४॥

भजन ३२

(प्रश्न) ख्याल।

ईश्वर २ कहो सिद्ध कर उसको दिखलाना चाहिये।
ईश्वर सिद्धिविधायकहो शुभ रच। ख्याल गाना चाहिये॥
समझाने में रहे कमी तो फिर भी समझाना चाहिये।
तेजसिंह ऐसे वर्णन को ले समीप आना चाहिये॥
ईश्वर के सिद्ध करने में,
कोई प्रमाण दिखलाओ॥ टेक॥

उसको ईश्वर कैसे जाने, है ईश्वर यो कैसे माने।
बिना प्रत्यक्ष नहीं पहचाने, कर प्रत्यक्ष दरशाओ॥को०१॥

ईश्वर अति महान कहलावे, जीव बापुरो पता न पावे।
कैसा वो समझा नहिं जावे, कर विस्पष्ट सुनाओ॥को० २॥
हम मुद्दत से भ्रमे पड़े हैं, पट महान्धता रूप अड़े हैं।
जोड़ हाथ सामने खड़े हैं, भेद भाव समझाओ॥को० ३॥
मिटा दीजिये शंका मेरी, मिल जावे शुभ शान्ति घनेरी।
क्यों करते हो इस में देरी, तेजसिंह कथ गाओ॥को० ४॥

भजन ३३

उत्तर।

दोहा—अय जिज्ञासू क्यों वृथा, संशय रहा बढ़ाय।
सिद्ध करूं जगदीश को, सुनले कान लगाय॥

वह प्रत्यक्षादि प्रमाण ले,
ईश्वर के सिद्ध करने में॥ टेक॥

ज्यों पांच ज्ञान इन्द्री और मन है भाई।
हैं विषय भी इनके जुदे जुदे दिखलाई॥
विषयों से मिलकर जो कि ज्ञान होजावे।
बस वही ज्ञान मित्रों प्रत्यक्ष कहलावे॥
हो ज्ञान भी ऐसा भारी, मिटजावे शंका सारी।
अनुभव सच्चा होजावे, कुछ भेद न रहने पावे॥

लेकिन यह हर्षित गात, सुनो प्रिय भ्रात, मुख्य हालात,
अगाड़ी जानले। कली तीनों के जड़न में॥ ईश्वर० १॥

देखा विचार मन और इन्द्रियों के ताईं ।
है गुणों का सब प्रत्यक्ष गुणी का नाहीं ॥
फिर गुणों के पीछे गुणी का वेले पावे ।
इस आत्मयुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जावे॥

ऐसे ही सृष्टि में भाई, हम विशेष रचना पाई ।
गुण ज्ञान आदि लख सारा, हुआ ईश्वर सिद्ध हमारा ॥
ले दूसरा भी दृष्टान्त, इस के उपरान्त, सुन होके शान्त,
इधर कर कान ले, यह शिक्षा उर भरन में ॥ ईश्वर० २ ॥

जिस समय जीव किसी कर्म में मन लाता है ।
फिर उसी समय प्रमाण प्रत्यक्ष आता है ॥
हो अशुभ कर्म तो भय शंका लज्जा आवे ।
शुभ हो तो हर्षित अंग मोद दरशावे ॥

भय अभय जो दे दिखलाई, है ब्रह्म की ओर से भाई ।
मत जीव की ओर से जानो, यह सत्य कथन पहँचानो ॥
जीव है स्वतन्त्र, तभी करे पीछे दुख भरे, इसी से डरे,
मित्र पहँचान ले, नहीं क्या हासिल डरने में ॥ ईश्वर० ३ ॥

प्रमाण तीसरा प्रत्यक्ष यह पाता है ।
हर काम नियम अनुकूल नज़र आता है ॥
बनना व बिगड़ना सभी नियम से होता ।
कर विचार मन की क्यों नहीं शंका खोता॥

देखो सृष्टि में भाई, ये अटल नियम दिखलाई ।
ज्यों माली बाग लगावे, कहीं फ़र्क ज़रा नहिंआवे॥

हुआ इसी से ईश्वर सिद्ध, समझले निद्ध, छोड़कर जिद,
तेजसिंह छान ले, इस बुद्धि रूप छरने से ॥ ईश्वर० ४ ॥

भजन ३४

प्रश्न ।

दोहा-किसी पुरुष का प्रश्न यह, जब कि ईश निराकार ।
फेर बताओ किस तरह, वेद बनाये चार ॥

टेक-वेद फिर कैसे बनाये हैं जब निराकार जगदीश ।

नहिं ईश्वर का कोई अंग है, नहिं रूप है न कोई रंग है ।
नहिं इन्द्रियादि का संग है, शब्द कैसे फरमाये हैं ॥ वे०१ ॥

कर लेकर के वेद विचारो, खुद आंख पसार निहारो ।
यह भ्रम की बात बिसारो, शब्द नहिं सुनने में आये हैं ॥२॥

हमने जब ये देखे विचारे, हुई हृदय में शंका हमारे ।
इस लिये ही सम्मुख तुम्हारे, प्रश्न अपना ये लाये हैं ॥३॥

तब तो फिर उत्तर लाओ, हमें साफ़ २ समझाओ ।
मेरे हृदय की शंका मिटाओ, तेजसिंह कह चुप लाये हैं॥४॥

भजन ३५

उत्तर ।

दोहा-अय जिज्ञासू समझ तू, हो करके खामोश ।
वेद रचे निराकार ने कुछ नहीं आवे दोष ॥

रचने का वेद निराकार में,
कोई दोष नहीं आता है ॥ टेक ॥

जब है सर्व व्यापक जगत् में वह जगराई।
फिर मुखादि अंगों की क्या ज़रूरत भाई ॥
जो हो आप से भिन्न दूसरा कोई।
उसके लिये मुख जिह्वा की ज़रूरत होई ॥

देखो तो तुम अपने ताई कुछ मुख की ज़रूरत नाहीं।
जब अन्तर्यामी है भाई, फिर ये शंका क्यों आई ॥

जब है सर्व शक्तिमान, उसकी क्या हान, निश्चय लोजान,
दोष ये आता है साकार में, बिन मुख नहीं फ़र्माता है॥कोई०१

है दूसरा दृष्टान्त इन में मेरे भाई।
मन में मुखादि अवयव देते न दिखाई ॥
मत मुख से बोलो मत कुछ ज़ुबां हिलाओ।
फिरभी संकल्प विकल्प सैकड़ों पाओ॥

ऐसे ही ईश्वर में जानो मत शंका इस में मानो।
है मिले हुए नहीं न्यारे, तभी बिन मुख शब्द उचारे ॥
वेदों ने दिया बताय, है ईश्वर अकाय, न लेते सहाय,
वही संसार में, सबको फल पहुंचाता है ॥ कोई०२ ॥

यह जीव अल्प शक्ती वाला है जैसे।
मत कदापि समझो ईश्वर को तुम ऐसे ॥
क्यों इस पर तुम को ध्यान मित्र नहिं आया।
बिन शरीर के सारा ही जगत बनाया ॥

यह क्यों नहिं बात विचारी, होती शक रफ़ै तुम्हारी।
कर बिचार शंका तेरी, हो दूर लगे नहीं देरी ॥

कर विचार शंका कटे, तिमिर सब हटे, अविद्या घटे,
काहे व्यर्थ विचार में, नित २ शंका लाता है ॥कोई० ३॥

वेदों की विद्या कही गई सूक्ष्म है।
क्या जगत् में चन्द्र आदि की रचना कम है ॥
जब रचना अचरज भरी करी यह सारी।
फिर निराकार को वेद रचना क्या भारी ॥

जो सवाल तुमने कीन्हा, उसका उत्तर दे दीन्हा।
हो और अवर कुछ कहना, तो कहो मौन क्यों रहना ॥

कहे तेजसिंह मतिमन्द, बना के छंद, मिले आनंद, देखो
नर संसार में, बिन विचार दुख पाता है ॥ कोई० ४ ॥

भजन ३६

प्रश्न (ख्याल)

यह तो सब कुछ ठीक आपने जैसा कुछ फर्माया है।
पर एक बात है शेष इसी से नहीं समझ में आया है ॥
जब प्रकाश से युक्त ईश को वेदों ने बतलाया है।
प्रकाश है तो है क्या वो जो आंखों से न लखाया है ॥
प्रकाश सबको दीखना चहिये जैसे धूप और छाया है।
फिर ईश्वर का प्रकाश हमको क्यों न दीखने पाया है ॥

उत्तर—

दोहा—अय जिज्ञासू समझकर, कर इस पर विश्वास।
कभी नज़र आवे नहीं, जो प्रकाश है खास॥

कभी देख न सका कोई, उस स्वतः प्रकाश को भाई। टेक॥
मसलन ज्यों सूर्य की शुवायें, किसी छिद्र में होकर आयें।
पड़े नज़र कि जहां रुक जायें, दें बिच में न दिखाई ॥उस० १॥
जाके शुवा जिस शै में पड़ी है, देखो वहां भी नज़र से वरी है।
उस शै की ही दमक रही है, सफ़ेदी सुर्खी स्याही ॥उस० २॥
इस से भी जब वह सूक्षम है, व्यापक जगह जगह जो सम है।
किसी जगह में ज्यादा न कम है, कैसे पड़े लखाई ॥उस० ३॥
उत्तर दे दिया इसका जानों, नेक न शंका मन में मानों।
तजदो पक्ष न झगड़ा ठानों, तेजसिंह दरशाई ॥ उस० ४॥

भजन ३७

भूला काहे प्राणी रे प्रभु की सत्ता नहिं पहचाने।
सत् है सदा से चित चेतन है, नित आनन्द स्वरूप।
उस स्वामी से विमुख पड़े, तुम अन्धकार के कूप ॥भूला० १॥
सुनते लखते चखते सूंघते, छूते जिनके द्वार।
जड़ इन्द्रिय सहाय है उसकी ऐसा सर्वाधार॥ भूला० २॥
आंख न देखे, वाणि न पहुँचे, मन तक जावे नाहिं।
सोचो मित्रो! कैसे पहुँचे, ब्रह्म की सत्ता माहिं ॥भूला० ३॥
जो कुछ तुमने अब तक जाना, सब इंद्रिय के द्वार०।

ज्ञात वस्तु से ऊपर है वह, अज्ञात से परे निहार ॥भूला० ४॥
पाठक कहे मैल तज मन से, तब उपजे सत ज्ञान।
आसन आदि समाधि अन्त लो, योग से हो पहचान ॥भू० ५॥

दादरा ३८

ईश्वर लीजे खबरिया हमारी।
हो निराश सब ओर से स्वामी, आन पड़े हैं शरण तुम्हारी॥ १
भारत आरत बिलख रहा है, रहा न कोई धर्म व्रत धारी॥ २
भक्ति तुम्हारी तज कर हमने, जड़ पूजे बन दुष्ट पुजारी॥ ३
नर तन पाय तुम्हें नहिं खोजा, जीती बाजी जगत में हारी॥ ४
काम क्रोध मद लोभ के वश में, हमने सुधबुध सभी बिसारी॥ ५
बाल युवा और वृद्ध अवस्था, विषयों में खो बैठे सारी॥ ६
वासुदेव कहे विद्या बल दो, भिक्षा मांगें खड़े हम भिखारी॥ ७

दादरा ३९

जगदीश तुम्हारा सहारा हमें,
यहां सूझे न कोई हमारा हमें।
बालकपन से आज तलक प्रभु!
तुमही ने तो सहारा हमें॥ १॥
ढूंढ फिरे हम सभी ओर हैं,
मिला न तुमसा पियारा हमें ॥२॥
चहिये साद शुभ एक मोक्ष पद,
सारे सुखों का भंडारा हमें॥ ३॥

अन्धकार से दूर हटाओ,
निज ज्ञान का दे उजियारा हमें ॥४॥
भवसागर की धार प्रबल है,
इससे भी दो छुटकारा हमें ॥५॥
आर्य्य पुरोहित विनय करे प्रभु !
निज से न कीजै न्यारा हमें ॥६॥

रेखता ४०

स्वामिन् दयालुता से दुख दर्द सब हरिये।
उर में विवेक भरिये चित्त को प्रसन्न करिये ॥
पशु तुल्य काम क्रीड़ा गो ग्राम में न उलहे।
परिपक्व शुक्र होवे विनती सु कान धरिये ॥
कर्णान्धता विडुरे वैदिक सुविज्ञता से।
आनन्द की सुचरचा मस्तिष्क माहिं भरिये ॥

गजल ४१

शरण हम प्रभू तेरी आये हुये हैं।
दो कर जोड़े सर को झुकाये हुये हैं ॥
न भक्ती न श्रद्धा में मन चित लगाते।
बने पापी पुण्य को भुलाये हुये हैं ॥
त्यागा पुरुषार्थ अहंकार में फँस।
कुसंगति से हरदम दबाये हुये हैं ॥

न बल है न बुद्धी न विद्या की शक्ती।
अधोगति पे अपनी भुलाये हुये हैं ॥
स्थिरता न मन को भटकता फिरे यह।
विषयों से बहुत हम सताये हुये हैं ॥
करो हम पे कृपा दयामय पिता जी।
उठाओ हमें जो गिराये हुये हैं ॥
प्रवृत्ती हो शुभ कर्म और शुभ गुणों में।
मिले धर्म धन जो गँवाये हुये हैं ॥
हो सत विद्या और ज्ञान से शुद्ध हृदय।
नियम पालें जो तू बनाये हुये हैं ॥
धरम भूख हम को सदा हो प्रभू जी।
बढ़े शान्ति भारी जलाये हुये हैं ॥
गंगाराम सप्रीति पर उपकार सीखें।
मिटें कपट मन में जो लाये हुये हैं ॥

गजल ४२

भगवन् दया की दृष्टी, अब टुक इधर भी करदो।
रहमत से अपनी दामन, इस दीन का भी भरदो ॥ १ ॥
आज्ञा का तेरी पालन, निशि दिन करूं मैं स्वामी।
भिक्षुक हूँ नाथ तेरा, भक्ती का मुझ को वर दो ॥ २ ॥
माता बहिन व कन्या, समझूं, पराई नारी।
समभाव सब को देखूं, ऐसी मुझे नज़र दो ॥ ३ ॥
बे पुत्र ही है बेहतर, गर हो अधर्मी बालक।

कुल की करे बड़ाई, ऐसा प्रभू पिसर दो ॥ ४ ॥
पुरुषार्थ करके जो कुछ मिल जाय नाथ सामाँ।
उस में ही हे दयामय! सन्तोष और सबर दो ॥ ५ ॥
बेकार है वह धन जो, परस्वार्थ में न व्यय हो।
दुखिया अनाथ पालन, करने को नाथ ज़र दो ॥ ६ ॥
कर्मानुसार यदि मैं, मानव शरीर पाऊं।
हे ईश! जन्म मेरा, सत आर्य्यों के घर दो ॥ ७ ॥
संकट हज़ार पड़ने, पर भी धरम न छोड़ूं।
निर्भय, अशोक, बल से पूरित प्रभू जिगर दो ॥ ८ ॥
कर जोड़ मित्र तुम से, है नाथ अब विनय यह।
अपनाही ध्यान मुझको, नित शाम और सहर दो ॥ ९ ॥

भजन ४३

टेक-कर कृपा पार उतारियो, मेरी टूटीसी किश्ती है।
तुम अविनाशी अजर अमर हो, सारे भूमण्डल के घर हो।
सब के बाहर और भीतर हो, कारीगर बड़े भारी हो॥
रची सकल अजब सृष्टी है ॥ मेरी० ॥
सब का न्याय करो हो न्याई, बिन वज़ीर और बिना सिपाही।
करो फैसले क़लम न स्याही, ऐसे न्यायकारी हो॥
नहीं गलती पड़ सक्ती है ॥ मेरी० ॥
अब तक दुख भोगे हैं भारी, बहुत हुई दुर्दशा हमारी।
अब आये हम शरण तुम्हारी, तुमहीं देश हितकारी हो॥
तारो तो तर सक्ती है ॥ मेरी० ॥

बिना कृपा करुणानिधि तेरी, कुछ नहिं पार बसाती मेरी।
तेजसिंह भारत की बेड़ी, काट सभी दुख टारियो॥
जो हृदय कुमति बसती है ॥ मेरी० ॥

ग़ज़ल ४४

शरण अपनी में रख लीजे, दयामय दास हूं तेरा।
तुझे तजकर कहां जाऊं, हितू को और है मेरा॥
भटकता हूं मैं मुद्दत से, नहीं विश्राम पाता हूं।
बचा दे सब तरह से अब मुझे आफ़ात ने घेरा॥
सताया शत्रु द्वेषों का, तपाया तीन तापों का।
दुखाया जन्म मृत्यू का, हुआ तंग हाल है मेरा॥
दीन दुख मेटने वाला, तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आ गिरा अब तो, उठा ले किस लिये देरा॥
क्षमा अपराध कर मेरे, फ़कत अब आश है तेरी।
दया बलदेव पर करके, बना ले नाथ निज चेरा॥

ग़ज़ल ४५

हे न्यायकारी! हे निर्विकारी!! हे जातवारी!!! तुम्हीं हमारे।
न और कोई हितू हमारा, हमें बचाओ हम हैं तुम्हारे॥
बग़ैर दुनिया को हमने देखा, खुद मतलब के हैं यार सारे।
किससे कहें अब दिलदर्द अपना, हैं जानी दुश्मन कि जो थे प्यारे॥
ज़माना भी कुछ निराली सजधज, बदल रहा है अजीब रँग ढँग।

जो थे कभी नूर में चूर भरपूर, फिरते हैं वह दर दर मारे मारे।
जो थे समझते कि हम हैं सारे मुल्कों के मालिक ग़रीब परवर।
वली पहलवां लाखों हुनर वर, नहीं पता वह किधर सिधारे॥
इस दुनिया फ़ानी में हमने देखे,हज़ारों बनते बिगड़ते लाखों।
फिर किस की शादी ग़मी मनावें, किसे बनावें आंखों के तारे॥
लगी है अबतो तुम्हीं से आसा, बलदेव को निज बनालो दासा।
जैसा है खोटा खरा या खासा, तुमने तो लाखोंहि पापी तारे॥

ग़ज़ल ४६

हमारी एक विनय तुम से, दयामय दीन हितकारी।
मिटाओ मेरे हृदय की, अविद्या रूप अँधियारी॥
प्रकाशित ज्ञान अपने का, हृदय में कीजिये सूरज।
मिले कल्याण का रस्ता, बनें हम सुख के अधिकारी॥
गया है छूट वह मारग, हमारे पूर्व पुरुषों का।
बिना उसके हमारी हो गई अब दुर्दशा भारी॥
हमारा धर्म वैदिक था, उपासक आप के हम थे।
हुये अब पन्थ नानाही, औ नाना इष्ट औतारी॥
अहिंसा त्याग चोरी था, धर्म व्रत पूर्व पुरुषों का।
वहां हिंसक औ बटमारी, शराबी चोर औ ज्वारी॥
जहां ऋषि मुनि थे ब्रह्मचारी, पुरुष नारी सदाचारी।
वहां अब प्रायः नर नारी हुये कुलटा औ व्यभिचारी॥
यहां के दीन औ दुनिया, नहीं इम्दाद पाते हैं।
मुचण्डे भांड़ औ वेश्या, उड़ावें माल बदकारी॥

मचा अन्धेर अब ऐसा, हवा बदली ज़माने की।
तुम्हीं पर आसा है भारी तुम्हीं पितु बन्धु महतारी॥
तुम्हीं हो धर्म के पालक, अधर्मी दुष्ट कुल घालक।
समझ बलदेव निज बालक, बचाओ वेग बलधारी॥

भजन ४७

प्रभु तूही पालनहार दयामय आश तुम्हारी है।
द्वेष नृपति है अविद्या राज्य पर, हुआ अन्धेर अकाज दिये कर।
हास्य की नौबत बजे, क्रोध की ध्वजा पसारी है॥ प्रभु०॥
फूट बैर छल हठ हैं घर घर, बैरन बढ़गई इतनी यहां पर।
प्रीति प्यार नहिं भ्रात, पुत्र प्रिय नहिं महतारी है॥ प्रभु०॥
गति संसार की पार न जाना, मूरख मनवा फिरै दिवाना।
चेतो अब करै हाय, धार में नाव हमारी है॥ प्रभु०॥

ग़ज़ल ४८

सुनो जगदीश! विनती को तुम्हीं से आश भारी है।
सुधारो अब कृपा करके दशा बिगड़ी हमारी है॥
अविद्या देश में फैली हुआ मूरख यह भारतवर्ष।
बिगाड़ा रीति नीतों को परस्पर बैर जारी है॥
रहा ना धन यहां पर कुछ न अब रहने की आशा है।
निरुद्यमता ने घर दाबा हुआ भारत भिखारी है॥
नहीं है देश की ममता किसी भारत निवासी को।
करैं अब क्या यतन प्रभुजी! पड़ा दुख सर पै भारी है॥

नहीं है ऐसा कोई जन जो हम को आके धीरज दे।
यह क्यों रोते हो तुम साहिब दृगों से रक्त जारी है॥

भजन ४९

दयानिधि सब दुख दूर करो।
हम को सुख भोगन को मारग कितहुँ न सूझि परो।
लौकिक हाय हाय में हारे अब तब ध्यान धरो॥
जोर बटोर पाप की पूंजी करम कपाल भरो।
'कर्ण'हरत्रान भीरु भक्तन के हे हरि शोक हरो॥

क़व्वाली ५०

मालिक मेरी मदद कर मुश्किल हटाने वाले।
जब से नज़र कड़ी है आफ़त में जाँ पड़ी है॥
अब तो बचाले, बन्धू सब के कहाने वाले॥ १॥
सुत मित्र नारि भाई नहीं वक़्त के सहाई।
यहां के यहां रहेंगे रिश्ता बढ़ने वाले॥ २॥
आलम को मैंने देखा अच्छी तरह परेखा।
सब ऊपरी हैं अपने बातें बनाने वाले॥ ३॥
जब कूच मेरा होगा सब कुछ यहीं रहेगा।
आमाल ही रहेंगे दुख से बचाने वाले॥ ४॥
यह अर्ज़ है चरन की कर शुद्ध चाल मन की।
तुझको ही जान जावें मुक्ती दिलाने वाले॥ ५॥

भजन ५१

दो०-हे अखिलेश विशुद्ध विभु, कुछ तो लेहु निहार।
बिन अधार किस भांति हम, डूब रहे मँझधार॥
ईश्वर तुम सर्वाधार हो,
मेरी लेहु खबर जल्दी से॥ टेक॥
सबके तुम्हीं सखा पितु माता, धर्म अर्थ कामादि प्रदाता।
शरण आप के जो भी आता, करो उसी को पार हो॥ १॥
तुमने रचे पदार्थ सारे, पृथ्वी सूर्य चन्द्र नभ तारे।
आंखों से तुम नहीं निहारे, निराकार करतार हो॥ २॥
यद्यपि रहा धर्म से न्यारा, विषय भोग में समय गुज़ारा।
अब तो आपका लिया सहारा, तुम्हीं परमोदार हो॥ ३॥
भवसागर से मुझे बचाओ, नैया मेरी पार लगाओ।
वासुदेव पर अब हुए जाओ, दीनों के आधार हो॥ ४॥

भजन ५२

दीजो प्रभु दान अपनी हमें भक्ती का।
हम आये शरण तुम्हारी, तुम रक्षा करो हमारी।
होय सब का कल्यान॥ अपनी०॥
मत करो नाथ अब देरी, हो नष्ट अविद्या मेरी।
मिटै सारा अज्ञान॥ अपनी०॥
भारत की दशा सुधारो, सब के दुःखों को टारो।
होय आनन्द महान॥ अपनी०॥

कहं वासुदेव करजोरी, इक विन्ती सुनियो मोरी।
न होने पावे हान ॥ अपनी० ॥

भजन ५३

भवसागर से नैया दीजो पार उतार।
मुझे काम क्रोध ने घेरा, मँझधार पड़ा है बेड़ा।
किस विध उतरूं पार ॥ भव० ॥
मेरी नाव बही जाती है, यहां कोई नहीं साथी है।
सब मतलब के यार ॥ भव० ॥
सुत मात पिता अरु भ्राता, अब कोई नज़र नहीं आता।
सहायक प्रिय परिवार ॥ भव० ॥
मेरा लोभ और मोह हटाओ, अपनी भक्ती सिखलाओ।
जिससे होजाऊं पार ॥ भव० ॥
बल वासुदेव को दीजो, यह विनय मेरी सुन लीजो।
तुम्हीं को रहा पुकार ॥ भव० ॥

पूर्वी ५४

पाप से नाथ भरी मोरी नैया, डूब रही मँझधार रे।
नदिया अमित अपार वहत है, उमड़ रही जल जल धार रे।
भ्रमर भयानक उठत अनेकन, तापर चलत बयार रे ॥१॥
छाय रहो चहुँदिशि अँधियारो, सूझे न हाथ पसार रे।
गरजत घन अरु दमकत दामिन, बर्षत मूसलधार रे ॥२॥

प्रबल ग्राह भक्षण हित मो कहँ, चहुँ दिशि रहे निहार रे।
भांझर गुन विहीन है नैया, टूट गयो पतवार रे ॥ ३ ॥
शिबनारायण काह करूँ अब कोऊ न खेवनहार रे।
पाहि! पाहि! प्रभुशरण तिहारी, अब मोहिं लेहु उबार रे॥४॥

ग़ज़ल ५५

हुई है हालत बुरी हमारी बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्
कुकर्म हमने किये हैं भारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्
न ध्यान हमको भले का आया, वृथाही सारा समय गँवाया।
जगत्में फँसकर तुम्हें भुलाया, कियाजो हमने वहआगे आया॥
इसीसे धुनते हैं सरकोभारी, बचाओस्वामिन् बचाओस्वामिन् १
न कर्म कोई भला किया है, सर्वस्व अपना लुटा दिया है।
किसी की कुछ भी नहीं खता है, कुसूर अपनाही सर्वथा है॥
तुम्हारे आगे है शर्मसारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन् ॥२
न यज्ञ भी तो किया उमर भर, भजा भी यकदम न तुमको ईश्वर।
हुई भलाई न नेक जिस पर, कि हमको होवे फ़ख़्रो तकब्बुर ॥
दया तुम्हारी पै आसा भारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन् ३
किये पै अपने नज़र जो डालें, तो शर्मसारी से मुँह छिपालें।
सदा से उलटी चली हैं, चालें बताओ कैसे सुनम पालें॥
जीती बाज़ी सभी है हारी, बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्॥४॥
लगा रखी है तुम्हीं से आशा, पिलाओ अमृत मिटे निराशा।
न कोई तुमसे मिला है बेहतर, हुआ ये हमको अभी है ज़ाहिर॥
करें परस्तिश सदा तुम्हारी, बचाओस्वामिन् बचाओस्वामिन् ५

ग़ज़ल ५६

हुये हैं अपराध हमसे भारी, दशा सुधारो हमारी भगवन् ।
अजब तरह की है शर्मसारी, दशा सुधारो हमारी भगवन ॥
बुरे हैं आमाल जिस क़दर हैं, खराब अफ़आल सर बसर हैं।
ज़मीम हैं आदतें हमारी, दशा सुधारो० १ ॥
सितमहै खिफ़्फ़तअज़ब निदामत,निपट हीरुसवाई व खिज़ालत
है अपने हाथों यह अपनी ख्वारी, दशा सुधारो० २ ॥
कभी हैं गिर्जा में हम भटकते, कभी हैं मसजिदमें सर पटकते।
बने हैं मन्दिर में गर पुजारी, दशा सुधारो० ३ ॥
दयाबिसारी व न्याय छोड़ा, नियम जो धारण किया वह तोड़ा।
हुये हैं सब नेकियों से आरी, दशा सुधारो० ४ ॥
हैं बन्दे हम नफ़्से परवरी के, गुलाम हैं हुस्ने ज़ाहिरी के।
हैं ग़फ़लतें बातिनों में तारी, दशा सुधारो० ५ ॥
कभी हैं देते किसी को धोका, नहीं हृदय को बदी से रोका।
हिमाक़तों ने है अक्ल मारी, दशा सुधारो० ६ ॥
शआर बद हमको ऐसा भाया, कि अपना कर्त्तव्य तक भुलाया
न ज़िक्र हक़ है न हम्द बारी, दशा सुधारो० ७ ॥
प्रभू तुम्हीं से विनय है अबतो, शरण में अपनी क़बूलो अबतो।
रहे सुनाते क्या आहो ज़ारी, दशा सुधारो० ॥

ग़ज़ल ५७

बहुत आश तुझसे लगाई हुई है।
न क्यों मेरी अब तक सुनाई हुई है ॥

सुना था कि तुमने बहुत पापी तारे।
जभी से मैंने लौ लगाई हुई है॥
ग़रीब निवाज़ी की सुनकरके शुहरत।
तबीयत मेरी तुझपै आई हुई है॥
ज़हूरा है प्यारे तेरा कुल जहां में।
तेरी ज्योति घट घट समाई हुई है॥
तू साहब है सबका व नाचीज हूँ मैं।
शरण ली तो मैं, क्या बुराई हुई है॥
किये पतित उद्धार तुमने हज़ारों।
मेरी बार क्यों नींद आई हुई है॥
तेरे दरपै बल्देव अबतो पड़ा है।
कहो नाथ क्यों देर लाई हुई है॥

भजन ५८

मेरी सुनियो नाथ पुकार, सबके हित् कहाने वाले।
यहां थी पहले धर्म बहार, अबही सब ने हिम्मत हार
होगा तुमसे ईश सुधार, सबके धीर बँधाने वाले १
पहले यहां पर थे ब्रह्मचारी, उनकी जगह हुये व्यभिचारी
बेश्या लगतीं जिनको प्यारी, ऐसे पाप कमाने वाले २
है फिर तुमसे ईश पुकार, नैया करो हमारी पार
यह तो डोले है मँझधार, बेड़ा पार लगाने वाले ३
कहता रामप्रसाद है टेर, मेरी दशा लीजिये हेर
नेक न होवे इसमें देर, तुमने बड़े २ काज सँभाले ४

भजन ५९

ऐजी प्रभु पार उतारो, धर्म की नाव पड़ी मँझधार।
मतवादी ही मगर मच्छ हैं, रहे जो टक्कर मार ॥ ध० १ ॥
अन्धकार इंजील कुरां का, सूझे वार न पार।
पौराणिक चट्टान राह में, पाप है भाटा ज्वार ॥ ध० २ ॥
मक्रो दगा की आंधी आई, झूठ की बरस धार।
विषय भोग का जल चढ़ आया, किश्ती डूबन हार ॥ ध० ३ ॥
करसे छुट गई श्रुति बल्ली, कैसे होवें पार।
सत्य का सूर्य घटा में छुप गया, छाया है अंधकार ॥ ध० ४ ॥
ब्राह्मण जो मल्लाह थे इसके, सो गये पैर पसार।
विनय यही बाबू की ईश्वर, करो वेगि उद्धार ॥ ध० ५ ॥

भजन ६०

तुमहीं अब नाथ उबारो, भारत दुखसागर में डूबता।
अति आरत भारत नरनारी, कहां लग सहैं विपति अति भारी।
देख रहे अब ओर तुम्हारी, हितू न कोई सूझता ॥ तुम० १ ॥
दशा भई है दीन हमारी, क्षमा करो सब चूक बिसारी।
तुम सर्वज्ञ सकल दुखहारी, करो क्षमा की पूरता ॥ तुम० २ ॥
भारत सुतन फूट फल खाया, याते दुसह रोग बढ़ि आया।
बढ़त जात नहिं घटत घटाया, हठधर्मी अरु मूढ़ता ॥ तुम० ३ ॥
जो जो कुछ हम यतन विचारें, झूठे पड़ें मनोरथ सारे।
तभी तुम्हारी शरण सिधारे, भूल गये निज शूरता ॥ तुम० ४ ॥

भारत की अब दशा सुधारो, करुणामय करुणा कर डारो।
सब प्रकार बलदेव तुम्हारो, क्षमिये इसकी क्रूरता ॥ तुम० ५ ॥

ग़ज़ल ६१

तेरी शरण में आन के सर को झुकाते हैं।
ईश्वर तुझी को जान के आनन्द पाते हैं ॥
दुनियां में तुझ से ज्यादा कोई दीखता नहीं।
सब से हटा के दिल को तुझी से लगाते हैं ॥
मुद्दत हुई भटकते हुए खाक छानते।
दे ज्ञान हमको तुझ पै हम विश्वास लाते हैं ॥
माता पिता अजीज़ों अक़ारिब कोई नहीं।
यह हमने खूब जान लिया झूठे नाते हैं ॥
अफ़सोस का मुक़ाम है हम सोचते नहीं।
इकजाई तुझ को मान के क़ाबा में जाते हैं ॥
मूरखपने से लोभ के फन्दे में आन कर।
तुझ को नचा के रास में पैसे उघाते हैं ॥
शर्मा जर्मा के पर्दे में करदो यह मुश्तहर।
वैदिक धरम को छोड़ के हम दुख उठाते हैं ॥

भजन ६२

ईश्वर करो दूर हमारी, सब बुरी वासना मनकी।
यह चंचल पापी नहिं रुकता, ज्ञान ध्यान की ओर न झुकता।

तुझसे हा ! फिरता है लुकता बड़ा दुष्ट है भारी ॥
कुछ भय नहीं वेद वचन की ॥ सब बुरी वासना० १ ॥
संध्या करने में नहिं लगता, कर्म धर्म से कोसों भगता।
विषय भोग में दूना जमता, खोई आयू सारी ॥
इच्छा नहीं करी भजन की ॥ सब बुरी वासना० २ ॥
अनित्य वस्तु से हित कीना, योग आदि का नाम न लीना।
ज़हर पिया अमृत तज दीना, माना नहीं अनारी ॥
रही सदा लालसा धन की ॥ सब बुरी वासना० ३ ॥
कभी नहीं तेरा गुण गाया, राग द्वेष में समय गँवाया।
उच्च [illegible] से मुझे गिराया, अब है शरण मुरारी ॥
काटो बेड़ी बन्धन की ॥ सब बुरी वासना० ४ ॥

गजल ६३

जगदीश शान्ति शीलता मुझ में बढ़ाइये।
अपनी कृपा की पूर्णता कर यों दिखाइये ॥
होकर के साक्षात् मेरे मन में आइये।
और आके यहां फिर कभी बाहर न जाइये ॥
अन्तःकरण को ज्ञान से भरपूर कीजिये।
सब भांति से अज्ञानता मेरी मिटाइये ॥
लौलीन आप में रहे भागा फिरे न मन।
इस के लिये विवेक का पहरा बिठाइये ॥
दुनियां के जमघटों से अलग करके रातदिन।

अपनाही प्रेम मन में मेरे खुद बढ़ाइये ॥
बेखुद मुझे हमेशा रखे आपकी लगन।
प्याला मुझे निज प्रेम का आकर पिलाइये ॥
भूला फिरूं हूं खाता हूं पग २ पे ठोकरें।
जल्दी से मुझको रास्ता सीधा बताइये ॥
अनुकूल सारी ज़िन्दगी अपनी बनाऊं मैं।
अहकाम वेद कानों में मेरे सुनाइये ॥
भारी प्रलोभनों ने है घेरा हुआ मुझे।
निष्कर्म के आधिक्य से बरियत कराइये ॥
पापों की वासना से मेरे मन में इन दिनों।
फैली हुई अनुताप मय अगिनी बुझाइये ॥
भिक्षा मैं मांगता हूं तेरे दर पै प्रेम से।
हृदभूमि में आनन्द की गंगा बहाइये ॥
बस आप का भरोसा है हूँ आपकी शरण।
जीवन मरण के रोग से मुझको बचाइये ॥
केवल है प्राप्ति आपकी करना सुखों का हेतु।
इस कार्य की शुभ कामना पैदा कराइये ॥

भजन ६४

मुझे भवसागर से लीजिये, करुणानिधि वेगि उबारी।
बीच भंवर में पड़ी नाव है, कैसे निकले नहीं ताब है।
मिटगया मेरा सभी दाव है, कर निस्तारा दीजिये ॥
विपता है सिर पै भारी ॥ करुणा निधि० १ ॥

अलख निरंजन हे अविनाशी, पारब्रह्म घट २ के वासी।
सकल सृष्टि कर्त्ता सुखराशी, भारी करुणा कीजिये ॥
सुधबुध खोदी है सारी ॥ करुणा निधि० २ ॥
हमने बहुतक कष्ट उठाया, नहीं कभी किंचित् सुखपाया।
अबतो तुम से ध्यान लगाया, अपने जान पसीजिये ॥
करते हैं भक्ति तुम्हारी ॥ करुणा निधि० ३ ॥
दीनों को तुम पार लगाते, करुणा का नहिं भाव मिटाते।
सोहन लाल सदा गुण गाते, पार हमें भी कीजिये ॥
हम दीनों की है बारी ॥ करुणा निधि० २ ॥

भजन ६५

प्रभु रक्षक मेरा, प्रभु रक्षक मेरा, मुझको सदा है सहारा तेरा।
जल थल में तू ही व्यापक है, है प्रभु सर्वाधार।
ऋषि मुनि ज्ञानी ध्यानी भी तो पावें न तेरा पार ॥ प्रभु० १ ॥
अगम अथाह तुही सर्वोत्तम जग का पालन हार।
आदि अन्त तेरा नहिं स्वामी तुही करे संहार ॥ प्रभु० २ ॥
मूर्ख लोग तेरा बतलावें जग होना औतार।
कहां से आवे सब में है जब छोड़ा हाय विचार ॥ प्रभु० ३ ॥
तेरी सत्ता सब में फैली रचना है संसार।
शरण रहूँ मैं तेरी स्वामी जल्दी से दे तार ॥ प्रभु० ४ ॥
कर्त्ता धर्त्ता जीव मात्र का तुझ को कर स्वीकार।
पाठक उर आनन्द मनाता सहित कुटुँब परिवार ॥ प्रभु० ५ ॥

भजन ६६

जगत् पिता हम तेरी ही नित आशा करें।
जगत् पिता हम अज्ञानीजन तेरीही नित आज्ञा करें ॥
तूने अपना ज्ञान दिया, सूर्य द्युति मान दिया।
आवश्यक सामान दिया, बुद्धि को फिर दान दिया ॥
मट्टी पानी वायु अग्नी, लाखों प्रानी है लासानी।
ज्ञानी ध्यानी जान, सदा करते तेरा ध्यान, हम निर्गुण औगुन बारे तेरी शरण परें ॥ जगत पि० ॥
दोहा॰-तू घट घट के बीच है, व्यापक सर्वाधार।
पै हम मूढ़ कुबुद्धि वश, तुझ को रहे बिसार ॥
सुधार, पालन हार ! तू निर्धार ! दुःखटार ! हो संसार पार पाठक जन आनन्द भरें। जगत् पि० २ ॥

ग़ज़ल ६७

अब तो प्रभु दया करो आया हूं मैं तेरी शरण।
तुमहीं हो सबके आत्मा क्लेशों को टारो दुःखहरण॥
भूला हुआ फिरा बहुत मथुरा प्रयाग देखता
तूही बसा है घट मेरे तुझ से मेरी लगी लगन।
मुझ को मिले जो पादड़ी ईसू बताया सुत तेरा।
कैसे भरोसा होसके तुम हो प्रभु अनिर्वचन॥
ऐसे ही मौलवी मिले कहते रसूल मित्र है
सोचा कि न्यायकारी हो विषयों में क्यों करे रमन।

जैनी कबीर पन्थिये लाखों ने घेरा था मुझे।
तेरी कृपा से पे प्रभु मेरे कटे वे सब विघन॥
तुमही तो न्यायकारी हो तुमहो अजर अमर अभय।
पाठक अधम कृतघ्न है बनता न इससे कुछ यतन॥

गजल ६८

दया करो जन पै मेरे स्वामी, तुम्हारा हमने लिया सहारा।
तुम्हीं हो कर्त्ता तुम्हीं हो भर्त्ता, तुम्हीं हो रक्षक हे सर्वाधारा॥
हो सबके घटघटमें बसने वाले, न कोई तुमसे अलहदा किंचित्।
न होगा वहजन कभी सुखारी, कि जिसने तुमको नहीं विचारा॥
हे सच्चिदानन्द! सर्व सुखमय ये सारी खलकत रचाईतुमने।
हमारी हालत सुधारो स्वामी, जगत् के भ्रम में तुम्हें विसारा॥
हे न्यायकारी! हे ज्ञान सिन्धो! पिता हमारे हे प्राणदाता।
विचारा अच्छी तरह तुम्हारा न कोई बेटा न कोई दारा॥
अजर अमर हो अभय अनूपम,तथा अगोचर अनादि अविचल।
नियम में स्थिर हैं सूर्य पृथ्वी, आकाश के लोक चन्द्र तारा॥
तुम्हारी सत्ता बड़ी अनोखी, क्या हम से जन उसका पार पावें।
ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर, बताते पाके समाधि द्वारा॥
है इच्छा पाठक की पे प्रभूजी, तुम्हें न दिल से कभी बिसारे।
रहें भलाई में नित्य तत्पर, लिया है आश्रय तभी तुम्हारा॥

भजन ६९

सत्ता तुम्हारी बुद्धि हमारी ये क्या विचारी पाती है।

हे न्यायकारी! हे निर्विकारी! ये आयू सारी जाती है॥
आगम अपारी रचन तिहारी आतम हमारी भाती है।
तुही प्रभु अब अपनी दयाकर ज्ञानदे हमको तिमिर मिटाकर।
मोह घटा को शीघ्र हटा यह क्रोध घटा दुखदाई बटा॥
है लोभ डटा तुझे नहीं रटा जिससे पावें प्रकाशी छुटा १ सत्ता।

गजल ७०

तूही है प्रभु नाथ हमारा, तूही दुख से छुड़ावन हारा।
तू सच्चिदानन्द अनूपम, हैं हम सारे अधमाधम। जी॥
रखें तेराही एक सहारा॥ तूही० १॥
तुम सब कुछ जानन हारे हम मोह में हैं मतवारे। जी।
तुम्हें सब विधि स्वामीं बिसारा॥ तूही० २॥
तुमही करुणा सागर स्वामी, हम क्रोधी भी हैं अरु कामी। जी
मैं तो न्याय पै तेरे बलिहारा॥ तूही० ३॥
तुम्हें बुद्धी व मन और बानी, नहीं पावें साधारण ज्ञानी। जी
तेरी महिमा है अपरम्पार॥ तूही० ४॥
यह धर्म्म की नाव हमारी, प्रभु डोलत है मँझधारी। जी।
गहरी नदिया है दूर किनारा॥ तूही० ५॥
हमने बन्धु भी सब अजमाये, अब तेरी शरण में आये। जी।
कहे पाठक ये दास तुम्हारा॥ तूही० ६॥

दादरा ७१

प्रभु रक्षा करो मेरी, पिता जी।

जैनी कबीर पन्थिये लाखों ने घेरा था मुझे ।
तेरी कृपा से ऐ प्रभू मेरे कटे वे सब विघन ॥
तुमही तो न्यायकारी हो तुमही अजर अमर अभय ।
पाठक अधम कृतघ्न है बनता न इससे कुछ यतन ॥

गजल ६८

दया करो जन पै मेरे स्वामी, तुम्हारा हमने लिया सहारा ।
तुम्हीं हो कर्त्ता तुम्हीं हो भर्त्ता, तुम्हीं हो रक्षक हो सर्वाधारा ॥
हो सबके घटमें बसने वाले, न कोई तुमसे अलहदा किंचित् ।
न होगा वहजन कभी सुखारी, कि जिसने तुमको नहीं विचारा ॥
हे सच्चिदानन्द ! सर्व सुखमय, ये सारी खल्कत रचाई तुमने ।
हमारी हालत सुधारो स्वामी, जगत् के भ्रम में तुम्हें बिसारा ॥
हे न्यायकारी ! हे ज्ञान सिन्धो ! पिता हमारे हे प्राणदाता ।
बिसारा अच्छी तरह तुम्हारा न कोई बेटा न कोई दारा ॥
अजर अमर हो अभय अनूपम, तथा अगोचर अनादि अविचल ।
नियम में स्थिर हैं सूर्य पृथ्वी, आकाश के लोक चन्द्र तारा ॥
तुम्हारी सत्ता बड़ी अनोखी, क्या हम से जन उसका पार पावें ।
ऋषी ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर, बताते पाके समाधि द्वारा ॥
है इच्छा पाठक की ऐ प्रभूजी, तुम्हें न दिल से कभी बिसारें ।
रहें भलाई में नित्य तत्पर, लिया है आश्रय तभी तुम्हारा ॥

भजन ६९

सत्ता तुम्हारी बुद्धि हमारी ये क्या विचारी पाती है ।

हे न्यायकारी ! हे निर्विकारी ! ये आयू सारी जाती है ॥
आगम अपारी रचन तिहारी आत्म हमारी भाती है ।
तुही प्रभु अब अपनी दयाकर ज्ञान दे हमको तिमिर मिटाकर ।
मोह घटा को शीघ्र हटा यह क्रोध घटा दुखदाई बटा ॥
है लोभ डटा तुझे नहीं रटा जिससे पावे प्रकाशी छटा ? सत्ता ।

गजल ७०

तूही है प्रभु नाथ हमारा, तूही दुख से छुड़ावन हारा ।
तू सच्चिदानन्द अनूपम, हैं हम सारे अधमाधम । जी ॥
रखें तेराही एक सहारा ॥ तूही० १ ॥
तुम सब कुछ जानन हारे हम मोह में हैं मतवारे । जी ।
तुम्हें सब विधि स्वामी बिसारा ॥ तूही० २ ॥
तुमही करुणा सागर स्वामी, हम क्रोधी भी हैं अरु कामी । जी
मैं तो न्याय पै तेरे बलिहारा ॥ तूही० ३ ॥
तुम्हें बुद्धी व मन और बानी, नहीं पावें साधारण ज्ञानी । जी
तेरी महिमा है अपरम्पार ॥ तूही० ४ ॥
यह धर्म की नाव हमारी, प्रभु डोलत है मँझधारी । जी ।
गहरी नदिया है दूर किनारा ॥ तूही० ५ ॥
हमने बन्धु भी सब अजमाये, अब तेरी शरण में आये । जी ।
कहे पाठक ये दास तुम्हारा ॥ तूही० ६ ॥

दादरा ७१

प्रभु रक्षा करो मेरी, पिता जी ।

हित चिन्तक तुमसा नहिं कोई, सब सुखदाता, उनके त्राता।
माता तुमही भ्राता ॥ प्र० १ ॥

न्याय तुम्हारा जग विस्तृत है, तुम्हीं विधाता, यों जग गाता।
नहीं किसी से नाता ॥ प्र० २ ॥

शान्ति न पावें तेरी शरण तजि, ऋषि प्रकटाता, मुनि दिखराता॥
ज्ञान दिलाता धाता ॥ प्र० ३ ॥

पाठक भव दुःख से विकल है, इसे उबारो, शीघ्र सुधारो।
तुम हो मन के ज्ञाता ॥ प्र० ४ ॥

भजन ७२

तूही प्रभू अविकारी। तूही पर उपकारी।

तुही प्रभू अविकारी। तूही उपकारी। तूही देवन को देव कहावे स्वामी। मैं मूर्ख, मैं मूर्ख, मेरी टूटी सी नैया लगाओ स्वामी पार ॥तूही०॥ हम सबको प्रभु शरण में लेलो। अपना ज्ञान प्रभु हमको देदो। मुझे पापों से अब तो छुड़ाओ स्वामी तू०॥ काम क्रोध ने मुझे दबाया। लोभ मोह के वश में आया॥ मुझे अपनी शरण में लेलो स्वामी ॥ तूही० ॥ विद्यादान हम दो स्वामी। बुरे काम दरलो सब स्वामी॥ हमें विद्या का भूषण पहनाओ स्वामी ॥ तूही० ॥ बिना ज्ञान मूरख हम स्वामी। तूही है प्रभु अन्तर्यामी ॥ मेरी सारी अविद्या मिटाओ स्वामी ॥तूही०

भजन ७३

दीनबन्धु दीनों के दुख टाल प्रभु करतार। हमारी, हमारी, तुझ से यही पुकार ॥ होकर व्याकुल शरण तेरी हम आये पालनहार। हरी, हरी, भवसिन्धु पार उतार ॥ मोह माया में मन लपटाया, छल और कपट को जाना प्यारा। धन संग्रह में समय गँवाया निष्फल जन्म गँवाया सारा ॥ मानुष जन्म दियो तुम विषयों ने गन्दा कर दिया सारा। हो बेआश शरण तेरी आयो तुम बिन और न कोई सहारा ॥ तू यहां, तू वहां बे निशां, तू महा तुझे समान होवे ना ओंकार, दया, दया, हमपै करो दया ॥ दीन० ॥ दीनदयालु न तुम सम कोई चरण कमल में देवो बासा नाम तेरा हरी, पतित उधारन भक्ती जल की लागी प्यासा। तू ईश्वर सब का प्रतिपालक हम तेरे दासा अनुदासा नाम जपाओ जल्दी ईश्वर जीवन की है थोड़ी आसा। ओंकार अपरम्पार, निराकार, निराधार, अद्धा हो वेदों पर महान् दया, दया, आजिज़ पै करो दया ॥दीन०॥

दादरा ७४

दीनानाथ तुम्हारा सहारा हमें।
यहां सूझे न कोई हमारा हमें ॥

अपने स्वारथ के सब साथी, नहीं दीखे कोई दिलदारा हमें १
पड़ी भँवर विच नैया पुरानी, कीजै प्रभू अब पारा हमें २

पतित उधार कहाय जगत में, फिर क्यों हाय बिसारा हमें
काम क्रोध और लोभ मोह ने, सब बिधि नाथ बिगारा हमें
कुछ बल्देव और नहिं चाहे, बस काफी तुम्हारा नज़ारा हमें

राग विष्णुपद ७५

मेरा मन मातंग स्वामि हा ! नेक न वश में आता है ॥ टेक ॥
पापों पापी में ले जाता, सत्य मार्ग से दूर हटाता ।
सबसे निपट निराले ढँग का, दुर्मदान्ध कहलाता है ॥मेरा० १॥
बढ़ने नहीं बोधबल देता, बुद्धि बिचारी को हरलेता ।
सर्व प्रकार प्रबलता अपनी, सिद्ध हुई दरसाता है ॥मेरा० १॥
कोसों की चक फेर लगाता, एक घड़ी विश्राम न पाता ।
मेरे जैसे दुर्बलांग का या विधि हृदय जलाता है ॥ मेरा० ३ ॥
सामादिक साधन निधि खोता, कर शुभकर्म सचेत न होता ।
हा तब कर्ण अमर हो कैसे, विषरस घोल पिलाता है ॥मेरा० ४॥

ग़ज़ल ७६

दयामय छोड़कर कर तुमको शरण किसकी भलाजाऊं ।
तुम्हीं रक्षक तुम्हीं पोषक कहो पितु मात कहँ पाऊँ ॥
पदारथ प्राकृतिक जेते न शक्ती दे न देवेंगे ।
सभी कुछ कर लिये अनुभव भलाफिर क्यों मैं अजमाऊं ॥
जहां हे बैठते उत्तर सखा संसार सम्बन्धी ।
वहां तेरे भरोसे पर प्रभू निर्भय मैं कहलाऊं ॥

अँधेरी रात भयकारी जहां सुन सान जंगल हो ।
घिरा हूं दुष्ट जीवों से वहां भी मैं न घबराऊं ॥
तुम्हीं स्वामी सुखद मेरे तुम्हीं प्राणों के प्यारे हो ।
हो पाठक पर दया इसी तेरा दिन रैन गुण गाऊं ॥

भजन ७७

मेरी पड़ी भँवर में नैया, नाथ इसे तारदे ३ ॥ टेक ॥
नहीं आवैं नज़र किनारे, हम इसी से हिम्मत हारे ।
हैं त्रिविध दुखों के मारे, कृपा कर इन्हें टारदे ॥ मेरी० १ ॥
मेरे पांचों तो वैरी सँग में, नहिं बाहर भीतर इसी अँग में ।
करदिया इन्हों ने तंग में, नाथ इन्हें मारदे ३ ॥ मेरी० २ ॥
यह मनुष्य देह दुशवार है, यह मौक़ा न बारम्बार है ।
हे ईश्वर तू ! सर्वाधार है, जीवन का इन्हें सारदे ३ मेरी० ॥
जो तेरे दरपे आवे, वह मन इच्छा फल पावे ।
पद तेजसिंह कथ गावे, हमें भी फल चारदे ३ ॥मेरी० ४ ॥

भजन काफ़ी ७८

राखो २ प्रभु जन की लाज ।
आयो शरन तुम्हारी कैसी तुम कैसी तुम देर लगाई ।
करोहमारीसहाई,तुमजनसुखदाई,[illegible]॥राखो०१॥
दीजे प्रभु दीजे प्रभु, बल बुधि दान, [illegible] मेरी मान ।
तुम सर्व शक्तिमान, सदा दीन हितकारी ॥ राखो० २ ॥
विनती करत तेरो दास बलदेव, तुम देवन के देव, मेरी सुध

किन लेव, तुम दीन दुख हारी ॥ राखो० ३ ॥

लावनी ७९

तुम सुनो दीन के नाथ विनय यह मेरी।
कर गहो आपनो जानि करो ना देरी॥
यह दास आप ही की पनाह में आया।
रख लीजे लाज महाराज करिये अब दाया॥
तव नाम अनन्त अपार वेद में गाया।
गुण गावत शुक सनकादि पार नहिं पाया॥
मैं क्या वर्नन कर सकूं अल्प मति मेरी॥ कर० १॥

तुम निर्विकार निर्मल पवित्र हो स्वामी।
मैं महामलिन मतिमन्द कुटिल खलकामी॥
सच्चिदानन्द सर्वज्ञ सकल घट यामी।
मोहिं कीजे नाथ अब शुद्ध जानि अनुगामी॥
देवो आनँद पद में वास त्रास निरवेरी॥ कर० २॥

इस जगत् में जन्मत मरत, महा दुख पाया।
लख चौरासी में भ्रमत २ घबड़ाया॥
पाया जब भारी क्लेश समीप सिधाया।
करुणानिधान फिर क्यों न तर्स उर आया॥
काटो करुणामय कठिन कर्म की वेरी॥ कर० ३॥
मैं किसे सुनाऊं व्यथा नाथ निज मन की।
यहां अपना कोई नहीं आश करूं जिसकी॥

निज स्वारथ को संसार आश करे धनकी।
तुमही जानत सर्वज्ञ पीर निज जन की॥
अति आरत है बलदेव कहत यह टेरी॥ कर० ४॥

भजन ८०

कीजे वेगि सहाय प्रभू मैं तो शरन में आया।
अगम अगोचर नाम तिहारो, चारों वेद ने गाया हरी ॥मैं०॥
महिमा तेरी बरनी न जावे, अद्भुत जगत रचाया हरी ॥मैं०॥
ऋषिमुनि प्रभु तेराध्यान लगावे, अन्ततेरा नहींपाया हरी ॥मैं०॥
गंगाराम तेरा यश गावे, तुझ से ही ध्यान लगाया हरी ॥मैं०॥

दादरा ८१

हमें आशा पिता है तुम्हारी।

जननी जनक प्रभु तुमही हमारे। कुल परिवार, निज सुत दारा, है सब स्वारथ का संसारा। हा! हमें आशा० १॥

अनुपम दयालु दया दृष्टि कीजे। काम अरु क्रोधा, हैं बड़े योधा, करन देत नहीं सत्य का बोधा। हा! हमें आशा० २॥

निशदिन मुझे स्वामी आलस ने घेरा। बुद्धि आई दुख अधिकाई, होत नहीं अब कोई सहाई। हा! हमें आशा० ३॥

बिगड़ी दशा को सुधारो दयामय। मदन मुरारी कहत पुकारी मेरे हेत क्यों करत अबारी। हा! हमें आशा० ४॥

भजन ८२

है विनती तुम से हमारी, प्रभु जी बार बार बार।
हम आशा करें तुम्हारी, तुम हो सब के हितकारी।
करो पार यह नाव हमारी, जगदाधार धार धार ॥ है० १ ॥

है तुम्हारा हमें सहारा, नहीं और है कोई हमारा।
क्या भ्रात बन्धु सुत.दारा, करें जो पार पार पार ॥ है० २ ॥

ऐसी है तुम्हारी प्रभुताई, पर्वत से कर दो राई।
वेदों ने प्रशंसा गाई, सर्वाधार धार धार ॥ है० ३ ॥

प्रभु तुम दुःख मिटाओ, मेरा लोभ मोह विनशाओ।
सुखदायक भक्ति सिखाओ, हो जाऊं पार पार पार ॥ है० ४ ॥

भजन ८३

कुछ नहीं है पास हमारे, प्रभु क्या तेरी भेंट करूं।

खाली हाथ यहां पर आया, नहीं साथ कुछ अपने लाया।
कोई भी न पदारथ पाया, सन्मुख जिसे धरूं ॥ कुछ० १ ॥

मूरख तुझको भोग लगावें, जल देवें और पट पहनावें।
फिर अपना अहसान जतावें, कहते हुए डरूं ॥ कुछ० २ ॥

जीवन मूल पदारथ जो हैं, दिये हुए आप ही के सो हैं।
अपने कहे मूर्ख नर वो हैं, मैं तो शरण परूं ॥ कुछ० ३ ॥

बड़ा यहां पर धोखा खाया, अधम प्रकृति से चित्त लगाया।
शर्म्मा नहीं ईश गुण गाया, इस से दुःख भरूं ॥ कुछ० ४ ॥

भजन ८४

ईश्वर निराकार, मेटो ताप संसार के।
त्राहिमाम् त्राहिमाम् त्राहिमाम् त्राहिमाम् ॥
प्रभो ! प्रभो !! प्रभो !!! प्रभो !!!!

हमपर,इनपर,उनपर,सबपर, अपनी दया कर करुणा सागर।
हमने तेरा ध्यान भुलाया, वेदों का विज्ञान भुलाया ॥

होम यज्ञ और दान भुलाया, यथा योग्य सन्मान भुलाया।
हरी ! हरी !! हरी !!! हरी !!!

दाता धाता जग के त्राता, पाठक तेरी स्तुति गाता।
पाहिमाम् पाहिमाम् पाहिमाम् पाहिमाम् ॥

भजन ८५

शरण में तेरी आया प्रभु जब भटक २ गया हार।
कोई नहीं बिन तेरे मददगार ॥

उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम, ढूंढा सब संसार।
तूही तूही है दुख का मोचनहार ॥

मैं पापी तुम पतित उधारन, वेग कृपा कर मोहि उबारो।
रैन दिवस फिरा धन के कारन,लिया न इक छिन नाम तुम्हारो
नाम पिता तेरा कष्ट निवारण, पाप ताप प्रभु मेरे टारो।

सत् विद्या को करूं मैं धारण,छल और कपट रहे सब न्यारो॥

तू करतार, सिरजनहार, तेरा कार अपरम्पार मैं बलिहार।
तेरा मुझे आधार, दाता दाता, तुम हो मोक्ष के दाता॥
मोसम और न कोई पापी, सब पतितन में नामी भारा।
और ठौर जब कोई न पाया, तब पाया एक तेरा द्वारा॥
सुख के हैं सब मेरे सनेही, मात पिता भगिनी सुत दारा।
सारी उमर हा! पाप कमाया, क्योंकर हो मेरा निस्तार॥
तू दयाल, तू कृपाल तू प्रतिपाल, तू रक्षपाल, मेरा हाल।
तुझ पै आशकार, खन्ना तेरा असीम गुनहगार॥

भजन ८६

दीनानाथ दया कर वेग, नैया भारत पार लगाओ। टेक,
नैया पड़ी बीच मँझधार, पाता नहीं वार और पार।
मचरहा भारी हाहाकार,ईश्वर! तुमहीं इसे बचाओ॥दीना०१॥
छाया हुआ अंधेर महान, सकते नहीं हैं कुछ पहिचान।
गाफ़िल पड़े हैं किश्तीबान,इनको अबभी चेतकराओ॥दीना०॥
पड़ रहे महामारी और काल, होगया हाल बहुत बेहाल।
ईश्वर! लीजे तुर्त संभाल, इस में नेक न देर लगाओ॥दी०३॥
इस में हैं जो लोग सवार, कर रहे आपस में तकरार।
उनमें बढ़गया पोच विचार, उनमें मेल मिलाप बढ़ाओ॥दी०४॥
फंसकर खुदगर्ज़ी में पापी अब भी कर रहे आपा धापी।
मूरख समझे नहीं कदापी,चाहे कितनाही समझाओ। दीना०५॥

संख्या टेक भजन	संख्या टेक भजन

६०४ मत पढ़ो पुरान झूठी।
६१८ मुर्दों का सराद लिखा।
६२२ मानो प्यारे पोपों हमारी
६२७ मर्दों का काम धर्म में।
६२८ मरते २ मर गये लेकिन।
६४९ मचा दई धूम दुनिया।

य

१८८ यह काया की रेत।
२१३ यह दुनियां चन्दरोजा।
२१७ यह है असार संसार।
२८८ यह धर्म हमारा प्यारा।
३३० यह वही ऋषी सन्तान।
३४५ यही दस दोष बताये।
४१४ यदि चाहो कल्याण।
४७४ यह वीर्य्य रत्न अनमोल।
५४१ यही ख्वारी की जड़ है।
५४७ यह सुलफे बाजी छो।
६१५ यह शंका भूत कीरे मि।
६४३ यह किस खबर थी।
६४४ यह किस विदित था।
६६७ यही पहिचान हैरे।
६७६ यह उत्सव तुमको।

र

३५ रचने का वेद निराकार।
७८ राखो २ प्रभु जन की।
८५ रहा मैं डूब भवनिधि।
१६० रहना धर्म के आधार।
२८६ रहेगी सुखपर यह आ।
३१२ रंज क्या २ न सहे धर्म।
३२४ रोवे भारत जननी तु।
४०६ रोरो करें अनाथ पुकार।
४१८ रोरो के कहती हैं गौवें।
६२० रहना हुशियार पोपों।
६३१ रोहिताश्व लाश गोदी में।

ल

२७५ लगा के ईश्वर से ध्यान।
४४४ लो पतिव्रत धार है।
४८२ लानत है रंडीबाज़ी।
६६१ लहराती है खेती दया।

व

३३ वह प्रत्यक्षादि प्रमाण।
३४ वेद फिर कैसे बनाये।
१५८ वे नर पशु समान।

संख्या	टेक भजन
२३६	वेदों की आज्ञा अब०
२५३	विद्या पढ़ाओ जहांतक०
३१४	वेदों का पढ़ना छोड़
३१८	वेद पढ़न क्यों छोड़०
३४२	वेदोक्त विवाह किये से०
३६५	वह पुरुष महा चंड़ा०
४०८	विद्या का हम समों०
४१२	वाकई निसवां का०
४६३	विचार करोरी प्यारी०
४६७	वैदिक धर्म का बोध०
४७८	व्यभिचारी नर अज्ञान०
४८६	वेश्या तो दुख की मू०
५५१	वेदों की रक्षा का बंधन०
५५६	वैदिक धर्म का बोध०
५६५	वेद सनातन त्यागे०
५९३	वेदों में देव तैंतिस०

श

संख्या	टेक भजन
४१	शरण हम प्रभु तेरी०
४४	शरण अपनी में रख०
८५	शरण में तेरी आया०
१०७	शरणागतपाल कृपाल०
२०१	शिर पै है मौत सवार०
३४१	शुभ रचो स्वयंवर०
६०४	श्याम ने माखन नहीं०
६४२	शुक्र स्वामी दयानन्द०
६८३	श्री पंचम जार्ज नरेश०
६८४	शरण प्रभु की आओरे०

स

संख्या	टेक भजन
२६	सब से उत्तम ओ३म्०
३०	सब लक्षण कहो स०
४०	स्वामिन दयालुता से०
४८	सुनो जगदीश विनती०
६९	सत्ता तुम्हारी बुर्जा०
९०	सर्व नियन्ता स्वामीजन०
११२	स्वामी लीजेगा अब तो०
१२५	संग धर्म ही चलने०
१३०	सब कहो महाशय०
१३२	सब ही बन जायें सो०
१३७	सुमिरन बिन गोते खा०
१४४	सुमिर हरदम तू भग०
१५०	सब मिल के हरिगुण०
१५६	साक्षात् धर्म के चार०
१८६	स्टेशन जिसम है तेरा०
१६५	सीधे मारग पर०
२११	सब स्वारथ का संसा०
२३२	सुनो अय मित्रवर प०
२०४	सब देशों में मशहूर०
३४८	सुन सज्जन हुये आनंद०
३८०	सरताज मेरे वाली०
३८३	सदमों की चोट सीने०
३९९	सात सखी मिल रुदन०
४२०	सुख नहीं मिलता यार०
४२२	सुघड़ नार का सुनो ह०
४३२	सीता की ओर निहार०
४३४	सखी सोई सुन्दरी०
४३५	सखी में धन्य सुहा०
४३७	सोचना बहनो कि प०
४४६	सुनोरी बहना बहना०
४७५	सुख मूल ब्रह्मचारी आ०
४८६	सारी इज्जत मिल गई०
४९१	सुनियो ज़रा गौर से०
४९२	सूझत नहीं निपट आ०
४९८	सैयां न ऐसी नचावो०
५११	सुनिये साहिब जरी०
५१७	सनातन धर्म और आर्य०
५७६	साधो को जग का स०
५७७	साधो मोहिं कोई स०
६११	सुनो जन्म पत्री की ली०
६२६	सीस जिनके धरम पर०
६६५	स्वामी दयानन्द भाई०
६७८	सब मिल गाओ मंगल०
६८७	सकल सत्य विद्या वि०

ह

संख्या	टेक भजन
३	है सकल उत्पादके०
८	है अपरम्पार प्रभु०
४५	है न्यायकारी है निर्वि०
४६	हमारी एक बिनय तुम०
५५	हुई है हालत बुरी ह०
५६	हुये हैं अपराध हम०
८१	हमें आशा पिता है०
८२	है विनती तुम से हमा०
१०६	है दीनबन्धु जगदीश०
१४२	हम तालिब हैं उसनूर०
१४३	है जिसने सारे विश्व०
१५७	है धर्म चीज़ वह क्या०
१७४	हिन्दूपन से धोय हाथ०

संख्या	टेक भजन
१६६	हुआ लोभी संसार का०
२१५	है थोड़ेदिन जग रह०
२४१	हमतो वेदों की शिक्षा०
२४४	हमतो वर वेद प्रचार०
२४५	हम तो वेदों के बाजे०
२६०	है जाना देश देशांतर०
३०१	हितैषी बनो सभी प्यारे०
३२१	हा देश तेरी हालत पै०
३४०	है बेकस अबतो यह०
३४७	हुआ वैदिक विवाह०
३६३	हा क्यों कराओ बाल०
३६७	हुये कैसे मा बाप०
३६८	हो लिखी कहीं दिखला०
४०६	हम से शौहर की जु०
४४५	हाय कैसा यह काम०
४७६	होश में आकर हुसन०
४८५	होता बर्बाद घररंडी०
४८८	हया और शर्म तज०
४६५	हैं रंडी मांसाहारी०
५१४	हाहा गंवावे प्यारे स०
५३०	हिंसा देहु बिसार नाथ०
५३२	हत्यारे आठ क़साई०
५४६	हुक्के से ध्यान लगा०
५५३	है अग्निहोत्र सुखदाई०
५६९	हमसे धरम का बाज़ हु०
५७०	हरएक ने फ़िक्र बना०
५८२	हमने नज़रों से बुतों०
५८७	हँसी अपने बुजुर्गों की०
५८९	हमतो सोते भारत० को०
५९७	हुआ साबित साफ़०
६२६	हम मित्र दृष्टि से देखें०
६३०	हुये यह कैसे उपकारी०
६४८	होना दुशवार दयानन्द०
६५३	हुये उदय भाग भारत०
६६४	होली में खाक धूल०
६६७	होली खेलो समझ के०
६६९	होली खेलत आर्य०

॥ इति ॥

तुम बिन हे प्रभु ! दीनानाथ, देगा कौन विपति में साथ ।
स्वामी बढ़ा दया का हाथ, तट की ओर खैंच ले जाओ ॥दीना०६॥
कहता सालिग्राम पुकार, तुमसे हे हरि ! जगदाधार ।
होने पावे नहीं अबार, अबतो करुणा हस्त बढ़ाओ ॥ दीना०७॥

दादरा ८७

प्रभु नैया किनारे लगादो जी ।
सोये पड़े हैं सारे खिवैया, निद्रा से इनको जगादो जी ॥ १
डोल रही है नैया भँवर में, करुणा हस्त बढ़ादो जी ॥ २
डूबने में कुछ कसर नहीं है, देकर सहारा बचादो जी ॥ ३
भटक रहे हैं अन्धकार में, भूलों को राह बतादो जी ॥ ४
वैदिक मारग पर हम सबको फिर आरूढ़ करादो जी ॥ ५
सत्य धर्म की देकर औषधि, मुर्दों को ज़िन्दा बनादो जी ॥ ६
क़हतो वबा ने दुखित किये हैं, इनको यहांसे भगादो जी ॥ ७
सालिग्राम कहै प्रभु मेरी, नैया पार लगादो जी ॥ ८

भजन ८८

निरन्तर तेरा ध्यान धरूं । टेक,
भक्ति बढ़े तव चरण सुखावह, दुष्कृत नाहिं करूं ।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूं ॥ १ ॥
भवसागर की धार अगम है, धीरज धार तरूँ ।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूँ ॥ २ ॥

'कर्ण' कहे भटकूं न शान्ति लह, उर आनन्द भरूँ ।
निरन्तर तेरा ध्यान धरूँ ॥ ३ ॥

भजन ८९

विनती करुणा निधान निधान सुनिये मेरी भगवान !
सुनिये मेरी भगवान !! सुनिये मेरी भगवान !! विनती० ॥
करो शुद्ध जीवन, चलन और तन मन हृदय में उत्पन्न हो तेरी लगन । दयालु, कृपालु, रक्षा करो, मांगूं यही बरदान ॥ विनती० ॥ भक्ती न शुद्धी, न बल है न बुद्धी, विद्या न शक्ती, मगर तेरी आस । धरम, करम, जनम सुधार, दूर करो अज्ञान ॥ विनती० ॥ आजिज़ हैं बन्दे तेरे दर पै आये, ऐ दानी हमें दान भक्ती का दो । पुकार, हरबार, स्वीकार करो, अब सर्व शक्तिमान ॥ विनती० ॥

भजन ९०

सर्व नियन्ता स्वामी जन के दुखके मोचन हार ।
रक्षक ! रक्षक ! सहायक सर्वाधार ॥ सर्व० ॥
काम क्रोध और लोभ मोह में, फँसा रहा तुझ नहीं विचारा ।
जगन्नाथ काशी अरु मथुरा, फिरा भटकता दर दर मारा ॥
धन अरु कुटुम्ब सहायक समझा, अब जाना वहभी निःसारा ।
किसकी आस करूँमें भगवान, तुझबिन नहीं कोई और सहारा ॥
परमेश्वर ! जगदीश्वर ! सर्वेश्वर ! विश्वम्भर !
पाठक की सुनपुकार प्रभु ? प्रभु ! निज उनको शीघ्र उबार ॥ सर्व० ॥

कव्वाली ९१

तुमही पिता हमारे, हो वेद ज्ञान वाले ।
जग में भी रम रहे हो, हो बेनिशान वाले ॥
छिन २ तुम्हीं को ध्याऊं, हे न्यायकारी स्वामी ।
ज्योती तुम्हारी चमके, हो चन्द्र भान वाले ॥
दुःखों से तुम छुड़ा दो, हम दास हैं तुम्हारे ।
सिखला दो अपनी भक्ती, आनन्द खान वाले ॥
पाठक के तुम हो सर्वस, हे दीनबन्धु स्वामी ।
आवागमन छुड़ा दो, हो मोक्ष दान वाले ॥

ग़ज़ल ९२

बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को क़रारी है ।
कमल ज्यों नीर बिन सूखे पपीहा ध्वनि पुकारी है ।
बिनाजल मीन नहिं जीवे, वहीगति अब हमारीहै ॥ बिना०
नहीं है और की इच्छा, तेरा ही नाम कारी है ।
फिरा दग दे इधर को तू यही बिनती हमारी है ॥ बिना०
भला कैसे हो हा ! सारी मिटी शुद्धबोधिनी विद्या ।
बढ़ा दे फेर इसको अब यही उर आश धारी है ॥ बिना०
न देखूं जब तलक तुझको मुझे जीना भी भारी है ।
मुझे दर्शन दिखादे क्यों वृथा सुध बुध बिसारी । बिना०
नहीं हम मान के भूखे नहीं दौलत पियारी है ।
फ़क़त चाहें शरण तेरी निहा ने यों पुकारी है ॥ बिना०

भजन ९३

तुमही रक्षक हो महाराज ! दीनानाथ कहाने वाले ॥ टेक ॥
हमतो पापोंमें हैं लीन, कुछ नहिं रहा ठिकाने दीन ।
बनगये बुद्धि विवेक विहीन, विषरस पान करानेवाले ॥ तु०
तुमहीं सब के हो आधार, जाना हमने इसे विचार ।
पूरा न्याय विवेचन धार, हो तुम न्याय चुकाने वाले ॥ तु०
देते दुष्ट जनों को दण्ड, करके धारण रूप प्रचण्ड ।
तुममें रौद्र प्रभाव अखण्ड क्या, गुण गांव गानेवाले ॥ तु०
हम सब तुम्हरी हैं सन्तान, अपना चाहरहे कल्याण ।
पाठक त्यागे भ्रम अज्ञान, हों सब तुम्हरे ध्याने वाले ॥ तु०

लावनी ९४

अय सनम तू दिखा, मुझे जलवा ज़रा, कहां जाके छुपा,
नहीं आया नज़र ।
मैंने ढूंढ़ा जहान, सब कौनों मकान, नहीं पाया निशान,
तू गया किधर ॥
मसजिद में भी जा, मैंने सिजदा किया, चित ठहरा दिया,
नहीं मिला मगर ।
गया गंगो जमन, नहिं दिलको अमन, सहरा औ चमन,
नहीं आया सबर ॥
काबा में गया, वहां तू न मिला, मैंने हज भी किया,
तेरी खातिर ।

बैरागी हुआ, सर्व त्यागी हुआ, बड़ भागी हुआ,
कहला के फ़क़र ॥
तू मिलाही नहीं, मुझे माहेजबीं, दिल बेतसकीं रहता,
मुज़तर ॥ मैंने ढूंढ़ा जहान० १ ॥
मन्दिर में भी जा, मैंने सर को झुका, लिया तिलक लगा,
पूजे ठाकुर ।
सभी देखे पुरान, पढ़ी आयत कुरान, तू रहा ही निहां,
न हुआ ज़ाहिर ॥
कभी शिव जी के जा बेल पत्ती चढ़ा कभी डौरूं बजा के
कहा हर हर ।
कभी आफताब, पूजा शिताब, इसे दिया आब, नहा
धोके फ़क़र ॥
मैं शबो रोज़, फिरा ग़म अन्दोज़, आतिश बशोज़, कभी
बनके गबर ॥ मैंने ढूंढ़ा जहान० २ ॥
उर धारे मज़हब, मैंने तेरे सबब, सूझा कोई न ढब,
तो हुआ शशदर ।
मैं हुआ हैरा, अब जाऊं कहां, कर सनम अयां,
तूही आकर ॥
जब हार चला, तो ईसाई मिला, उसने यूं कहा,
तुम आओ इधर ।
मैं गया वहां, हुआ इंजील ख्वां मेरा दिल नादान,
गया गिरजाघर ॥

तू मिला न सनम, मुझको इकदम, लगा दुगना ग़म,
दिल को आख़िर ॥ मैंने ढूंढ़ा० ३ ॥
जब ढूंढ भाल, हुआ बेहाल, पाया विसाल,
दिल के भीतर ।
खुला दशम द्वार, मिला अपना यार, किया ख़ूब प्यार,
गले मिल मिल कर ॥
बधावा राम, कर प्राणायाम, तू सुबू शाम, मुतलक़
नहीं डर ।
बीर मान, यह ठीक जान, दिल में पहचान,
अपना दिलबर ॥
खन्नादास, मत हो निरास, दिलबर के पास, रहो शामो-
सहर ॥ मैंने ढूंढ़ा जहान० ४ ॥

ग़ज़ल ९५

रहा मैं डूब भवनिधि में. उबारोगे तो क्या होगा ।
तसद्दुक़ जानो दिल तुम पर, निहारोगे तो क्या होगा ॥
हो लड़का कैसाही नाक़िस, पिताको रहम लाज़िम है ।
मुझे कर माफ़ ! बिगड़ीको, सँभारोगे तो क्या होगा ॥
अधम कैसाही गो मैं हूं, पतित पावन हो तुम स्वामी ।
सभी मम दोष की गणना, बिसारोगे तो क्या होगा ॥
मुझे मद मोह आलस ने, प्रभू कुछ दिन से घेरा है ।
इन्हें ले ज्ञान का खंजर जो मारोगे तो क्या होगा ॥
शरण ली आपकी अबतो, झुकाये सर हूँ मैं स्वामी ।

निगह एक रहम की करके जो तारोगे तो क्या होगा ॥
तुम्हें तज और को पूजें, नवायें सर जो नीचों को ।
ये मूरखता को भारत से, निकारोगे तो क्या होगा ॥
चहे कुछ भी कहो हमको, नहीं घटती है कुछ इज़्ज़त ।
अधम या दास मूरख कह, पुकारोगे तो क्या होगा ॥

भजन ९६

दोहा–बिनय करूं कर जोड़ कर, सुनिये नाथ पुकार ।
इस असार संसार से, लीजे मोहिं उबार ॥

टेक–करुणानिधि बेगि उबारो, नाथ मेरी बिनय तुम्हीं से है ।
बनकर अधम अधिक व्यभिचारी, विषय भोगमें उम्र गुज़ारी ।
शरणागत अब हुआ तिहारी, चाह नहीं और किसीसे है ॥क०॥
काम क्रोध ने बहुत सताया, लोभी बन इत उत को धाया ।
सुमिरण में नहिं चित्त लगाया, हुई यह चूक मुझीसे है ॥क०॥
मन मूरख चहुँ दिशि को धावे, सुत धन दारा में भटकावे ।
आख़िर को धक्के ही खावे, पाता दुःख नाफ़हमी से है ॥क०॥
ऋषिराज को है शोक ने घेरा दूर करो तज बिलँब घनेरा ।
दीपचन्द एक मित्र है मेरा इसे भी आश तुम्हीं से है ॥क०॥

भजन ९७

जप जगदाधार जीवन प्राण हमारे ।
अज्ञान महा तम टारो, विज्ञान प्रकाश पसारो ।

करो ध्रुव धर्म प्रचार ॥ जीवन० १ ॥

आलस असुर को मारो, पुनि पातक पुंज पजारो ।
हरो भ्रम जनित विकार ॥ जीवन० २ ॥

भवसागर पार उतारो, सुधि लहु देहु फल चारो ।
दया निधि परम उदार ॥ जीवन० ३ ॥

शिवशंकर नाम तिहारो, सब संकट काटन हारो ।
जपें जन बारंबार ॥ जीवन० ४ ॥

भजन ९८

जादिन अपनावेंगे आप ।

वेद पढ़ावेंगे हम सबको ज्ञानी गुरु मा बाप ।
स्वामी छूट जांयगे छिन में घोर कुकर्म कलाप ॥ १ ॥
पौरुष पावक में पजरेंगे आलस के अभिशाप ।
बैर विसार सुपन्थ गहेंगे करके मेल मिलाप ॥ २ ॥
व्रत वारिध में डूब मरेंगे जन्म जन्म के पाप ।
फिर व्याकुल कबहूं न करेंगे मोह शोक सन्ताप ॥ ३ ॥
भूखे भारत में न बलेंगे दम्भ अविद्या दाप ।
परम शुद्ध वे पद गावेंगे जिन में शंकर छाप ॥ ४ ॥

भजन ९९

मेरी नैया पार लगाओ जगत् पिता ।
विपता से मुझे बचाओ जगत् पिता ॥

आन पड़ी मँझधार में नैया, तुम बिन कोई नहीं खिवैया ।
तुमहीं हो एक धीर धरैया, करुणा हस्त बढ़ाओ ॥ जगत्० ॥
मैं मूरख मतिमन्द अनारी, आन पड़ी प्रभु शरण तुम्हारी ।
पाऊं किस प्रकार सुख भारी, सुमतिसुधा बरसाओ ॥ जगत्० ॥
मुझको विद्याहीन जान कर, दीनों से भी दीन मानकर ।
हे प्रभु कीजे पेख नज़र भर, नेक नहीं बिलराओ ॥ जगत्० ॥
कठिन पन्थ और देश बिगाना, सूझ पड़े हा नहीं ठिकाना ।
हृदय बीच भारी भय माना, हिम्मत फेर बँधाओ ॥ जगत्० ॥

भजन १००

प्रभु विनती सुनो हमारी, हम हैं सब शरण तुम्हारी

अति गाढ़ मोह तम नाशो, उर विद्या अर्क प्रकाशो । (जी)
हों सुखी देश नर नारी ॥ प्रभु विन० १ ॥

सुख दायक मार्ग दिखाओ, दुष्कृति से हमें बचाओ । (जी)
हा ! बुद्धि गई है मारी ॥ प्रभु विन० २ ॥

धन धैर्य प्रतिष्ठा दीजे, शुभ गति अधिकारी कीजे । (जी)
यह चाह रहे हैं भारी ॥ प्रभु विन० ३ ॥

हमसे सब जन सुख पावें, हितकारी भाव बढ़ावें । (जी)
ऐसी उर आशा धारी ॥ प्रभु विन० ४ ॥

हैं जितने मित्र हमारे, हों भक्त अनन्य तुम्हारे । (जी)
मिट जाय बुरी मति सारी ॥ प्रभु विन० ५ ॥

भजन १०१

अब तो दया करो करतार।

विषय भोग में मैंने फँसकर तुम को दिया बिसार।
अपने हित की बात न जानी कैसे हो उद्धार॥
ज्ञान ध्यान सिखलाकर मुझ को दीजे भवनिधि तार।
बार बार यह 'कृष्ण' पुकारे अनहित भई विचार॥

भजन १०२

मोसे भई दयामय भूल।
तुमसे सुखदाता की स्वामी भक्ति करी न कबूल॥
फंसा रहा निशि दिन विषयों में इतनी मम उर शूल।
करो पार तुमही हो मेरे पिता परम सुख मूल॥

भजन १०३

विनती है मेरी आप से जी ओंकार।
भारत के बासी नर नारी रहे न अब तो नेक सुखारी।
श्रेष्ठ आर्य्य से भये अनारी तज वर वेद प्रचार॥विनती है० १॥

द्वेषभाव आपस में छाया सारा मेल मिलाप मिटाया।
अबतक भी उर चेत न आया रहे कुमति ही धार॥विनतीहै० २

भारत फिरसे लासानी हो सच्चा शूर वीर दानी हो।
कोई न इसमें अज्ञानी हो कुल कठोर मद्दिभार॥ विनती है० ३॥

सबकी कुमति निवारण कीजे विद्या भर घट २ में दीजे।
तेजसिंह को शरण में लीजे हे प्रभु जगदाधार॥विनती है० ४॥

भजन १०४

प्रभु नाव मेरी मँझधारा, तूही पार लगावन हारा।
यह भंवर बीच में आई, आंधी भी ऊपर छाई। (जी)
बस तेरा ही तकूं सहारा॥ तूही० १॥

है पाप बोझ से भारी, चहुँ ओर मगर भयकारी। (जी)
हा! मैंने साहस हारा॥ तूही० २॥

अब देर करो मत स्वामी, हे सबके अन्तर्यामी। (जी)
गहरी नदिया है दूर किनारा॥ तूही० ३॥

कोई साथी काम न आया, अबलेहु खबर जगराया। (जी)
कहे जगन ये दास तुम्हारा॥ तूही० ४॥

भजन १०५

प्रभु जग करतार—तुझे नमस्ते मेरा। टेक,

प्रभु आदि अन्त नहिं तेरा, सब तुझ में करें बसेरा।
अमित तेरा विस्तार॥ तुझे० १॥

तेरे गुण ज्ञानी गाते, गाते गाते थक जाते।
है तू अपरम्पार॥ तुझे० २॥

सृष्टी का तू कारण है, तेरा ही उर धारण है।
परम सुख का भण्डार॥ तुझे० ३॥

तू कर्मों का फल देता, न्यायानुसार सुधिलेता।
सकै नहीं तुझे बिचार॥ तुझे० ४॥
नहीं देह कभी तू धरता, तू अमर कभी नहीं मरता।
कहैं श्रुति शास्त्र पुकार॥ तुझे० ५॥
है तुझ को क्या नहिं प्यारा, हस्ती क्या कीट विचारा।
सबका तू आधार॥ तुझे० ६॥
नहिं हलका नहिं तू भारी, नहीं बाल वृद्ध नर नारी।
पीत सित नहिं रतनार॥ तुझे० ७॥
रस गन्ध रूप नहिं तेरा, नहीं खट्टा मीठा कसेरा।
नहिं कड़वा नहिं खार॥ तुझे० ८॥
मोहि दया दान दे दीजे, उस पार जलधि के कीजे।
जगन् बिनवै बहुबार॥ तुझे० ९॥

भजन १०६

प्रभु जग भर्तार, अटल प्रताप तुम्हारा। टेक—
तुम सकल विश्व के स्वामी, हो अगम अगोचर नामी।
दया के भी भण्डार, श्रुति ने सुयश उचारा॥ प्रभु० १॥
तुमही हो अधम उधारण, तुम करते दुःख निवारण।
नहीं तुम हो साकार, हो निर्मल रहित बिकारा॥ प्रभु० २॥
तुम अविनाशी घट वासी, हो सब के स्वयं प्रकाशी।
तुमहीं हो प्राणाधार, है महिमा अपरम्पारा॥ प्रभु० ३॥
अद्भुत है तुम्हारी माया, नहिं अन्त किसी ने पाया।
ऋषि मुनि सब गये हार, क्या बरनै जगन विचारा॥ प्रभु० ४॥

भजन १०७

शरणागत पाल कृपाल प्रभो ! हमको एक आश तुम्हारी है।
तुम्हर सम दूसर और कोऊ नहिं दीनन को हितकारी है॥
सुधि लेत सदा सब जीवन की अति ही करुणा बिस्तारी है।
प्रतिपाल करै बिनही बदले अस कौन पिता महतारी है॥
जब नाथ दया करि देखत हो छुटि जात बिथा संसारी है।
बिसराय तुम्हैं सुख चाहत जो अस कौन निदान अनारी है॥
परवाहि तिन्हैं नहिं स्वर्गहु की जिनको तव कीरति प्यारी है।
धनि है धनि है सुख दायक जो तव प्रेम सुधा अधिकारी है॥
सब भांति समर्थ सहायक हो तव आश्रित बुद्धि हमारी है।
परताप नरायन तो तुम्हरे पद पंकज पै बलिहारी है॥

भजन १०८

करिये स्वीकार, बिनती नाथ हमारी।
आनन्द सुधा बरसाओ, सब के दुख दूर भगाओ।
कहाओ हरि हितकार॥ बिनती० १॥
गौरवके दिवस दिखाओ, व्रत शील सुबोध बनाओ।
लिखाओ पर उपकार॥ बिनती० २॥
ऋजु मारग माहिं चलाओ, नित नीके कर्म कराओ।
रिझाओ विविध प्रकार॥ बिनती० ३॥
माया मय मोह छुड़ाओ, कर्णाधम को अपनाओ।
लगाओ भव निधि पार॥ बिनती० ४॥

भजन १०९

हे दीन बन्धु जगदीश दयानिधि पूरण सुख दाता।
मुनि समोद महिमा गाते हैं, योग वृक्ष के फल पाते हैं॥
सब दुःखों से छुट जाते हैं, शोक न ढिग आता॥ हे दीन०१॥
अजर अमर अज मंगलकारी, एक अखण्ड चराचर धारी।
नाथ अनाथन के भय हारी, धन्य धन्य धाता॥ हे दीन० २॥
वेद विशुद्ध अकाय बखाने, भौतिक मूरति मान न माने।
साधु समूह अगोचर जाने, विश्वम्भर धाता॥ हे दीन० ३॥
बिन समाधि साधन के प्यारे, किस अब थने आप निहारे।
कर्यो निपट शिशु के रखवारे, पालक पितु माता॥ हे दीन०४॥

ग़ज़ल ११०

दया दृष्टी हमारे पर दयामय अब घुमा दीजे।
यह रोज़ाना मुसीबत आफ़तें यां से हटा दीजे॥
क़हत ताऊन आदिक ने किया भारतको गारत है।
भविष्यत में इसे इन से कृपा करके बचा दीजे॥
हजारों साल से भारत निवासी ख्वाब ग़फ़लत में।
पड़े बेहोश सोते हैं इन्हें अब तो जगा दीजे॥
अविद्या के अँधेरे में नहीं कुछ सूझ पड़ता है।
दयामय ज्ञान का दीपक दिलों में अब जला दीजे॥
सहारा छोड़ कर तेरा पिताजी अब तलक हमने।
बहुत ही कष्ट भोगे हैं दिलों में सुख बसा दीजे॥

नहीं है धर्म से उल्फ़त न ममता देश की अपने।
हमारे बोध की मात्रा निरन्तर को बढ़ा दीजे॥
वजूद तेरे न समझें और को माबूद हम अपना।
सुदृढ़ विश्वास यह मन में हमारे अब बिठा दीजे॥
यह प्यासा प्रेम रसका है तुम्हारा दास सालिगराम।
दया कर एक प्याला जल्द तर इसको पिला दीजे॥

क़व्वाली १११

बिना आप के प्रभू जी कोई नहीं हमारा।
है आप ही का केवल हम को बड़ा सहारा॥
हालत हमारी स्वामी अबतर बहुत हुई है।
सुख सम्पदायें हम से कर हैं गई किनारा॥
आफ़ात आज कल जो भारत पै पड़ रहीं हैं।
उनको किसी ने मन में तक भी न था विचारा॥
ताऊन औ क़हत ने लाखों को मार डाला।
सदहा ही बस्तियों को भौचाल ने उजारा॥
घर २ लरज़ने लगता है खौफ़ से कलेजा।
आंखों में कांगड़े का आता है जब नज़ारा॥
मातमकदा सा भारत अब बन रहा है हरसू।
घर २ से आ रहा है आहो बुका का नारा॥
सोने की हाय भूमी में रहने वाले इंसान।
फ़ाक़े पै फ़ाक़ा करके करते हैं अब गुज़ारा॥

ाता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
ा और न कोई, आश करूं जिसकी ॥ ३ ॥

ूरण परमातम, तुम अन्तर्यामी।
परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥ ४ ॥

ुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
ख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता ॥ ५ ॥

ा एक अगोचर, सब के प्राणपती।
विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती ॥ ६ ॥

ंधु दुख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।
ाहस्त बढ़ाओ, शरण पड़ा तेरे ॥ ७ ॥

विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
भक्ति बढ़ाओ, सुजनों की सेवा ॥ ८ ॥

दादरा ६८६

शान्तिरन्तरिक्षं ँ शान्तिः पृथिवी
पः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः
श्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं ँ
शान्तिरेव शान्तिःसा मा शान्तिरेधि॥

यजुः।

पन्द्रह बरस से कम की हैं बीस लाख बेवा।
नि शोक में पती के करती हैं हाहाकारा ॥
यक २ बरस की बच्ची जिस देश में हों बेवा।
डूबे न फिर भला क्यों उस देश का सितारा ॥
ऋषियों की हाय सन्तति मूरख बनी फिरे है।
हालत का दुख जिनकी फटता जिगर हमारा ॥
सालिग की हे दयामय है आप से विनय यह।
भारत निवासियों का दुख दूर होय सारा ॥

दादरा ११२

स्वामी लीजेगा अब तो निहार मेरी दीन दशा।

शेर—नमस्ते, धामहे विज्ञान मुक्ति के दाता।
स्वयम्भू सच्चिदानन्द आपही पिता माता ॥
अव्यक्त न्यायी निराकार जगत् हैं गाता।
तुम्हीं हो स्वामी सखा बन्धु और अनदाता ॥
सुध लीजेगा सबही प्रकार ॥ मेरी० १ ॥
महादेव हो निर्वैर आप हो ज्ञानी।
कृपालु शील हो अद्वैत प्राण के दानी ॥
विभुः रुद्रः गोतीत जोत जग जानी।
हमारा कीजे कल्याण भक्त उर ठानी ॥
बिन तुम्हरे न कोई अधार ॥ मेरी० २ ॥
दयालु क्लेश हरो नाशो यह विपति सारी।
उरोत्पन्न जो सन्ताप क्रोध है भारी ॥

❀ ओ३म् ❀

* संगीत रत्न प्रकाश *

पूर्वार्द्ध

पान्चों भाग ।

जिसमें ६८७ भजन व ग़ज़लें व लावनियाँ व ठुमरियाँ व दादरे व होलियाँ आदि विविध विषयों पर मशहूर २ भजन रचयिताओं के दर्ज हैं ।

जिसको

मुन्शी द्वारकाप्रसाद अत्तार

बाज़ार बहादुरगंज शाहजहांपुर ने

सर्व सज्जन महाशयों के हितार्थ संग्रह किया ।

Copy Right Registered under Sec. 18 and 19 of Act XXV of 1867.

द्वितीयबार ४००० | सन् १९२० | मूल्य ॥~) सजिल्द १)